भारत की एकता का निर्माण

(२७ भाषण)

सरदार वल्लभभाई पटेल

पब्लिकेशन्स डिवीज़न
ओल्ड सेक्रेटेरियट
दिल्ली

वक्तव्य

१५ अगस्त १९४७ को जब भारत स्वाधीन हुआ, तब भारत में ९ प्रान्तों के अतिरिक्त ५८४ रियासतें थीं। इन ५८४ रियासतों में केवल हैदराबाद, काश्मीर और मैसूर यही ३ रियासतें ऐसी थी, जो आकार और आबादी के लिहाज से पृथक् राज्यो का रूप धारण कर सकती थीं। अधिकांश रियासतें बहुत छोटी थी और २०२ रियासतें तो ऐसी थी, जिनका क्षेत्रफल १० वर्गमील से अधिक नही था। उस पर भी ये सब की सब रियासतें शासन की पृथक् इकाइयाँ बनी हुई थी।

रियासतो का यह महकमा भारत के प्रथम उपप्रधान मन्त्री श्री सरदार वल्लभभाई पटेल को सौंपा गया और दो वर्षों के भीतर ही उन्होने सम्पूर्ण भारत को एक बना दिया। उक्त ५८४ रियासतो का ५,८८,००० वर्ग मील क्षेत्रफल और १० करोड़ के लगभग आबादी इस अल्पकाल ही में भारत के आन्तरिक भाग बन गए। उसी तरह, जिस तरह भारत के अन्य राज्य है। हैदराबाद, मैसूर और काश्मीर को पृथक् पृथक् और अन्य कितनी ही रियासतों के संघ बनाकर उन्हे बी श्रेणी के राज्य बना दिया गया। सैकडो छोटी-छोटी रियासतें आसपास के बड़े राज्यो में मिला दी गईं। परिणाम यह हुआ कि भारत भर में पूर्ण प्रजातन्त्र स्थापित हो गया और सन् १९५२ का निर्वाचन समूचे देश में बालिग मताधिकार के आधार पर समान रूप में हुआ।

इस नवीन भारत की एकता के निर्माण में सरदार पटेल के इन २७ भाषणो का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। स्वाधीनता के पहले २½ वर्षों की भारतीय समस्याओं पर इन भाषणों में जो प्रकाश डाला गया है, उसका महत्व ऐतिहासिक है। ये भाषण देश के लिये चिरकाल तक प्रकाश-स्तम्भ का काम देते रहेगे। इसी दृष्टिकोण से इन्हें भारतीय जनता की भेंट किया जा रहा है।

२ अक्तूबर १९५४

चित्र-सूची

भाषणों की सूची

भारत की एकता का निर्माण

(१)

कलकत्ता

३ जनवरी १९४८

वहनो और भाइयो,

वहुत दिनो से आप लोगों से मिलने की ख्वाहिश थी। आपका प्रेम और मुहब्बत देख मेरा दिल भर आया है। चन्द दिन हुए, हमारे नेता हमारे प्राइम मिनिस्टर साहव भी इधर आए थे। उस दिन भी वहुत लोग जमा हो गए और वह अपने दिल की जो वातें आपको सुनाना चाहते थे, उस का मौका रह गया। आप लोग कलकत्ता में सव चीजें वहुत वडे पैमाने पर करना चाहते हैं। आज भी आप लोग इतनी वडी तादाद मे यहां आए हैं। इतनी वडी भीड को सुनाना भी मुश्किल हो जाता है। यदि पास और दूर के सव लोग शान्त हो जाएँ, तो चन्द वातें मैं आपको सुनाना चाहता हूँ। क्योकि अव हमें ऐसा मौका वहुत कम मिलता है कि हम लोग आपके पास आकर आपको अपने दिल की वात कह सकें।

कहने की वातें तो वहुत हैं, क्योकि वगाल के ऊपर, हिन्दुस्तान के ऊपर वहुत सी मुसीवतें गुजरी हैं। एक वात हम और आप सव चाहते थे कि हिन्दुस्तान आजाद हो जाए। तो हमारा देश तो आजाद हो गया। यहाँ जो पर-देसी हुकूमत थी, वह इधर से हट गई। वह तो वहुत अच्छा हुआ। हमारा

और आपका जिन्दगी भर का यह काम था कि हमारा मुल्क आजाद हो। हिन्दुस्तान आज आजाद हो गया। एशिया भी अब आजाद होने वाला है। चन्द दिनो में, बल्कि कल ही बर्मा भी आजाद हो जाएगा। लेकिन परदेसियो के हट जाने से जो आजादी हमें मिली है, क्या सचमुच वह वही आजादी है, जो आजादी हम चाहते थे, उसका हिसाब हमें लगाना चाहिए। क्योंकि खाली परदेसियो को हटा कर उनकी जगह पर हम लोग बैठ जाएँ, तो उससे हमारा काम नही चलेगा। तो अब हमें क्या करना चाहिए ? अपनी स्वाधीनता को पूर्ण और अपने मन के मुताबिक बनाने के लिए हमें तैयारी करनी चाहिए। वह तैयारी क्या हो, यही मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ।

सब से पहले मै आपसे यह कहना चाहता हूँ कि हमने हिन्दोस्तान को परदेसी हुकूमत से तो आजाद कर लिया, लेकिन उसके बाद हिन्दुस्तान में जो हालत हुई, उससे हम लोगो को काफी दर्द हुआ। हिन्दुस्तान के दो हिस्से किए गए। दो हिस्से करने के जो कारण थे, उनके बारे में मैं कुछ भी कहना नहीं चाहता। बगाल के भी हमे दो टुकडे करने पडे। दो टुकडे क्यों हुए, उस चीज में जाने से आज कोई फायदा नही। लेकिन उससे हमको काफी नुकसान हुआ। इतना नुकसान होते हुए भी, यदि हम उस नुकसान में से, उस खराबी में से कुछ पाठ सीख ले, तो हमारा वह नुकसान कम हो जाएगा। आखिर बगाल के दो टुकडे करने से ही तो कोई ऐसा बिगाड नही हो सकता है कि हम एक दूसरे से इस तरह से अलग हो जाएँ, जैसे दो दुश्मन हो। क्योंकि आखिर बगाल की भाषा एक है, एक के दो बगाल बन जाने पर भी बगाल का अपना एक कल्चर है, एक साहित्य है, एक रग-ढग है। आज तक आप साथ-साथ रहे, अब आप आपस में क्यो लडें ?

लेकिन दूसरी ओर यह भी मैं आपसे नही छिपाना चाहता हूँ कि मेरे दिल में काफी अन्देशा है कि अब क्या होगा ? हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच में आज जो हालत है, अगर वही हालत चलती रही, तो दोनो की बडी मुसीबत होगी। उस मुसीबत को दूर करने के लिए हमें क्या करना चाहिए ? हम कोई ऐसी चीज न करें, जिससे हमारे ऊपर कोई दोष आए। आप यह भी जानते हैं कि पाकिस्तान को छोड कर भी हमारा जो मुल्क बाकी बच रहा है, वह बहुत बडा मुल्क है। बत्तीस करोड की आज भी हमारी आबादी है। अब इस बत्तीस करोड की आबादी वाले इतने बडे मुल्क को उठाने के लिए अगर

हम काम करें, तो वह बहुत बडा काम होगा । इस चीज़ में हम अपनी सारी शक्ति लगाएँ, उसके लिए हमें मौका मिलना चाहिए ।

पन्द्रह अगस्त के बाद दोनो देशो मे जो काम हुआ है, वह इस प्रकार का काम हुआ है कि उससे दुनिया के सामने हमें सिर झुकाना पडा, हमको शर्मिन्दा होना पडा । लेकिन उसके बावजूद भी पिछले पाँच-छः महीनो में हमने काफी काम किया है । चन्द महीनो में सारे मुल्क के दो हिस्से करना, दो बडे-बडे प्रान्तो के दो हिस्से करना और इस प्रक्रिया में सारी हुकूमत के और सारी सामग्री के दो टुकडे करना, देश के सम्पूर्ण कर्ज़, लेन-देन और जायदाद के दो हिस्से करना, यह कोई आसान काम नही था । हमने थोडे दिनो मे यह काम पूरा किया और इसके लिए हम किसी अदालत में नही गए । हमने आपस में बैठ कर तै कर लिया । इतनी लडाई होते हुए भी हमने यह काम किया । साथ ही साथ कोई साठ-सत्तर लाख आदमी इस तरफ से उस तरफ को चले गए, और लगभग उतने ही आदमी उस तरफ से इस तरफ को चले आए । तो यह बहुत बड़ा काम था । दुनिया में कोई भी हुकूमत अगर उस काम के बोझ से दब जाती, तो उसमें कोई ताज्जुब की बात नही थी ।

यह काम तो हमने किया, मगर अभी जो बहुत जरूरी काम करना बाकी है, वह है हिन्दुस्तान की हवा साफ करना । क्योकि अब आजाद हो जाने के बाद भी हम अगर इसी काम में फँसे रहे, इसी तरह आपस में झगडा करते रहे, तो कोई काम नही होगा । आप यह जानते है कि हिन्दुस्तान में आज क्या हालत है । देश को अगर आप देख ले, तब आपको मालूम पडेगा कि हमे जो काम करना चाहिये, वह हम नही करते और उससे हमे नुकसान होता है । उस नुकसान को हमें रोकना है ।

तो वह क्या काम है ? आप जानते है कि हमारे मुल्क में खुराक की कमी है और खुराक परदेस से लानी पडती है । और इसमें हमें बहुत पैसा खर्च करना पडता है । बाहर से आनेवाली खुराक के लिए हमें बहुत दाम देना पडता है और उस खुराक को अपने मुल्क तक लाने के लिए भी हमें बहुत ज्यादा दाम देने पडते है । हमारे मुल्क में खुराक की जो कीमत है, उससे बहुत ज्यादा दाम हमें देना पडता है । यह काम हमारे लिए खतरनाक है ।

दूसरा काम यह है कि यदि हमें अपनी आजादी हज्म करनी हो, तो बडे पैमाने पर हमारे पास अच्छा फौजी सामान होना चाहिए । आर्मी (फौज),

नेवी (जल सेना) और हवाई शक्ति (एअर फोर्स) इन तीनो का काफी मजबूत इन्तजाम हमारे पास होना चाहिए। यह न हो, तो आजाद हिन्दुस्तान आज की हालत में खडा नही रह सकता। इसलिए हमारे पास इन तीनो चीजो का पूरा सामान होना चाहिए।

तीसरा काम यह है कि आज के युग में यदि हमें अनुकूल फौज रखनी हो, तो उसके लिए देश में काफी इण्डस्ट्री (उद्योग) होनी चाहिए। उसके लिए जितनी इण्डस्ट्री चाहिए, वह इण्डस्ट्री यदि हमारे पास न हो, तो हम न तो कोई फौज रख सकते हैं और अगर हम फौज रख भी लें, तो वह कोई काम न दे सकेगी। तो हमें अपने मुल्क मे बडे-बडे कारखाने बनाने होगे। उसके लिए आज क्या हमारे पास कोई सामान है ? न हो, तो हमें सोच लेना पडेगा कि हमें क्या करना है ? हमें यह कबूल करना पडेगा कि हम लोग बहुत पीछे हैं।

हमारा मुल्क आज इण्डस्ट्री में बहुत पीछे है। पिछले पांच-छ साल जो विश्व-युद्ध चला था, उससे हमारी आर्थिक स्थिति में काफी अन्तर आ गया। हमारा मुल्क एक प्रकार से देनदार मुल्क था, लेकिन अब वह लेनदार मुल्क बन गया है। इग्लैड के पास से हमारा काफी लेना निकलता है। हमारा क्रेडिट (साख) तो आज बहुत है, लेकिन उससे कोई काम की चीज हमारे पास नही आती है। लेनदार की हालत होते हुए भी हम देनदार से बुरी हालत मे पडे है। आज कोई चीज हमारे पास नहीं है। तो हमें अपनी इण्डस्ट्री बनानी है, उद्योग (व्यवसाय) बनाना है। देश का उद्योग बनाने में हमें आपका साथ चाहिए। एक तो लेबर (श्रम) का साथ चाहिए। आज हमारी लेबर की हालत बहुत बुरी है। मजदूर लोग आज एक ही बात समझते है और वह यह कि किसी न किसी तरह से उन्हे हडताल करनी है। उन्हे बहकाने वाले लोग समझते है कि इससे उनकी लीडरशिप बनी रहती है।

यह बहुत बुरी बात है। हमारे लिए यह सोचने की बात है कि यदि इस तरह से हम काम करते रहेंगे, तो हमारी इण्डस्ट्री तो बढेगी नही। तब हमारी लेबर क्या करेगी ? उसको क्या मिलेगा ? तो वह चीज हमें पहले सोच लेनी चाहिए। इसका मतलब यह नही है कि मजदूरो को जो तनख्वाह मिलनी चाहिए, जो मजदूरी मिलनी चाहिए, वह उन्हे नही मिले। ऐसा नही। लेकिन उसको क्या मिलना चाहिए, उसके लिए हमें झगडा नही करना चाहिए, उसके लिए हमें काम नहीं रोकना चाहिए। उसके लिए हमें फराख-

दिली से काम लेना चाहिए। उसके लिए मजदूर वर्ग, मिल-मालिक और गवर्नमेंट तीनों को मिल कर यह फैसला करना चाहिए कि भाई, पंच के पास से इन्साफ कराओ और इन्साफ से काम लो। लेकिन इस झगड़े से मुल्क का काम मत बिगाडो। आज तो हमारे मुल्क का काम बिगड़ रहा है।

तो आज लेबर को यह चीज समझानी है कि तुम्हे जितना मिलना चाहिए, वह आपको बिना स्ट्राइक (हड़ताल) किए मिल जाना चाहिए। उसका इन्तजाम गवर्नमेंट कर सकती है। यदि यह चीज हो जाए, तभी देश का भला है। अगर ऐसा न हुआ, तो लेबर में जितने काम करनेवाले लोग है, इनसे मै बडी अदब से प्रार्थना करता हूँ कि उस सूरत में हिन्दुस्तान तो पीछे रह जाएगा, वह आगे नही बढ़ सकेगा। दुनिया के उन्नत मुल्को में जिस तरह लेबर का काम चलता है, उस तरह का हमारा सगठन नही है, उस तरह की हमारी लेबर भी नहीं है और न उस तरह की हमारी तालीम ही है। हमारी गवर्नमेंट भी उस तरह की नही है।

आप जानते है कि हमारी बगाल सरकार ने एक पब्लिक सेफटी बिल बनाया है। आज बगाल में जो प्रधान मण्डल है, वह हमारा अपना है। हमें उससे काम लेना है। अब बंगाल के प्रधान मण्डल ने इस विचार से कानून बनाया कि पश्चिम बगाल का भला हो और यहाँ कोई झगड़ा-फ़िसाद न हो, कोई तूफान न उठ खड़ा हो। जब यह बिल असेम्बली में पेश हुआ तो कुछ लोगो ने मेम्बरो को असेम्बली में जाने से रोकना शुरू किया। इस से हमारा काम नही चल सकता। आज यदि हमारा प्रधान मण्डल अच्छा काम न करे, तो हम उसको हटा सकते है। तो जिन लोगो ने यह बिल पेश किया था, उनको अगर आप हटाना चाहे तो उनके ऊपर जो देख-भाल करनेवाले लोग है, कांग्रेस की वर्किंग कमेटी है, मध्यस्थ सरकार है, उनके पास जाना चाहिए था। या आखिर में सच्चा रास्ता यह है कि आप उन लोगो के पास जाते, जो उनको वोट देनेवाले है। वह बंगाल की, कलकत्ता की प्रजा है, और उनके पास आपको जाना चाहिए था। लेकिन मेम्बरों को असेम्बली मे जाने से रोकना तो किसी भी तरह ठीक नही। इस तरह करने से तो हमारा कोई काम नही चलेगा। इस तरह कोई लोक-शासन नही रह सकेगा, कोई डेमोक्रेसी प्रजातन्त्र, नही रहेगी। इस तरह तो गुंडो का राज्य हो जाएगा।

आज मै जब एक बजे इधर आया, तो मैंने अखबार में इधर की एक

खबर देखी, जिस से मुझे बडा दर्द हुआ। मैंने अखबार में देखा कि इधर एक छोटी-सी रियासत बिहार और उडीसा में पडी है, उस रियासत में गोली चली और उसमें बत्तीस या तेंतीस आदमी मर गए, कुछ घायल भी हुए। यह बहुत बुरा हुआ। यह सब किस लिए हुआ ? यह छोटी-सी रियासत बिहार में हो या उडीसा में, यह उसके लिए झगडा था। जब वे हमारे पास आए थे तो हमने कहा था कि भई, उसका फैसला हम एक कमीशन बैठा कर करेंगे। जो कमीशन कहेगा, उसकी जांच कर फैसला करेंगे। आज जो कुछ फैसला हमने किया है, वह तो आरजी फैसला है। इस आरजी फैसले के लिए किसी को झगडा नहीं करना चाहिए था। मगर झगडा हुआ और गोली चली। अब हमको स्वराज्य तो मिला । लेकिन दोनो प्रान्तो में, जहा हमारी हुकूमत है, प्रजा अपना काम इस तरह करे और अमलदार वर्ग को गोली चलानी पडे, तो यह बहुत बुरी बात है। अब इधर कलकत्ते में असेम्बली के दरवाजे पर गोली चलानी पडे, तो फिर इस तरह राज करने से क्या फायदा ? तब तो राज करने के लिए और लोगो को तैयार होना चाहिए। जिसको राज चाहिए, उसे अगर हमारी जनता राज दे दे, तो उसको इन्तजार करने की कोई जरूरत नहीं।

लेकिन एक बात आप समझें। मै इस बात का आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हम लोगो ने कभी हुकूमत नहीं की है और कलकत्ता में भी जो हमारा प्रधान मण्डल बैठा है, उन लोगो ने भी कभी कोई हुकूमत नही चलाई। उनके पास सरकार चलाने का अनुभव तो नही है। लेकिन एक बात उनके पास है और वह यह कि वे जनता के प्रतिनिधि हैं। बहुत दिनो के बाद जनता के प्रतिनिधियो का प्रधान मण्डल बना है। उनके खिलाफ कोई शिकायत नही कर सकता कि वे लोग कोई रिश्वत लेकर काम करेंगे, या किसी काम में खामख्वाह बिगाड करेंगे। तो जिसका जितना दिमाग चलेगा, उतना ही काम वह करेगा। लेकिन हमारा प्रधान मण्डल किसी बुरी नीयत से कोई काम नही करेगा। उसमें मैला काम करनेवाला कोई नही है। तो अनुभव ही काम सिखाएगा। यदि आपके पास ज्यादा अनुभव है और आप ज्यादा काबिल है, तो आप काम उठा लीजिए। आप जनता की राय से उनको हटा सकते है। लेकिन इस प्रकार रुकावट डाल कर आप ऐसा काम करें कि गोली चलाने की जरूरत पडे, तो यह बहुत बुरा होगा। इस तरह तो न हमारी हुकूमत चलेगी और न आपकी चलेगी। हम लोगों ने ६० साल तक कोशिश करके

जो कुछ प्राप्त किया है, इस तरह वह सब गिर जाएगा। उससे किसी को कोई फायदा नही होगा।

तो मै आपसे यह कहना चाहता हूँ कि हमारे पास तो करने को बहुत काम पड़ा है। अभी हमारा और पाकिस्तान का रिश्ता कैसा है, वह भी आप जानते है। काश्मीर मे आज हमारी कैसी हालत है, वह भी आप जानते है। और जगह के हालत भी आप जानते हैं। यह तो ईश्वर की मेहरबानी है कि आप लोगो ने कुछ सभाल लिया। नही तो यदि पूर्वी और पश्चिमी बंगाल मे एक साथ झगड़ा हुआ होता, तो यह फिर से लाखो आदमियो का मामला हो जाता। तो आपको समझना चाहिए कि हम वहुत नाजुक समय मे से गुजर रहे है। हिन्दुस्तान की हालत अभी वहुत नाजुक है। उस समय पर आपको कोई गड़बड नही करनी चाहिए। हा, आपको अगर कोई शिकायत है, तो उसके लिए धीरज से काम लीजिए। जल्दबाजी मे बना-बनाया काम न बिगाड दीजिए। देश का ध्यान रख कर आप बरदाश्त से काम लीजिए। दो सौ साल तक परदेशियो की गुलामी की। अब अपने लोग आए, तो दो-चार महीनो मे इन लोगो ने इतना क्या बिगाड़ दिया? इस तरह से क्यो काम करते हो? इस तरह तो हमारा काम नही चलेगा।

मैने आपसे जो कुछ कहा, उसके बारे में मै आपको मिसाल देना चाहता हूँ। चन्द रोज हुए, मध्यस्थ सरकार के हमारे इण्डस्ट्री (उद्योग) के मिनिस्टर ने एक कान्फरेंस बुलाई थी। उसमें देश भर से लेबर (श्रम) के मिनिस्टरो और प्रतिनिधियो को बुलाया था, साथ ही उद्योगपतियो को भी बुलाया था। इस कान्फरेंस मे इस बात पर विचार किया गया कि उद्योगपतियो को क्या करना चाहिए तथा लेबर को क्या करना चाहिए। बहुत सोच-विचार के बाद सब ने मिलकर फैसला किया कि हमें तीन साल तक के लिए एक ट्रूस (सन्धि) करना चाहिए। दोनो ने कबूल किया कि तीन साल तक हम हडताल नही करेंगे। अब यह फैसला करने के बाद सब लोग घर चले गए। दो दिन के बाद लेबर के प्रतिनिधि बम्बई में पहुँचे और वहाँ उन्होने रेज़ोल्यूशन (प्रस्ताव) पास किया कि बम्बई में एक रोज की हड़ताल की जाए। इस तरह दूसरे ही दिन उन्होने अपना वायदा तोड दिया। अब इससे क्या फायदा हुआ? वे शायद समझते है कि ऐसा करने से वे सिद्ध कर देंगे कि वही मजदूरो के प्रतिनिधि है। मगर ऐसा करने से यह सिद्ध कहाँ होता है? एक रोज छुट्टी मिले

और लेवर से कहा जाए कि आपको तनख्वाह भी मिलेगी तो कौन काम करना चाहेगा ? उससे क्या फायदा हुआ ? लेकिन मुल्क को इससे कितना नुकसान हुआ ? अब आप देखिए कि मजदूरो को कैसी गलत तालीम दी जाती है।

अब इधर कहा जाता है, पाच तारीख को इधर भी हडताल करो। लेकिन कलकत्ता को इन हडतालो का बहुत बुरा अनुभव हुआ है । आपको नही मालूम है एक दिन की छुट्टी मनाने में कितना नुकसान होता है और पुलिस पर कितना बोझ पडता है । उसमें कही कोई फिसाद न हो, यह पोलीस को देखना होता है । यह आपको समझना चाहिए कि उससे मजदूरो को कोई फायदा नही होता । फिर भी भोले-भाले लोग उसी रास्ते पर चल पडते है। वह समझते है कि हमारा हित इसी में है, इसलिए वे बहक जाते है। लेकिन उससे सब का बहुत नुकसान होता है । तो मै आप लोगो से बडी अदब से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि दो-चार साल काम करने दीजिए । हिन्दुस्तान आज जिस हालत में है, उस हालत में से वह निकल जाए, तो उसके बाद जितना जो कुछ आपको करना हो, कीजिए। लेकिन देश को कुछ ताकतवर बन जाने दीजिए। आजाद हिन्दुस्तान का तो अभी जन्म ही हुआ है। जब वह शक्तिशाली बन जाएगा, तो आपको जो कुछ करना हो कीजिएगा । लेकिन अभी वैसी बात कुछ न कीजिए। इसका मतलब यह नहीं है कि मजदूरो के साथ अन्याय किया जाए ।

कुछ लोग कभी-कभी मुझ पर इल्जाम भी लगाते हैं कि वह तो राजाओं का पिट्ठू है। कुछ लोग मुझे धनिको और जमीदारो का भी पिट्ठू कहते है। मगर मै असल में सबका पिट्ठ हूँ, मै मजदूरो का भी हूँ क्योकि मै मजदूरो का काम भी करता हूँ। लेकिन मै आपसे यह कहना चाहता हूँ कि आपमें से बहुत कम लोग जानते होंगे कि जब से मैंने गान्धी जी का साथ दिया, तब से मेरे पास कोई दमडी भी अपनी नही है। तब से एक घेला भी मैंने अपना बना कर नही रक्खा। क्योकि यह उनके सिद्धान्त के खिलाफ है। तो मुझे मिलकीयत की कोई जरूरत नही है। हां, जैसे गान्धी जी भी धनिको को समझाने की कोशिश करते हैं, वैसा ही मै भी करता हूँ । धनिको के पास से धन लेकर मै उसे अच्छे काम मे लगा सकता हूँ। वही मै करता हूँ। लेकिन आजकल जो एक रवैया चल रहा है कि लीडर बनना हो तो पब्लिक मीटिंग में जाकर कैपिटलिस्ट को दो-चार गाली दे दो, नही तो लीडर नही बन सकते । वह

मुझे पसन्द नही। दूसरा एक रवैया यह चल रहा है कि दो-चार गाली राजाओ को भी दे दो। इस प्रकार का लीडर मैं नही हूँ। इस प्रकार की लीडरी मुझे नही आती है। मैं यह सब पसन्द नही करता क्योकि इस तरह की बातो से हम जनता को अच्छी तालीम नही देते है।

मैंने जब राजाओ का काम किया था, तो रियासतो मे कई लोग कहते थे कि भई, यह राजाओ को हिन्दुस्तान मे ले तो आया, लेकिन तब से रियासतो के लोगो को दुख है। हिन्दोस्तान के आजाद होने पर कुछ राजा तो यह समझे थे कि अब वे जो चाहे सो कर सकते है। मैंने चालीस रियासतो को तो बिल्कुल एक दो रोज मे साफ कर दिया। तब सब लोग समझ गए कि कोई नई बात हुई है। मैंने राजाओ को भी समझाया और रियासतो के लोगो को भी समझाया। दोनो को एक दूसरे का साथ देने को कहा। मै राजाओ से कहता हूँ कि जो रैयत की नही मानेगा, उस राजा को अगर मैं रखना चाहूँ, तो भी वह नही रह सकता। वह जरूर चला जाएगा। वह रह ही नही सकता। इसी प्रकार जो धनिक लोग है, उनको भी मै समझा देना चाहता हूँ कि धन तो आपके पास तभी रह सकता है जब कि आप उन लोगो को भी खुश रक्खे, जिन लोगो के पास से आप धन पैदा करते है। लेकिन हम अगर लेबर को कोई तालीम न दें, तो हमारी आधुनिक लेबर बहक जाएगी।

लोग कहते है कि हमें मजदूरो का राज चाहिए। ठीक है। मैं भी उसे पसन्द करता हूँ। इग्लैंड में वहाँ की फौज को अपने लोगो पर गोली चलानी नही पडती। वहाँ तो अपने सिपाहियो को भी नही चलानी पडती। इधर हर रोज गोली चलानी पड़े, जब कि पुलिस हमारी, प्रधान मण्डल हमारा और फौज हमारी। फिर भी हमे अपने भाइयो पर गोली चलानी पडे, इस प्रकार का राज लेने से क्या फायदा हुआ? यह तो बहुत बुरी और नुकसान देनेवाली बात है। इसलिए यह चीज हमें छोड देनी चाहिए। इसके लिए हमें लोगो को अच्छी तालीम देनी चाहिए। एक रोज हड़ताल कराने से कोई लीडरशिप कायम नही होती है। लीडरशिप आप भले ही ले लीजिए, लेकिन मुल्क का फायदा किस तरह से होगा, वह तो देखिए। आज हमारे पास न तो पूरा अनाज पैदा होता हैं, न हमारे पास पूरा कपडा है। जिन्दगी की जरूरियात की जितनी चीजें है, वे सब हमारे पास पूरी नही है। मकान बनाना हो तो उसके लिए लोहा चाहिए, वह नही मिलता, सीमेंट चाहिए तो वह भी नही मिलता। हमारी रेलवे की

गाड़ियाँ टूट-फूट गई हैं। हर जगह पर देखो तो हमारा सारा साजो-सामान टूट-फूट गया है। हमने स्वराज्य तो पाया, लेकिन हमारे देश की अवस्था अभी बहुत कमजोर है, उसको हमें मजबत बनाना है। वह बनाना हो, तो उसमे आप लोगो को हमारा साथ देना पडेगा। यदि आप कहे कि नही भई, तुम अच्छा राज नही करते हो। आप तो वैसा ही राज चलाते हो, जैसा परदेसी चलाते थे। तो हम आज ही छोड दे। तब आप यह बोझ उठाइए। लेकिन जैसा आप करते है, ऐसा हम हठ भी नही करेंगे। हम किसी भी सूरत मे देश का विगाड नही करेंगे। यदि आप बोझ न उठा सकें, तो हम यह बोझ उठाएँगे, लेकिन उसमें आप हमारा साथ दीजिए।

आज प्रफुल्ल वावू की कलकत्ता में हुकूमत है, तो इसके लिए आपको मगरूर होना चाहिए। आपको समझना चाहिए कि यह हमारा आदमी है, हम उनके पास आ-जा सकते है। पहले गवर्नमेंट हाउस मे आप नही जा सकते थे। पहले जो हुकूमत करनेवाले थे, उसके पास तो आप जा ही नही सकते थे। आपको पुलिस के साथ अपना वरताव वदलना चाहिए। पिछली सरकार फौज से जो काम लेती थी, उस प्रकार का काम हमें नही लेना चाहिए। आज फौज हमारी है और उसको देख कर हमें मगरूर होना चाहिए। देश के सिपाही हमारे है, पुलिस हमारी है, उनपर हमें मगरूर होना चाहिए। उनको सिखाना चाहिए कि किस तरह से पुलिस का काम करना होता है। यह सव चीज, सारा पुराना ढग, हमें वदलना पडेगा। पिछली गवर्नमेंट के साथ हमारी जो लडाई चलती थी, उसी चाल से अब हमें नही चलना है। नही तो हमारा सारा ढाँचा टूट जाएगा, और उससे किसी को कोई फायदा नही होगा।

हमें हिन्दुस्तान का राज वरावर ठीक तरह से चलाना हो, तो वह दो तरह से चल सकता है। एक तो जिस तरह गान्धी जी कहते है, इस तरह का राज, अर्थात रामराज्य। तो रामराज्य में तो खुला दरवाजा रख के भी सो जाओ, तो कोई हर्ज नही। तव पुलिस की कोई जरूरत नही होगी। कोई दूसरो की चीज को लेने की इच्छा ही न करे, कोई किसी से मार-पीट न करे और सव एक दूसरे को भाई समझकर एक कुटुम्ब की मुआफिक रह सकें, तव रामराज्य होगा। उसके आने में तो अभी वहुत देर है। अभी तो उसमें एक भी वात नही है। तो गान्धी जी के रास्ते पर हम चलने की पूरी कोशिश करें, वह तो ठीक है। लेकिन आज यह हालत नही है। आपने इधर कलकत्ता में 'डाइरेक्ट

एक्शन डे' भी तो एक रोज देखा था। वह आपको याद होगा। १६ अगस्त १९४६ को आप भूल तो नही गए होगे। मैं नही समझता कि कलकत्ता में कभी उसे कोई भूल सकेगा। तो आज भी हमारी हालत ऐसी नही है कि हम कलकत्ता की उस चीज को भूल जाएँ। उस दिन कलकत्ता से आग की जो चिन-गारी उडी, उसने सारे हिन्दुस्तान को जला दिया और वह अभी तक शान्त नही हुई। लोग कहते है कि यह पाकिस्तान क्यो बना? उसके बाद ये सब झगडे-फसाद क्यो हुए? ये सब चीजें अगर हम खोल कर कहने के लिए बैठ जाएँ, तो उसमें से फिर और बुराइयाँ पैदा होगी। इसलिए वह सब चीज हम अपने दिल मे रखते है। हम बोलते तो नही लेकिन पूरी तरह समझते है कि यह किसकी जिम्मेवारी है। किसने कैसा और क्यो किया? ठीक है। जो कुछ हुआ, सो हमारी किस्मत से हुआ। लेकिन वह सब फिर न हो, उसके लिए हमें क्या करना है? उसके लिए मैंने कहा कि या तो आप गान्धी जी के रास्ते पर चलो और या फिर हमारी फौज मजबूत चाहिए, हमारी पुलिस मज-बूत चाहिए और हमारे देश मे एका होना चाहिए। अगर हम आपस में लड़ते रहेंगे तो फिर और भी ज्यादा खराबी होगी।

तो मै आपसे यह कहना चाहता हूँ कि पाँच चार साल तक के लिए आपस में लीडरशिप का यह झगड़ा छोड दो। और तब तक आपस में मिल-जुल कर काम करो। यह पसन्द न हो तो अलग रहो, लेकिन जो काम कर रहे है, उन्हे काम करने दो। अभी कुछ लोग कहते है कि सरकार ने जो यह बिल पेश किया, उससे हमारी सिविल लिबरटी (नागरिक स्वाधीनता) चली गई। मुझे समझ में नही आया कि हम ने कितने आदमियो को पकड के बैठा लिया है, जो कहते हैं कि हमारी सिविल लिबरटी चली गई। सिविल लिबरटी कलकत्ता से चली गई, या किसी और सूबे से चली गई? और प्रान्तों मे भी तो ऐसे ही बिल पेश किए गए है। किसी ने कोई ऐसी शिकायत नही की। क्योंकि यह बिल इस तरह से बनाया गया है कि उसका उलटा उपयोग नही हो सकता। अगर हमारे लोग इस बिल का ऐसा उपयोग करे कि अपने पोलि-टिकल अपोनेन्ट (राजनीतिक विरोधियो) को तग करे, तब तो मिनिस्टर लोगो को भी जेलखाने मे जाना पड़ेगा। उससे हमें डर क्यो होना चाहिए? लेकिन यहाँ तो उसको हथियार बना कर प्रधान मण्डल के ऊपर हल्ला करना उद्देश्य बन जाता है। लेकिन आज उनका टर्न (बारी) आया है, तो

कल आपका टर्न भी आएगा। दुख यही है कि इस तरह देश का काम नही चलेगा ।

जब आप जैसे कुछ लोग कहते है कि भाई, यह तो वही करते है, जो पुरानी गवर्नमेंट करती थी, तो यह सच्ची बात नही है। क्योकि हम आपके प्रतिनिधि है और जिस चीज का उपयोग हमारे लोग हमें जहाँ तक करने दें, वही तक हम उसका उपयोग कर सकते है। लेकिन पुरानी गवर्नमेंट तो लोगो को जानती ही नही थी। लोग तो उनके पास जा भी नही सकते थे। इधर आज की सरकार में हमारे देश के लोगो को जितनी सत्ता चाहिए, उतनी देने में हमें कोई भिझक नही है ।

हम डेमोक्रेटिक रूल (प्रजातन्त्र शासन) को पसन्द करते है और डेमोक्रसी का काम ही हमने लिया है। लेकिन हिन्दुस्तान में डेमोक्रेसी का असली जन्म तो अभी अभी हुआ है। अभी तक पुराना सिलसिला चलता आया है। पिछले दो सौ साल तो आटोक्रेसी (निरकुश राज्य) चलती थी, उसके बाद पोलिटिशियन्स (राजनीतिज्ञो) के कारण जो फिसाद हुए, उस चीज में से हम मुश्किल से निकले। तब आपको यह समझना चाहिए कि जहाँ हम लोगो के हाथ मे सत्ता है, वहाँ अगर उसका दुरुपयोग न हो, तो आपको जरा खामोश रहना चाहिए ।

दूसरी बात मै यह कहना चाहता हूँ कि कलकत्ता हिन्दुस्तान का सबसे बडा शहर है। कलकत्ता हमारे नये इतिहास मे एक बडा पार्ट (हिस्सा) अदा करता रहा है। हिन्दोस्तान की लीडरशिप भी बहुत दिनो तक इधर ही थी। मै चाहता हूँ कि आज भी वैसा ही हो। लेकिन आज कलकत्ता गलत रास्ते पर चलता जाता है। कलकत्ता में जिस प्रकार की डिसिप्लिन (नियन्त्रण), जिस प्रकार की तालीम होनी चाहिए, वह नही है। हमको हमेशा डर रहता है कि कलकत्ते में कोई फिसाद तो नही हो गया ।

एक चीज देख कर हम को खुशी भी हुई। वह यह कि जब पजाब में इतना बडा तूफान उठ खडा हुआ था, तब भी कलकत्ता शान्त हो गया और खामोशी पकड कर बैठ गया। यदि यह बिगडता तो बहुत बिगड जाता। लेकिन उस समय गान्धी जी यहाँ ही थे और यह ईश्वर की कृपा थी कि हम बिगाड से बच गए। नही तो हमारे पास कोई सामान नही था। अगर कलकत्ता बिगडा होता, तो सारा हिन्दुस्तान बिगड जाता।

सवाल यह है कि अब हमें क्या करना चाहिए। अभी तक हमारे सामने कितनी ही मुसीबतें है। अभी तक हमारे सामने ऐसी हालत है कि सिन्ध में १० लाख आदमी हिन्दू और सिक्ख पडे है, जिनको हमे वहाँ से निकालना है। क्योकि वहाँ से जो चिट्ठिया आती है, उनमें सब लोग कहते है कि भई, हम वहाँ नही रह सकते। कितना भी हमको विश्वास दिलाया जाए, कितनी भी बातें कही जाएँ कि हम मैनोरिटी (अल्पमत) को ठीक प्रोटेक्शन (संरक्षण) देनेवाले हैं, ठीक हक देनेवाले है, पर किसी बात पर विश्वास नही किया जा सकता।

इधर हमारे यहाँ तो तीन-चार करोड मुसलमान पडे है, उधर कोई हिन्दू या सिक्ख रहनेवाले न हो, तो किस तरह काम चल सकता है? कुछ लोग कहते है कि जो लोग चले आए है, वे पीछे लौट जाएँ, तो अच्छा है। कौन कहता है पीछे जाने के लिए? कौन उन्हे विश्वास दिला सकता है पीछे जाने से उनका जान-माल सुरक्षित रहेगा? वैसा करना हो तो सारा सामान बदलना पडेगा। और उसके लिए सब से पहले दिल साफ करना पडेगा। क्योकि वहाँ एक गवर्नर से लेकर चपरासी तक, जितने भी सरकारी नौकर है, उनमे एक भी हिन्दू या सिख नही रहा है। इन हालतो मे हिन्दू और सिख वहाँ किस तरह से रहेगे? वे न वहाँ फौज में है और न पुलिस में ही। वहाँ के हाई कोर्ट मे भी वे नही है। ऐसी जगह पर अगर आप कहो कि हिन्दू और सिख वापस चले जाएँ तो कौन वहाँ जाएगा? ऐसी जगह पर कोई हिन्दू या सिक्ख कैसे रह सकेगा? उधर जो ऐसी बातें कहते है कि, वहाँ पीछे लौट आए तो ठीक है, वह खाली बाते ही बाते है। वह भी सिर्फ दुनिया को बताने की बात है। यदि सफाई से बात करनी हो तो हमारे साथ बैठ कर फैसला करना चाहिए। हम तो आज यह बात करने के लिए तैयार है कि झगड़ा करने की क्या जरूरत है? हिन्दू और सिक्ख वहाँ नही रहना चाहते, उनको जबरदस्ती रखने की कोशिश न करो। वे इधर आना चाहते है तो उन्हे आने दो। हम को उन्हे इधर ले आने दो। क्यो नही ले आने देते? जबरदस्ती करके उन्हे वहाँ रखने से फायदा क्या है? और इस तरह वे रह भी कैसे सकते है?

तो अभी तक हर एक चीज में झगड़े का बीज बाकी है। काश्मीर मे जो कुछ चल रहा है, उसे तो आप जानते ही है। कल मै इधर आया, और आज अखबार में मैंने जफरुल्ला साहब का एक लम्बा-चौड़ा बयान देखा, जिसमें उन्होने

जूनागढ को भी डाल दिया है । जूनागढ को जफरुल्ला साहब ने सलाह दी थी कि तुम पाकिस्तान में शरीक हो जाओ । अगर वह ठीक था, तो उसका नतीजा जूनागढ के नवाब साहब को भोगना ही था । वह कोई जफरुल्ला साहब को तो भोगना नही था, उन्हे तो खाली बाते ही करनी थी । जूनागढ का फैसला तो अब हो गया । उसमें अब कोई और चीज बननेवाली नही है । यू० एन० ओ० में जाओ, चाहे जहाँ जाओ, उसमे कोई नई चीज नही बन सकती । वहाँ तो जो कुछ होना था, वह हो गया । अब जो जफरुल्ला साहब कहते है कि जूनागढ तो यू० एन० ओ० में जाएगा । आज काश्मीर का मामला हमारी तरफ से यू० एन० ओ० में गया । हमने तो यह इसलिए किया कि भई, इस से तो पाकिस्तान खुली लडाई करे तो अच्छा है। लेकिन वे खुली लडाई नही करते है, दूसरो की मार्फत अपने आदमियो को लडाई में भेजते है। अपने वहाँ से लडाई का सारा सामान और सब हथियार उन्हे देते है । इसके साथ ही अपने यहाँ से रास्ता भी उन्हे देते है। इसमे तो खुल्लमखुल्ला लडाई करें, तो अच्छा है । इसलिए हमने सोचा कि यू० एन० ओ० के पास जाओ । जाके वहाँ से कुछ हो न हो तो और बात है । लेकिन अगर यू० एन० ओ० ने भी कुछ नही किया, तो इस तरह हम बैठे नही रह सकते ।

इस तरह काश्मीर का मामला अलग है और जूनागढ का मामला अलग । जूनागढ यू० एन० ओ० के पास नही जा सकता । जफरुल्ला साहब कहते है कि आपने भी तो रास्ता दिया था । मगर मैं पूछता हूँ कि हमने किस को रास्ता दिया था ? हमने किसी को रास्ता नही दिया । जूनागढ के लोग अपने रास्ते से गए, जिधर वे जाना चाहते थे। हमने किसी को कोई रास्ता नही दिया । हमने किसी को कोई चीज नही दी । जूनागढ में किसी को एक मक्खी भी नही मारनी पडी । किसी के ऊपर कोई हथियार नही चलाना पडा । फिर रह क्या गया ? यहाँ तो खुद दीवान ने आकर कहा कि मेहरवानी करके हमारी हुकूमत ले लो, हम उसे नही चला सकते। जूनागढ का नवाब तो भाग कर कराची जा बैठा । तब फिर जूनागढ की बात ही क्या रह गई ? सो यह चीज तो हो ही गई ।

उसके बाद हमने एक फैसला किया कि भई ! रियासतो में हमें एक काम करना चाहिए । हमने यह कबूल किया कि रियासत के लोग जैसा चाहे, वैसा करें । रियासतो में जो लोकमत हो, इसी प्रकार हमें करना चाहिए ।

हैदराबाद मे, काश्मीर मे, सब जगह जो लोकमत हो, उसी प्रकार का फैसला करने मे हमे कोई एतराज नही है। लेकिन यदि काश्मीर मे आज जिस तरह से चल रहा है, उसी तरह चलता रहा, तो लोकमत करने की क्या जरूरत है? हम लडाई करके काश्मीर को ले लें, तो फिर लोकमत की जगह कहाँ रही? तो हम कहते है आप भी प्लैबिसिट (लोकमत गणना) करो, वहा लोकमत ले लो। लेकिन आखिर कब तक हमारे सिपाही वहाँ मरते रहे, हम पर उनका खर्च पडता रहे और हमारे गाँव-के-गाव जलाए जाएँ, वहाँ हिन्दू और सिक्खो को तबाह किया जाए? यह सब जारी रहा, तो आखिर लोकमत कहाँ रहा? फिर तो हम भी बन्दूक से ले सकते है। तब तो दूसरी तरह से कुछ हो ही नही सकेगा। हमने यह बात भी साफ कर दी कि हम काश्मीर की एक इच जमीन भी छोडनेवाले नही है। वह हम कभी नही छोडेंगे।

आपको यह भी समझना है कि जब हम ऐसी नाजुक हालत मे पडे हैं, तब हमे आप छोटी-छोटी बातो पर तग न करें। आज जब हिन्दुस्तान की यह हालत है, दुनिया की यह नाजुक हालत है, तब हमे क्या करना चाहिए? इस नाजुक हालत मे अगर हम अपनी हुकूमत को ठीक नही चला पाएँगे, अगर उसे चलाने में आप साथ नही देंगे, तो हमारे देश को नुकसान होगा। इसलिए आज आप को केन्द्रीय सरकार का और प्रान्तो में जो हमारी हुकूमतें हैं, उनका साथ देना चाहिए। तो आज आप जो लाखो आदमी यहा जमा हुए है, आप जो कलकत्ता के निवासी है, मैं आप लोगो से बडी अदब से कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान की ऐसी हालत मे आपको हमारा एक मेसेज (सन्देश) देशभर में फैला देना चाहिए। वह सन्देश यह है कि आज देश की हालत बहुत नाजुक है, और उसमे हमें कोई हडताल नही करनी चाहिए, न कोई दूसरा तूफान खडा करना चाहिए। आज तो हम सब को मिल कर काम करना चाहिए।

इधर कुछ लोग कहते है कि भई, हमारे यहाँ सेक्यूलर स्टेट (धर्म-निरपेक्ष सरकार) चाहिए। यहाँ हिन्दुओ का साम्प्रदायिक राज नही होना चाहिए। कौन कहता है कि यहाँ साम्प्रदायिक राज बनाओ? हिन्दुस्तान मे तो आज भी तीन-चार करोड मुसलमान पडे है। यहाँ साम्प्रदायिक राज कैसे हो सकता है? लेकिन एक बात यह है कि हिन्दुस्तान मे जो मुसलमान पड़े

है, उनमें से काफी लोगो ने, शायद ज्यादातर लोगो ने, पाकिस्तान बनाने में साथ दिया था। ठीक है। अब एक रोज में, एक रात में उनका दिल बदल गया, वह मेरी समझ मे नही आता। अब वे सब कहते हैं कि हम वफादार है, और हमारी वफादारी में शका क्यो करते हो? अपने दिल से पूछो! यह बात आप हम से क्यो पूछते है? यह हमसे पूछने की बात नही है।

लेकिन अब मैं एक बात कहता हूँ कि आपने पाकिस्तान बनाया, आपको मुबारक। उसमें हम कोई दखल देना नही चाहते। जो कुछ हो गया, सो हो गया। अब जैसे हम बैठे है, ठीक बैठे है। कोई-कोई कहते है कि हिन्दोस्तान और पाकिस्तान फिर एक हो जाएँ। मैं कहता हूँ कि अब वह सब कुछ नहीं हो सकता। उन्हे वही बैठा रहने दो। जो भाई पाकिस्तान में चले गए है, उनको पाकिस्तान को अच्छा बनाने दो। पाकिस्तान जब स्वर्ग बन जाएगा, तब हम को भी उसकी ठडी हवा लगेगी। यही ठीक है। आप लोग जब ऐसी बात कहते है, तो उनको शका पैदा होती है। ऐसी बात हम क्यो करें? अपने को मजबूत बनाओ, तगडा बनाओ।

पाकिस्तान हमारा पडोसी है। अगर वह मजबूत होता है, तो बहुत अच्छी बात है। उससे हमको कोई नुकसान नही है। वह ठीक है। लेकिन बहुत दफा ऐसा कहा जाता है कि पाकिस्तान मिटाने के लिए, उसको बरबाद करने के लिए उन के दुश्मन लोगों ने कौन्स्पिरेसी (षड्यन्त्र) की है। मैं पाकिस्तान के लीडरो से बार-बार कहना चाहता हूँ कि पाकिस्तान का कोई भी दुश्मन क्यो न हो, मगर अगर कोई कौन्स्पिरेसी है, तो वह पाकिस्तान में ही पडी है। बाहर कही कोई कौन्स्पिरेसी नही है। वह तो वहाँ भीतर ही पडी है। जितने दुश्मन है, सब वहा ही है, इधर कोई नही है। हम तो उनका कोई बुरा नही चाहते है। हम क्यो उनका बुरा चाहें? हमने तो राजी-खुशी से तुम्हारा हिस्सा तुमको दे दिया कि जाओ पाकिस्तान बनाओ। लेकिन अगर कोई हमारी आँख में धूल फेंकने के लिए आए, तो हम कहेगे कि हम इस तरह से नही करने देंगे। अब इस तरह काम नही चलेगा। अब हमारा जो हिन्दुस्तान बाकी बच रहा है, उसको छोड दो। हिन्दुस्तान में हिन्दोस्तानियो को काम करने दो। उसमें आप कोई दखल मत दो। हम आपके काम में कोई दखल नही देंगे।

आप देख लीजिए कि हम ने किस तरह बँटवारा किया। तो जितनी चीज

थी, उस सब चीज में वहुत उदारता से हमने उनको उनके हिस्से से भी ज्यादा देने की कोशिश की। जब हमने उनको रुपया देने का किया, उस समय हमने कह दिया था कि आपको यदि पाँच सौ करोड रुपया चाहिए और इतना हिस्सा लेने का आपका हक न हो, तो हम ज्यादा देने के लिए भी तैयार हैं। लेकिन मैंने लिखकर दे दिया था कि अगर इन रुपयो से आपको काश्मीर में गोली चलानी हो, तो हम इस तरह से रुपया नहीं देगें । हाँ, तुम मे ताकत हो तो ले जाओ। ठीक है। हम खुशी से रुपया तो तब देंगे, जब यह सब फैसला हो जाए। जो आपका रुपया है, उसमें हम कोई दखल नही देगे। हमने आपके साथ मिल कर जो फैसला किया, वह तो एक कन्सेण्ट (रजामन्दी का देना-पावना) डिक्री है। लेकिन रजामन्दी से जो फैसला होगा, वही तो लागू होगा। तो जिस रोज काश्मीर का फैसला हो जाए, उस रोज पैसा ले जाओ। इसी तरह कुछ लोग कहते है कि हमारा पैसा नही देते और जो कुछ आपने फैसला किया, उसमें से पलट जाना चाहते है। हमारी पलटने की नीयत नही है। अगर हमारी यह नीयत होती, तो हम फैसला करते ही क्यो। तब हम कहते कि जाओ कोर्ट मे। हमने इस तरह से काम नही किया। तो मैं बार-बार उन्हे सुनाना चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ हमारी कोई अदावत नही है, और न हम कोई बुराई करना चाहते है। तुम्हारे साथ हमे कोई झगड़ा भी नहीं करना। लेकिन हम यही कहते है कि आप मेहरबानी करके हमें इधर पडे रहने दीजिए, हमें यहा अपना काम करने दीजिए।

इधर मैं आप लोगो से भी कहना चाहता हूँ कि मेहरबानी करके आप आपस मे झगड़ा छोड दीजिए। थोड़े दिन हमें लगकर काम करने दीजिए। यदि परदेशियो ने यहाँ दो सौ साल बिगाड किया, और देश की हुकूमत बुरी तरह से चलाई, तो एक दो साल हमको भी थोडा बिगाड़ कर लेने दीजिए। देखिए तो सही, यहाँ क्या चीज होती है। क्योकि हम यदि बिगाड करेंगे, तो उस बिगाड से भी कुछ अच्छा ही होगा, बुरा नही होगा। यह आप समझ लीजिए। आज हमारा प्रथम काम यह है कि हमारे मुल्क मे ज्यादा माल पैदा हो, इस धरती में से ज्यादा अनाज पैदा हो, हमारे मुल्क मे बहुत से कारखाने बने और कारखानो में बहुत माल पैदा हो। तभी हमारे मजदूर भी तगड़े हो सकेंगे। अमेरिका को देखिए, वह दुनिया का सब से अधिक धनिक मुल्क है। वहाँ मजदूर भी तगड़े है, मालिक भी तगडे है, और सब लोग भी वहाँ तगड़े है।

वहा किसी प्रकार का कोई सकट नही है। इग्लैण्ड में आज मजदूरो का राज्य है। वहाँ भी बार-बार इस प्रकार की स्ट्राइक (हड़ताल) नही चलती। वे भी इसी फिक्र में है कि उनके कारखाने किस तरह से ज्यादा चलें और ज्यादा-से-ज्यादा माल किस तरह से पैदा करें।

हिन्दुस्तान की किस्मत में एशिया की लीडरशिप के लिए लियाकत चाहिए। आज हमें कितनी ही प्रकार की चीजो के लिए बाहर जाना पड़ता है। बाहर से भी जरूरत की चीजें मिल नही रही हैं। सब जगह से हम तग हो रहे है। इस हालत में हमें अपने ही मुल्क में ज्यादा से ज्यादा माल पैदा करना है। मगर वे कहते है कि "गो स्लो"! (धीरे चलो)। जरा धीमे पैदा करो। यानी हड़ताल करो। इस प्रकार का काम करने से तो न मजदूरो का भला होगा और न देश का भला होगा। दुनिया कहेगी कि एक बन्दर के पास एक हीरा हाथ में आया, तो बन्दरने समझा कि कोई फल है। हीरा हाथ में पकड़ वह उसे खाने लगा। मगर वह हीरा था, जब वह बन्दर के दाँतो से न टूटा, तो उसने यह समझ कर उसे फेंक दिया कि वह तो पत्थर है। हीरे का दाम तो जौहरी ही समझ सकता है। इसी प्रकार अब देखना यह है कि हमारे हाथ में आज जो स्वराज्य आया है, उसका व्यवहार हम बन्दर की तरह करेंगे या जौहरी की तरह।

जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है, हमने तो परदेशियो की हुकूमत को हटाने का ठेका लिया था। वह हमने पूरा किया और आज हमारी जिन्दगी पूरी होने का भी समय आ गया है। अगला बोझ तो अब इन नौजवानो पर पड़ने वाला है, जो कहते है कि हमारी लीडरशिप पुरानी हो गई। मैं नौजवानों से कहता हूँ कि अगर तुम ठीक तरह से यह बोझ नहीं उठाओगे, तो आप भी मर जाओगे और मजदूर भी मर जाएँगे। आप को इस प्रकार काम नही करना चाहिए, जिस से हिन्दोस्तान का नुकसान हो। आज जरूरत इस बात की है कि हम ज्यादे-से-ज्यादा और अच्छी-से-अच्छी आर्मी (सेना) रक्खे। ताकि दुनिया के किसी मुल्क से हमें भय न रहे। यह काम सारा देश मिल कर ही कर सकेगा।

अब आप लोगो ने जिस प्रेम से मेरा स्वागत किया है, जिस मुहब्बत से मेरी बात सुनी है, उसके लिए मैं आपको मुबारकबाद देना चाहता हूँ। आप लोग इतने प्रेम से और इतनी बड़ी सख्या में यहाँ जमा होते है। उसका मतलब

मैं यह भी समझता हूँ कि आप लोगो में कांग्रेस के प्रति पूरी वफादारी और भक्ति है। आप के प्रान्त का जो टुकड़ा हुआ है, उस की चोट लगते हुए भी आपको हम पर इतना विश्वास है कि ये लोग जो काम करते है, समझ-बूझ कर आप की भलाई के लिए ही करते हैं। कांग्रेस आपके हित के लिए ही काम करती है। सो मैं आप को भी विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि बंगाल का टुकडा हो जाने से जितनी चोट आप को लगी है, इससे ज्यादा नही तो, इतनी ही चोट हम को भी लगी है। आप ऐसा कभी न समझे कि हमें चोट नही लगी। लेकिन जब तक फल पका न हो, तब तक उसे खाने में मजा नही। जब फल पकता है, तभी उसमे मिठास आती है।

मैंने जैसा कहा, जब तक पाकिस्तान को यह समझ न आ जाए कि यह काम बुरा है, तब तक हमें उसको बुलाना नही है। तो धीरज रखो। धीरज रख कर अपना काम ठीक करो। दूसरे के सामने न झुको और जो चीज हो गई है, उसको याद मत करो। आगे का रास्ता सोचो। आगे की मंजिल काटने के उपाय सोचो। यह करोगे तो पीछे वाला अपने आप ठीक हो जाएगा। फिर उसमे कुछ भी करने की कोई जरूरत आपको नही रहेगी। हमने आगे की भी सोची है, पीछे की भी सोची है। और सोच-विचार कर हमने जो निष्कर्ष निकाला है, वह मैं आपको कहना चाहता हूँ। हमने आज देश का दो टुकडा न किया होता, तो हिन्दुस्तान का टुकडा-टुकडा हो जाने वाला था। पाकिस्तान तो हुआ, उससे भी बुरा राजस्थान हो जाने वाला था। रियासतो का भी टुकडा करने का था कि अलग-अलग एक राजस्थान बनाओ, या छोटे-छोटे राजाओं को मिला कर अनेक राजस्थान बनाओ। तब ऐसी बहुत सी बाते चलती थी। लेकिन अब हम उन सब चीजो मे से निकल आए है। आज जो हिन्दुस्तान बाकी बच रहा है, वह भी बहुत बड़ा मुल्क है। इतने बडे मुल्क को हम ताकतवान बनाएँ, तो जितने टुकडे हमारे आसपास पड़े है, वे सब हमारी छाया मे चले आएँगे। आप को कोई फिक्र करने की जरूरत नही है। लेकिन इस चीज में आप को हमारा साथ देना पडेगा।

सारा देश अगर आज मिल कर काम न करेगा, देश की जनता अगर हमारा साथ न देगी, तो हमारी नौका तूफान में पड जाएगी। तो बंगाल के नौजवानो और कार्यकर्ताओ से मेरी अदब से प्रार्थना है कि जरा हम पर भरोसा रखो, जरा धीरज से और डिसिप्लिन (नियन्त्रण) से काम लो। दुनिया देख

रही है कि हिन्दुस्तान को जो आजादी मिली है, उस में वह किस तरह से चलाता है। दुनिया के पास हमें अपना तमाशा नही बनाना है। आज सारी दुनिया के बडे-बडे लोग एम्बेसेडर (राजदूत) बन कर इधर आकर बैठे हैं। वे सब देखते हैं कि हम क्या कर रहे हैं।

आज तो दुनिया बहुत छोटी बन गई है। आज सारी दुनिया हमारी तरफ देख रही है। हमें इस तरह से काम करना चाहिए कि दुनिया में हमारी इज्जत बढे और दुनिया के लोग यह समझें कि हम लोग समझदार हैं। वे ऐसा समझें कि उन की मुहब्बत की हमें जरूरत है।

मैं फिर एक दफा आपका शुक्रिया करता हूँ और उम्मीद करता हूँ कि मैंने जो चन्द बातें आपसे कही हैं, उनको ठीक तरह समझ कर आप उन पर अमल करेंगे। ईश्वर आपका भला करे।

---

(२)

लखनऊ

१८ जनवरी, १९४८

वहनो और भाइयो !

मेहरवानी करके अव कोई आवाज न करें, सव भाई-वहन शान्त हो जाएँ। वहुत दिनो के वाद आप लोगो से मिलने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ, इससे मुझे वहुत खुशी हुई है। आप लोगो से मिलने की ख्वाहिश तो वहुत दिनो से थी, लेकिन हम लोग ऐसी मुसीवतो मे फसे रहे कि किसी जगह पर आ-जा नही सकते थे। लेकिन इस वार चन्द दिनो के लिए मुझे आसाम और कलकत्ता जाना था, हमारे प्रधान मन्त्री पन्त जी का एक सन्देश मेरे पास आया कि कम-से-कम एक रोज के लिए सव से मिलने के लिए मै लखनऊ रुकू। मैने कवूल कर लिया कि एक रोज के लिए आऊँगा। लेकिन मेरा जी आज भी दिल्ली में पडा है, क्योकि आजकल वहा इतना काम रहता है कि हम वहा से हट नही सकते। तो भी मै आया हूँ और आप लोग मेरी कुछ वात भी सुनना चाहते है, तो ठीक है कि मै कुछ वाते आप से कहूँ।

आप का यह लखनऊ शहर हमारे मुल्क का एक वहुत पुराना शहर है, और यह हिन्दू और मुसलमान दोनो की मिश्रित कल्चर (संस्कृति) का एक केन्द्र स्थान है। इस शहर की पुरानी वाते हम सदा सुनते रहते है। लखनऊ की पुरानी निशानियो को देख कर हम मगरूर भी होते है। पिछली आजादी

की लडाई में इस शहर का जो हिस्सा है, जो इतिहास है, वह देख कर भी हम मगरूर होते हैं। साथ ही आज तक हम इस बात को याद करते है कि इसी शहर में से यह बात निकली थी कि हम हिन्दू और मुसलमान एक कौम नही हैं, एक नेशन (राष्ट्र) नही है, एक प्रजा नही हैं,—हमें अलग-अलग हिस्सा करना चाहिए। यही कहा गया था कि हमारी जबान अलग है, हमारी सस्कृति अलग है, हमारा सब प्रकार का काम अलग-अलग है, इसलिए हमें अलग होना चाहिए। हिन्दोस्तान के सारे मुसलमानो के ऊपर ज्यादातर लखनऊ के मुसलमानो का ही असर पडा और पडता रहा। दूसरी ओर हमारे जो नेशनलिस्ट (राष्ट्रीय) मुसलमान थे, वे भी इसी प्रान्त के थे। उन लोगो ने काफी विरोध किया और काफी मुसीबतें उठाई। हिन्दुओं और नेशनलिस्ट मुसलमानो में बहुत मुहब्बत थी और आज भी है। वे चन्द लोग है और परेशान है। उनकी तकलीफ और उनकी परेशानी हम उनके चेहरो पर देखते है और तब हमको दर्द होता है।

लेकिन हमारे जो भाई मुस्लिम लीग के लीडर थे, उन लोगो ने यह बात सोची कि हमें तो अलग ही होना है और इसी में मुसलमानो का कल्याण है, मुसलमानो की रक्षा है। और वे कहते रहे कि हमें 'सैपरेट इलेक्शन' (पृथक निर्वाचन) से कोई फायदा नही, उससे हमारी कोई रक्षा नही होती। यदि हमको कोई वेटेज (अधिक सीटें) दिया, तो उससे भी हमारा कोई काम नही होता। इसी तरह से, हमको और छोटी-मोटी चीजे दी जाएँ, तो उनसे भी हमें कोई फायदा नही होता। हमको तो हमारा अलग हिस्सा चाहिए। हिन्दुस्तान के लीगी मुसलमान यही बात कह कर घूमने लगे और उनका काफी प्रचार हुआ। जो नौजवान मुसलमान कालेजो में पढते थे, उन पर भी इन बातो का प्रभाव हुआ और उन लोगो ने मान लिया कि यही बात सही है। हमें कबूल करना चाहिए कि बहुत से मुसलमानो के दिल में यह ख्वाहिश पैदा हुई कि अगर हमारा राज्य अलग हो जाएगा, तो हम स्वर्ग में चले जायँगे। हम उनकी ख्वाहिश को रोक नही सके, दबा नही सके और हमारे बीच एक बहुत बडी दीवार उठ खडी हुई।

काग्रेस का यह सिद्धान्त था कि हम इतनी सदियो से एक साथ रहे, चाहे किसी तरह भी रहे। आखिर बहुत से मुसलमान, अस्सी फी सदी बल्कि नब्बे फीसदी मुसलमान, असल में तो हमारे में से ही गए थे और उन्होने धर्मान्तर कर लिया था। धर्मान्तर करने से कल्चर कैसे बदल गई? दो नेशन्स कैसे बन

गई ? यदि गान्धी जी का लडका मुसलमान हो गया तो वह दूसरी नेशन का कैसे हो गया ? और चन्द दिनो के वाद वह फिर हिन्दू वन गया, तो क्या उसने नेशन वदल ली ? नेशन वार-वार थोडे ही वदली जाती है ? इस तरह से क्या जाति ही वदल जाती है ? तो हमने समझाने की वहुत कोशिश की। मगर किसी ने नही सुना और जव हम समझे कि मुल्क वरवाद हो रहा है। उसके वाद वे १६ अगस्त, १९४६ को कलकत्ता में एक डायरेक्ट ऐक्शन डे रखा गया और कहा गया कि हम तो सीधी चोट लगाएँगे और कोई काम नही करेंगे, जव तक हिन्दुस्तान के टुकडे न हो जाएँ। उस दिन कलकत्ता मे वहुत सी खून-खरावी हुई, वरवादी हुई। तव हमने सोचा कि इस तरह से सारे मुल्क का हाल हो जाए, उससे तो अच्छा है कि अलग कर दो। वह अपना घर सम्भाले और हम अपना सभाल ले। हमने सोच लिया कि अगर यही हाल रहा तो जो परदेसी-हुकूमत हमारे वीच मे पडी है, वह हटनेवाली नही है। हमारा जिन्दगी का काम ही यही था कि जिस किसी तरह से परदेसियो की हुकूमत को इधर से हटा दे, पीछे देखेंगे कि क्या होता है। तो हमने कवूल कर लिया कि ठीक है भाई, आप अलग अपना हिस्सा ले लो।

उसका यह मतलव नही कि हम दिल से राजी थे। लेकिन हम समझ गए कि हिस्सा-वाँट चाहे कितनी भी वुरी हो, लेकिन जव उनको समझाना मुश्किल है, तो उनको लेने दो। सो हमने दे दिया। जव दे दिया, तो हम यह समझे थे कि अव मुल्क मे पूरी शान्ति होगी और हम अपना काम करेंगे। हमारे दिल में भी यही ख्वाहिश थी, और आज भी है कि वह जो अपना घर अलग वनाकर वैठे है, वे तगडे हो जाएँ, अच्छे हो जाएँ और अपना कार्य करें। वे अपने मुल्क को उठाएँ और जैसी उनके दिल में ख्वाहिश थी, वैसा ही स्वर्ग वे अपने पाकिस्तान को वना दें। इसी से हमको खुशी होगी। क्योकि आखिर तो वह हमारा भाई है। गलत समझ से उसने जो काम किया है, उससे भी वह तगडा हो जाए, सुखी हो जाए, तो आखिर वह हमारा पडोसी है, हमारा भाई है। वह सुखी होगा, तो अच्छा है। लेकिन हमने यह कभी नही सोचा था और हमें कभी ऐसी उम्मीद भी नही थी कि अलग होने के वाद भी वह हमे चैन मे नही वैठने देंगे। अव वे वार-वार कहते है कि आप लोग हमको चैन से वैठने नही देते है, और पाकिस्तान को तवाह करने के लिए, उसको वरवाद करने के लिए, हिन्दुस्तान मे शरकत (कौन्स्पिरेसी) हो रही है। तो मै उन लोगो को वार-

वार कहता हूँ कि पाकिस्तान का अगर कोई दुश्मन है, तो वह पाकिस्तान के भीतर है, बाहर कोई नही। आप अपने को सभाल लो, हमारे यहाँ पाकिस्तान का कोई वुरा नही चाहता। हम तो आप का भला ही चाहते है।

कभी-कभी कोई कहता है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान आखिर एक हो जाएँगे। मै यह नही कहता हूँ। मै कहता हूँ कि अव अलग ही रहो। आपको वहुत नमस्कार है। आप वही बैठे रहो। हमें आना नही है। क्योंकि हमने वहुत अनुभव कर लिया है। आप अपनी जगह बैठ कर देख लीजिए। आप अच्छे हो जाएँगे, तो हम खुश रहेंगे। लेकिन मेहरवानी करके हमको अपना काम करने दीजिए। वह तो नही होता है, और पाकिस्तान कभी सिक्खो पर कसूर का वोझ डालता है, कभी हमारे पर कसूर का वोझ डालता है, और कभी गवर्नमेंट पर। लेकिन अपनी गलती अभी महसूस नही करता है। जो आदमी अपनी गलती महसस नही करता, उसका भला कभी नही हो सकता। पाकिस्तान गिरेगा, तो वह अपने पाप से ही गिरनेवाला है, हमारे गिराने से कोई नही गिरेगा।

तो अब आप देखें कि जव हमने फैसला किया कि अलग-अलग दो हिस्से कर दिए जाएँ, तो उसके वाद क्या हुआ ? उसके वाद जो कार्रवाई हुई, उसमें हमारा दोष नही है, ऐसा मै नही कहता। हमारा भी पूरा दोष है। लेकिन जो दोष उनका है, वैसा हमारा दोष नही है। और आज भी हमारी ख्वाहिश है कि दगा-फसाद न हो। क्योकि हमारे यहाँ चार साढे-चार करोड मुसलमान पड़े है और उनके लिए हिन्दुस्तान के सिवा कोई दूसरी जगह नही है। उनमें से वहुत-से मुसलमानो के साथ हमारी जिन्दगी भर की मोहव्वत है। उनके साथ हम दगावाजी नही करना चाहते। क्योकि जो कोई छोटी-मोटी चीज के लिए अपने मित्रों के साथ दगावाजी करता है, वह कभी कोई वडा काम नही कर सकता। उधर पाकिस्तान के मुसलमानो के अखवार आप देखे। 'डॉन' रोज रोज जो पढते है वे जरा देखें, वहाँ के और अखवार देखें। अव वे कहते है कि मुसलमानो का सव से वडा दुश्मन मै ही हूँ। मेरा ही नाम वे लेते है।

एक समय ऐसा भी था जव कि ये सव कहते थे, खुद कायदे-आजम भी कहते थे, वाकी सव लोग भी कहते थे कि गान्धी मुसलमानो का एनिमी न० १ (पहले नम्वर का शत्रु) है। वह अव मुसलमानो का सब से वडा दोस्त हो गया है। मुसलमानो का अगर कोई परम मित्र और रक्षक है तो गान्धी जी

है। अब मेरा नम्बर वहाँ रख दिया। क्यो रक्खा ? क्योकि मै साफ बात कहता हूँ। मै छिपाता नही हूँ। उधर अगर कोई बुरी चीज करेगा तो उसका बुरा असर इधर भी पडेगा। मै कहता हूँ कि भाई यदि आप लोग हमको चैन से काम करने देंगे, तो इधर मुसलमानो को तकलीफ नही होगी। यो भी इधर पूरी शान्ति रखने की कोशिश हम करेंगे, क्योकि कोशिश करना हमारा फर्ज है, धर्म है। अगर हम अपने फर्ज को पूरा न करें तो हम ईश्वर के गुनहगार बनते है। सो कोशिश तो हम करेंगे। लेकिन अपनी कोशिश मे हम पूरे कामयाब नही होगे, जब तक आपका कर्म ठीक नही होगा। तो आपको अब किस ढग से चलना चाहिए ? क्योकि आप तो कहते थे कि अगर आप को पाकिस्तान मिल जाए, तो आप को पूरा प्रोटेक्शन (सुरक्षा) मिल जाएगा। अब जिन लीग वाले मुसलमानो ने इधर से यह काम शुरू किया था, यही लखनऊ सारे हिन्दुस्तान के मुसलमानो के कल्चर का केन्द्र था, उन्ही लीडरो से मै पूछता हूँ कि अब क्या प्रोटेक्शन देते है ? इधर हिन्दुस्तान में जो मुसलमान है, उनकी हालत देखें, आप उनका दिल देखे, उनका चेहरा देखे। हमको तो दर्द होता है। आपको नही होता है, उससे मुझे ताज्जुब होता है कि आपको क्या हुआ है। आप तो वहा जाकर बैठ गए। लेकिन इन लोगों का कुछ सोचा कि उनकी क्या हालत है ? उन्हे आपने हम पर छोड दिया। ठीक है, छोड़ दिया। हम तो कोशिश करेगे। लेकिन वहा बैठ कर भी आप हम को कुछ चैन लेने देगे, कि वहाँ से भी तकलीफ करते ही रहेंगे ?

यह तो ठीक है कि खूब मार-पीट हुई। परन्तु चाहिए तो यह कि जो कुछ हो गया है, उसे हम भूल जाएँ। उन्होने भी बहुत बुरी तरह काम किया और हमने भी बहुत बुरा काम किया। दुनिया में हमारी बदनामी हुई, जगत के सामने हमें सिर झुकाना पडा। जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ था, तब दुनिया में हमारी इज्जत बहुत बढ गई थी। लेकिन आज हम बहुत गिर गए है। तो यह जो नुकसान हुआ, उसे तो हमे पी जाना चाहिए। ठीक है, जो कुछ हुआ, सो हुआ। लेकिन तुमको यह क्या जरूरत थी कि बाकी हिन्दुस्तान में घुसने की कोशिश करो। आप क्यो जूनागढ के दरवाजे पर आ बैठे ? क्या जरूरत थी आपको ? वहाँ तक कहाँ से आया पाकिस्तान ? आप के कहने से ही तो हिन्दोस्तान के इस तरह दो टुकड़े बनाए गए। उसके बाद और भी टुकड़े करने हो, तो मैदान में खुली बातें करो। इस तरह से क्यो करते हो ?

जूनागढ के बारे में नवाब साहब को सलाह दी गई कि आप पाकिस्तान मे शरीक हो जाओ, तो आपको स्वर्ग मिल जाएगा। वह वहाँ मिल गया। अब बेचारा कराची जाकर कैदी बना बैठा है। अब उसके दिल की हालत पूछो। खुदा को याद करता होगा। उस से पूछो कि जूनागढ मे, हिन्दुस्तान में, जेल में रहना अच्छा है, या पाकिस्तान के स्वर्ग में ? हमने बहुत कहा कि यह पाकिस्तान का काम अच्छा नही है। हम को चैन से बैठने दो। आप अब अपना काम करो। आपके पाकिस्तान के एरिया (क्षेत्र) में जितनी रियासतें है, बहावलपुर है, कलात है, और है, उनमें चाहे जो कुछ करो। हम उसमें नही पडेंगे। पर उस समय हमारा कहना नही माना। अच्छी बात है। हम समझे कि जूनागढ में गडबड कर वे समझ जाएँगे। लेकिन फिर उन्होने काश्मीर पर अड्डा लगाया। तब फिर हमने पूछा कि भाई आप काश्मीर में क्यो जा रहे है ? तो कहने लगे कि हम तो वहा कुछ करते नही। काश्मीर में तो एक आजाद गवर्नमेंट बनी है, जिसे काश्मीर के मुसलमान चला रहे हैं लेकिन वह बात ज्यादा दिन नहीं चली। असली सब बात खुलने लगी। वहाँ फ्रंटियर (सरहद) के मुसलमान गए और उन्हे पाकिस्तान की तरफ से हथियार, कपडा, खाना-पीना और सब सामान दिया गया। उन को मोटर लारी और लडाई की सब चीजें भी दी गई। उनको लडाई की तालीम देने के लिए पाकिस्तान के अफसर भी भेजे गए। तब हमने पूछा कि यह क्या कर रहे हो ? खुली लडाई क्यो नही करते ? तो कहने लगे, हम कुछ नही करते है।

इतना होते हुए भी हमने कोई झगडा नही किया। हमारी तरफ से, हिन्दुस्तान की सरकार की तरफ से, सारी दुनिया की बडी-बडी सल्तनतो की जमायत को, जिसे यूनाइटेड नेशन्स कहते है, लिखा गया कि भाई, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनो देशो की सरकारें आपके यहाँ शरीक है, आप की सस्थाओ पर है, आप के सगठन में शामिल है, इस से आपके कानून से हम सीधी लडाई नही कर सकते। तो आप उसका फैसला कीजिए कि इस लडाई में पाकिस्तान का कितना हिस्सा है। जब हमने यूनाइटेड नेशन्स को इस तरह से लिखा, तब उनकी तरफ से जफरुला साहब कहते है कि वहा क्यों गए ? बाहर जाने की क्या जरूरत है ? अपना मैल और मैला कपडा बाहर धोने की क्या जरूरत है ? वह धोना हो तो अपने घर में धोओ। अभी चार महीनो तक हम पजाब में अपना मैला कपडा धोते रहे तो पूरा नहीं हुआ, अभी कहते हैं कि घर में अच्छी धोओ।

अच्छी वात है। अव अपनी गवर्नमेंट को मै सलाह दू कि अजी जफरुल्ला साहव कहते है कि आप वहा क्यो गए? हिन्दुस्तान की सरकार को वहा जाने की क्या जरूरत थी? वहां नही जाना चाहिए था। आप को अपनी अरजी वापस ले लेनी चाहिए। फिर आपस में लड लेना इस से अच्छा है। ठीक है। यदि वह चाहते हैं तो हम अपनी अरजी वापस ले लेगे। मगर हमें वताइए कि दूसरा क्या रास्ता होगा? फिर तो हमें स्यालकोट और लाहौर होकर जाना पडेगा। यदि वह पसन्द हो, तो फैसला करना अच्छा है। लेकिन इस तरह से कहना और वार-वार सरासर झूठ वोलना मेरी समझ मे नही आता। यह किस तरह का पाकिस्तान चलेगा? तो मै कहता हूँ कि पाकिस्तान गिरेगा तो, इसी तरह से गिरेगा।

आपको गिराने की हमारी ख्वाहिश नही है। लेकिन वार-वार आपकी तरफ से जो वातें कही जाती है, वे मेरी समझ में नही आती। जव हम आपस मे वैठ कर वात करते है, तो कहते है कि हां भाई, रेडर्स (आक्रमणकारी) लोग काश्मीर में गए है, वे फ्रंटियर से गए है। उनको हम समझाने की कोशिश करते है, लेकिन वे मानते नही है। आज तो हम कितना भी उन्हे कहे, लेकिन वे लोग नही मानेंगे। उधर वाहर दुनिया से कहते है कि हम कुछ भी नही जानते। हमारा इसमें कुछ भी हिस्सा नही है। हमने कहा कि तुम्हारे घर में से होकर वे उधर चले जाते है। तुमने वहां से उन्हे रास्ता करके क्यो दिया? आप सव सामान उन्हे क्यों देते हो? यह क्या वात है? तो वह कहते हैं कि तुम हमको कुछ दो, तो हम उनको समझा दें। अव इस तरह से जो हालत वन गई है, उसके लिए मै हिन्दुस्तान के मुसलमानो से एक सवाल पूछना चाहता हूँ। आप लखनऊ में जमा हुए। आपने वहुत वड़ा जलसा किया। ५६ हजार मुसलमान यहा जमा हुए। आप सव लोगो की अगर यह राय है कि पाकिस्तान काश्मीर में जो कुछ कर रहा है, वह गलत है, तो क्यो आपकी जवान खुलती नही है? आप क्यो वोलते नही हो कि यह गलत रास्ता है? जव तक मुसलमान हिन्दुस्तान में इस तरह से नही वोलेगे, तव तक हमारा काम विलकुल मुश्किल हो जाता रहेगा। जितने वहा वुरे काम होते है, उनके वारे मे यदि हिन्दुस्तान के मुसलमान नही वोलेगे, खुले दिल से उसे वुरा नही कहेगे, तो फिर उन्हे यह शिकायत नही करनी चाहिए कि उनकी वफादारी की तरफ किसी को अन्देशा है। तव हम से पूछने की कोई जरूरत नही है।

तो मैं आपसे बडी अदब से कहना चाहता हूँ कि मैं मुसलमानों का दोस्त हूँ और दोस्त का काम है कि सच्ची बात कह दे और धोखाबाजी न करे। तो मैं कभी मुसलमानो के साथ गलत बात नही करूँगा। मैं साफ-साफ कहना चाहता हूँ कि अब हिन्दुस्तान के मुसलमानों की वफादारी का वक्त आया है। उनमें से प्रत्येक के दिल मे हिन्दोस्तान के लिए पूरी-पूरी मुहब्बत हो और वह समझे उसे हिन्दुस्तान में ही रहना है। उन्हे समझ लेना चाहिए कि पाकिस्तान से उनका कल्याण नही होनेवाला है। पाकिस्तान उनकी रक्षा नही कर सकता। तब उनका कर्तव्य हो जाता है कि जिस नाव में वे बैठे है, उसी नाव का हित सोचें, क्योकि उन्हें भी उसी नाव से चलना पडेगा। नाव चलाने में उन्हे साथ भी देना पडेगा। तो जिस तरह से पाकिस्तान के लोग कर रहे है, उसमें उन्हे ठीक-ठीक, सीधी बात कहनी पडेगी कि यह रास्ता गलत है। उस रास्ते से जाने में कोई फायदा नही है। अब यह कहा जाता है कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में यदि लडाई होगी, तब उसमें भी साथ देंगे। अरे भाई! वहाँ तक तो न जाओ, तो खुली बात तो करो। पीछे हम देखेंगे कि क्या बात होती है। लडाई होगी, तब देखा जाएगा कि कौन किसका भरोसा करता है।

सच्ची बात तो यह है कि दो घोडो पर सवारी नही हो सकती, एक घोडे पर ही सवारी होगी। अपना घोडा पसन्द कर लो। लखनऊ ही के कई लोगो ने अपना घोडा पसन्द कर लिया और समझ लिया, दो घोडों की सवारी नही चलेगी। कांस्टीच्यूएंट असेम्बली में जब हमारा कांस्टीच्यूशन बन रहा था, तब वहाँ लखनऊ मुसलिम लीग के एक लीडर थे, उनसे मैंने साफ-साफ कह था कि आप इधर सेपरेट इलेक्ट्रेट (पृथक् निर्वाचन) और रिज़र्वेशन (सुरक्षित स्थानो) की बाते करते हैं। यही बातें करके आपने हिन्दुस्तान के टुकडे कराए। अब जो बाकी हिन्दुस्तान बचा है, उसका भी आपको टुकडा कराना है क्या? यही इरादा हो, तो अब मेहरबानी करके आप पाकिस्तान मे चले जाइए। आप के इधर रहने से कोई फायदा नही है। तब वह पाकिस्तान चले गए। यह ठीक हुआ। अच्छी बात है। अब कौन कहता है कि तुम पीछे लौट आओ। भाई, हम भी यह नही चाहते है, कि पाकिस्तान और हिन्दोस्तान अभी जल्दी-जल्दी मिल जाएँ। यह तो तब कह सकते है, जब कि पाकिस्तान का स्वाद खाते-खाते दाँत खट्टा होकर गिर जाएँ, तब आगे की बातें करेंगे। अभी तो आप वहाँ ही बैठो। लेकिन हमको हमारा काम करने दो।

अगर हम इस तरह से गाफिल रहेंगे, तो हम भी मार खाएँगे। हम कहते हैं कि हमारे यहा जो चार करोड़ मुसलमान पडे हैं, उसके हम ट्रस्टी हैं। तो मैं हिन्दू भाइयो से, जो हमारे आर० एस० एस० वाले नौजवान भाई हैं, उनसे भी कहना चाहता हूँ कि आप लोग कुछ दिमाग से काम लीजिए, अक्ल से काम लीजिए और समझ से काम लीजिए, जिससे हमारा भी काम हो जाए और दुनिया मे हमारी बदनामी भी न हो, इस तरह से हमें काम करना चाहिए। यदि आपको लडाई की ख्वाहिश हो, और आपको लडना ही हो तो उसके लिए लडाई का मैदान पसन्द करना चाहिए, लडाई का मौका पसन्द करना चाहिए और लडाई का सामान पूरा करना चाहिए। बेमौके से जो काम करता है, जो बेवकूफी से काम करता है, वह अपना सारा काम गँवा देता है। तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि जो चार करोड मुसलमान इधर पड़े हैं, उनके साथ छेड़खानी कभी न करो। जितनी छेडखानी आप करेंगे, उतना ही हमारे ऊपर बोझ पडता जाएगा, क्योकि एक तो उसके लिए हमें ज्यादा पुलीस रखनी पडती है। हमारे सँभालने की चीज़ तो वहाँ पडी है, इधर क्यो सँभालते हो ? इनको इधर आराम से रहने दो। जिनके दिल में पूरी वफादारी नही होगी, वे आप ही चले जाएँगे, वे इधर रह ही नही सकते। इधर इतनी गरमी होगी कि वह हट जाएगा, इधर रहेगा ही नही। लेकिन अगर आप उनको इस तरह से बार-बार और बुरी तरह से परेशान करते रहोगे, तो जो हमारे साथ हैं, वे भी चले जाएँगे। वह हमारे लिए कभी अच्छा नही होगा।

यदि एक भी ऐसे मुसलमान को, जो हिन्दोस्तान के प्रति वफादार है और जिसने हमारी आजादी की लडाई मे हमारा साथ दिया और हमारे साथ मुहब्बत से रहा है, यहाँ से जाना पडेगा, तो उससे बडी शर्म की और बात कोई नही होगी। यह बहुत ही बुरी बात है। यह चीज़ हमे समझनी चाहिए। लेकिन जितने मुसलमान इधर दो घोडो पर सवारी करनेवाले हैं, उनमे से एक-एक को यहा से जाना पड़ेगा, उनमे से कोई इधर रह नही सकेगा। तो हमे इस तरह से काम करना है कि हिन्दोस्तान मे रहनेवाले मुसलमानो से साफ-साफ कह देना है कि आप कहते है कि हम वफादार हैं, तो जबान से कहने भर से काम नही चलेगा। लीगवाले बार-बार कहते हैं, पाकिस्तान गवर्नमेंट बार-बार कहती है कि इधर जो माइनोरिटी (अल्पमत) है, हम उसकी रक्षा करने

के लिए पूरा इन्तजाम करेगे। लेकिन जो लोग वहा रहते है, उनसे आप पूछिए कि वे कैसा इन्तजाम करते है।

आज सिन्ध मे रहनेवाले हिन्दू हमारे पास चिट्ठी लिखते है कि वे बहुत दुखी है। दो महीना हो गया, मैंने बम्बई से कुछ जहाज भेजने का बन्दोबस्त भी किया था और कहा था कि इधर चले आओ। उस समय पर उन लोगो में आपस में कुछ फूट हुई, कुछ हमारे अपने लोग भी कहने लगे कि नही, सिन्ध में कोई दिक्कत नही है, वहाँ ही रहो। सिन्धी मुसलमान भी यही चाहते है। ठीक बात है। लेकिन सिन्धी मुसलमान की खुद वहाँ चलती ही कहाँ है। वहाँ तो लखनऊ के मुसलमान की या तो पजाब के मुसलमान की चलेगी, वहाँ सिन्धी मुसलमान की क्या बात चलेगी ? तो पाकिस्तान तो इस प्रकार बना है कि उसमे कानून से काम नही चलेगा, जिसमे किसी एक सत्ता से काम नही चलेगा, वहाँ तो हर आदमी नवाब हो जाएगा और अपनी-अपनी मर्जी से, जैसा दिल मे आएगा, वैसा काम चलाएगा। कोई उसे कब्जे में नही रख सकता है। आज ऐसी हालत वहाँ शुरु हो गई है। तो वहा से अब हिन्दू लोग लिखते है कि उनके लिए वहा रहना एक मुसीबत हो गई है। वे वहाँ से निकलना चाहते है, वहाँ रह नही सकते। तो आठ-दस लाख हिन्दुओ को हमें वहाँ से निकालना है। इधर कई लोग कहते है कि इतने ही मुसलमान इधर से निकालो। यह ठीक बात नही है। इस रास्ते से हमारा काम नही होगा। यदि हमे पाकिस्तान के साथ हिसाब करना है, तो वह इधर के मुसलमानो के साथ नही किया जा सकता। यदि हमारे आदमी वहाँ न रह सके और वहाँ उन्होंने एक कम्यूनल (साम्प्रदायिक) राज बना दिया है, तो उन्हे बनाने दो। हम वैसा क्यो करे ? उनको लडने की ख्वाहिश हो, तो हम तीस करोड पडे है। हमारा मुल्क बहुत बडा है। हमारी धरती मे इतना धन पडा है, हमारे पास इतने साधन है। लेकिन अगर हम पागल हो जाएँ तो कोई काम की बात नही कर सकेंगे। लेकिन अगर हम ठीक रास्ते पर चले और अपने दिमाग पर काबू रक्खे तो हमारे पास इतना सामान है कि पाकिस्तान को लडने की ख्वाहिश भी हो तो भी वह हमारा कुछ न बिगाड सकेगा। वह तो अभी बच्चा है। कल ही तो उसका जन्म हुआ है। वह क्या करेगा ?

मैं देखता हूँ कि कई नौजवानो मे लश्करी (लडाई) की तालीम लेने की ख्वाहिश है। यह बहुत अच्छी बात है। लश्करी तालीम लेना, वह आज की हालत

में, मैं जरूरत की चीज भी समझता हूँ। यदि हिन्दुस्तान गान्धी जी के रास्ते पर चला होता, (जैसा कि हमे उम्मीद थी और हमारी ख्वाहिश भी थी कि हम उस रास्ते पर चलें) तो दूसरी बात थी । लेकिन हम उस रास्ते पर चल नही सके। अव अगर उनके रास्ते पर भी न चलें और दुनिया के रास्ते पर भी न चलें, तो हम खड्ड मे गिर जाएँगे। इसलिए हमें एक रास्ता पकड लेना है। तो आज हिन्दुस्तान की और दुनिया की हालत ऐसी है कि हमे पुलीस और मिलिटरी के ऊपर भरोसा करना पडता है । इस हालत मे हमारी पुलीस और हमारी मिलिटरी पक्की होनी चाहिए और हमारे नौजवानो को उसकी तालीम मिलनी चाहिए। उसके लिए हम सोच रहे है कि हमें क्या करना है। उसमे आपको भी पूरा मौका मिलेगा। लेकिन यह चाकू या लाठी की लडाई छोड दो और किसी की पीठ में खजर मारना भी छोड दो। उससे कोई फायदा नही है । उससे न हमारा चारित्र्य वढता है, और न हमारी इज्जत वढती है। वल्कि उस से हम गिर जाते हैं। लेकिन अगर हमे लडना ही पडे, तो उसके लिए हमे लडाई का मौका देखना होगा और लडाई का तरीका ठीक तरह से पसन्द करके लडाई की सामग्री वनानी होगी।

आज के हालात मे मैंने यह सोचा कि जव पाकिस्तान का ढग इस प्रकार का चल रहा है, तो हमें क्या करना है। मैं अपने नौजवानो को वडे अदव से कहना चाहता हूँ कि अव जितना हिन्दुस्तान हमारे पास है, उसे सौ फी सदी एक वनाओ। पहले भी हमने परदेसियो के पास हिन्दुस्तान को क्यो गुमाया था ? हमारे मुल्क पर और लोगो का राज्य क्यो हुआ था ? हमारी वेवकूफी से हुआ था। ऐसी वेवकूफी अव फिर न हो, वह हमें देखना है । तो हमारे नौजवान आज जो काम कर रहे हैं, उसमें मैं कई वेवकूफियाँ देखता हूँ। जो हिन्दुस्तान वाकी वच रहा है, इसको हमे अगर एक गठरी मे वाँधना हो, पूरी तरह सगठित करना हो, तो हमे उसमे अलग-अलग गिरह-गाँठें नही वनानी चाहिए। हमे सवको एक करना है। अव यहाँ अलग-अलग सम्प्रदाय का काम नही है। देश में जितनी रियासते है, उनको भी हमे एक कर देना चाहिए। तो मेरी कोशिश तो सदा यही रही। पाकिस्तान वननेवाला था, सो वन गया; उसे अगर हमने नही वनाया तो कम-से-कम वनने तो दिया। तो उसमे हमे झगड़ा नही करना चाहिए। जो हिन्दोस्तान अव है, वह हमे ठीक करना चाहिए ।

पाकिस्तान के अलावा एक अन्य टुकडा भी होनेवाला था, जो उस से

भी बुरा था, और वह था राजस्थान। तो राजस्थान में बहुत लोग गडबड चला रहे थे, उनकी चलती तो देश में बहुत-से टुकडे पड जानेवाले थे। लेकिन मुझे आप लोगो के सामने यह कहने मे बहुत खुशी होती है कि हमारे देश में जो राजा थे, उन लोगो में बहुत-से समझदार लोग थे। उनमें से बहुतो में अपने देश के लिए बडा प्रेम है। आप यह न समझें कि राजा लोग बडे स्वार्थी और घमडी लोग हैं। आप यह भी न समझें कि उनके पास धन का और सत्ता का मद है और कोई स्वदेशप्रेम नही है। मैंने बहुत से राजाओ के साथ बातें की और हमारे और उनके बीच में जो पर्दा था, वह टूट गया।

आपने देखा कि एक हफ्ता पहले मैं उडीसा मे गया था। वहाँ मध्य प्रान्त की ४० रियासतें थी। उन सब रियासतो के ४० राजाओ ने दस्तखत दे दिया है कि आप हमारा राज ले लीजिए और आप ही सारा प्रबन्ध कीजिए। पहले किसी को ख्याल भी नही था कि ऐसा हो सकता है। लेकिन हो गया। अब कई राजा परेशानी में पडे है कि क्या हमारा भी यही हाल होगा। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि हमारी नीयत ऐसी नही है कि हम किसी को खत्म कर दें। लेकिन जहाँ राजा और प्रजा एक विचार के हो गए और मान गए कि हमारे बीच में यह अच्छी चीज है, हम सब की सलामती इसी में है, तो हमे मानना पडता है। तो ४० रियासतो ने मेरी बात मान ली। राजा और रैयत दोनो ने मिलकर यह सब कुछ किया। जिन राजाओ के दिल में शक है, मैं विश्वास दिलाता हूँ कि आपको हमारे ऊपर अन्देशा करने की जरूरत नही है। यदि अब भी इसमें से कोई राजा हटना चाहता है, तो मै उसे छोडने के लिए तैयार हूँ। लेकिन तब उनपर जो खतरा आ सकता है, उसकी जिम्मेदारी उनको खुद लेनी होगी। उनको समझना चाहिए कि आज तो उन्हें अपनी रैयत को अपने साथ रखना होगा। जो राजा रैयत के साथ नही रहेगा, उसकी हस्ती जोखिम में रहेगी। रैयत को अपने साथ रखने की कोशिश करनी चाहिए। राजा लोग इसे समझते है। किसी के दिल मे अगर कोई शका है, तो उसे निकाल देना चाहिए।

तो अब हमारा जो इतना बडा सगठन बना है, उसका हमें क्या करना चाहिए? हमने १५ अगस्त को सत्ता अपने हाथ में ली। अभी ज्यादा दिन नही हुए है, सिर्फ ४ महीने हुए हैं। ४ महीने में हमने क्या किया? जो कुछ हमने किया, उसकी फेहरिस्त बताऊँ, तो आप ताज्जुब में पड जाएँगे, कि

इस टूटी हुई सरकार ने क्या कुछ किया। बहुत-से लोग इसे नही समझते है और कहते है कि अभी तक सभी कुछ पुराने ढग से चलता है। अभी तक वही पुराना राज है, कोई फर्क नही पडा। लेकिन वे देखते नही है कि आजादी के साथ मुल्क का दो टुकडा हुआ। यह छोटी बात नही है, बहुत बडी बात है। दो बडे प्रान्त थे बगाल और पजाब, उनका भी टुकडा किया गया। यह भी बडी बात है। फिर सरहद को ठीक करना भी खतरे की बात थी। भली-बुरी वह भी हमने कर ली।

हमारी हुकूमत चलाने के लिए लोहे का एक चौखटा था, जिसको स्टील-फ्रेम कहते है। उसमें १२०० से लेकर १३५० तक आदमी थे। वे ही सदियो से हमारे हिन्दुस्तान का तन्त्र चलाते थे। उनमे अधिक परदेसी लोग थे। उसका भी हिस्सा किया। लेकिन यह हिस्सा दो तरह से हुआ। उसमे जितने अग्रेज थे, वे चले गए। ५० फी सदी के करीब उनमे अग्रेज थे, उनमें चन्द ही रह गए, बाकी सब चले गए। बाकी जो रहे, उनमे से ५० फी सदी पाकिस्तान मे चले गए। बाकी मे से भी कई लोग हमारे धनिको, इन्डस्ट्रियलिस्टो (व्यवसायपतियो); के पास चले गए। नतीजा यह हुआ कि हमारे पास चौथाई हिस्से की सर्विस बच रही। उसी से हम काम चलाते है। बहुत से लोग समझते थे, खास तौर से अग्रेज आफिसर सोचते थे कि इनका काम नही चलेगा। जो सर्विस चलती थी, वह टूट गई, तो इनका काम कैसे चलेगा? लेकिन हमारा काम चलता है।

उसके बाद हमारी जो मिल्कियत थी, उसका भी हिस्सा किया। एक कुटुम्ब की मिल्कियत का हिस्सा करने मे कितना समय लग जाता है? यह काम चन्द रोज मे नही होता। लेकिन हमने सारे मुल्क के हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रूप मे, दो हिस्से किए। उसके लिए हम किसी अदालत में नही गए। आपस में बैठकर यह सब कर लिया। पाकिस्तान चाहे कुछ भी कहे, लेकिन मैं कहता हूँ कि अगर हमें पाकिस्तान को खत्म करना होता, तो हम यह सब कभी न करते। हमने इस सब में उदारता दिखाई। हमने इस सब मे वैसा ही बरताव किया, जैसा छोटे भाई के साथ करना चाहिए। कोई भी स्वतन्त्र आदमी हमारे पक्ष मे फैसला देगा। इस तरह से हमने सारी मिल्कियत का फैसला कर लिया। जो कर्ज देना था और जो रुपया दूसरे मुल्को से लेना था, उस सब का भी फैसला किया।

इस सब के साथ-ही-साथ ४० लाख लोगो को इधर से वहाँ भेज दिया, और ५० लाख लोगो को उधर से इस तरफ ले आए। ये सब किस तरह से आए और गए ? पैदल चलनेवालो की ६०-६० मील लम्बी कतारें थी, दस-दस लाख आदमी एक काफिले में थे। दोनो तरफ से कतारें चलती थी और वे दो तीन महीनो तक चलती रही। ऊपर से पानी पड़ता था और नीचे भी पानी ही पानी था। रोग फैल गया, कॉलरा फैल गया, खाने-पीने की बड़ी मुसीबत थी। इस तरह से इन मुसीबतो में लोगों का अदला-बदला हुआ। राह में अमृतसर जैसा सिक्खो का बड़ा शहर पड़ता था। सिक्खो ने हठ पकड ली कि हम इधर से मुसलमानों को नही जाने देंगे। तब मैंने अमृतसर जाकर, उन्हें समझाया कि ऐसी बेवकूफी न करो। उसमें राष्ट्रीय स्वय-सेवक-सघवाले भी थे, तो मैंने उनसे भी कहा कि तुम यह क्यो नही देखते हो कि हमारे दस लाख आदमी भी उधर पड़े है। लड़ना है, तो लड़ने का ढग भी सीखना चाहिए। तब उन लोगो ने मेरी बात मान ली और सब को अमृतसर के बीच में से जाने दिया। हमारे लोग भी इधर चले आए।

इस सब हेरा-फेरी मे हमने कान्स्टीटयूएँट असेम्बली का जलसा भी किया। अपना कान्स्टीटयूशन (सविधान) बनाने की कोशिश न सिर्फ हमने जारी रक्खी, बल्कि करीब-करीब उसे पूरा कर लिया। इतने लोग मारे गए, लाखो की मिल्कियत नही रही, लाखो के पास खाना-पीना नही रहा, हजारो रोते कलपते आदमी हमारे पास फरियाद करने आए। उनको भी हमने, जहाँ तक बन पड़ा, आश्वासन दिया और साथ ही इतना काम भी किया। इसके साथ देशी रियासतो का भी काम कर लिया। तो चार महीने में हमने इतनी कार्रवाई की। इतना काम कोई भी सरकार करती, इतना बोझ किसी भी सरकार पर आता, तो चाहे वह कितनी भी मजबूत सरकार क्यो न होती, उसके टूट जाने की सभावना थी। लेकिन ईश्वर की कृपा से हमारी गवर्नमेंट जहाँ तक बन पड़ा, अपना काम निबाहती रही। और इस सबमें हमारी इज्जत काफी बढी है। हमने जूनागढ में जो कुछ किया, काश्मीर में जो कुछ किया, उससे लोगो को कुछ विश्वास आया कि यह लोग भी कुछ ताकतवर हैं।

तो इस हालत में हमें अब आगे क्या करना है ? चार महीना तो हमने डटकर काम किया, अब हमें क्या करना है ? अब मै आपसे कहना चाहता

हूँ कि हमें हिन्दुस्तान को उठाना है। हिन्दुस्तान दो सौ साल से गिरा पड़ा रहा। उसके पहले भी वह गिरा था। अपने इस हिन्दुस्तान को हमे उठाना है। तो इस काम में हमें समझ से काम लेना पडेगा। हमें सोचना चाहिए कि हमे क्या चीजें चाहिएँ। एक तो हमारे पास मजबूत फौज चाहिए, हमे कमजोर आर्मी नही चाहिए। दूसरा हमें अपनी सेन्ट्रल गवर्नमेट (केन्द्रीय सरकार) को मजबूत बनाना चाहिए। आर्मी की तीन शाखाएँ है, हवाई फौज, समुद्र की फौज, और जमीन की फौज। वह सब मजबूत होनी चाहिए। क्योकि यदि हमारा और पाकिस्तान का जिस तरह से काम चलता है, इसी तरह से चलता रहा, तो कभी-न-कभी खतरा है। यह बात छिपाना बेवकूफी का काम है। कम-से-कम मै नही छिपाता। हम चाहते तो है मुहब्बत। लेकिन हम अपनी आँख में किसी को धूल फेकने नही देगे। तो हमारे आर० एस० एस० वाले जो नौजवान भाई है, जो गाँवो में घूमते रहते है और बहुत-सी बाते करते है, वे लोग अगर गलत रास्ते पर चलते हो, तो उनको ठीक रास्ते पर लाना हमारा काम है। हमें उनको समझाना चाहिए कि उनका तरीका गलत है। यह काम आर्डिनेन्स से नही हो सकता, उससे तो वे उल्टे तरीके पर चलेगे। इसलिए मै उसके साथ कुछ-न-कुछ खामोशी से काम लेता हूँ। हाँ, अगर वे अपनी मर्यादा छोड देंगे तो फिर हमें लाचारी से सख्ती करनी पडेगी। लेकिन हमारे जिन नौजवानो पर हिन्दुस्तान का बोझ पडना है, उन्हे क्या यह शोभा देगा कि वे हमें इतना मजबूर बना दें? तो उन लोगो से मै अदब से कहना चाहता हूं कि वे इस तरह से काम न करें।

आप अब देख लीजिए कि हमने सेन्ट्रल गवर्नमेट बनाई, तो वह भी ऐसी गवर्नमेट नही बनाई, जो सिर्फ कांग्रेस की गवर्नमेट हो। ठीक है, कांग्रेस के पास सत्ता तो है, लेकिन हम सत्ता का उपयोग इस तरह से नही करते कि सिर्फ अपनी ही चलाएँ। हमारी गवर्नमेंट में आप देखिए कि जो हमारा फाइनान्स मिनिस्टर (अर्थ-सचिव) है, वह एक कैपिटलिस्ट है। वह कभी कांग्रेस में नही था, कभी-कभी वह कांग्रेस के खिलाफ भी पडा। इसी तरह, देखिए डाक्टर श्यामा प्रसाद मुकर्जी है, वह हिन्दू महासभा के प्रतिनिधि हैं। हम उनको काफी छूट देते हैं। वह कुछ भी बोले, उन्हे बोलने देते है। हमारे कई लोग कहते है कि डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी कांग्रेस गवर्नमेट मे बैठकर ऐसी बातें क्यो करते है, तो हम कहते हैं कि उन्हे बोलने दो। उससे क्या होता

है ? खाली बोलने से कोई बात थोडे ही होती है ? यदि हमारा काम ठीक और साफ होगा तो लोग हमारे पीछे चले आनेवाले है। मैं तो हिन्दू महासभावालो से भी कहता हूँ कि बाहर रहकर क्या करोगे ? आओ, कांग्रेस में चले आओ। जो कुछ करना हो, हमारे साथ बैठकर बात करो। यह क्यो मानते हो कि अलग रहने से ठीक काम होगा ? तो हिन्दू महासभा को मै बार-बार सलाह देता हूँ कि अलग रहने से आप तो अस्पृश्य हो गए, हरिजन जैसे आप हो गए! एक अलग टुकडा बनाकर आपको अलग नही बैठना चाहिए, बल्कि भीतर आ जाना चाहिए। अलग बैठने से आपकी ताकत नही बढेगी। आप ऐसा क्यो गुमान रखते है कि आप ही करोडो हिन्दुओ को ठीक रखेंगे। इस तरह से तो हिन्दू-धर्म छोटा हो जाएगा, बहुत सकुचित हो जाएगा। हिन्दू धर्म में तो काफी उदारता पडी है, काफी टॉलरेन्स (सहिष्णुता) पडी है। तो आपको इस तरह से नही करना चाहिए। तो देखो, कांग्रेस ने उनको भी सरकार में रखा। हमारे डा० जान मथाई क्रिश्चियन है। वह टाटा के यहाँ थे। लेकिन उनमें ताकत थी, वह काबिल थे, तो हमने उनको भी ले लिया। एक पारसी गृहस्थ है, वह भी कभी कांग्रेस में नही थे, वह भी आए। सरदार बलदेव सिंह है, वह सिक्खो के प्रतिनिधि है, वह अकाली दल के थे, और इन्डस्ट्रियलिस्ट भी हैं। तो इतने लोगो को तो हमने अपनी कैबिनेट के भीतर लिया। तो हम इस तरहसे काम नही करते।—आप लोग ऐसा न समझें कि कांग्रेस कोई एक जमात बनाकर या कोई अपना वाडा बनाकर काम करना चाहती है। कांग्रेस का इस तरह का कोई मकसद नहीं है। लेकिन कांग्रेस का धर्म यह हो जाता है कि हिन्दुस्तानभर में जितने लोग रहते हैं, वे सब यह महसूस करें कि वे अपने राज में पडे हैं, अपनी हुकूमत में पडे है। उन सब को पूरी सिक्योरिटी देनी चाहिए।-उनकी सलामती, उनके रक्षण की जिम्मेदारी अगर कांग्रेस न ले सके तो वह राज नही चला सकेगी। तो, जितने नौजवान भाई इस रास्ते पर चलते हैं, उनसे मेरी बडी अदब के साथ अपील है कि आप हम पर भरोसा करें। हम जिस रास्ते पर आपको ले जाना चाहते हैं, उस रास्ते पर आप चले तो राज आपके अपने हाथो में आनेवाला है। हमको राज से क्या करना है ? इस हुकूमत को हम क्या करेंगे ? आपको यह भार उठाना है, तो आप इसके लिए तैयार हो जाइए। आपके और कांग्रेस के बीच झगडा क्यो है ? आप कांग्रेस में चले जाइए।

दूसरा एक काम हमें यह करना है कि काग्रेस मे काम करनेवाले जो लोग है, उनमें से कुछ हुकूमत में आ गए है, सत्ता मे आ गए है, और उनके दिल मे यह ख्याल आ गया है कि अव हम तो हुकूमत और सत्ता से ही सव काम कर सकते हैं, वह नही हो सकता। यदि काग्रेस में काम करनेवाले लोग ठीक तरह से काम करे, तो आर० एस० एस० वाले आज-कल जिस तरह काम कर रहे है, उस तरह से नही करेंगे। काग्रेसवालो का काम है कि उनके साथ मिले, उन्हे मुहव्वत से समझाएँ और उन्हे गल्त रास्ते से ठीक रास्ते पर लाएँ। डडे से यह काम नही होगा, क्योकि जव हम हुकूमत से काम करना शुरू करें, तो उस से और खरावियाँ पैदा होती है। डडा तो चोर डाकू के लिए है, जो फिसाद करनेवाले, गुनाह करनेवाले है, उनके लिए है। अगर आप कहे कि आर० एस० एस० वाले भी गुनाह करते है, तो मै कवूल करूँगा कि वे गुनाह करते हैं। लेकिन इस गुनाह के पीछे उनका स्वार्थ नही है। तो उनके दिल मे जो भाव है, वह ठीक भाव है। अगर हम उसको ठीक रास्ते पर ले जा सकते हैं, तो क्यो न ले जाएँ? तो वह काम हमें करना है।

दूसरी वात यह है कि यदि हमे आर्मी ठीक रखनी हो, फौज को अच्छा और मजवूत वनाना हो, तो आज के ज़माने में उसके लिए जो सामान हमें चाहिए, वह हमे रखना होगा। आज हमें वड़ी फौज रखनी हो, तो उसके लिए वड़ी-वड़ी इन्डस्ट्री चाहिए और ऐसा काम करना चाहिए कि हिन्दुस्तान मे उद्योग दुवारा वन चले। इन्डस्ट्री के विना फौज़ नही चलेगी। तो इस इन्डस्ट्री के लिए हमें क्या काम करना चाहिए? इन्डस्ट्री में भी हमारी दिक्कतें है और हम फँसे है। चन्द लोग, जो मज़दूरो में काम करते है, यह समझते हैं कि अगर उनकी लीडरशिप रखनी हो तो उन्हे मजदूरो से वार-वार हडताल करानी है और ज्यादा-से-ज्यादा डिमाड (माँग) करानी है। माँग पूरी न हो तो हडताल कराओ, किसी-न-किसी वहाने से हडताल कराओ। हमारी इन्डस्ट्री को यह एक रोग लगा है। यदि आपको मजदूरो की सच्ची लीडरशिप चाहिए, तो जो चीज़ मजदूरों को नापसन्द हो, वह चीज़ उनसे कराने की ताकत अपने में लाओ, तव तो आप लीडर हुए। खाली फोकट लीडरशिप में कोई दम नही है। मजदूरो के इन्टेरेस्ट में सच्ची वात क्या है? इनके हित में सच्ची चीज़ क्या है? सव से पहले यही उन्हे सिखाना चाहिए।

लेकिन मैं तो उस वहस में भी नही पड़ता हूँ। मै तो इतना ही कहता हूँ

आज हमारी हालत ऐसी है कि हमें हिन्दुस्तान की रक्षा करनी है, हिन्दुस्तान को उठाना है, उसे मजबूत बनाना है, और इसके लिए आप हमें एक मौका दीजिए। एक ट्रूस कर लो कि अभी चार पाच साल तक हमें काम करने दोगे। नही, तो दूसरा काम करो। यदि आपको यही लगता है कि आप यह काम नही कर सकते है, तो मेहरबानी करके आप बोझ उठा लीजिए। चार-पाँच साल हम आपके पीछे नही लगेंगे, हम आपका साथ देंगे, मदद करेंगे। लेकिन आप यह क्या कर रहे हो ? जब परदेसी हुकूमत थी, तब तो हम समझ सकते थे। लेकिन अब यह हमारी खुद की हुकूमत है, आपकी अपनी सरकार है। यदि कुछ समझाना हो, तो हमको समझाओ, लेकिन बार-बार इस तरह झगडा करने से क्या फायदा ? आज यह ट्रेड यूनियन काग्रेस, मजदूरो की सस्था, कम्यूनिस्टो के हाथ में पडी है। हमने देखा कि जब तक यह सस्था इन लोगो के हाथ में है, तब तक कोई काम नही होगा। क्योकि यह तो बार-बार स्ट्राइक (हडताल) के सिवाय दूसरी बात ही नही करते है। और हडताल भी कैसे ? उसमें वाइलेस (हिसा) करते है। मैनेजरो को मारना, आफीसरो को पीटना और लोगो को मारना। अगर मजदूर हडताल में शरीक न हो तो उसको भी मारना। उनका एक ही पेशा है कि किसी-न-किसी तरह अनरेस्ट (अशान्ति) पैदा करना। तब हमने सोचा कि हमें लेबर का अलग सगठन बनाना चाहिए। तो हमने अलग सगठन बनाने की कोशिश की। ठीक है। अलग सगठन बनाया, तो हमारा आपस में झगडा हुआ कि नही भाई, मजदूरो का हडताल करने का जो हक है, वह क्यो छीने लेते हो ? तो हमने कहा कि भाई, हम कोई हक छीन नही लेते है। उनका यह हक कायम रहा। लेकिन मजदूरो और मालिको के बीच झगडा हो, तो उसका फैसला पच से कराओ। चार-पाँच साल तक यह करो, पीछे उनका यह हक कायम रहेगा, हम उसे नही ले लेंगे। लेकिन चार-पाँच साल शान्ति से हमें काम करने दो।

अगर हमें मजबूत फौज बनानी हो, तो उसके साथ हमें फौज का जितना सामान चाहिए, बारूद-गोला, मोटर-ट्रक, लोहा, पेट्रोल, कपडा, चीनी और खाना, वह सब हमें चाहिए। जितना सामान चाहिए, वह खूब अच्छा चाहिए। अच्छी रेलवे चाहिए, अच्छा तार चाहिए, अच्छा टेलीफोन चाहिए। अच्छी फौज रखनी हो, तो कौन-सी अच्छी चीज नही चाहिए ? सबसे पहले पूरी फौज चाहिए। फिर उस फौज की हिफाजत करनी चाहिए, उसे सब चीजें देनी चाहिए

और इस सब के लिए धन चाहिए। अगर यही कहते रहोगे कि कोई पैदा ही न करो, झगडा ही करो, तो कौन फौज रक्खी जा सकेगी और किस तरह से हमारा काम चलेगा ?

आजादी के पहले चार महीनो में ही हमने इतना काम किया है। अब हम मुल्क को ठीक कर, साफ कर, आगे बढ़ना चाहते हैं। इस काम के लिए दो चीज़ करो। एक तो यह कि जितने मुसलमान इधर पडे है, उनको चैन से रहने दो, उनसे झगड़ा न करो। क्योकि फिर हमारा चित्त उसमें जाता है। हमारा अटेन्शन (ध्यान) उसमें डाइवर्ट होता (बँट जाता) है। तो उनको चैन से रहने दो। अगर उनमें से किसी की नीयत अच्छी न होगी, तो वह पकडा जाएगा। उसमें आपको डर नही रखना चाहिए। हम जाग्रत है। हम पागल लोग नही हैं। हम समझते है कि कहाँ चूहा पडा है, और कहा चोर पडा है। वह सब हम देखते है। तो आपको इस तरह से हमको तग नही करना चाहिए, हमें मजबूर नही करना चाहिए। दिल्ली हमारी राजधानी है, उसमे हम राज करते है, तो जो चन्द मुसलमान पडे है, जो लोग उन्हे तग करते है, वे हमारी इज्जत पर हाथ डालते है। उसका मतलब यह होता है कि हम राज करने के लायक नही हैं। राजधानी में जो लोग बाहर से आए हैं, एम्बेसेडर (राजदूत) आदि परदेसी लोग आए है, वे सब देखते है कि यह राज कैसे चलेगा ? तो इस तरह से हमें नही करना चाहिए। मै आप से कहना चाहता हूँ कि हमारी प्रेस्टिज (रोब) हमारी इज्जत कुछ बढने लगी है, उसमें किसी को ठोकर नही लगानी चाहिए। उससे आपको नुकसान ही होगा, कोई फायदा नही होगा। तो हिन्दुस्तान मे जो मुसलमान पडे है, उनको रहने दो और जो मजदूर लोग है, उन्हे काम करने दो। हाँ, आप कहते हैं कि मजदूरो को पैसा मिले, उनकी जितनी जरूरतें है, वे पूरी पड़नी चाहिए, तो इस काम मे मेरा आपको पूरा साथ मिलेगा।

मजदूरो को जो इन्साफ से मिलना चाहिए, वह उन्हे जरूर मिलना चाहिए। एक हफ्ता पहले हमारे वहा सेन्ट्रल गवर्नमेंट (केन्द्रीय सरकार) ने दिल्ली मे एक कान्फ्रेन्स बुलाई थी। हमारे इन्डस्ट्री के मिनिस्टर डा० श्यामाप्रसाद मुकरजी ने इस कान्फ्रेन्स मे हिन्दुस्तान के सब उद्योगपतियो को बुलाया था और लेबर में काम करनेवाले सब लोगो को भी बुलाया था। सब ने मिलकर गवर्नमेंट के साथ एक फैसला किया कि तीन साल का एक ट्रूस (सन्धि)

करो कि तीन साल तक किसी को स्ट्राइक (हड़ताल) नहीं करनी है। इन तीन सालों में मजदूरों को किस तरह से देना होगा, उसका फैसला करने का एक मशीनरी बनाई गई। उसे सब कैपिटलिस्टों ने मान लिया और लेबर के जितने प्रतिनिधि थे, उन्होंने भी कबूल कर लिया। लेकिन जब इधर से वे बम्बई चले गए, तो वहां जाकर एक रेजोल्यूशन (प्रस्ताव) पास किया कि यह जो बम्बई में गवर्नमेंट की तरफ से लेबर का काम चलता है, वह अच्छा नहीं चलता, इसलिए एक रोज की हड़ताल करो। उन्होंने कहा कि सारे बम्बई शहर में एक रोज की हड़ताल करो और उसमें सब गवर्नमेंट सर्वेण्ट्स (सरकारी नौकर) भी शरीक हो जाओ। इस तरह से दूसरे ही दिन उन्होंने यह काम किया। मैं कल कलकत्ता में था। तो वहां भी कल उन्होंने स्ट्राइक कराने की काफी कोशिश की। वहां से मुझको बुलाया गया कि वहां इस तरह स्ट्राइक होनेवाली है। तो मैं दो दिन पहले वहां चला गया और तीन तारीख को मैंने कलकत्ता में एक मीटिंग की, जो बहुत बड़े पैमाने पर हुई। कोई बारह लाख आदमी वहां जमा हो गए। तो मैंने इन लोगों को समझाया कि यदि हम इसी रास्ते पर चलेंगे, तो हमारा हिन्दुस्तान तबाह हो जाएगा। इसमें न मुसलमान बचेंगे, न लेबर बचेगी, न कैपीटल बचेगी, न कोई और बचेगा। यह हड़ताल करने की जरूरत क्या है? मुझे बताओ तो? जब यह पूछा, तो उसमें कोई बात नहीं निकली।

आज हिन्दोस्तान में जो अशान्ति है, उसे दृष्टि में रखकर हमारी गवर्नमेंट एक कानून बनाना चाहती थी, जिस से गुनाह करनेवाले लोगों को ठीक रास्ते पर ले आया जाए, उनके ऊपर कुछ काबू पाया जाए। मुझे ताज्जुब होता है कि हमारे अपने लोग स्ट्राइक करवा रहे हैं। तो मैं आप लोगों से, जितने लेबर में काम करनेवाले हैं, उन सब से मैं अदब से कहता हूँ कि हिन्दुस्तान को तो अभी आजादी मिली है। हम दो-चार साल हिन्दुस्तान में कुछ इन्डस्ट्री बना लें, कुछ उद्योग पैदा करें, तभी तो मजदूरों के लिए कुछ धन पैदा हो सकेगा और उन्हें हिस्सा मिल सकेगा। जहां होगा, वहां ही से तो कुछ लिया जा सकेगा। लेकिन जो शून्य है, उसका क्या हिस्सा होगा? कोई चीज होगी ही नहीं, तो क्या बांटेंगे? तो कुछ पैदा तो करो!

हिन्दुस्तान में आज कोई भी चीज नहीं बनती। न अनाज पूरा मिलता है, न कपड़ा पूरा मिलता है, और न जिन्दगी की जरूरियात की और चीजें

मिलती हैं। वाहर से लाने की कोशिश करते हैं, तो उसमें और मुसीवत आती है। तो आप लोगो को यह समझना चाहिए कि यह रास्ता गलत है। इस रास्ते पर जाने से फायदा नही है। हमारा यूनाइटेड प्रोविन्स (उत्तर प्रदेश) सव से वड़ा प्रान्त है। उसमें पन्त जी हमारे प्रधान मन्त्री हैं और सरोजनी देवी गवर्नर हैं। अव देशभर में जितने प्रधान है, सव हमारे अपने हैं। अव अँग्रेज की शक्ल भी दिखाई नही देती। कोई परदेसी अव नही है। पुलिस हमारी है, मिलिटरी हमारी है, फौज हमारी है। अव हमारे रास्ते मे क्या रुकावट है, जो वीच मे आती है? हिन्दुस्तान के उठाने में असल में अव कोई रुकावट है, तो खाली वह हमारी अपनी वेवकूफी है।

वहुत सालो के वाद हमारी गुलामी गई है, और अव मौका आया है कि हम उसका उपयोग करें। यदि हम उसका सच्चा उपयोग करेंगे, तो दुनिया में हमारी इज्जत वढेगी। तभी दुनिया में हम और मुल्को के साथ आगे की जगह ले सकते हैं। कल वर्मा स्वतन्त्र हो गया, परसो दूसरा होगा। सारा एशिया खण्ड स्वतन्त्र होगा। लेकिन इस सव का आधार हिन्दुस्तान के ऊपर है। यदि एशिया की नेतागीरी (लीडरशिप) किसी के पास चाहिए तो वह हिन्दुस्तान को लेनी चाहिए। वह लेनी हो, तो हमें उसके लिए ठीक ढग से काम करना होगा। आज तक तो हम एक ही रास्ते पर गए कि हाँ कानून तोडो, जेल में जाओ। उसी रास्ते पर हमने काम किया। पर आज भी उसी रास्ते पर चले जाओ, तो यह तो खुदकशी होगी। क्योकि वह सव तो परदेसियो के साथ लड़ने के लिए था, उनको यहाँ से हटाने के लिए था। तव वह रास्ता ठीक था। लेकिन आज वह रास्ता काम का नही है। तो अपनी सरकार के सामने भी वही रास्ता, वही हथियार लिया जाए, यह मूर्ख लोगो का काम है। उसमें कोई फायदा नही है। तो मैंने आपको समझाने की जो कोशिश की, वह यही है कि अव ऐसा मौका फिर नही आएगा। अगर हम इसे गंवा देंगे, तो वेवकूफ वनेंगे।

मैंने आपका कुछ समय तो लिया, लेकिन मेरे दिल में जो वात थी, वह मैंने आपके सामने रख दी है। मैं कोई चीज छिपाना नहीं जानता हूँ और साफ साफ वात कहता हूँ। चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे सिक्ख हो, सव के सामने मैं साफ वात कहने वाला आदमी हूँ। नौजवानो को वुरा लगे, आर० एस० एस० वालो को वुरा लगे, लेकिन मेरे दिल में सवके लिए मुहब्बत है। मैं सवको यह समझाने की कोशिश करता हूँ कि ऐसा मौका फिर नही

आएगा। अगर इस वक्त हम साथ मिलकर कुछ काम कर सकेंगे तो उस से हिन्दुस्तान का भला होगा, हमारा भला होगा। मैं उम्मीद करता हूँ कि यह सब जिस भाव से मैंने कहा है, उसी भाव से आप उसे स्वीकार करेंगे। जिस प्रेम से आप लोगों ने मेरा स्वागत किया है और जिस शान्ति से मेरी बात सुनी है, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। जय हिन्द!

---

(३)

वम्बई, चौपाटी

वम्वई
१७ जनवरी, १९४८

वहुत दिनो के वाद आप लोगो से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैं आप लोगो को मिलने की वहुत दिनो से कोशिश कर रहा था, लेकिन मैं ऐसे कामो में फँसा रहा, जिससे आप लोगो को मिलने का अवसर नही वन सका। आज मै आपके पास आया, तो भी कोई ऐसा मौका नही था कि मै दिल्ली छोड कर आपके पास आऊँ। लेकिन पहले से मैंने एक दो ऐसे काम कवूल कर लिए थे, जिनको पूरा करना मुनासिव था।

एक तो हमारे उद्योग मन्त्री डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने वम्वई में उद्योग-पतियो की एक कान्फ्रेन्स वुलाई है। जो कान्फ्रेन्स वुलाई है, उसमें तय करने का मामला ऐसा कठिन है कि उसमे उन्होने मेरी मदद माँग ली और मै इन्कार नही कर सका। क्योकि वम्वई में जो उद्योगपति रहते हैं, उनके हाथ में काफी ताकत है। वे सारे हिन्दुस्तान की कपडे की माँग को पूरा कर सकते है। अव जैसा हमने अनाज के वारे मे राशनिंग कट्रोल वगैरह का एक फैसला किया है, इसी प्रकार कपडे के वारे में क्या करना चाहिए, यह भी एक वडा विकट प्रश्न है। अनाज के वारे में जो हमने फैसला किया था, वह कई लोगो ने पसन्द

किया, कई लोगो ने नापसन्द किया। और अभी तक उसी की चर्चा चल रही है कि हमने ठीक किया या ठीक नही किया। लेकिन कपडे के वारे में कुछ हमारे हाथ की वात नहीं है। उसमें हमें मदद चाहिए। एक तो कपडे की मिलो वाले उद्योगपतियो की मदद चाहिए, दूसरे इन कारखानो के जो मजदूर वर्ग हैं, उनकी मदद चाहिए, तीसरे कुछ व्यापारी लोग है, उनकी भी मदद चाहिए। अव आप जानते है कि हमारे हिन्दुस्तान में आज ऐसी हालत है कि खाने के लिए जितना अनाज हमको चाहिए, वह हम पूरा पैदा नहीं कर सकते। पैदा करना चाहिए, लेकिन आज ऐसी स्थिति नही है। इसलिए हमको बहुत तकलीफ होती है और बाहर के मुल्को से करोडो मन अनाज लाना पडता है। उसका दाम वहुत देना पडता है। क्योकि वाहर के मुल्को के लोग हम से काफी दाम लेते है, जो अपने वहाँ अनाज का दाम है, वह नहीं। लेकिन वाहर भेजने के लिए उसमें से काफी नफा ले के दाम लेते है, तो उसमें हमको वडा नुकसान होता है। लेकिन हम लाचार हो गए है। क्योकि जव तक हम उतना अनाज पैदा न करें, जितना हमारे मुल्क को चाहिए, और हम वाहर से भी न लावें, तो जैसी बगाल में हालत हुई थी, वैसे ही लोग शहरो में मरने लगे, तो वह वर्दाश्त नही हो सकता।

हमने हिन्दुस्तान को एक तरह से तो आजाद किया। जिन्दगी भर की हमारी कोशिश थी कि हमें परदेशी हुकूमत को यहाँ से हटाना है। हटा तो लिया लेकिन जव हमने इडिया या हिन्दुस्तान को आजाद कर लिया और उसकी हुकूमत का हमने चार्ज लिया, तव हमारे सामने जो समस्याएँ आई, उन्हे हल करने के लिए काफी बोझ हमारे ऊपर पडा है और वह हमारी कमर तोड रहा है। वह एक अनाज का ही सवाल नही है, कपडे का सवाल नही है। परदेसी लोग अनेक मुसीवतें हमारे सर डाल गए है। हमने यह तो समझा था कि दो सौ साल के वाद जब एक हुकूमत चली जायगी, तो उसमें से कुछ ऐसी चीजें जरूर रह जाएँगी, जिनको हमें ठीक करना पडेगा और इस कार्य में हमें मुसीवत भी उठानी पडेगी। लेकिन हमने यह नही सोचा था कि हमारे लोग ऐसे पागल हो जाएँगे, कि हम भी खुद कुछ ऐसी नई समस्याएँ पैदा कर लेगें कि उनका हल करना अत्यन्त मुश्किल हो जाएगा। तो जो कई सवाल हमने खुद में पैदा किए है, उन्हे किस तरह से हल किया जाय, वह सवाल मै आपके सामने रखना चाहता हूँ।

हमने हिन्दुस्तान का टुकडा किया जाना कवूल कर लिया। कई लोग कहते है कि हमने ऐसा क्यो किया और यह गलती थी। मै अभी तक नही मानता हूँ कि हमने कोई गलती की और मै यह भी मानता हूँ कि यदि हमने हिन्दुस्तान का टुकडा करना मजूर नही किया होता, तो आज जो हालत है, उससे भी वहुत वुरी हालत होनेवाली थी और हिन्दुस्तान के दो टुकडे नही, वल्कि अनेक टुकडे हो जानेवाले थे। इस वात की गहराई मे मै आपको नही ले जाना चाहता हूँ, लेकिन यह वात मै अनुभव के आधार पर वताना चाहता हूँ। मेरे सामने वह सारा चित्र है कि हम किस तरह एक साल गवर्नमेंट चला पाए थे और यदि हमने यह चीज कवूल न की होती, तो क्या होता। परन्तु यदि यह सारा वयान मै आपको दू, तो वहुत समय चला जाएगा। इसलिए मै नही दूगा। लेकिन आप इतना विश्वास रखें कि जव मैने और मेरे भाई प० नेहरू ने यह कवूल किया कि अच्छा ठीक है, यदि टुकडा जरूर करना है और इसके विना मुसलमान नही मानते, तो हम इसके लिए भी तैयार है। क्योकि जव तक हम परदेशियो को न हटा दे, विदेशी हुकूमत न हटा दें, तव तक दिन-प्रति-दिन ऐसी हालत होती जाती थी कि हमें साफ तौर से दिखाई दिया कि हमारे हाथ मे हिन्दुस्तान का भविष्य नही रहेगा और परिस्थिति कावू से वाहर चली जाएगी। इसलिए हमने सोचा कि अभी तो दो टुकडे करने से काम ठीक हो जाता है, तो वैसा ही कर लो। हमने मान लिया कि ठीक है, अपना अलग घर लेकर अगर यह अपना भाई शान्त हो जाता है और अपना घर सँभाल लेता है, तो हम अपना घर सँभाल लेगे। लेकिन हमने यह वात इसी उमीद से मानी थी कि हम शान्ति से अपना काम करेगे। उसमे हमारी गलती हुई। टुकडा करने में हमारी गलती हुई, यह मै नही कहता, लेकिन गलती इसमें हुई कि न करने का काम टुकडा करने के वाद हम लोगो ने किया। हमने किया, उसका मतलव यह है कि हमारे सव लोगो ने किया और ऐसी वुरी तरह से कि हम गिर गए। आजादी के वाद दुनिया मे हमारी इज्जत वढी थी और १५ अगस्त के वाद दुनिया मे हमारी एक जगह वन गई थी। उस से हम गिर गए और वहुत नीचे गिरे। और देशो के लोग यह शक करने लगे कि हम लोग हुकूमत करने के लायक भी है या नही। कई लोग ऐसा खयाल भी करने लगे कि यह आजादी चलनेवाली चीज नही है। यह आजादी तो हमने ले ली, लेकिन महीना, दो महीना या तीन महीनो मे यह खतम हो जाएगी। कई परदेशी लोग मानने लगे कि हम

तो भाई, पहले से ही कहते थे कि क्यो इनको आजादी देते हो। आजादी को ये हजम नही कर सकेंगे। कई अँगरेज लोग ऐसे भी थे, जो समझते थे कि जब हिन्दुस्तान का किनारा छोडकर जाएँगे, तो बम्बई की बन्दरगाह पर लोग आएँगे और कहेगे कि तुम इस देश से मत जाओ और इधर ही रहो। वे मानते थे कि हम अपना राज नही चला सकेंगे। अब वहाँ तक तो हम नहीं गिरे और हमने एक तरह से तो हिन्दुस्तान को ठीक कर लिया।

जब पजाब का टुकडा हुआ और बगाल का टुकडा हुआ, तो बगाल में तो गान्धी जी बैठे थे, सो उन्होने वहाँ की हालत को सँभाल लिया। उम्मीद से भी कही अधिक अच्छी तरह सँभाल लिया। उससे दुनिया पर बहुत असर पडा। हम पर भी असर पडा। मुल्क पर भी असर पडा। लेकिन पजाब में जो हुआ, वह बहुत ही बुरा हुआ। पजाब और उत्तर पश्चिम के सरहदी प्रान्त में। इन दोनो प्रान्तो में जो ख्वारी हुई, जो अत्याचार हुआ, वह इस प्रकार का हुआ कि जिसका बयान करने से हृदय फट जाता है। तो यह सब जो हुआ, उसकी चोट हम लोगो को बहुत लगी। और एक जिन्दा आदमी के सर पर जब घाव पडता है या ज़ख्म लगता है, तब उसमें से खून निकलता है और जख्मी को बेहोशी आ जाती है। वह चक्कर खाकर गिर जाता है। इस तरह से हिन्दु-स्तान का भी हाल हो गया। पजाब तो हिन्दोस्तान का सिर ही है। हिन्दो-स्तान के सिर पर घाव पडा और उसमें से बहुत खून बहा। इस तरह खून निक-लने से हमारा देश गिर पडा, तो उसको सब तरह से उठाने की हमने पूरी कोशिश की। इस कोशिश में हम बहुत दूर तक कामयाब भी हुए। और जो हिन्दुस्तान बाकी रहा है, उसको एक तरह से हमने सगठित कर लिया वह होश में आ गया और सावधान हो गया। लेकिन यह सब जो हुआ है, वह पूरी समझ और रजामन्दी से नही हुआ है। वह पुलिस की बन्दूक से, मिलि-टरी की बन्दूक से और फौज के डडो से हुआ है। वह दिल से नही हुआ है तो उसकी चोट गान्धी जी को लगी है।

जब तक हिन्दुस्तान पूर्णतया दिल का परिवर्तन न करे और जिस तरह से हमें स्वतन्त्र हिन्दुस्तान में अपना काम करना चाहिए, उसी तरह जब तक हम न करें, तब तक हमारा काम नही हुआ और तब तक गान्धी जी को चैन नही है, वह बेचैन है। अब उनको दिल्ली में छोडकर मै इधर आया, तो मुझको

भी बहुत दर्द हुआ* । परन्तु इधर न आता तो और भी मुसीबत होनेवाली थी । इसलिए मैं आया तो सही, लेकिन मैं भी पूरी तरह अस्वस्थ हूँ । इस तरह से मैं आपके सामने बोल रहा हूँ । लेकिन जो दिल से बात निकलनी चाहिए, जल्दी जल्दी वह निकलती भी नही, इतना दर्द उसमें भरा है ।

तो हमने हिन्दुस्तान को एक तरह से बाँध तो लिया । अब हमारी कोशिश है कि हिन्दुस्तान को उठाओ । इस उठाने की कोशिश मे यदि हमको आप लोगो का साथ मिल जाए, तो अभी भी हमारी उम्मीद हैं कि हमने कुछ ज्यादा नही गँवाया है । क्योकि हमारा इतना बडा मुल्क है । इस मुल्क मे कई सदियो से हमारी हुकूमत तो थी नही । हम लोग छिन्न-भिन्न थे । यहाँ परदेसी हुकूमत ही चलती रही । अब करीब एक हजार साल के बाद हमारे पास यह मौका आया है कि ८० प्रतिशत हिन्दुस्तान हमने एक कर लिया है । उसको उठाने का हमें यह पहला मौका मिला है । यदि हम इसका सदुपयोग करें, तो दुनिया के और बडे-बडे मुल्को के साथ हम बैठ सकते हैं और सारे एशिया की नेतागिरी हम ले सकते हैं । साथ ही और देशो को रास्ता बता सकते हैं । यही हमारी कोशिश है, उसमें हमको आपका साथ मिलेगा, कि नही, यही हमारी चिन्ता है । हमे उम्मेद तो है, लेकिन कभी कभी हम निराश भी हो जाते हैं ।

१५ अगस्त के बाद हमने काम तो किया, और एक तरह से बहुत काम किया । उस काम से हमारी गिरी हुई प्रतिष्ठा फिर से हमे प्राप्त होने लगी, क्योकि दुनिया देख रही थी कि इन लोगो पर क्या बोझ पडा है । हिन्दुस्तान की वर्तमान सरकार की जगह पर यदि दूसरी कोई सरकार होती, तो क्या करती, यह भी दुनिया जानती थी । बहुत से मुल्क अब यह सोचने लगे है कि जैसा वे हमे समझते थे, वैसे बुरे हम लोग नही है । हिन्दुस्तान की जड़े बहुत मजबूत होती जा रही हैं और उनको वे हिला नही सकेंगे । चार महीने मे दो प्रान्तो के टुकडे किए और कई प्रान्तो में प्लेबीसिट (जनमत) लिया । आसाम में से एक टुकडा निकाल लेने का हौसला भी कर लिया गया । बगाल का टुकडा कर लिया और पजाब का भी टुकड़ा कर लिया और उसके

---

* गांधी जी उन दिनो दिल्ली मे अपने जीवन का अन्तिम उपवास कर रहे थे ।

साथ साथ इन्हीं चार महीनो में पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच में सारी पुरानी मिल्कियत का भी हमने हिस्सा-बाँट कर लिया। अब एक कुटुम्ब में भी यदि मिल्कियत का हिस्सा करना हो, तो दो भाइयो के बीच भी वह काम एक दिन मे नही हो जाता और उसका हिसाब-किताब करना पडता है, उसकी जायदाद का माप निकालना पडता है। कभी पच भी करना पडता है। कभी झगडा भी होता है। यह सब निपटाने में वक्त लगता है। तो हिन्दुस्तान की मिल्कियत का, जमीन जायदाद का, जितनी हमारी दौलत थी, जितना हमारा कर्जा था, जितनी लोगो की सेक्यूरिटीज़ थी, सब का हिसाब करना था। इन सब चीजो का हमने फैसला किया और आपस में बाँट लिया। इस सब कार्य में हमनें किसी पच को नही बुलाया।

पिछले चार महीनो में हमने न केवल यह सब ही किया, बल्कि इसके साथ-साथ लाखो आदमी पजाब मे एक तरफ से दूसरी तरफ गए और दूसरी तरफ से इस तरफ ले आए गए। अभी तक यह काम पूरा नही हो पाया, लेकिन करीब-करीब पूरा कर लिया है। समय आया है कि इस काम मे कितनी-कितनी मुसीबते आईं है, उनका बयान मैं आपके सामनें करूँ। अगर मैं सब बाते विस्तार से बताऊँ तो आपकी आँखो मे आँसू आ जाएँगे। एक लम्बा-सा, साठ साठ मील का लम्बा, पैदल चलता जलूस एक तरफ से दूसरी तरफ के लिए चला, तो दूसरा उस तरफ से इस तरफ के लिए। दस-दस लाख आदमी एक साथ, जिनमे लाखो बच्चे और औरते थी, एक तरफ से दूसरी तरफ गए या आए। जो मर गए, सो मर गए। जो जिन्दा थे, वे गाडी, बैल, भैस सभी कुछ लेकर चलते चलते निकले। रास्ते में किस तरफ से मार पडेगी, इसका कोई ख्याल नहीं था। साथ में थोडी-सी पुलिस या थोडी-सी फौज ही होती थी। ऊपर से मूसलधार पानी पडता है, नीचे भी पानी-ही-पानी भरा है। बच्चो और औरतो तक के पास का कपडा नही है, खाने का इन्तजाम नही है, लकडी तक नही है। दो-दो महीनो तक इस तरह से लोग चलते ही रहे। तभी लोगो में कालरा की बीमारी हुई और सैंकडो हजारो लोग मरने लगे।

इसी हालत मे अमृतसर शहर के बीच में से मुसलमानो का जुलूस उधर जाने को हुआ। अमृतसर शहर हिन्दुओ और सिक्खो से भरा हुआ था। सिक्खो नें इन्कार किया कि इधर से यह मुसलमान लोग नही जा सकते। वह ६०

मील का लम्बा प्रोसेशन (जुलूस) अब वही पडा था। उसमें १० लाख आदमी थे और इन लोगो ने वही रोक लिया और दूसरा कोई रास्ता जाने का नही था। इधर इन लोगो ने हठ पकडी कि नही जाने देंगे। उधर दूसरी तरफ हमारे जुलूसो को भी रोक लिया गया। अब उसका फैसला कौन करें? लोग गुस्से मे भरे हुए थे। अपने मकान जले है, अपने बीवी-बच्चे कत्ल हो गए है, अपने पास खाने-पीने की भी कोई चीज नही बची है। आँखे लाल है और तलवार लेकर निकल आए कि नही जाने देगे। तब फौज से भी यह काम नही होता। फौज आखिर बन्दूक चलाकर कितने हिन्दुओ को मारे? कितने सिक्खो को मारे? तोप से हम कैसे रोके और कितनों को मारें? तब मैं अमृतसर गया। सब सिक्ख लीडरो को मैंने बुलाया और उनके साथ बातचीत की। मैंने कहा, यह क्या कर रहे हो आप? आप १० लाख मुसलमानो को इधर रोक लोगे। १० लाख हिन्दू और सिक्ख वहाँ रुके पडे है। उन अभागो पर ऊपर से पानी पडता है। नीचे भी पानी है। उनका सब कपडा भीगा हुआ है। नीद नही है, खाना नही है। हैजा शुरू हो गया है। इस तरह से प्रोसेशन रोककर आप क्या फायदा निकालोगे? मैंने अनुरोध किया कि मेरी बात मानो। यदि हमे लडना ही है, तो हम कुछ सभ्यता से लडें ताकि दुनिया के लोग भी देखे कि यह लडनेवाले बहादुर लोग है। आपकी तलवार यदि इस तरह कमजोरो पर चलेगी तो उससे क्या फायदा होगा? तुम बहादुर कौम हो। ऐसे कामो से दुनिया में हमारी इज्जत जाती है। बहादुर सिक्खो को बदनाम करनेवाला यह काम कभी मत करो। पटियाला महाराज ने भी मेरा साथ दिया। जितने सिक्ख लीडर थे, वह समझ गए और मान गये।

तब मैंने वहाँ अमृतसर मे एक बहुत बड़ा जल्सा किया। दो घटे की नोटिश में डेढ लाख आदमी जमा हो गए। सब को मैंने कहा और समझाया। मैंने कहा, आपका काम यह है कि आप अपनी गवर्नमेंट की मदद करें, ताकि हमें पुलिस का उपयोग न करना पड़े, फौज का उपयोग न करना पड़े। आप खुद चौकीदारी करे। आप वालटियर बनकर मुसलमानो को इधर से निकल जाने दे और उधर जो हमारे हिन्दू और सिक्ख भाई पडे है, उनको इधर लाने में मद दे। ५० लाख आदमी हमें वहाँ से इधर लाना है। ४० लाख आपको इधर से वहाँ भेजना है। वैसे हम मरते रहेगे, उससे तो अच्छा है कि अब अपनी फौज बनाकर, मजबूत हिन्दुस्तान बनाकर, पाकिस्तान और हिन्दु-

स्तान को लडना हो, तो लडें । लेकिन किसी ढग से लडें, तव तो ठीक वात है । यह इस तरह का लडना भी क्या है ? वहा कई हमारे आर० एस० एस० वाले लोग थे । उनको भी मैंने समझाया कि हिन्दुस्तान का वोझ तो आप लोगो को ही उठाना है । हम लोग तो अव जरित हो गए । हमने तो आजादी आपके लिए पाई है । यह आप क्या कर रहे हो ? सव समझ गए । सबने मुझसे वायदा किया । उन्होने कहा कि यह काम हम करेंगे । आप वेफिक्र रहें । मैं चला आया और मुझे खुशी हुई कि उसके वाद हमारे सिक्खो और हिन्दू भाइयो ने वहुत अच्छे ढग से काम किया, और सव को जाने दिया । निकलते-निकलते एक महीना डेढ महीना लग गया । लेकिन सब चले गए । उधर से भी बाकी के सब चले आए ।

आज सिक्ख और मुसलमान के बीच में इतना जहर फैला हुआ है कि मुसलमान सिक्खो का चेहरा भी नही देख सकते । वे उन्हे वर्दाश्त नही कर सकते हैं । सिक्खो ने मुझे जो कौल दिया था, यदि उन्होने उसका पूरा-पूरा पालन न किया होता तो आज न हिन्दुस्तान रहता, न पाकिस्तान रहता । इसमें मुझे कोई शक नहीं है । लेकिन फिर भी उन्हें वदनाम किया जा रहा है । अब उनको वदनाम करना कोई अच्छा काम तो नही है । कम-से-कम उससे ज्यादा तो मैं नही कहूँगा । आप ही देख लीजिए कि कराची में क्या हुआ । थोडे दिन हुए, वहाँ सिक्खो के गुरुद्वारे पर हल्ला किया गया । गुरुद्वारे में बहुत-से सिक्ख जमा थे । वे शिकारपुर, सक्खर आदि शहरो तथा वहाँ के देहातो से आए थे । पाकिस्तान की पुलिस ही उन्हे वहाँ लाई थी ! वाहर भेजने के लिए, हिन्दुस्तान में भेजने के लिए । और हम चाहते थे जल्दी उनको यहाँ ले आएँ । लेकिन वहाँ गुरुद्वारे पर ही उनको कत्ल किया गया । उसपर हल्ला किया गया । और उसके वाद सारे कराची में जितने हिन्दू लोग रहते थे, उनके मकानो की लूट-पाट शुरू हुई । अव वहाँ न हिन्दू रह सकते हैं न सिक्ख ।

मैं तीन महीनो से कह रहा हूँ कि कराची में हिन्दू नही रह सकता । हैदरावाद में, कराची में, या सिन्ध में, कही भी हिन्दू और सिक्ख नही रह सकते । हमें आपस में वैठकर दोनो गवर्नमेंट के वीच में समझौता कर सव को यहाँ ले आना चाहिये । जव मैं यह कहता था, तो मेरा सव विरोध करते थे कि यह तो मुसलमानो की या पाकिस्तान की वदनामी करते है । मैं वार-

बार कहता हूँ कि यह गलत बात है। मै तो कहता हूँ कि यदि हम उन्हे यहाँ न लाएँ, तो वे मारे जाएँगे और उसकी जिम्मेवारी हमी पर पडेगी। लेकिन हमारे लोग भी नही मानते थे। अब वे सब भागे-भागे आते है। आज हमारे पास जितने जहाज हैं, सिन्धिया के भी जितने जहाज है, वह सब हमने वहाँ भेजे है। अब किस तरह से लोगो को वहाँ से निकलना है, उनका बयान आज मै नही करूँगा, क्योकि मै जहर फैलाना नही चाहता। लेकिन हालत बहुत बुरी है। ये सिक्ख, जिन्होने मुसलमानो को इस तरह से यहाँ से जाने दिया, इन्ही सिक्खो के गुरुद्वारे में उनका ऐसा हाल हुआ! इतना होते हुए भी सिक्खो ने खामोशी रखी। सिक्ख मेरे पास आए तो मैंने कहा कि सौ-डेढ-सौ सिक्ख मारे गए है। लेकिन उससे आपकी इज्जत बहुत बढ़ी है। आप बैठे रहिए, गुस्सा नही कीजिए। वे बैठ गए। उसके बाद गुजरात से ट्रेन आती थी, जिसमें बन्नू से हमारे सिक्ख और हिन्दू भाई आ रहे थे। इस ट्रेन में करीब-करीब तीन हजार आदमी थे। दस बजे उलटे रास्ते ट्रेन ले जाकर रोक ली गई। वहाँ हमारा मिलिट्री का पहरा था। मिलिट्री के करीब ६० आदमी थे। कोई ६-८ घंटो तक लगातार गोली चलती रही। ट्रेन में हमारे जो तीन हजार आदमी थे, अब उनमें से करीब-करीब एक हजार का हिसाब मिलता है, २,००० हजार आदमियो का पता ही नही चलता। बस और जो कुछ हुआ, उसका बयान करने का यह मौका नही है। लेकिन इतना मै जरूर कहना चाहता हूँ कि यह सब होते हुए भी, सिक्खो ने उस सब को बर्दाश्त कर लिया और सब जगह पर, दिल्ली में भी, सिक्ख जब आज मिलते है, तो हम से कहते हैं और गान्धी जी को विश्वास दिलाते है कि हम खामोशी रखेंगे। इन सिक्खो को लोग जब बदनाम करते है, तब मुझको चोट लगती है कि यह क्या बात है। लोग क्यो ऐसा करते है?

मै आप से जो कह रहा था, इन्ही हालात में चार महीने मे हमने ये सब काम कर लिए। सारा हिस्सा बाँटकर लिया, न कोर्ट में जाना पडा, न किसी और जगह पर जाना पडा। साथ-साथ हमारी किस्मत में जूनागढ़ की समस्या भी आई। उसे जिस तरह से हमने ठीक किया, दुनियावाले लोग उसे देखते रहे। वे जानते है कि हम लोगों पर जो बोझ पडा है, वह बोझ अगर दूसरी गवर्नमेंट पर पडा होता तो उसकी कमर टूट जाती। इससे हमारी इज्जत काफी बढी है। मै दावा करता हूँ कि चार महीने में यह जितना

काम हुआ है, उसे पूरा करना भी बहुत कठिन काम था। हमने उसे किस तरह से किया, यह आप जानते हैं। अभी भी हमारा कुछ काम बाकी है। अभी हमारे ८ लाख सिन्धी भाइयो को इधर ले आना है। वह आ रहे हैं, तो लानेलाने में ही काफी समय लगेगा। क्योकि हमारे पास इतने बोट भी नही हैं। एक छोटी सी रेलवे जोधपुर की तरफ जाती है। उसमें भी एक छोटी रेलवे है, उसमे दो सौ ढाई सौ आदमी आते हैं। रास्ते में जोखम भी है। बहुत मुश्किल काम है।

सिन्धी लोग, जो दुनिया भर में व्यापार करते थे और लाखो, करोडो रुपयो का व्यापार करते थे। वे धनी लोग थे, वे सुखी लोग थे। लेकिन आज उनके पास कोई चीज बाकी नही है। सब खाली हो गया है। यो तो जो इन्सान पैदा होता है, वह एक दिन जरूर मरेगा। लेकिन इस तरह जो उसका मान भग होता है, वह बहुत बुरा है। वे न इधर के हैं, न उधर के हैं। उधर अब कोई उनकी परवा नही करता, और वे दु खो के बोझ से दब गए हैं। अब अगर इधर भी हम उनको अपना न समझे, यह न समझें कि उनके ऊपर जो यह आपत्ति आई है, यह तो असल में सारे हिन्दुस्तान पर विपत्ति है, इस समय हम उनकी मदद न करें, तो वह कितना बुरा होगा! हमें इस चीज को ठीक करना है। तो यह आप लोगो का काम है। आपका बम्बई शहर कितना बडा है। इस बम्बई शहर के हर एक घर में दो-दो सिन्धी रख लो। आठ लाख में से सब-के-सब सिन्धी तो इधर आनेवाले है नही। जितने सिन्धी आनेवाले हैं, उन में तीन-चार लाख तो तीस या चालीस लाख की आबादीवाले इस बम्बई में खप ही सकते है। अगर हम अपने दुखी आदमियो को भी हजम नही करेंगे, तो हम स्वराज्य कैसे हजम करेंगे ? तो मैं आप से यह कहना चाहता हूँ कि हमारा और आपका काम है कि हमारे जो सिन्धी दुखी भाई यहाँ आए है, हम उनकी तलाश करें। हम पता चलाएँ कि कौन आया है, कहाँ आया है। एक-एक को अपने पास रख लो और उसको सँभाल लो। और ये ऐसे लोग नही है कि कोई भिक्षुक हो, या भिक्षुक बनना चाहते हो। पहला मौका मिलते ही वे अपना कार्य ठीक कर लेंगे, क्योकि वे बहादुर लोग हैं, वे कुशल लोग है। हाँ, अभी उनमे गुस्सा भरा हुआ है, उनका दिमाग इस वक्त बिगडा हुआ है। उनकी जगह पर हम और आप मे से भी कोई होता, तो उसका दिमाग भी बिगड जाता। तो हमें

उनको सँभालना है। इस मौके पर उनके साथ सहानुभूति न वताओ, तो मुश्किल हो जाएगा। तो आपके पास मेरी नम्र विनती यह है कि आप समझ लें कि यह हमारा धर्म है। और यह फर्ज यदि हम अदा नही करेंगे, तो हम पर मुसीवत आनेवाली है।

अव यह तो मैंने आज थोडा-सा चित्र आपको दिया कि हमने अव तक क्या किया है। लेकिन अपनी कहानी सुनाने के लिए मैं नही आया। हमारी उम्मीद क्या है, हमे करना क्या चाहिए, वह सुनाने के लिए मै आया हूँ। इसमे मुझे वहुत निराशा होती है, क्योकि हमारे कई नौजवान भाई समझते हैं कि उन्हे अपनी लीडरशिप सिद्ध करने या अपनी नेतागीरी प्रसिद्ध करने का मौका मिला है। यह देखकर मुझे वडा दुख होता है। सारे हिन्दुस्तान का भविष्य तो आपके पास पड़ा है, आपको सिद्ध किसके पास करने की जरूरत है ?

मैं पहले अनाज का मसला लेता हूँ। जव हमने अनाज के वारे मे, फूड कट्रोल (अन्न नियत्रण) के वारे मे, एक पौलिसी (नीति) तय की, तो यह कोई आसान मामला तो था नही। उसमे वहुत मतभेद था। हमारे आपस मे भी वहुत मतभेद था। लेकिन आखिर तीन-चार साल से कंट्रोल चलता है और चारो तरफ से शिकायत आती है तो उसका किसी-न-किसी तरह से फैसला तो करना ही है। गान्धी जी ने वहुत जोर दिया कि कट्रोल निकाल देना चाहिए। कई और लोगो की भी यही राय थी और देहातो मे तो सव लोग यही कहते थे। हमने वार वार प्रान्तीय सरकारो में मिनिस्टरो को वुलाया, उनकी कार्फ्रेंसे की। आखिर हमने एक कमेटी वनाई, जिसमे वडे-वडे समझदार लोग थे। सर पुरुषोत्तम दास को इस कमेटी का चेयरमैन (अध्यक्ष) वनाया और इस कमेटी से कहा कि भाई इस चीज को तलाश करके हमे सलाह दो कि हमें क्या करना चाहिए। उसमे हमारे सोशलिस्ट भाई राममनोहर लोहिया को भी रख लिया, क्योकि हम सव की राय लेना चाहते थे। अव इस कमेटी ने फैसला किया कि कंट्रोल को हटा देना चाहिए। उस फैसले पर जव अमल करने का वक्त आया, तव फिर हमने प्रान्तो के मिनिस्टरो को वुलाया। फिर उनकी राय ली। सव लोगो की राय थी कि अव इसे हटाना ही चाहिए। हमारी आल इडिया काग्रेस कमेटी ने भी यही फैसला दिया कि हां, हटाओ। अव हम लाचार हो गए, क्योकि चन्द जिम्मेवार लोग उसके खिलाफ

थे। हमारे सब आफीसर उसके खिलाफ थे। लेकिन हमने यह फैसला कर लिया। फैसला करके इधर से चले गए और हम सोचते रहे कि अब क्या करेंगे। हमारे सोशिलिस्ट भाइयो ने प्रस्ताव किया कि यह बहुत गलत काम किया गया है, बहुत बुरा किया गया है। जो सोशिलिस्ट काग्रेस में हैं, उनका प्रतिनिधि तो हमने ले लिया था और हमारे फूड मिनिस्टर डा० राजेन्द्र प्रसाद ने जयप्रकाश नारायण से भी कहा था कि अपना एक आदमी भेजें या खुद ही आ जाएँ। तो उन्होंने कहा था कि हमें फुर्सत नही है। हम अपना प्रतिनिधि भेज देंगे, और उन्होने ही राममनोहर लोहिया को भेज दिया था। इस सब के बाद इन लोगो ने इस प्रकार किया।

दूसरी कान्फ्रेंस डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी ने बुलाई। हमारे यहाँ कपडा भी कम पैदा होता है, उसको किस तरह से बढाया जाए और उसके कट्रोल के बारे में क्या किया जाए और किस तरह किया जाए, यह इस कार्फेंस को सोचना था। उसमें मजदूरो के प्रतिनिधि को भी बुलाया और जो उद्योग के प्रतिनिधि थे उनको भी बुलाया। सबको बुलाकर एक जल्सा किया गया। इसमें लेबर के प्रतिनिधि, कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट सभी थे। वहाँ हमारे प्राइम मिनिस्टर प० नेहरू ने इन लोगो को सब कुछ समझाया और सबने उनकी राय मान ली। सब ने एक राय से फैसला किया कि हाँ, ठीक है। अब तीन साल तक कोई हडताल नहीं करनी चाहिए। मैं चिल्ला-चिल्लाकर बहुत दिनो से कह रहा था कि पाँच साल तक जमकर काम करो। सब झगडा छोड दो। नही तो, हमारा हमारे हिन्दोस्तान का कुछ भी भविष्य नही है। तो हमें इधर शान्ति चाहिए। इसलिए जमकर हम कुछ काम करें, तब तो काम होगा। जब फैसला किया, तो उसमें सब शरीक थे। लेकिन जब फैसला करके इधर आए, तो दूसरे या तीसरे ही दिन सोशलिस्ट पार्टी ने रेज्योलूशन (प्रस्ताव) पास किया कि गवर्नमेंट आफ इडिया ने ट्रूस (सन्धि) का जो फैसला किया है, उसको हम पूरा नहीं मान सकते हैं। एक रोज के लिए तो हमें बम्बई में हडताल करनी ही है।

मैं पूछता हूँ कि एक दिन के लिए टोकन स्ट्राइक क्यो? क्या लीडरशिप सिद्ध करने के लिए? उसे भी तो सिद्ध करना है। अरे भाई, इतना ही झगडा था, तो हमसे कहना था। हम ही लिख देते कि लीडरशिप आपकी है। लेकिन यह भी कोई तरीका है! अब काग्रेस में भी तो आप हैं। आपका प्रतिनिधि वहाँ

जाकर कबूल करके आया है और आप कहे, कि नही हमे तो ट्रूस नही माननी है। एक दिन की स्ट्राइक तो हम जरूर करेंगे। अब हम क्या करें? मुझे बडा अफसोस हुआ कि जिन लोगो पर हम आखिर को गवर्नमेंट चलाने का बोझ डालनेवाले है, वह इसी तरह से काम करेंगे, तो कौन-सी गवर्नमेंट चलेगी। और ऐसा ही रहा तो हिन्दुस्तान के स्वराज्य का क्या भविष्य है? हमारे हाथ अब कहाँ तक यह चीज़ रहनेवाली है और कहाँ तक हम इसे रख सकते है? तो हमको बडा दर्द हुआ। हो सकता है कि उनका पूरा काबू मजदूरो पर हो। मुझे तो यह कभी समझ मे नही आया कि इस प्रकार कोई लीडरशिप कैसे सिद्ध होती है, क्योकि मजदूरो को लीडरशिप तो तब सिद्ध होती है कि जो चीज मजदूरो को पसन्द न हो, वह चीज उनसे करवा कर दिखाओ। वह चीज अहमदाबाद मे ही होती है। दूसरी जगह पर नही होती। और अहमदाबाद मे भी यदि हम सावधान नही रहेगे, तो वहाँ से भी चली जाएगी।

आज अखबार मे यह पढकर मुझे बहुत दुख हुआ कि वहाँ के स्वामी नारायण के मन्दिर को हरिजनो के लिए खोलने से जब वहाँ के महाराज ने इनकार किया, तो सारी मिले बन्द हो गईं। देखो, हमारा दिमाग कहाँ तक चलता है। एक मन्दिर खोलने मे कोई आर्थिक सवाल या मजदूरो की तहरीक का भी कोई सवाल नही है। उसके लिए बस एक दिन की डेमोंस्ट्रेशन (प्रदर्शन) करो। उसमें सोशिलिस्ट, कम्यूनिस्ट सबको मिला लो। करो हड़ताल। कपडा तो है नही मुल्क में। गरीब लोग भूखे मरते है। उससे किसी को फायदा नही है। इससे अहमदाबाद मे मजदूरो का सगठन इतना गिरा कि मुझको चोट लगी कि यह क्या हुआ। वहाँ काग्रेस यह क्या करती है, यह मुझे काग्रेस को भी कहना पडा।

इस तरह जो स्ट्राइक हो तो कांग्रेस हमारे हाथ से चली जायगी, यह मेरा निचोड है। क्योकि मै इस तरह से काम नही करता। थोडे दिन हुए, मै कलकत्ते गया था। वहाँ भी यही तरीका है। पाँच तारीख को एक दिन की स्ट्राइक करो। उसमें कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट, एंटीकाग्रेस जितने थे, सब मिल गए। एक दिन की स्ट्राइक करो। मै वहाँ गया तो, दस-बारह लाख आदमी जमा हो गए। तीन तारीख को मैंने मीटिंग की। बहुत लोग आए। मैंने सब लोगो को समझाया कि क्या आप पसन्द करते हो कि स्ट्राइक हो और

कलकत्ता जैसे सिटी में एक दिन की स्ट्राइक करने से आप समझते हो कि पुलिस और गवर्नमेंट के ऊपर क्या बोझ पडता है ? उसमें से कोई फिसाद हो गया तो उसका क्या नतीजा निकलेगा ? और किस चीज के लिए आप हड-ताल कर रहे है ? उससे आपका क्या फायदा होगा ? जब लोग समझ गए, तो मैंने कहा कि आप लोगो का कर्त्तव्य यह है कि जब इस तरह स्ट्राइक होने का समय आए, तो आप खुले तौर से उसका विरोध करे। तब आपको घरो में नही बैठे रहना चाहिए। सब लोग यह चाहते है कि हडताल न हो। परन्तु मजदूरो के साथ कौन झगडा करे। मजदूरो में काम करनेवाले तूफानी लोग कहते हैं कि वे फिसाद करेंगे, मोटर पर हमला करेंगे, घर पर हमला करेंगे, पत्थर डालेंगे। इस से डरकर अपने काम पर मत जाओ, घर में बैठ रहो। इस तरह काम नहीं चल सकता। इस तरह से अपने स्वराज्य में आप अपनी जिम्मेवारी पूरी नही करेंगे। हर आदमी का फर्ज है कि वह सिटीजनशिप (नागरिकता) के अधिकार और जिम्मेवारी दोनो को अदा करें और अगर आप ऐसा नही करेंगे, तो देश का बहुत बडा नुकसान होगा। आज तो एक दिन की स्ट्राइक हो जाएगी, क्योकि मजदूरो को इतना ही तो कहना है कि एक दिन घर बैठो, आराम मिलेगा छुट्टी मिलेगी, तनख्वाह भी मिलेगी। परन्तु यह लीडरशिप की बात नही है। यह तो पागलपन है। इससे किसी का कोई फायदा नही होगा। तो कलकत्ता वालो ने मान लिया। फिर भी कई लोगो ने ट्रामें रोकने की कोशिश की। ट्रामो पर पर बम डाला, कुछ गडबड भी की। लेकिन सब लोगो ने विरोध किया कि यह नही चलेगा, तो स्ट्राइक नही हुई। यानी आप लोगो को स्ट्राइक पसन्द न हो तो आपको भी उसी तरह से करना चाहिए।

अब आज मै आया तो मेरे पास सोशलिस्ट लीडर अशोक मेहता की एक चिट्ठी आई कि पोर्ट ट्रस्ट में तीन हफ्ते हडताल चली है। अब आप इस चीज में इन्साफ कराने के लिए मदद कीजिए। अब मै क्या करूँ ? अब मै उसे चिट्ठी लिखनेवाला हूँ कि यह तो गवर्नमेंट आफ इडिया का काम है। यह प्रान्तीय गवर्नमेंट का काम नही है। इसलिए हम उनको बराबर इन्साफ देगे। क्योकि हमारे कम्यूनिकेशन के मिनिस्टर डा० जान मथाई मजदूरो की तरफ काफी हमदर्दी रखते है। लेकिन वह भी तग आ गए है और वह भी कहते है कि अब तो कोई रास्ता निकालना चाहिए। मैंने कहा कि एक ही रास्ता है, वह यह

सरदार पटेल जनता के नमस्कार का उत्तर देते हुए

कि निश्चय कर लो कि स्ट्राइक तो हम कभी वर्दाश्त नही करेगे। तव यह काम होगा। जव तक ऐसा नही होगा, तव तक हम गलत रास्ते पर चलते रहेगे। यह यूटिलिटी सर्विस (जनोपयोगी सेवा) है और जाहिर काम के लिए पोर्ट ट्रस्ट है। मजदूरो के लिए ही तो वहाँ अनाज आता है। लोग भूखो मरते है, राशन शाप पर अनाज हमें पहुँचाना ही है। मजदूर हड़ताल करके वैठे तो वाहर से आनेवाला अनाज वोट में ही पडा रहेगा। तो हम क्या करे ? क्या हम वैठे रहे ? सोशलिस्ट भाई की वात मान ले ? तो हमने मजदूरो की एक नई लेवर फौज भर्ती कर ली, और उनसे कहा कि आप लोगो को काम करना पडेगा। इस तरह हमने एक छोटी-सी फौज वनाई है। हमने उन लोगो को भेज दिया कि जाओ काम करो। अव काम तो चलता है। लेकिन अव यह चिट्ठी आई है, तव हमें क्या करना चाहिए ? तव मैने सोचा कि अव एक ही जवाव देना चाहिए कि यह जो मजदूर स्ट्राइक करने गए है, उनकी जगह हम दूसरो को भर्ती करनेवाले है। उनको निकाल देगे तो उसका वोझ आप पर पडेगा। क्योकि या तो हमको गवर्नमेंट आफ इंडिया छोड देनी चाहिए। वम्वई गवर्नमेंट चाहे, तो छोड सकती है, हम नही छोड़ेंगे। हम ऐसा नही करेंगे। यह वहुत वुरा काम है, यह लीडरशिप नही है। इसी तरह की वातो से हिन्दुस्तान का सत्यानाश होनेवाला है।

जितने लोग सोशलिस्ट का लेविल लगाते है, वे सव सोशलिस्ट है ऐसा न मानिए। जितने लोग कैपिटलिस्टो के दोस्त है, उनके साथ घूमते है, उन सवको कैपिटलिस्ट का एजेट कह दिया जाता है, परन्तु उससे काम खतम नही होता। लेकिन मैने कलकत्ता मे भी कहा था कि मै सोशलिस्ट का लेविल तो नही लगाता, लेकिन मै अपनी कोई प्रोपर्टी (जायदाद) नही रखता। जव से गान्धी जी का साथ हुआ, तभी से। और मै भी आपके साथ सोशलिस्ट मे था। उससे भी आगे जाना हो तो उसमे मुकाविला करने को तैयार हूँ। लेकिन हिन्दुस्तान की वरवादी होने के काम में मै कभी साथ नही दूगा। उसमें आप कहे कि मै कैपिटलिस्ट का एजेट हूँ, जो चाहें सो नाम लगाइए, लेकिन मै इस रास्ते पर हिन्दुस्तान को नही चलने दूँगा। जव तक मै वैठा हूँ, मै ऐसा हरगिज़ नही होने दूँगा। मुझे तो वड़ा अफसोस होता है कि हम लोग कहाँ जा रहे है। सवाल यह है कि अव हमे क्या करना चाहिए। एक तो हमने हिन्दुस्तान का दो टुकडा किया। उसके वाद हमारे मुल्क में यह हालत

थी कि सल्तनत जब चली गई, तो यह कह कर गई कि भारत मे जो सार्वभौम सत्ता थी, वह खत्म हो गई और जो पैरामाउन्सी थी, वह हवा में उड गई। तो हमारे मुल्क में पाँच सौ राजा पडे है, क्योकि यहाँ इतनी रियासतें है। इनमें बहुत से लोगो को लगा कि अब क्या होगा, अँग्रेज तो चले गए। बहुत-से सोचने लगे कि राजस्थान बनाओ और उसमें काफी कोशिश हुई। अगर अलग राजस्थान बन जाता, तो वह पाकिस्तान से भी बुरी चीज थी। हमने तो हिंदुस्तान गँवाया ही इसी कारण से कि अनेक अलग-अलग राज्य एक नही हो सकते थे। अब हमें फिर से उसे नही गवाँना है। इसलिए साथ-साथ दो-चार महीने में यह भी काम करना था कि हिन्दुस्तान को सगठित करके सब राजाओ को भी साथ ले ले। आप देखते है कि हमने यही काम कर लिया। दो-तीन राज्यो के साथ झगडा चलता है, उसका भी फैसला हो जाएगा और ठीक तरह से हो जाएगा। उसमें मुझे कोई शका नही है। लेकिन जब मैंने यह काम किया तो कई लोग कहने लगे कि भई, यह तो राजाओ का दोस्त हो गया। कैपिटलिस्ट का दोस्त तो मै पहले ही था, अब राजाओ का भी दोस्त हो गया। ४८ घटो में चालीस रियासतें मैंने खत्म की। तब वे लोग कहने लगे कि यह क्या चीज बनी! तो काम तो दिमाग से होता है और जिस समय मौका आता है, उस समय काम होता है। जब फल पकता है, तब उसमें मिठास आती है। लेकिन कच्चा खाओ तो दाँत खट्टे हो जाएँगे, और पेट खराब हो जाएगा। इस तरह से यह सब भी हमने चार महीने में कर लिया।

अब हमें क्या करना है? अब करने का काम यह है कि हमें हिन्दुस्तान को उठाना है और दुनिया के और उन्नत मुल्को के साथ उसको रखना है। उसके लिए आज हिन्दुस्तान में किस चीज की जरूरत है? एक, मैंने जो कहा और जिसके लिए गान्धीजी फाका कर रहे है, उस चीज की हमें पूरी जरूरत है। हमें गुस्से पर, अपने मिजाज पर, काबू रखना है कि इधर हिन्दुस्तान में कोई फसाद न हो। आज मैं एक प्रेस कान्फ्रेंस में गया था। एक आदमी ने सवाल पूछा कि जितने हिन्दू और सिक्ख वहाँ से निकालते है, उतने मुसलमान हम इधर से निकाले कि नही? अब इस तरह से हमारा दिमाग चलेगा, तो हमारा काम नही होगा। जितने मुसलमान इधर पडे है, उन सबको चैन से रहने दो। यदि उनको जाना पडे, तो अपने कर्म से जाना पडे, हमारे कर्म से

नही। यदि वह गल्ती करेगा, तो उसको जाना ही पड़ेगा। लेकिन यदि वह वफादारी से हमारे यहाँ रहे, तो हमें उसपर पूरा भरोसा करना चाहिए। जैसा हमारा रहने का अधिकार है, इसी तरह से उसका भी है। उनको दिल की पूरी अमन और चैन से यहाँ रहना चाहिए। चन्द मुसलमानो को मार देने से मुल्क का कोई फायदा न होगा। इससे मुल्क का वुरा होगा, नुकसान होगा। यह चीज़ हमको छोड देनी चाहिए। यही मै मुसलमानों से भी कहता हूँ और कभी-कभी कडी भाषा मे भी कहता हूँ। लेकिन कई मुसलमान समझने लगे कि यह हमारा दुश्मन है। तो मै कहता हूँ कि गान्धी भी तो एनेमी नम्वर १ था। वैसे ही मै भी हूँ। लेकिन जैसे गान्धी आज उनका सवसे वडा मित्र है, ऐसा ही मै भी हूँ, यह आप समझ लीजिए। क्योकि मै कोई वात छिपाऊँगा नही। मै साफ सुनाऊँगा। यदि मै छिपाऊँगा तो वह आपसे दगा करना होगा। तव मै दगावाज हो जाऊँगा। मै दगावाज नही होना चाहता। तो आप ऐसी वात न समझे। जो वात मै कहता हूँ, उससे आपको थोडा सा वुरा या कटु भी लगे, तो हजम कर लीजिए। लेकिन मेरी वात समझ लीजिए।

तो एक चीज तो हमे वही करनी है, जो गान्धी जी चाहते है। वह यह कि इस तरफ हिन्दोस्तान मे कोई गड़वड न करो। पाकिस्तान मे कुछ हो, तो उसका वदला हम इधर न ले। वुरी चीज मे मुकावला न करो' भली चीज़ मे मुकावला करो। गान्धीजी जितना कहते है, अगर वहाँ तक नही जा सके, तो जो मै कहता हूँ और जवाहरलाल कहता है, वहाँ तक तो चलो। गान्धी जी के साथ तो आप जाकर नही वैठ सकते हो, मै भी नही वैठ सकता हूँ। मै भी कहता हूँ कि मुझे राज्य चलाना है, वन्दूक रखनी है, तोप रखनी है, आर्मी रखनी है। गान्धी जी कहते है कि कोई न करो। तो वह मै नही कर सकता हूँ। और मुझे ऐसी आर्मी रखनी है, जिससे हमारे सामने कोई नज़र न रख सके, इस तरह की मजवूत आर्मी मुझे रखनी है। नही तो मुझे इधर से हट जाना चाहिए। मुझे यह चीज़ नही चाहिए। क्योकि मै तीस करोड का ट्रस्टी हो गया हूँ। मेरी जिम्मेवारी है कि मै सवकी रक्षा करूँ। तो इस तरह मुझे करना है। गान्धी जी जिस तरह करना चाहते है, उस तरह तो मै नही कर सकता। लेकिन गान्धी जी भी यह अच्छी तरह समझते है, मै उनको भी कहता हूँ कि भाई, मै तो हुकूमत लेकर वैठा हूँ। मेरे पर हमला

होगा मै उसे वर्दाश्त नही करूंगा। क्योकि मेरी जिम्मेवारी है। वह समझते हैं कि यह ठीक कहता है। यह हँसने की वात नही है। मैंने वार-वार उनके साथ वात की है। उन्होने मुझसे कहा, "मै तो ऐसे ही करूंगा। आप अपने रास्ते चलिए। मेरा रास्ता अच्छा है, यह मै जानता हूँ।"

मैंने कहा—"मै भी जानता हूँ कि आपका रास्ता अच्छा है। लेकिन वहाँ तक मै नही जा पाता हूँ।"

लेकिन जो रास्ता इधर वताया जाता है कि हिन्दू वहाँ से निकाले जाएँ, तो उतने मुसलमान इधर से निकालने ठीक नही है। और यह भी है कि लडना हो, तो लडाई का मैदान और लडाई का मौका होना चाहिए। सव चीज़ हमारे साथ होनी चाहिए। हमारे पास लडाई का सामान पूरा होना चाहिए, कि घाटा न पडे। यह सव चीज ठीक करके काम करना चाहिए। तो गवर्नमेंट जो पार्टी चलाती है, वह तरीके से काम करती है। पागलो की तरह काम करेगी, तो हार जाएगी। तो यह चीज़ करने की है कि यह जो हमारा हिन्दुस्तान है, उसमें अव कोई गडवड न करो। मेहरवानी करके अव हमको काम करने का मौका दो। अव ५० लाख तो हम निकाल लाए। जो चन्द २५, ३० हजार आदमी फ्राटियर में पडे है और सात-आठ लाख सिन्ध में पडे हैं, उनको आराम से ले आने की मेरी कोशिश है। इसमें तकलीफ तो पडेगी। क्योकि पत्थर के नीचे हमारा हाथ पडा है। तो कुछ ठीक तरह से सँभाल कर निकालना है। उतना निकल जाए, तो पीछे कोई झगडा हमें नही रहता।

अव हमें हिन्दोस्तान की हिफाजत के लिए फौज रखनी होगी। और अगर आर्मी मजबूत न हो तो हिन्दुस्तान, आप समझ लीजिए कि, खत्म हो जायगा। तो मजबूत फौज तो हमें रखनी होगी। मजवूत फौज रखनी पडी, तो फौज़ के पीछे कितनी चीजें चाहिए, उसका नक्शा आप के सामने होना चाहिए। और यह न हो तो फौज रखने की वातें वेकार है। वहुत-से लोग मुझसे कहते हैं कि भर्ती क्यो नहीं करते हो। हम भर्ती में आने के लिए तैयार हैं। लेकिन मै भर्ती करके क्या करूँ? जितनी भर्ती करूँ, उसके पीछे कितनी चीजें चाहिए, उसका तो आपको ख्याल नही है। क्योकि खाली आदमी भर्ती करने से काम नही होता। हिन्दुस्तान की पिछली सरकार ने पिछली लडाई में २५ लाख आदमी भर्ती में लिए थे। लेकिन करोडो-अरवों रुपयो का खर्च हुआ था। जव

लडाई चलती थी तो एक घटे की स्ट्राइक भी किसी कारखाने मे नही हो सकती थी। और यह सब लोग जो आज स्ट्राइक की बात करते है, उन दिनो नही कर सकते थे।

लडाई के दिनों मे हमारे कम्यूनिस्ट भाई कहते थे कि "ज्यादा पैदा करो और स्ट्राइक न करो!" आज कहते है कि "बैठ जाओ और कम पैदा करो!" क्योकि आज कोई पकडनेवाला नही है; क्योंकि आज कोई लाठी नही चलाता। वह लड़ाई पीपुल्स वार (जनता का युद्ध) हो गई थी। अब क्या हुआ 'पीपुल्स' का ? भूखे रहो, खाओ नही, पैदा मत करो और बस मौज करो! ऐसा ही हुआ तो देश क्या होगा ? क्योकि इस चीज़ मे आर्मी नही बन सकती। फौज अच्छी बनानी हो, तो हमे कितनी चीज़े चाहिएँ ? एक तो आर्म्स-एम्यूनिशन (हथियार-बारूद) चाहिए। उसके लिए फैक्टरी चाहिए। वह फैक्टरी रात-दिन चलनी चाहिए। वह २४ घटा चले। फौज के लिए राइफले चाहिएँ। भर्ती करूँ, तो कहाँ से करूँ ? बन्दूक देनी हो तो कहाँ से लाऊँ ? मै जाऊँ सोशलिस्ट के पास कि दो भाई ? इस तरह काम नही बनेगा। यदि हमारी फैक्टरी है, तो कितनी है, कहाँ है, उनमे कितने काम करनेवाले है और उस फैक्टरी मे से हम कितनी पैदावार कर सकते है, कितनी पैदावार बढा सकते है, यह सब हिसाब हमारे पास है, उनके पास तो है नही। वह तो जानता भी नही है कि यह सब क्या है ? सिर्फ बन्दूके ही नही चाहिएँ, तोपें चाहिएँ, मशीनगने चाहिएँ, उनके लिए बारूद-गोला चाहिए, बम चाहिए, हवाई जहाज चाहिए, बम फेकनेवाली मशीने चाहिएँ। उनके लिए ट्रेण्ड आदमी चाहिएँ। लेकिन मैने कोई जगह नही देखी, जहाँ स्ट्राइक नही होती है। सब जगह पर होती है। साथ ही हमे पेट्रोल चाहिए, यह सब कहाँ से लाओगे ? हमारा पेट्रोल परदेसियो की मेहरबानी पर है। कल हमारा पेट्रोल वह बन्द कर दे, तो हमारी लडाई खत्म। पेट्रोल के बिना कुछ नही चल सकता। क्योकि आज की लडाई ऐसी लडाई नही, जैसी पहले थी। पेट्रोल चाहिए, उसके साथ हजारो ट्रक चाहिए और ट्रक्स भी ऐसे चाहिए जो बराबर तैयार मिले। जीप्स चाहिएँ कि बिना सड़क के भी चली जाएँ; पहाड़ के ऊपर जा सकनेवाली मोटरे चाहिएँ।

अब ये सब चीजे कहाँ से लाओगे ? कहा बनती है इधर ? और इधर हमें नए कारखाने खोलने होगे, तो किस तरह खोलेगे ? स्ट्राइक होगी और

होगा मैं उसे बर्दाश्त नही करूँगा। क्योंकि मेरी जिम्मेवारी है। वह समझते हैं कि यह ठीक कहता है। यह हँसने की बात नही है। मैंने बार-बार उनके साथ बात की है। उन्होने मुझसे कहा, "मै तो ऐसे ही करूँगा। आप अपने रास्ते चलिए। मेरा रास्ता अच्छा है, यह मैं जानता हूँ।"

मैंने कहा—"मै भी जानता हूँ कि आपका रास्ता अच्छा है। लेकिन वहाँ तक मै नही जा पाता हूँ।"

लेकिन जो रास्ता इधर बताया जाता है कि हिन्दू वहाँ से निकाले जाएँ, तो उतने मुसलमान इधर से निकालने ठीक नही है। और यह भी है कि लडना हो, तो लडाई का मैदान और लडाई का मौका होना चाहिए। सब चीज़ हमारे साथ होनी चाहिए। हमारे पास लडाई का सामान पूरा होना चाहिए, कि घाटा न पडे। यह सब चीज़ ठीक करके काम करना चाहिए। तो गवर्नमेंट जो पार्टी चलाती है, वह तरीके से काम करती है। पागलो की तरह काम करेगी, तो हार जाएगी। तो यह चीज़ करने की है कि यह ज़ो हमारा हिन्दुस्तान है, उसमें अब कोई गडबड न करो। मेहरबानी करके अब हमको काम करने का मौका दो। अब ५० लाख तो हम निकाल लाए। जो चन्द २५, ३० हजार आदमी फ्राटियर में पडे हैं और सात-आठ लाख सिन्ध में पडे हैं, उनको आराम से ले आने की मेरी कोशिश है। इसमें तकलीफ तो पडेगी। क्योंकि पत्थर के नीचे हमारा हाथ पडा है। तो कुछ ठीक तरह से सँभाल कर निकालना है। उतना निकल जाए, तो पीछे कोई झगडा हमें नही रहता।

अब हमें हिन्दोस्तान की हिफाजत के लिए फौज रखनी होगी। और अगर आर्मी मजबूत न हो तो हिन्दुस्तान, आप समझ लीजिए कि, खत्म हो जायगा। तो मजबूत फौज तो हमें रखनी होगी। मजबूत फौज रखनी पडी, तो फौज़ के पीछे कितनी चीजें चाहिए, उसका नक्शा आप के सामने होना चाहिए। और यह न हो तो फौज रखने की बातें बेकार हैं। बहुत-से लोग मुझसे कहते हैं कि भर्ती क्यों नहीं करते हो। हम भर्ती में आने के लिए तैयार है। लेकिन मै भर्ती करके क्या करूँ? जितनी भर्ती करूँ, उसके पीछे कितनी चीज़ें चाहिए, उसका तो आपको ख्याल नही है। क्योंकि खाली आदमी भर्ती करने से काम नही होता। हिन्दुस्तान की पिछली सरकार ने पिछली लडाई में २५ लाख आदमी भर्ती में लिए थे। लेकिन करोडो-अरबों रुपयो का खर्च हुआ था। जब

बिगड़ता है, हमारा भी बिगडता है। तो कोई हद भी है, कोई मर्यादा भी है कि कहाँ तक जाना है ? अब कहते हैं कि हम तीन साल की एकट्रूस के लिए तैयार है। लेकिन हम तो शर्तें लगाएँगे। राज्य हमें चलाना है, और वह कहते है कि इस तरह से हम चलाएँ कि बुद्धि वह दें और काम हम करें। इस तरह से काम नही बनेगा भाई साहब !

मैंने बहुत दफा कहा कि एक प्रान्त पसन्द करके आप ले ले और वहाँ आप चलाके बताएँ कि इस तरह से हम काम करेंगे। वह कहते है कि आप के दिए हम थोडे लेगे। आपको देने का क्या अधिकार है ? हम तो छीनकर लेगे। अच्छी बात है। इस तरह से वह एक कारपोरेशन जीतने के लिए आए है। हम हँस कर कहते है, लीजिए। स्ट्राइक हुई। कहते है कि कारपोरेशन का चुनाव होनेवाला है, इसलिए आए है। अब कितने सोशलिस्ट कारपोरेशन मे थे, वह देख लीजिए। उसका इतिहास देख लीजिए कि कारपोरेशन मे क्या-क्या काम उन्होने किया। जितने और लोग कारपोरेशन में आज तक थे, जो पाँच-दस साल से वहाँ बैठे थे। उनका कारपोरेशन के काम का इतिहास देखिए। जब डिसक्वालिफाई (पदायोग्य) होने का समय आए, तब जा कर हाजिरी दे। तब तक तो हाजिरी भी न दें। अब इस तरह से काम करो, तब तो क्या काम होगा ? चाहो तो एक कारपोरेशन को आप सँभालो। यह तो बहुत ही अच्छी बात है। लेकिन सँभालना चाहिए। अब कहते हैं कि यह गवर्नमेंट बुरी है, ठीक काम नही करती है। जैसे पहले चलती थी वैसी ही है, उसमे कोई फर्क नही पडा। असल मे फर्क पडा उनमें। दूसरो मे कोई फर्क नही पडा, क्योकि पहले वे ऐसे नही थे, अब हो गए है। तभी तो उनको काग्रेस मे से निकालना पडा। कहते है कि हम काग्रेस में से इस्तीफा देगे। अच्छी बात है, दो। जो लोग काग्रेस मे काम करेगे, काम का बोझ तो उनके ऊपर पड़नेवाला है। मुझे दिल में खटका रहता है कि यह क्या हो रहा है।

मै आप लोगो को यह समझाना चाहता हूँ कि कारखाने अब हमारे हैं और हमें ज्यादा पैदा करना है। तब कहते है कि नेशनलाइज़ (राष्ट्रीयकरण) करो। यह तो कैपिटलिस्ट लोग धन पैदा करके ले जाएँगे। आपने हिसाब नही देखा कि हम कितना रुपया टैक्स में लेते है ? १६ आना मे हम साढे पन्द्रह आना तक टैक्स ले लेते है। तो कैपिटलिस्ट लोग हमसे कहते है कि हम क्यों

क्या होगा ? अब लोहा चाहिए। क्योंकि बन्दूक बनानी हो, तोप बनानी हो, सब चीज बनानी हो, तो स्टील चाहिए, लोहा चाहिए। टाटा का एक कारखाना हमारे हिन्दुस्तान में जमशेदपुर में है और हमने उसकी काफी मदद की है। क्योंकि हम यह समझते थे कि वह मुसीबत में था। लोहा एक नेशनल वेल्थ है, राष्ट्र की दौलत है। अगर उसको हम ठीक नही रखेंगे, तो हमको मुश्किल पड़ेगी। तो आज भी एक ही कारखाना है। लेकिन आज स्टील (लोहा) पर कन्ट्रोल है। आपको मालूम है कि आज मकान बनाना हो तो उसके लिए स्टील चाहिए, या लोहा चाहिए, तो नही मिलेगा। उस पर कन्ट्रोल है, क्योंकि हमारे पास है ही नही। हमारे देश में जो लोहा बनता है, वह बहुत कम बनता है। हिन्दुस्तान में ऐसे कारखाने बहुत से चाहिएँ। तो हमें लोहे के नये कारखाने बनाने है और बनाने के लिए हम क्या करें ? अब आप बताएँ कि बडा कारखाना बनाएँ, तो अभी तो जो एक ही चलता है, उसमें भी बार-बार स्ट्राइक होती है। दूसरा बनाएँगे, तो वहाँ भी स्ट्राइकें होगी। हम बडी आर्मी बनाएँगे, उसके लिए पूरा कपडा चाहिए। हमें इधर कपडा न मिले तो चल सकता है, लेकिन आर्मी को हमें काश्मीर भेजना है, उसके पास भी कपडा न हो, तो वह पहले दिन ही मर जाएगा। क्योंकि वहाँ इतनी ठड पडती है। ठंड न भी हो, तो भी आर्मी का यूनिफार्म तो चाहिए और स्पेयर (फालतू) भी चाहिए। यह सब चीजें पहले से हमें सोचनी पड़ेंगी। अब वह कहाँ बने ? वह घर में नही बन सकता। वह कारखाने में बनेगा। लेकिन कारखाने में तो स्ट्राइक करो। इस तरह कभी काम चलेगा ?

अब कितनी चीजें मै आपके सामने रखू ? फौज को खुराक चाहिए। खुराक रेल की मार्फत पहुँचती है। आर्मी की सब चीजें रेल में जाएँगी। हाँ, पे कमीशन की रिपोर्ट आई कि रेलवे मैन को इतनी तनख्वाह दी जाए। अब तो भाई, भाव बढ गया है, अब ज्यादा न बने तो करो स्ट्राइक। बस सारा काम अटक पडा। मै सिर्फ एक ही चीज नही देखता हूँ, सभी कुछ देखता हूँ। अब आप गवर्नमेंट में तो न आए, पर गवर्नमेंट के जो नौकर है, उनमें आ घुसे और गवर्नमेंट का कारखाना ही बन्द करने की कोशिश की। तो भाई तुम चाहते क्या हो ? कह दो कि हम सरकार मे आना चाहते है, तो हम जगह दे देने के लिए तैयार है। ऐसी बातें क्यो कहते हो, जिसमें आपका भी काम

पैदा करो ?" यह उनका स्लोगन (नारा) है । "ज्यादा पैदा करो और स्ट्राइक न करो।" और दोनो मिलकर आज इस तरह से काम करते है कि आज वहाँ प्रोडक्शन (उत्पादन) वढ गया है। अब हम तो स्ट्राइक के बाद तनख्वाह बढाएँ, लेकिन तनख्वाह वढाने के बाद काम वढाने की वात नही बनती। यह तो उल्टी वातें करते है। ऐसा ही रहा तो हम गिर जानेवाले है। तो मैं आप लोगो को यह समझाना चाहता हूँ कि यदि हम इस चीज़ को नही समझेंगे, तो हमारा काम कभी न वनेगा । हम अब ज्यादा बोझ नही खेंच सकते है। और चन्द दिन खीचे, तो भी वह काम नही चलेगा। लेकिन हम चाहते है कि यह चीज सब समझें कि जब तक हमारे मुल्क का प्रोडक्शन नही बढेगा, जब तक हमारा मुल्क ज्यादा धन नही पैदा करेगा, तब तक हम उठ नही सकेंगे। क्योकि हमारा मुल्क बहुत गिरा है। यह शायद आपको मालूम नही। हम पहले तो कर्जदार थे, आज. हम लेनदार है। लेकिन लेनदार होते हुए हमारी हालत कर्जदार से बुरी हो गई है। क्योंकि कर्जा तो मिलनेवाला नही है और कर्जा तो खून का बूद-बूद निकाल कर ले गया लेने वाला। अब हम मुर्दार पडे है। इतना नासिक में नोट छाप-छाप के रुपया तो बनाया। खूब इन्फ्लेशन कर दिया। उसका असर आज हमारे ऊपर पड रहा है। हमारी इकोनॉमी (आर्थिक व्यवस्था) पर। बहुत गिर गए है हम। उसका किसी को ख्याल नही है। तो मैं यह चाहता हूँ कि मैं जो वात करता हूँ, उसको अच्छी तरह से सद्भाव से समझ लो। मैं आपकी कोई बुराई नही करना चाहता। लेकिन मैं आपको समझाना चाहता हूँ कि इस तरह से आप गलत काम करते रहेगे, तो मुल्क को तो नुकसान ही होने वाला है, फायदा नही होगा।

जब पडित नेहरू ने यह कहा कि तीन साल का ट्रूस करो, तो आप को समझना चाहिए कि वह तो कोई आप से कम दर्जे का सोशलिस्ट नही है। मुझको आप कहो कि मैं कैपिटलिस्ट का एजेंट हूँ। मुझे आप सब चीज कह सकते हो। क्योकि मुझको तो आप जानते ही नही है। लेकिन उनको आप यह नही कह सकते है। जब उसने कहा कि ट्रूस करो, तो दूसरे ही दिन आपने वह ट्रूस तोड दिया। अब वह तो काग्रेस मे से निकल जाते हैं। ठीक है निकल जाओ लेकिन आप लोगो का काम है कि कांग्रेस को कमजोर न होने दे। काग्रेस ने तो अभी आपको आजाद ही कराया है। असली काम तो अब हमें शुरू करना है। मुल्क में से परदेमी हुकमत हट जाने से हमको मौका मिला है कि हम

पैदा करें ? हमारे बजट में पिछली दफा हमने इतना टैक्स लगाया कि उनको चोट लगी। तो इस हालत में हमें काम करना है। यदि देश को अपना नही समझना, तब तो आप भूल जाइए कि हमने स्वराज्य क्यो लिया है। या फिर अँग्रेजो को पीछे बुला लो। या किसी दूसरे को राज दे दो कि हमारे काम की बात नही है। नेशनेलाइज़ेशन ठीक बात है। कराची कांग्रेस से हमारा रेज़ोल्यूशन है कि सब इंडस्ट्री नेशनेलाइज़ करना है। लेकिन यह तो रेज़ोल्यूशन है। हम कौन-सी चीज करके बताते है, वह हमें पहले देखना चाहिए। कोई काम करता है, तो उसको काम न करने दो और आप खुद भी काम न करो। इस तरह करने से तो कोई काम नही होता। यदि गवर्नमेंट इतनी ताकत रखती है कि सिलेक्ट इंडस्ट्री (चुना हुआ व्यवसाय) बनाए, तो उसे बनानी चाहिए। कांग्रेस का भी तो यही मकसद है। सरकार कोशिश भी करती है कि हमें सिलेक्ट इंडस्ट्री अपनी बनानी है। जैसे टाटा ने कारखाना बनाया है, वह हम भी बनाएँ। क्यो न बनाएँ ? और खुद टाटा भी कहता है कि आप बनाइए। क्योकि हमारे पास तो जगह बहुत है। लेकिन गवर्नमेंट के पास, हमारे पास रिसोर्सेज़ (साधन) नही है, इतनी ताकत नही है, इतने आदमी नही है।

हमारी गवर्नमेंट का कल ही तो जन्म हुआ है। हमारी सरकार तो अभी चार महीने का बच्चा है। उसके ऊपर सब बोझ डालो, तो वह गिर जायगा। तो जितने हमारे लोग बुद्धिमान है, जिनके पास अनुभव है, उसका उपयोग भी हमें करना है। मुल्क के फायदे के लिए जितना और जहाँ तक हो सके, कोशिश करके उनको भी साथ लेना है। हमारी कोशिश तो यह है कि नेश-नेलाइज़ करना सम्भव हो, तो हम वह भी करें। और वह न हो सके तो जितने और लोग अनुभववाले है, उनको साथ लेकर जहाँ तक उनको समझावें वहाँ तक समझा कर साथ लें, और मजदूरो को भी समझाने की कोशिश करें। मै जो कहता हूँ, उसका मतलब यह नही कि मजदूरो को न्याय से जो देना हो वह नही देना। वह उन्हे जरूर देना चाहिए। क्योकि उन्हें उनका भाग पूरा नही मिलेगा, तो वे अपने दिल से काम नही कर सकेंगे।

लेकिन नेशनलाइज़ करनेवाले लोग कहते है कि आप देखें कि इंग्लैण्ड में क्या हाल है। मै कहता हूँ देखिए, आज इग्लैण्ड के मजदूर के अपने हाथ में राज्य है। वह समझ गए है कि इस तरह से तो हमारा काम नही चलेगा, तो खुद ज्यादा काम करते है। "ज्यादा

पैदा करो ?" यह उनका स्लोगन (नारा) है। "ज्यादा पैदा करो और स्ट्राइक न करो।" और दोनों मिलकर आज इस तरह से काम करते हैं कि आज वहां प्रोडक्शन (उत्पादन) बढ़ गया है। अब हम तो स्ट्राइक के बाद तनख्वाह बढ़ाएं, लेकिन तनख्वाह बढ़ाने के बाद काम बढ़ाने की बात नहीं बनती। यह तो उल्टी बातें करते हैं। ऐसा ही रहा तो हम गिर जानेवाले हैं। तो मैं आप लोगों को यह समझाना चाहता हूँ कि यदि हम इस चीज को नहीं समझेंगे, तो हमारा काम कभी न बनेगा। हम अब ज्यादा बोझ नहीं खेंच सकते हैं। और चन्द दिन खींचे, तो भी वह काम नहीं चलेगा। लेकिन हम चाहते हैं कि यह चीज सब समझें कि जब तक हमारे मुल्क का प्रोडक्शन नहीं बढ़ेगा, जब तक हमारा मुल्क ज्यादा धन नहीं पैदा करेगा, तब तक हम उठ नहीं सकेंगे। क्योंकि हमारा मुल्क बहुत गिरा है। यह शायद आपको मालूम नहीं। हम पहले तो कर्जदार थे, आज हम लेनदार हैं। लेकिन लेनदार होते हुए हमारी हालत कर्जदार से बुरी हो गई है। क्योंकि कर्जा तो मिलनेवाला नहीं है और कर्जा तो खून का बूंद-बूंद निकाल कर ले गया लेने वाला। अब हम मुर्दार पड़े हैं। इतना नासिक में नोट छाप-छाप के रुपया तो बनाया। खूब इन्फ्लेशन कर दिया। उसका असर आज हमारे ऊपर पड़ रहा है। हमारी इकोनॉमी (आर्थिक व्यवस्था) पर। बहुत गिर गए हैं हम। उसका किसी को ख्याल नहीं है। तो मैं यह चाहता हूँ कि मैं जो बात करता हूँ, उसको अच्छी तरह से सद्भाव से समझ लो। मैं आपकी कोई बुराई नहीं करना चाहता। लेकिन मैं आपको समझाना चाहता हूँ कि इस तरह से आप गलत काम करते रहेंगे, तो मुल्क को तो नुकसान ही होने वाला है, फायदा नहीं होगा।

जब पंडित नेहरू ने यह कहा कि तीन साल का ट्रूस करो, तो आप को समझना चाहिए कि वह तो कोई आप से कम दर्जे का सोशलिस्ट नहीं है। मुझको आप कहो कि मैं कैपिटलिस्ट का एजेंट हूँ। मुझे आप सब चीज कह सकते हो। क्योंकि मुझको तो आप जानते ही नहीं है। लेकिन उनको आप यह नहीं कह सकते हैं। जब उसने कहा कि ट्रूस करो, तो दूसरे ही दिन आपने वह ट्रूस तोड़ दिया। अब वह तो कांग्रेस में से निकल जाते हैं। ठीक है निकल जाओ लेकिन आप लोगों का काम है कि कांग्रेस को कमजोर न होने दें। कांग्रेस ने तो अभी आपको आजाद ही कराया है। असली काम तो अब हमें शुरू करना है। मुल्क में से परदेशी हुकूमत हट जाने से हमको मौका मिला है कि हम

जैसा चाहें, वैसा भविष्य बना सकें। अच्छा भविष्य बनाने के काम में अगर आप हट जाएँ और साथ न दें, तो यह काम बिगाड देनेवाली बात है।

तो बम्बई में आपको इस प्रकार की आबोहवा पैदा करनी चाहिए। आज मैंने देखा तो मुझे दुख हुआ कि यहाँ जो हमारे धनिक लोग हे, कैपिटलिस्ट है, उनको गवर्नमेंट का जितना और जिस प्रकार साथ देना चाहिए, उनके और सरकार के बीच जो सहयोग होना चाहिए, मेल होना चाहिए, वह नही है। काग्रेस और गवर्नमेंट के बीच में जिस प्रकार का मेल होना चाहिए, वह भी मै यहाँ नही देखता हूँ और लोगो का सरकार के साथ जिस प्रकार का सहयोग होना चाहिए, वह भी मैं नही देखता हूँ। मै तो वम्बई में बहुत दिनो बाद आया हूँ। मुझे लगता है कि बम्बई शिथिल हो गया है।

किसी ने यह समझ लिया कि १५ अगस्त को हमको आजादी मिल गई, अब क्या बाकी है। अब जो चाहे सो करो। तो मै आपसे कहना चाहता हूँ कि बम्बई गिर जाएगा। बम्बई का आज हिन्दोस्तान में पहला नम्बर है, जिस तरह अभी तक हिन्दोस्तान समझता है कि बम्बई से ही सब पौलिसी चलती है, तो आपकी वह जगह गिर जाएगी। तो आजकल यहाँ हमारे भाई डा० श्यामाप्रसाद इसलिए आनेवाले हैं कि कपडे के कट्रोल का क्या किया जाए। उसको ज्यादा पैदा करने के लिए क्या किया जाए, उसके दाम का क्या किया जाए। उसके लेबर का, और उद्योगवालो का क्या किया जाए, इस सब पर हमें विचार करना है। उन्होने मेरी मदद माँगी तो मै उनका साथ देने के लिये आया हूँ। लेकिन यदि आप लोग साथ न दें, तो वह चीज़ नही चल सकेगी। तो मैंने आपको जो इतनी बातें समझाई है, उन पर आप ख्याल रखें और यह समझें कि यह सब बातें आपको ज़रूर करनी हैं। अगर बम्बई गलत रास्ते पर चलता है, तो उसका बोझ भी आप पर ही पडेगा और उसका नुकसान भी आप ही को उठाना पडेगा। बम्बई सही रास्ते पर चलेगा, तो उसका फायदा भी आपको मिलेगा और उसमें आपकी इज्जत भी बढेगी। मै चाहता हूँ कि बम्बई अपने सही रास्ते से विचलित न हो जाए। ईश्वर आप को सफलता दे। धन्यवाद।

---

(४)

शिवाजी पार्क, बम्बई

१८ जनवरी, १९४८

बहनो और भाइयो,

कल चौपाटी पर जो सभा हुई थी, उसमें मैंने बहुत-सी बाते कह दी थी और आप लोगो ने वे बाते समझ भी ली होगी। क्योकि या तो रेडियो आपने सुना होगा और या अखबारो में देख लिया होगा। जैसा भाई पाटिल ने आपको बताया, कल हमारे दिलो मे बहुत दर्द भरा हुआ था। आज हमारा दर्द कुछ कम हुआ है, क्योकि गान्धी जी का उपवास टूट गया है। लेकिन तो भी यह तो हमारे ही कामों का नतीजा है कि उनको हम ऐसी हालत में रख देते है कि उनको उपवास करना पडता है। वह दर्द तो हमको हो ही जाता है। क्योकि जब गान्धी जी उपवास करते हैं तो यह चीज़ कोई हिन्दुस्तान मे ही नही रहती है। यह सारी दुनिया मे फैल जाती है। तब सारी दुनिया सोचने लगती है कि कोई ऐसी चीज है, जिसके लिए इस महान पुरुष को उपवास करना पडता है। क्योकि आज के युग में सारी दुनिया मानती है कि वह सबसे बडी हस्ती है। दुनिया में जो एक ऐसा महान पुरुष है, उसको उपवास क्यो करना पडता है? सो हम चाहते है कि वैसा मौका फिर पैदा न हो कि उनको फाका करना पडे।

अब गान्धी जी का फाका छूट गया, तो यह बहुत खुशी की बात है। लेकिन

फाका छूटने के वाद भी, अगर वे कारण कायम रहे, जिन के लिए उनको फाका करना पडा, तो वह उससे भी बुरा होगा। तो उसके लिए उसका रहस्य हमें समझ लेना चाहिए। तो मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि जो कुछ आज हुआ, वह तो हो गया। लेकिन अब हमें हिन्दुस्तान में कम-से-कम इतनी आवो-हवा जरूर पैदा कर लेनी चाहिए कि यहाँ दो कौमो के बीच जो ज़हर भरा है, वह निकल जाए। हिन्दुस्तान में रहनेवाले सिक्ख, हिन्दू तथा मुसलमान दोनो के बीच दोनो के हितो में, जो अन्तर वन गया है, वह टूट जाए और वे एक दूसरे के साथ मिलकर रहे, ऐसी आबोहवा हमें पैदा करनी चाहिए। मैं जानता हूँ कि यह काम कठिन है, आसान नही है। क्योकि जो हालत वहा पाकिस्तान में बनती है, उसका कुछ-न-कुछ असर हमारे मुल्क पर पडता ही है। लेकिन जब हमने हिन्दुस्तान के दो टुकडे मजूर कर लिए, तो हमें समझना चाहिए कि वहाँ कुछ भी हो इधर हमारी जो ज़िम्मेवारी है, वह हमको अदा करनी ही है। अगर हम उसे अदा न करें, तो हमारा काम नही चलेगा।

तो आज उसके बारे में मै ज्यादा नही कहूँगा। लेकिन मैं एक वात ज़रूर कहना चाहता हूँ, जो आपको अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए। आपने आजादी हासिल की, मुल्क को परदेसी हुकूमत में से मुक्त किया। लेकिन इतनी कुर्बानी करने के वाद हमारा उद्देश्य तो पूरा हो गया, तब भी जितनी खुशी हम लोगो को होनी चाहिए, वह हमें नही हुई। उसका कारण यह है कि एक तरह से हमने आज़ादी तो पाई। लेकिन उसके बाद हिन्दुस्तान को जिस रास्ते पर हमें ले जाना था, उस रास्ते पर हम उसे ले नही जा सके। जिस प्रकार का हमारा स्वराज्य होना चाहिए था, वैसा हम बना नही सके। तो हमारे चन्द लोग यह बात नही समझते हैं और कहते है कि यह राज तो वैसे ही चलता है, जैसे पुराना राज चलता था। कई नवजवान कहते हैं कि यह राज चलाने वाले धनिको के हाथ मे पडे हैं। यह तो कैपिटलिस्ट (पूजीपति) की गवर्नमेंट है। वह लोग नही समझते है कि हम लोगो ने इतने थोडे समय में कितना काम किया है।

मैंने चन्द वातें कल वताई थी कि हमने क्या-क्या किया और कितने रोज़ में किया। हमने १५ अगस्त को पावर (शक्ति) ली। उसे अभी ५ महीने से ज्यादा नही हुआ। अब इन पाँच महीनो मे हमने जो काम किया, वह मैंने मुख्तसिर तौर पर वताया कि हमने दो प्रान्तो के टुकडे किए

और हमारी जो माल-मिलकियत थी, सारी हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट की जो जगह थी, जो जागीर थी, उस सवका टुकडा किया और उसे आपस में बैठ कर बाँट लिया। हमे किसी अदालत में नही जाना पडा, कोई पच नही करना पडा। हमने आपस मे बैठकर सव तै कर लिया। इसी बीच मे हमने लाखो आदमियो की अदला-बदली कर ली। यह सव हमने वडी मुसीवत की हाल्त मे किया, क्योकि हमने बैठकर आपस में समझौता करके लोगो की अदला-वदली नही की। यहाँ तो लोगो को जवरदस्ती भागना पडा, अपनी खुशी से जाने का मौका नही मिला। उसमें लोगो पर वहुत सकट आया। हमको भी वहुत परेशानी हुई। भाग-भागकर लोग दिल्ली में आए और दिल्ली मे भी ऐसी हालत पैदा हो गई कि हमारे लिये राज चलाना भी मुश्किल हो गया। अव यह सव वाते तो हुईं। लेकिन जो और वातें हुईं, और जो मैंने कल नही कही थी, वह मै आज आप मे कहना चाहता हूँ।

हमारी राज चलाने की जो सर्विस थी, जो नौकर वर्ग उसमे थे, उनका भी हमें दो हिस्सा करना पडा। जो अमलदार वर्ग थे और छोटे-छोटे नौकर थे, उन सब का भी हमे दो हिस्सा करना पडा। तो जितने मुसलमान थे, वे तो भागकर उस तरफ चले गए और जितने हिन्दू और सिक्ख थे, वे इस तरफ आ गए। हमारी तरफ तो कुछ मुसलमान रहे भी, लेकिन वहाँ तो कोई भी नही रहा। गवर्नर जेनरल से लेकर चपरासी तक देश में जितने आफिसर और नौकर थे, उन सब को कहा गया कि आप पसन्द कर लीजिए कि आपको कहा जाना है। तो अपनी ओर जितने मुसलमान यहाँ थे, उन में से ज्यादातर अपनी पसन्दगी से वहा चले गए। लेकिन हिन्दू-सिख तो उधर एक भी न रहे। सव-के-सव चले आए। कितने ही सालो से अँग्रेजो ने हमारी हुकूमत चलाने के लिए एक तन्त्र वनाया था, जिसको 'लोहे की चौखटी' यानी 'स्टील फ्रेम' कहते हैं। यह वज्र का वना हुआ एक फ्रेम था, जिसको सिविल सर्विस कहते हैं। यह कोई पन्द्रह सौ आदमियो की एक सर्विस थी। यह पन्द्रह सौ अफसर सारे हिन्दुस्तान का राज्य चलाते थे। वहुत साल से और वड़ी मजवूती से वह राज्य चला रहे थे। जव यह फैसला हुआ, तव हमारे पास पन्द्रह सौ आफिसर थे। उसमे २५ फी सदी अँग्रेज थे। वे सभी तो भागकर चले गए। कोई दो-तीन फी सदी रहे हो, तो वे भी चलते चले गए। तो वह जो फ्रेम था, आधा तो टूट गया। अव जो बाकी रहा, उसमें से जितने मुसलमान थे, वह सव भी चले गए। उनमें से

चन्द लोग यहाँ रहे, बाकी सब चले गए। आजादी प्राप्त कर लेने के बाद हमारा और मुल्को के साथ व्यवहार शुरू हुआ और बडे-बडे देशो में हमें अपने एलची भेजने पडे। उन एलचियो के साथ अच्छे-अच्छे चुनिन्दे आफिसर भी हमें भेजने पडे। नतीजा यह हुआ है कि आज हमारे पास पुरानी सर्विस के लोगो का सिर्फ चौथा हिस्सा बच रहा है, और इसी २५ फी सदी सर्विस से हम हिन्दुस्तान का सारा कारोबार चला रहे है। नई सर्विस तो हमारे पास कोई है नही। वह तो हमें बनानी पडेगी। इस तरह से तो लोग मिलते नही, और जिसके पास अनुभव नही है, जिसने कभी काम नहीं किया, वैसे आदमियो को ले लेने से तो काम चलता नही है।

राज चलाने के तन्त्र का तीन हिस्सा टूट गया। सिर्फ चौथा हिस्सा बाकी रहा है, और उसी से हम काम चला रहे है। इस पर भी पिछले चार पाँच महीनो में हमने इतना काम कर लिया। और साथ-ही-साथ कास्टीच्यूएन्ट असेम्बली में हमारा जो नया सविधान बनाने को है, वह करीब-करीब सब पूरा कर लिया है। खाली उसको अच्छी तरह से कानून के रूप में रखने का काम ही बाकी बच रहा है। सविधान के सब सिद्धान्त हमने तै कर लिए हैं। वह भी तो बहुत बडा काम था, वह हमने पूरा कर लिया।

जब हमने चार-पाँच महीने में इतना काम कर लिया, तो जो भाई कहते हैं कि आप लोग तो पुराने ढब से काम करते हैं और अगर आप इसी तरह से काम चलाएँगे, तो हम उसको पसन्द नही करेंगे और काग्रेस में से निकल जाएँगे, तो वह क्या ठीक है? अगर वे निकल जाएँगे और मुल्क की बदकिस्मती होगी, तो सम्भव है कि काग्रेस टूट जाए। हो सकता है कि हम भी उन से आजिजी करें कि भाई, हमारे साथ रहो। लेकिन हमारी समझ में नही आता कि यह क्या बात है कि कुछ लोग अपनी आँख से देखते हुए भी कि मुल्क में इतना कुछ हो रहा है, यह अनुभव नहीं करते कि उसमें हमारी भी कोई जिम्मेवारी है। उन्हें यह सोचना चाहिए कि बोझ उठाने में उनका भी कोई हिस्सा होना चाहिए, न कि जो लोग बोझ उठाते हैं खाली उनकी पीठ पर गाली ठोकते रहना ही उनका काम है। जब मुल्क का टुकडा हुआ तो आल इण्डिया काग्रेस कमेटी में सब की राय ली गई कि पाकिस्तान को हिन्दुस्तान से अलग करना चाहिए या नही। तो उस वक्त जो लोग अपनी राय न बना सके, अब वे लोग हमसे कहते हैं कि आप तो पुराने ढग से राज करते हो।

हमने एक दफा फैसला किया कि मुल्क मे आज अनाज का जो कट्रोल और राशनिग है, वह वहुत तकलीफदेह है। शहरो में तो उसकी कुछ न-कुछ जरूरत है, लेकिन देहात मे लोगो को उससे वहुत कष्ट होता है। किसान लोग वहुत माँग करते है कि यह कट्रोल हटाना चाहिए। शहर मे भी वहुत-से लोग यही वात कहते है। हमने वार-वार प्रान्तो के वज़ीरो को वुलाया। उनसे पूछा, काग्रेस कमेटियो से पूछा, सवसे पूछा। आखिर हमने यह भी मुनासिव समझा कि जो लोग कॉंग्रेस मे नही हैं, उनकी भी राय लेनी चाहिए और जो लोग हमारी टीका करते है, उनकी भी राय लेनी चाहिए। तो हमने उनको वुलाया। इसी काम के लिये वडे-वड़े व्यापारियो और उद्योगपतियो को भी वुलाया। साथ ही हमने एक कमेटी वनाई, जिसमें जो सोशलिस्ट भाई हमारी टीका करते है, उनके प्रतिनिधि को भी वुलाया। खुद उनके लीडर से भी हमने कहा कि भाई आप आइए। तो उसने कहा कि मैं तो नही आ सकता हूँ, हमारा प्रतिनिधि आएगा। तो उनका प्रतिनिधि भी आया। उस कमेटी में यह तै हुआ कि कन्ट्रोल आहिस्ता-आहिस्ता हटा देना चाहिए। लेकिन उसमें उनका जो प्रतिनिधि था, उसने कहा कि आहिस्ता आहिस्ता नही, आज ही हटा देना चाहिए। उसको रखना ही नही चाहिए।

यह फैसला तो हुआ। लेकिन उसके वाद गवर्नमेंट ने फिर सोचा कि सव प्रान्तो के प्रधानो को भी वुलाना चाहिए। सो हमने सवको वुलाया। कहा कि अव यह मौका आया है कि हमे एक दफा तो कन्ट्रोल हटा लेना चाहिए, पीछे जो कुछ होगा देखा जाएगा। सारे मुल्क की यही राय प्रतीत होती है कि कन्ट्रोल हटाना चाहिए। लेकिन जव हमने कन्ट्रोल हटा लिए, तो कुछ लोगो ने मिलकर वम्वई मे एक प्रस्ताव पास किया कि यह वहुत वुरा किया गया है, कण्ट्रोल नहीं हटाने चाहिए। यह उनकी जिम्मेवारी और यह उनकी रेस्पासिविलिटी है। अव वह हमें यह कहते हैं कि आप पुराने ढग से राज करते हो। ठीक है।

उसके वाद हमने एक कान्फ्रेन्स वुलाई कि हमारे मुल्क मे अधिक दौलत पैदा होनी चाहिए। आज वह वहुत कम पैदा होती है और कारखानो मे पूरा माल नही वनता है। जव तक उद्योगपति और मजदूर वर्ग दोनो का सगठन नहीं होगा, दोनो का मेल मिलाप नही होगा, दोनो आपस में मुहव्वत से काम नही करेंगे, तो उससे हमारा नुकसान होगा। इसलिए हमने दोनो को वुलाया, ताकि वे आपस

में मिलकर और समझ-बूझकर कुछ काम करें। इस कान्फरेंस में उनके प्रतिनिधि भी थे, कम्युनिस्ट लोग भी थे और उद्योगपति भी थे। ये सब लोग जमा हुए। तो हमारे लीडर, हमारे प्राइम मिनिस्टर प० नेहरू ने सब को समझाया कि आज मौका ऐसा है कि हमें बार-बार स्ट्राइक (हडताल) नही करनी चाहिए। और यह भी कहा कि तीन साल के समय के लिए हम ट्रूस (सन्धि) कर ले कि इन तीन सालो में हम हडताल नही करेंगे और आपस में मिलजुल कर काम करेंगे। उसके लिए उद्योगपति को जो कुछ करना चाहिए, वह भी समझाया और मजदूर को जो कुछ करना चाहिए वह भी समझाया। सब ने मिलकर फैसला कर लिया। परन्तु उसके बाद क्या हुआ? उसके बाद वे इधर आए और इधर आकर उन्होने प्रस्ताव किया, यह चीज़ हमको मजूर नही है। हमे तो बम्बई में एक दिन की टोकन स्ट्राइक (चिह्नरूप हडताल) करनी चाहिए। सो इधर आकर उन्होने टोकन स्ट्राइक की।

उसके बाद एक स्टेटमेंट (विज्ञप्ति) निकाल दिया कि अब तो बम्बई के मजदूरों के मालिक हम हैं। हम लीडर है, वह सिद्ध हो गया है। बस हो गया फैसला। अब तो वह कहेगे कि हमें क्या करना चाहिए। साथ ही कहते हैं कि हम तो बाहर हैं, हम थोडे गवर्नमेंट में हैं। तो हम चिल्ला-चिल्लाकर कहते है, कि जो प्राविन्स (सूबा) तुम्हें चाहिए, हम दे देते हैं। तब कहते है कि आप कौन है देनेवाले। वह तो लोग वोट देंगे, तब देंगे। जब चुनाव खतम होगा, तब पता लगेगा।

तो मैं कहता हूँ कि अगर हमारा काम इसी तरह चलता रहा, तो जो आजादी हमने पाई है, उससे कुछ भी लाभ हमको नही मिलेगा। वह जब एक जगह पर सरकार का बोझ उठाएँगे, तब उनको मालूम पडेगा यह क्या चीज़ है। गवर्नमेंट चलाने से ही मालूम होता है कि उसमें कहाँ-कहाँ काँटा लगता है, कहाँ कहाँ दुख है, और कहाँ-कहाँ क्या कुछ करना चाहिए। हमें अब समझ लेना चाहिए कि हम आजाद हो गए है, परदेसी हुकूमत से छूट गए है। अब हमें देखना है कि हमारा मुल्क कहा जा रहा है। हम अपने देश का भविष्य क्या बनाएँ, उसका नक्शा हम से लो। हम कब तक इस तरह चलाते रहेगे और हमारा जो कुछ है, उस सब का बोझ दूसरो पर डालते रहेगे? वह आलोचक कुछ भी कहे, लेकिन हमें रात-दिन सोचना पडता है कि अब हमें क्या करना है।

अव मैं दो रोज से वम्बई में आया, तो इसलिए आया था कि कुछ वातें मैं आप लोगों को भी समझाऊँ। अनाज का जैसा कण्ट्रोल हमने हटाया है, ऐसा दूसरा एक कण्ट्रोल पड़ा है। वह है कपड़े का। अव कपड़े के कण्ट्रोल के लिए क्या करना चाहिए और उसमें गवर्नमेंट को क्या करना चाहिए? जो मिल-मालिक हैं, जो मजदूर वर्ग है, जो व्यापारी वर्ग है, उन सव को क्या करना चाहिए? यह सव को समझाना है, क्योंकि हमारे मुल्क मे अनाज नही है। वम्बई शहर में तो अनाज वाहर से लाना पड़ेगा। लेकिन जो देहात हैं, अपने खाने का अनाज अपने पास रख लेते हैं, वाहर देने के लिए उनके पास कम रहता है। जो रहता है, उसका पूरा दाम हम न दें, तो फिर वे देते नही हैं और तव अधिक पैदा करने की कोई ख्वाहिश भी उनमें नही रहती है। क्योकि पूरा दाम न मिले, तो वे पैदा क्यो करे?

इसी प्रकार हमारे मुल्क मे कपड़ा भी पूरा नही है। तो उससे और समस्याएँ भी पैदा होती है, क्योकि कपडा तो नही है। अव पाकिस्तान अलग हुआ, और कपास तो वहां ही ज्यादा पकता है। हमारे कपडे के कारखानो को उसके आधार पर रखना पडता है। वह लोग वहाँ से देंगे, या नही देंगे? या वे हमें काफी रुई नही देते हैं, वाहर भेजते है, या वाहर भेजने का मनसूवा करते है, यह सव हमें सोचना है। अव वह अलग मुल्क वन गया, तो उसके ऊपर हम कहाँ तक भरोसा रखें? मान लीजिए, हमको वहाँ से रुई नही मिली, तो कपडे के लिए हमें वाहर से रुई ढूढनी पडेगी। वह हम कहा से लाएँगे? यह सव वातें हमें सोचनी हैं। लेकिन इन सव मुश्किलात के होते हुए भी हमारे पास अगर एक पूरा पिक्चर (चित्र) न हो, एक पूरे हिन्दुस्तान का चित्र हमारे सामने न हो और हम जल्दी-से-जल्दी अपनी जरूरी चीजें यहाँ ही वनाने के लिए आवोहवा पैदा न करें, तो हमारा काम चलनेवाला नही है और हमने जो कुछ कमाया है, वह सव गँवा देंगे। यदि हमने ऐसा किया तो हम वेवकूफ सिद्ध होगे। इसलिए मैं जो कुछ कहता हूँ, वह किसी की टीका करने के लिए नही कहता, लेकिन मुझ को दर्द होता है इसलिए कहता हूँ।

हम कहाँ तक यह वोझ उठाएँ, क्योकि मुझ को वहुत वरस हो गए। लोग ५० वर्ष के वाद पेंशन ले लेते हैं। अव मैं कहाँ तक ठहर सकूगा? हमारी जिन्दगी की एक प्रतिज्ञा थी कि परदेसी हुकूमत उठानी है। वह काम तो पूरा हुआ। लेकिन अव दिल में एक फिकर रहती है कि यह तो किया, लेकिन अगर हमारे

नौजवानो को विगाड दिया गया, तो यह बोझ वे नही उठा सकेंगे। इसलिए हम सब बातें कुछ-न-कुछ हद तक ठीक कर दें, यह ख्वाहिश रहती है। दूसरी ओर यह ख्वाहिश भी बहुत होती है कि किसी जगह आराम से बैठ जाऊँ। क्योकि हमारी हिन्दू सस्कृति में यह भी एक चीज है कि वानप्रस्थ अवस्था आ गई, तो हमारा माला लेकर बैठ जाना उचित है। लेकिन दिल में भाला गडा हो, तो माला चलती ही नही। दिल में यह अहकार भरा है कि ज़िन्दगी भर का हमारा जो काम है, उसे अगर हम इसी तरह फेंक देंगे, तो क्या होगा ? तो मैं अपने नौजवानो को समझाना चाहता हूँ कि हमारे दिल में जो आग जलती है, उसे उन्हे समझना चाहिए।

कल मैंने अपने नौजवानो को एक चीज़ बताई थी। वह यह कि एक दिन की हडताल तो आपने कर ली, परन्तु क्या इसका हिसाब आपने लगाया कि उस से कितना नुकसान हुआ ? उससे कितना कपडा कम पैदा हुआ ? अपने मजदूर वर्ग को यदि इसी रास्ते पर आप ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) देते रहे, तो आप का काम कैसे चलेगा ? हमारा काम तो जैसे-तैसे पूरा हो गया, लेकिन यह बोझ आपको उठाना है। आप सारी चीजें उठा कर मज़दूरो को दे दीजिए, इसमें भी हमें कोई इकार नही है। परन्तु आपको सोचना पडेगा कि देश का जो बोझ आपके सिर पडने वाला है, उसे आप कैसे उठाएँगे ? यहाँ तो आपने एक दिन की हडताल की, लेकिन उधर बन्दर पर तीन सप्ताह से हडताल चल रही है। मुल्क में अनाज नही है और हमारे देहातो में और शहर में लोगो को अनाज चाहिए। मगर बन्दरगाह पर हडताल है। आज हमारे लोग सिन्ध से भागे-भागे आते हैं, उनको हमें अनाज देना पडता है, पजाब से भागे-भागे आते है, उन्हे अनाज देना है। मद्रास में अनाज पूरा नही पकता, वहाँ लोग भूख से मरते हैं, इन सबके लिए हमें वाहर के मुल्को से अनाज लाना पडता है। और जब अनाज के जहाज हमारे वन्दर पर आते है, तो ये मजदूरो को कहते हैं कि अनाज मत उतारो, बैठ जाओ। तो अब तीन हफ्ते से ये लोग बैठे है। अब हम क्या करें ?

अब यह सवाल उठता है कि इस तरह से काम होगा, तो कौन गवर्नमेंट चलने वाली है ? वह हमें सोचना पडेगा। प्रान्त की गवर्नमेंट तो छोड दीजिए। लेकिन यह पोर्ट ट्रस्ट का मामला तो सेण्ट्रल गवर्नमेंट (केन्द्रीय सरकार) का है, और हमारा जो मिनिस्टर है, वह मजदूरो पर सब से ज्यादा सहानुभूति रखने वाला है। हमने बार-बार अनुभव किया है कि उसकी सिम्पेथी (सहानुभूति) मज़-

दूरो से बहुत ज्यादा है। लेकिन असल में वह भी तंग आ गया है। अब तो उसने कहा कि ऐसा समय आ गया है, जब हमे निश्चय कर लेना चाहिए और एक जगह पर अड जाना चाहिए कि अब आगे किसी स्ट्राइक को हम बर्दाश्त नही करेंगे। तब हमने कहा कि ठीक है। इस पर हमने यह फैसला कर लिया है।

आज यह जो मजदूर वहाँ हडताल कर बैठ गए है, उनकी जगह पर हमने एक छोटी-सी फौज तैयार की है। वह लोग लश्कर में भर्ती होते है। ये लोग सब काम करने को तैयार रहेगे। पब्लिक यूटिलिटी सर्विस (जन-कल्याण की सेवाएँ) के कामो में जब कभी मजदूर स्ट्राइक करेंगे, तो हम इन लोगो से काम लेगे। तो ऐसी एक फौज हमने बनाई है। उनसे हम कहेगे कि यह काम तुम करो और वे लोग नही करते है, तो उसको बैठ लेने दो। तो अब यह नए लोग काम कर रहे है। लेकिन वह मजदूर बैठे हैं, उसका क्या होगा? तब मैंने कल तो कहा है कि अब हम यह फैसला करनेवाले है कि इन मजदूरो की जगह पर दूसरे मजदूरो को भर्ती करे। और फिर यह पुराने मजदूर कहेगे कि उनकी जगह चली गई। तब वह रोते रहेगे।

आज अखबार में मैंने देखा कि वही एक दिन की हडताल करवानेवाला लीडर अब ३ हफ्ते की हडताल करने को कहता है। वह कहता है कि बम्बई के १० लाख मजदूर उसके पीछे है। वह जो कुछ चाहता है, अगर वह नही मिलेगा तो बम्बई के १० लाख मजदूर काम छोड़ देंगे। आप समझ लीजिए हम कहाँ जा रहे है और यह भी समझ लीजिए कि गवर्नमेंट चलानेवाले हम लोग कोई पूजीवादी नही है। यह जो काम हो रहा है, वह तो गवर्नमेंट करती है। वहाँ से पैदा करके हमें कोई खानगी वसूली नही करनी है। लेकिन उनका मकसद तो यह है कि कैपिटलिस्ट मे और मजदूरो में झगड़ा हो। मुझे बडा अफसोस होता है कि यह क्या बात हो रही है। मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि अब समय आ गया है कि बम्बई की जनता यह स्थिति समझ ले। क्या बम्बई, क्या कानपुर, क्या कलकत्ता, क्या अहमदाबाद, उन सभी शहरो में जहाँ बडे-बडे कारखाने है, सब लोगो को समझना चाहिए कि गवर्नमेंट तो आप की है। लेकिन गवर्नमेंट चलानेवाले लोग अब तग आ गए है। कम-से-कम मैं तो इस तरह से तंग आ गया हूँ। तो मै इस तरह से नही चला सकता। क्योंकि हमारे सर पर यह बोझ तो पडा है, और साथ-साथ और मुसीबतें भी है, काश्मीर की, जूनागढ की, और भी बहुत-सी मुसीबतें है,

जिनका हमको कोई ख्याल ही नही आता । असल में वह सारा बोझ हमें ही झेलना पड रहा है ।

एक रोज सुबह हम उठते हैं तो मालूम पडता है कि कराची में कोई हिन्दू रह नही सकता । उसको भाग कर इधर आना ही है । अब एकदम कराची से लोग तार-पर-तार करते है कि हमारे लिए बोटो का बन्दोबस्त करो । किसी-न-किसी तरह से हमें यहाँ से निकालो । अब क्या करें ? क्या सामान है हमारे पास ? यदि हम बोटो का बन्दोबस्त करें, तो सम्भव है कि जो मजदूर काम करनेवाले है, उनसे कहा जाए कि हडताल करो । उस सूरत में बोट कहाँ से जाएँगे ? तो एक तो हमारे ऊपर यह बोझ है । दूसरा बोझ आप पर पडता है कि यह सिन्ध से ८ लाख आदमी भाग-भागकर यहाँ आएँगे, तो उसका तुरन्त ही कोई इन्तजाम आपको करना होगा । यह बहुत बडी परेशानी तो है, लेकिन हम उनसे यह नही कह सकते है कि आप बम्बई में न आएँ । हमें कहना पडेगा कि बम्बई जैसा हमारा है, वैसा ही आप का है । आप आ जाइए, तो जो कुछ हमारे पास है, वह हम आपस में बाँट लेंगे, वह हम मिलकर खाएँगे । यह न कहें तो हमारा काम नही चलेगा । क्योकि बडे दुख से वे लोग इधर आए है । कोई खुशी से अपना मकान छोड कर, घर-बार और जमीन-जागीर छोडकर नही आएगा । जहाँ सारी उम्र बीत गई, वह सब छोडकर आना कोई आसान काम नही है । वे लोग गुस्से से भरे हुए हैं, दुख से भरे हुए है, जब वे स्टेशन पर आएँ, बन्दर पर आएँ, तब हम उनका इन्तजाम न करें, तो बडी मुसीबत होती है । जिस किसी तरह यह सब हमें करना ही पडेगा ।

तो हम कोशिश कर रहे है कि उनका बन्दोबस्त करें । और उन सब को हमें हिन्दुस्तान में हजम करना है और उसके लिए हमें बदला लेने की कोई बात मन में नही लानी चाहिए । यह हिसाब-किताब का काम हमें आज नही करना चाहिए । जैसा कि मैने कहा, यह प्रौब्लम (समस्या) नहीं है कि जो लोग सिन्ध से आते हैं, उनकी मिल्कीयत वहाँ क्या है । वे वहाँ चार-सौ, पाँच सौ करोड रुपया छोडकर आते है, उसका हिसाब चलाने का यह वक्त नही है । उतने मुसलमान इधर से निकालो, इससे भी हमारा फैसला नही होगा । इस सारे हिसाब-किताब का एक तरह से ही फैसला हो सकता है कि दोनो गवर्नमेंटें आपस में बैठकर हिसाब करें । और यह काम बाद में करना होगा । क्या

इधर हुआ और क्या उधर हुआ, इस सब का फैसला हमे करना पडेगा और न करें तो राज नही चल सकता। न इधर, न उधर। क्योकि हमे सफाई से काम करना पडेगा। गैरइन्साफ से काम नही चल सकता।

यह कहा जाता है कि हिन्दुस्तान में जो लोग चले आए है, उनको हमारे [यहाँ से लौटकर पीछे जाना है और यहाँ से जो लोग उधर चले गए हैं, उनको लौटकर पीछे आना है। ठीक है, आपस मे बैठकर एका कर सको, तो करो। लेकिन उसके लिए दोनो गवर्नमेंटो को अनुकूल आवोहवा पैदा करनी पडेगी। उसी के लिए गान्धी जी ने फाका किया। अव उसमे से कहा तक फल निकलता है, वह सव देखने की वात है। अच्छा फल निकल आए, तो वहुत अच्छी वात है। उससे वेहतर और कोई वात नही हो सकती। वही हम चाहते है। तो जव हमारी यह हालत है, तो हमें अलग-अलग जूथ वनाकर एक दूसरे को भला-वुरा कहना समझदारी की वात नही है। हम सव मिलकर काम करें, यही समझ का मार्ग है।

मै कहता हूँ कि कम-से-कम तीन-चार साल तक तो मिलकर काम करो। हमे कुछ काम करने दो, तव तो कुछ काम वनेगा। लेकिन यह न करो, और लगे रहो कि चुनाव में आकर दिखाएँ तो उसके लिए ऐसा करने की जरूरत नही है। यदि आपको इसी तरह से करना है, तो आइए, आपस में बैठ कर हम फैसला कर ले। भाई, अगर आप वोझ उठाने को तैयार हो, तो हम देने के लिए भी तैयार है। क्योकि आज तो मैं देखता हूँ कि कुछ प्रान्त की असेम्वलियो में भी अगर चार पांच जगहे खाली हो जाएँ, तो उनका वोझ उठाने के लिए भी कोई योग्य व्यक्ति उनके पास वहां तो नही है। हा, वाहर है।

आपने एक दिन की हडताल करवाई, तो आप कहते है कि आपकी लीडरशिप कायम हो गई। एक दिन की हडताल से कभी मजदूरो की लीडरशिप सिद्ध नही होती है। आपकी लीडरशिप तो तव सिद्ध होगी, जव आप मजदूरो के पास से ऐसा काम कराएँगे, जो मजदूरो को पसन्द नही, लेकिन सही काम है। अगर हम इस तरह से काम कर सकेंगे, तो हम अपने मजदूरो को स्वराज्य मे सही तालीम भी दे सकेंगे। दूसरी तरह से काम नही चलेगा।

अव दूसरी वात यह है कि हमारा यह हिन्दुस्तान वहुत वड़ा मुल्क है। पाकिस्तान को छोड देने के वाद भी जो वच रहा है, वह वहुत वडा है। उसको हमें एक सूत्र मे सगठित करना है। परन्तु हमारे में एक ख्याल पड गया है,

जो ख्याल हमारी आजादी में से उठा है। पहले भी वह थोडा-थोडा था, लेकिन अब वह ज्यादा हो गया है। हमारे में प्रान्तीय भाव बहुत ज्यादा फैल गया है। साथ ही हमारे में कौमी भाव भी बढ गया है। हिन्दू मुसलमान के भाव के सम्बन्ध में तो जो कुछ होनेवाला था, वह हो गया। उसको छोड दीजिए। लेकिन यदि यह भाव हमारे में हो कि हमें मराठा, ब्राह्मण, क्षत्रिय, राजपूत, जाट, सिक्ख आदि का जाति भाव बनाए रखना है और हम सब अपना-अपना अलग-अलग कौमी या जातीय सगठन बनाने की कोशिश करें अथवा प्रान्तीय टुकडा करने की जल्दबाजी करें, तो हमारा सब-का-सब जरूरी काम रह जाएगा और हम इसी झगडे में फँस जाएँगे। भारत के प्रान्तीय भाग अलग-अलग कर दिए जाएँ, मै इसके खिलाफ नही हूँ। यदि महाराष्ट्र अलग बनना चाहे, तो मै कभी उसका विरोध नही करूँगा। लेकिन आज जो बात है, वह मैं आपके सामने रख दूगा। आज इन बातो का समय नही है। थोडा ठहर जाइए। हिन्दुस्तान को उठा लो और जब वह उठ जाए, तो उसके बाद, आप अपना हिस्सा खुशी मे ले लो। क्योकि यदि हम आज उस झगडे में पडेंगे, तो यह समझ लीजिए कि यह कोई आसान बात नहीं है। हाँ, एक बात होती है कि आज महाराष्ट्र को अलग करना हो, सिद्धान्त रूप में तो उसमें कोई झगडा नही है। लेकिन जब इस सिद्धान्त को व्यवहार में लाना होगा, तो उसमें आपस में काफी झगडा उठ खडा होगा। तो यह एक महाराष्ट्र की ही बात नही है। कर्नाटकवाले कहते हैं कि हमारा अलग प्रान्त चाहिए। महाराष्ट्र और कर्नाटक के बीच में कहाँ तक किसकी सरहदें हैं, यह झगडा है। इसी तरह के और झगडे है।

मै अभी उडीसा में गया था। वहाँ कोई २८ राजा या छोटे-मोटे राजस्थान थे। उन राजाओ को मैंने बुलाया। मैंने उनको समझाया कि छोटी-छोटी जो हुकूमतें है, छोटे-छोटे राजस्थान है, उनका आप क्या करेंगे? एक छोटे-से कुएँ के एक छोटे-से मेढक बनकर आप क्या करेंगे? आप समझते हैं, कि आप राजा है। किसी राजकुटुम्ब में मेरा जन्म नही हुआ था। लेकिन आज सारे हिन्दुस्तान की हुकूमत में मेरा हिस्सा है। आप क्यो ऐसा काम नही करते? आज आप एक छोटे-से खड्डे में पडे हो। आप महासागर में आओ और हमारे साथ काम करो। आपको बहुत मौका मिलेगा। दुनिया भर में हमारे एम्बेसेडर (राजदूत) जाते है। वहाँ जाओ, वहाँ जाने के लिए तैयारी करो। अब तो अँग्रेज चला गया। आपको उसकी सुरक्षा प्राप्त थी। अब तो आपको अपने

देश के लोगो का साथ देना पडेगा। आज लोग भागे-भागे राजमहल पर जाते है और आपको अपनी रक्षा के लिए पुलिस रखनी पडती है। भई, कोई ऐसा भी राजा होता है, जिसकी रक्षा करने के लिए पुलिस रखनी पडे ? वह तो वहुत वडी मुसीवत है। इस तरह राज करने मे क्या मजा है ?

मैंने यह सव कहा तो वे समझ गए। उन्होने मान लिया कि आप जैसा कहेगे, हम वैसा ही करेगे। मैंने कहा कि हुकूमत हमको दे दो। तो उन्होने हुकूमत दे दी। तो ठीक है। अव वे आराम से वैठे है, अव उनको अच्छी तरह से नीद आती है। सारा वोझ अव मेरे पर पडा है। उडीसावाले खुश हो गए है कि हमारा एक प्रान्त करने की कोशिश वहुत सदियो से थी, वह पूरी हो गई। और मैंने २४ घटे मे यह सव काम किया। लोग नही जानते है कि हमने २४ घटो मे कितना काम किया। वहाँ से हवा में उडकर नागपुर चला गया। वह कोई १८ राजा थे, जिन्हे 'सैल्यूट स्टेट' (सलामी रियासते) कहते है। उन सवको मैंने वुलाया। उनमे जव कभी कोई जाता था, तो तोप छोडकर उसकी सलामी होती थी। मैंने भी कहा सलाम। सव ने वहुत मुहव्वत से मुझ से वाते की। वे भी समझ गए कि यह जो कहते है, वही ठीक है। दूसरा रास्ता ही नही है। तव मैंने कहा कि दस्तखत दे दो। उन सव ने दस्तखत कर दिए।

अव जिस तरह से मै काम कर रहा हूँ, इसी तरह से हमारे सव मन्त्री काम कर रहे है। हमारे प्राइम मिनिस्टर पर जो भारी वोझ है, उनके हिसाव से मेरा वोझ कुछ भी नही है। मैंने तो कहा था कि इन चार-छ महीनो मे ही हमारे प्राइम मिनिस्टर की उम्र दस साल वढ गई है। मै जव उनका चेहरा देखता हूँ तो मुझे दर्द होता है कि कितना वडा भार उनके सिर पर है। हमारे प्राइम मिनिस्टर ने भी कहा कि तीन साल का ट्रूस करो। वह तो खुद भी सोशलिस्ट के साथ ज्यादा सहानुभूति रखते है। मेरे वारे मे कुछ तो कहते है कि धनिको का एजेट हूँ, कोई कहता है मै राजा-महाराजाओ का एजेट हूँ। वहुत-सी वातें लोग कहते है। लेकिन मेरी चमडी वहुत कठिन हो गई है, उस पर असर नही होता है। हाँ, अगर दिल पर असर करनेवाली कोई वात हो, तो उसका असर होता है। वाकी चमडी पर कोई असर नही होता।

तो मै आपसे कह रहा था कि उडीसा में दो छोटी-छोटी स्टेटे थी। एक सराय किला और दूसरी खरसवान। उनके साथ ही मैंने उडीसा को जो २८ स्टेटे सुपुर्द की, उनमें ये दोनो भी थी। मैंने कहा कि भाई यह सव उडीसा

का है। ये सब आप ले लीजिए। उसके बाद मेरे पास बिहार से वहाँ के प्रधान मन्त्री का तार मुझे आया कि ये दोनो स्टेटें बिहार मे जानी चाहिए, क्योकि वह तो बिहार की ही हैं। तो मैंने उनको खबर दी कि भई, अब तो फैसला हो गया है, लेकिन आपको कुछ कहना हो तो मुझसे दिल्ली में आकर मिलो। सो वह मेरे पास दिल्ली आए। मेरे साथ बात करते हुए उन्होने कहा कि यह जो फैसला हुआ, उसके बारे में हमने कुछ सुना नही था, कुछ जाना नही था। आपने फैसला कर दिया और उसमें हमें तो बहुत नुकसान होगा। आप अपना फैसला बदल दीजिए और ये दोनो स्टेटें बिहार को दे दीजिए। तो मैंने कहा, आप भी अपने सूबे में काग्रेस की हुकूमत चला रहे हैं, मै भी तो काग्रेस का एक अदना सेवक हूँ। आप इस तरह से काम करना चाहे कि आज हमने वहाँ के राजाओ और मिनिस्टरो के साथ बैठकर फैसला किया और आपके कहने से हम और आप उसे अभी बदल दें, तो इस तरह से काम नही चल सकता। हाँ, उसकी जाँच करनी चाहिए। कोई कोर्ट का जज हम रक्खेंगे, जो इस सब की जाँच-पडताल करेगा। यदि आपकी बात सही होगी, तो यह फैसला हम बदल देंगे। आज आप इसे आर्जी फैसला मान लीजिए, और फिक्र न कीजिए। अब उसको समझा-बुझा कर मैंने भेज दिया।

चन्द दिनो के बाद उडीसा की सरकार और बिहार की सरकार के अमलदार वहाँ पहुँच गए और वहाँ जगल में रहनेवाले जो आदिवासी लोग थे, वे तीर-कमान ले कर आ गए। कोई तीस-चालीस हजार आदिवासी वहाँ जमा हो गए और उन्होने वहाँ लडाई की। उन्होने पुलिस के सामने तीर फेंके। पाँच सात तीर पुलिस को लगे। जब तीस हजार ने दगा किया तो पुलिस ने गोली चलाई। उसमें तीस-चालीस आदमी मर गए। उन बेचारे गरीबो मे से ४०-५० घायल हुए और बाकी बेचारे रोते-रोते भाग गए। इस पर दोनों प्रान्तो की सरकारें मेरे पास बडे-बडे तार भेजती रही। उधर अखबारो में यह झगडा चलता रहा कि दोनो काग्रेस की गवर्नमेंट है। अब हमें देखना चाहिए कि हम कहाँ जा रहे हैं। हमारे प्रान्तीय झगडे हमें कितना गिराएँगे। मैंने कहा कि इसमें लडने की कोई बात नही है। हम एक जज को मुकर्रर करके सब बातों की जाँच-पडताल कर अपना फैसला करेंगे। दोनो गवर्नमेंट अपना-अपना केस रख दें। अगर कोई कहे कि आज ही फैसला कर दो, तो यह कैसे हो सकता है?

जब मैं कलकत्ता गया, तो बंगालवाले मेरे पास एक बड़ा प्रतिनिधि-मण्डल लेकर आए कि बिहार और उड़ीसा का यह जो झगड़ा चल रहा है, उसमें असली हक तो हमारा है। वह तो बंगाल को देना चाहिए। मैं कहता हूँ कि भाई, स्वराज्य तो अभी मिला है और अभी तक हम अपने देश को मजबूत भी नही बना पाए कि उसके पहले बाँटने का झगड़ा शुरू हो गया है। तब इधर हमारे महाराष्ट्र भाई कहते है कि हमारा कर्नाटक हमे दे दो। बरारवाले कहते है कि हमारा बरार तो अलग होना चाहिए। इस तरह से और और बाते भी चलती है। मैं सगठन करने की कोशिश करता हूँ कि सम्पूर्ण हिन्दुस्तान का एक सगठन करके खडा कर दू और इधर इन तरह से काम चलता है।

मैं अभी काठियावाड़ में गया था। सारे हिन्दुस्तान मे जितने राज नही है, उतने राज काठियावाड में है। अढाई-तीन सौ छोटे-छोटे राज वहाँ है। यदि हर एक राज का अलग-अलग रग नकशे मे भरना हो, तो इतने रग तो मेरे पास नही है। कैसे करूँ? इतनी हुकूमतो के अलग-अलग राज वहाँ है। उसमें आज एक हवा चली है कि छोटी-छोटी रियासतो के लोग भी कहते हैं कि हमको अलग-अलग रेस्पासबिल गवर्नमेंट (उत्तरदायी सरकार) दे दो। जो है नही, वह देगा कैसे? वहाँ रेस्पासबिल गवर्नमेंट बनती कैसे? कही ५ हजार की आबादी है, तो कही १० हजार की आबादी और बहुत हुआ तो कही २५ हजार की आबादी। किसी राजा के पास २० गाँव है, किसी के पास २५ गांव और जो सबसे बड़ी स्टेट है, उसकी आबादी छ, साढे छः लाख की है। यह तो गनीमत हुई कि हम जूनागढ लेकर बैठ गए। अब काठियावाड़ मे इतने छोटे-मोटे राजा है, उन सबको मैंने समझाने की कोशिश की कि भाई अपने यहाँ सौराष्ट्र नाम का एक प्रान्त बना लो और इस तरह महासागर के भाग बनो, उसमे खेलो। इस तरह यह क्या कर रहे हो? अंग्रेज गया तो उसके साथ सार्वभौम सत्ता भी चली गई। जैसे हम बरणी मे आम का आचार रखते है, कि आचार मे कीडा न पडे, इसलिए कुछ तेल भी डाल देते है, उसी तरह आपको रखकर उसने अपने स्वाद के लिए सामान पैदा किया था। अब वह चला गया। अब आप को चाहिए कि आप ठीक हो जाओ, और अपने को हवा लगने दो। वे सब समझ गए कि यह ठीक कहता है। तो कल रात मेरे पास उनका टेलीफोन आया कि हमने फैसला कर लिया है कि हमें एक सौराष्ट्र बनाना है। इस तरह से काम चलता है।

अब महाराष्ट्र के राजा-महाराजा कल आठ-नौ बजे मुझसे मिलनेवाले हैं। यहाँ जो छोटी-मोटी १८ हुकूमतें हैं, उन सब का भी अब बहुत करके यही फैसला होगा कि भई, हमें तो बम्बई प्रान्त मे मिल जाना है। तो मै महाराष्ट्र को बडा बना रहा हूँ, उसे छोटा नही बना रहा हूँ। जैसे उडीसा बनाया, ऐसे ही महाराष्ट्र को बनाकर मैं आपको दूगा। फिर आप अलग हो जाइएगा। अभी आपको इतनी जल्दी क्यों है ?

यदि हमे इस तरह से हिन्दुस्तान को एक महान देश बनाना है, तो पाकिस्तान जैसे छोटे टुकडे मे आप क्यो डरते है ? इसमें है क्या ? लेकिन हमें दिमाग से काम लेना चाहिए और समझ-बूझकर, आपस मे सगठित होकर हिन्दुस्तान को उठाना चाहिए। तब हम सारे एशिया की लीडरशिप ले सकते है। इसमें मेरे दिल मे कोई शक नही है। इसलिए मेरी कोशिश यह है कि हिन्दुस्तान को एक बना लो। कुछ लोग अन्देशा करते थे कि ऐसा नही होगा। कुछ राजाओ के दिल में भी शका थी अब न जाने क्या होगा। कुछ हमारे सोशलिस्ट भाई भी शका करते थे कि हिन्दुस्तान में राजाओ को पोजीशन मिल जाएगी। कुछ लोग तो कहते थे कि अब तो राजा जो चाहे सो करेंगे और हमारी कुछ भी नही चलेगी। मैंने कहा कि भाई, धीरज रखो। हम आज़ाद हुए, राजा भी आज़ाद हुआ है। उसको भी अपने मुल्क का ख्याल आएगा। उसके दिल में भी स्वदेशाभिमान पैदा होगा, कुछ खुद का अभिमान पैदा होगा। हमारे हिन्दुस्तान में ही बुद्ध भगवान पैदा हुए। उनकी कितनी छोटी रियासत थी। वह रियासत भी उन्होने छोड दी। अपने पास न बन्दूक रखी, न तोप रखी। लेकिन हिन्दुस्तान के बाहर तक वह पहुँच गए। वह चीन और जापान तक पहुँच गए। वह सीलोन मे पहुँचे, बर्मा में पहुँचे। आप क्यों घबराते हो ?

इसी तरह से मैं कहता हूँ कि हिन्दुस्तान में जो धन धरती में भरा है, उसे खोद-खोदकर हमें निकालना है। यहाँ इतना धन भरा है, जो कभी किसी ने देखा नही होगा। और मुल्को में इतना धन नही, जितना हमारी धरती में भरा है। उसको हमें निकालना है। लेकिन इसके लिए हमें मेहनत करनी पडेगी। एक तरफ आप मजदूरो से कहे कि काम कम करो और दाम ज्यादा मांगो। इस तरह तो आप इनसालवेंसी (दिवाला) निकालोगे। इस तरह देश का काम नही चलेगा। मै तो असल में मजदूरो का भी भला चाहता हूँ।

लेकिन भला कैसे होगा ? भला इस तरह होगा कि हम रुपया पैदा करें, और फिर उसे आपस मे बाँट लें। लेकिन अगर हम कुछ पैदा ही नही करे, तो न कुछ मजदूर को मिलेगा, न धनी को मिलेगा, न हमको मिलेगा।

बार-बार कहा जाता है कि हमें लीडरशिप चाहिए। नेतागीरी तो आज मुल्क मे रास्ता बन गया है। किसी को नेता बनना हो तो पहले कोई स्पीच करो, कैपिटलिस्ट लोगो को गाली दो। उसके बिना तो चलता नही। लोग मानते ही नही। कैपिटलिस्ट को दो गाली दो, तो एक-दो गाली, जो सामने बैठा है, उसको दो और एक-दो गाली राजाओ को दो। बस, फिर लीडरशिप मिल गई। मगर इस तरह की लीडरशिप से किसी का क्या भला होगा ? मै राजाओ से भी कह सकता हूँ और बहुत खरी बातें मै उन्हे सुनाता हूँ। इसी तरह कैपिटलिस्टो से भी मुहब्बत करता हूँ, लेकिन उनको कडी बात भी सुनाता हूँ। लेकिन अगर मुझे समझ आ जाए कि हमारे मुल्क मे एक-ए कैपिटलिस्ट की कैपिटल खत्म कर देने से हिन्दुस्तान का भला होगा, तो उसे खत्म कर देने में मेरा नम्बर पहला होगा। मै पीछे नही रहूँगा।

मैने कल भी कहा था, आज भी आप लोगो से कहता हूँ और आप भाइयो को समझाना चाहता हूँ कि मुझे सोशलिज्म सिखाने की किसी को जरूरत नही। मार-पीट सिखाने की भी मुझे जरूरत नही है। जब से मैने गान्धी जी का साथ दिया, और आज इस बात को बहुत साल हो गए, तभी से मैने फैसला किया था कि यदि पब्लिक लाइफ (सार्वजनिक जीवन) मे काम करना हो, अपनी मिल्कियत नही रखनी चाहिए। सोचिए जरा। तब से आज तक मैने अपनी कोई चीज नही रक्खी। न मेरा कोई बैक एकाउट है, न मेरे पास कोई जमीन है, और न मेरे पास कोई अपना मकान है। मै यह कुछ रखना ही नही चाहता हूँ। अगर मैं रखूं, तो मै इसे पाप समझता हूँ। मुझे कोई सोशलिज्म का पाठ सिखाए, तो फिर उसे सीखना पडेगा कि पब्लिक लाइफ किस तरह से चलानी है। बातें बहुत चलती है। किसी ने मेरा नाम सरदार कर दिया। अब यहाँ बम्बई में जो सरदार-गृह है, उसके बारे में कलकत्ता के एक अखबार में छपा कि सरदार के पास बम्बई में बड़े-बडे मकान है। उसके नाम पर है। सरदार नाम से अब इस तरह मेरी इज्जत तो बहुत बढती है और शायद उनसे मुझे क्रेडिट पर रुपया भी मिल जाए !

तो हमारे मुल्क मे ऐसी धोखेबाजी बहुत चलती है। मगर मै आप से यह

कहना चाहता हूँ कि आप समझते हैं कि आज हमारा काम धरती में से धन पैदा करना और बड़े-बड़े कारखाने बनाना है। क्योंकि मैंने आपसे कहा था कि यदि हमें फौज रखनी है, यदि हमें अपने मुल्क का रक्षण करना है, तो उसके लिए हमें अच्छी फौज रखनी पड़ेगी। उसके लिए हमें सेन्ट्रल गवर्नमेंट को मज़बूत बनाना होगा। उसकी रक्षा करनी पड़ेगी। मज़बूत बनाने से मतलब यह है कि देश भर के लोग उसके पीछे होने चाहिएँ। यदि आप लोग हमारे साथ न हों, तो हमारा वहाँ बैठना पाप है। तब हम वहाँ क्यों बैठें? क्या ज़रूरत है हमें? यदि आप लोग चाहते हैं कि वहाँ बैठें, और काम करें तभी हमारा काम करना उचित है। क्योंकि हम तो आपके ट्रस्टी बनकर वहाँ गए हैं और इसी हक से हम वहाँ बैठे है।

तो जब हम आप की तरफ से वहाँ बैठे है, तो हमारी बात समझ लीजिए कि मुल्क में दो चीज़ें हमें करनी हैं। एक तो हमें मुल्क में काम करने के लिए उचित आबोहवा पैदा करनी है। अगर यहाँ रात-दिन हिन्दू-मुसलमान के झगड़े में रहे तो कोई काम नहीं होगा। आज दो चाकू इधर किसी को मारा, दो छुरा किसी को मारा, एक बम उधर डाला, एक कलकत्ता में डाला, एक बम्बई में डाला, एक कानपुर में डाला और अखबार उसी सब से भरे रहे, तब तो हम कोई काम नहीं कर सकेंगे। इस तरह काट-मारकर एक साल में कितने मुसलमान मारोगे? उससे किसी को क्या फायदा मिलेगा? उधर मुसलमान भी बेचैन रहते हैं और हम न उनका उपयोग कर सकते हैं, न वे हमारा उपयोग कर सकते हैं। हमारी ३० करोड़ की आबादी में चार करोड़ मुसलमानों का हम क्या करें? तो इस तरह अगर हम झगड़ों में फँसे रहे, तो हमारा काम नहीं होगा। मुसलमान से कहो कि आप इधर हैं, तो हमारे साथ आराम से रहो और कोई फिक्र न करो। लेकिन यदि हमें लड़ना हो, तो जैसा कि मैंने कल भी कहा था, आज भी कहता हूँ कि लड़ने के लिए मौका चाहिए, लड़ने के लिए कारण चाहिए। बताना चाहिए कि किस कारण से हम लड़ते हैं। दुनिया के सामने रखना पड़ेगा कि इस चीज़ के लिए हम लड़ते है। लड़ने का समय और लड़ने का कारण आ जाने पर लड़ाई का पूरा सामान चाहिए, जिससे लड़ाई में हम मार न खाएँ। जब लड़ना हो, तो पूरी तैयारी से लड़ना चाहिए। तो यह चीज़ आज छुरा-छुरी से नहीं होती है। उससे तो उल्टा हमारा काम बिगड़ता है।

अगर हमें अच्छी फौजें रखनी हों, तो उसके लिए हमें कितनी चीज़ें चाहिए,

यह समझ लेना चाहिए। यह भी जान लेना चाहिए कि लडाई मे क्या सामान काम आता है। वैसे तो, हमारे बहुत-से सोल्जर्स (सिपाही) पिछली लडाई से डीमोबिलाईज़ (सेना से मुक्त होकर) होकर आए है, उनसे पूछो कि क्या-क्या चीज़ चाहिए। पहले तो सोल्जर के पास बन्दूक चाहिए। वह बन्दूके हमारे यहा कितनी है और कहां बनती है ? आज नौजवान कहते है कि हमको भर्ती करो। हमें काश्मीर जाना है, हमे यह करना है, हमें वह करना है। लेकिन स्ट्राइक से तो यह नही चलेगा। भर्ती कर नौजवान को तो तालीम देनी पड़ती है और तालीम के साथ उसको फिट बनाकर उसे बन्दूक भी देनी पडती है। बन्दूक के साथ गोला-बारूद देना पडता है। वह सब कहाँ से आता है ? बन्दूको के लिए और लडाई के लिए जितनी सामग्री चाहिए, उसके लिए हमें कारखाने बनाने पडेंगे। उन कारखानो में यदि कम सामान बनता हो, तो हमें वहां २४ घटे काम करना होगा या दो शिफ्टो से काम करना होगा। अरे, वह तो कहते है कि स्ट्राइक करो। यही हालत रही तो हमारा काम कैसे चलेगा ? एक तो यह बात है।

दूसरी बात यह है कि आज के युग मे फौज को लडाई के मैदान में ले जाने के लिए हजारो ट्रक्स चाहिए। उसके लिए मोटर-लारी और जीपें चाहिएँ, वह पैदल का काम नही है। अपनी फौज को हमे जल्दी-से-जल्दी ले जाना है, पहाडो पर ले जाना है, और जगह पर ले जाना है। अब जो यह हजारो ट्रक्स चाहिए वे कहां बने ? उसके लिए हमे मज़दूर चाहिए। अब इधर मज़दूरो को भी कोई सिखलाता है कि ज्यादा पैदा करो ? वही तो बड़ी मुश्किल बात बन जाती है।

मज़दूरो से यह कहना चाहिए कि अपनी फौज के लिए आप को तोप, बन्दूक, गोला, एम्यूनिशन (गोला-बारूद) सब चीज बनानी चाहिए। तोप, बन्दूक के लिए स्टील (इस्पात) चाहिए, कौन वह पैदा करेगा ? ऊपर से तो बरसेगा नही। उसके लिए हमें कारखाना बनाना होगा। हमारे मुल्क मे, हमारी धरती मे बहुत लोहा पडा है, मगर उसके लिए हमे कारखाने बनाने होगे। आज तक लोहा अंग्रेज बाहर से ले आता था और हमारा धन ले जाता था। अब स्वराज्य के बाद भी क्या हम लोहा बाहर से लाएगे ? नही, वह अब हमें इधर पैदा करना है। हमारे यहां एक कारखाना टाटा का है। देश भर मे मकान बनाने के लिए जितना लोहा चाहिए, उतना भी उमसे पूरा नही पड़ता। तो हम अपनी

आर्मी के आर्य-एम्यूनिशन के लिए कहा से लोहा लाएँ ? उसी के लिए तो आज स्टील पर कट्रोल है और वह तोडा नही जा सकता। अनाज का, कपडे का, शूगर (चीनी) का कण्ट्रोल हम तोड सकते है, लेकिन स्टील का कण्ट्रोल नही तोड सकते। हमारे यहाँ बहुत कम स्टील है। तो जहाँ ज्यादा-से-ज्यादा जरूरत होती है, वहीं हम देते है। आज टाटा के कारखाने में भी बार-बार स्ट्राइक होती है। तो यदि नया गवर्नमेंट का कारखाना बनाना हो तो उसमें स्ट्राइक होनी ही नही चाहिए।

आर्मी को कभी हमें मद्रास ले जाना है, तो कभी पजाब। उसके लिए रेलवे चाहिए। एक बटेलियन को ही एक जगह से दूसरी जगह हटाना हो, तो उसके लिए कितनी रेलवे चाहिए ? यह सब आपने देखा हो तो मालूम पडे। लेकिन हमारी रेलवे तो अब बूढी जैसी हो गई। क्योकि यह जो पश्चिम में पिछली लडाई चली, उससे उसके ऊपर बहुत बोझ पडा। लेकिन अब लडाई खत्म हो गई तो उसके लिए जो कुछ वैगन चाहिए, कुछ नये इजन चाहिए, नये बाइलर चाहिए, सब चीजें चाहिए। वे चीजें इधर बनती नही तो बाहर से लानी पडती हैं और बाहरवाले मुल्क तग आ गए है। उनके पास भी पिछली लडाई में सफाचट मैदान हो गया है। उनको भी यही सब चाहिए। सो बहुत मुश्किल पडती है। उधर हम टूटी-फूटी रेलवे लाइन की मरम्मत की कोशिश करें और उधर रेलवे के काम करनेवालो को कहा जाए कि स्ट्राइक करो, तो सब खत्म हो गया। उस हालत में हम लडाई कैसे जीतेंगे ? किस तरह हमारा काम चलेगा ?

अब जितने ट्रक्स हमारे पास हैं, उनमें पेट्रोल चाहिए। पेट्रोल बिना ट्रक्स नही चलते। जीप नही चलती। पेट्रोल कहाँ से ले आएँ ? जिसके पास पेट्रोल है, वह चाबी बन्द करके बैठ जाए, तो हमारी लडाई खत्म। तो पेट्रोल भी हिन्दुस्तान की धरती में पडा है। लेकिन उसे हम कैसे निकालें ? उसके लिए हमें कारखाने बनाने चाहिएँ। पर हमारे भाई कहते हैं यह "की इण्डस्ट्री" (आधारभूत व्यवसाय) है। यह तो सरकार की तरफ से करना चाहिए। अरे सरकार के पास इतने काम पडे हैं, और उसका काम चलानेवाले जो चन्द लोग हैं, उसके पास तो इतना बोझ पडा है। इस प्रकार का काम इन लोगो ने कभी किया भी नही। आज मै सरकार की तरफ से यह नही कह सकता हूँ कि हम कोई ऐसी इण्डस्ट्री झटपट नेशनालाइज़ करें, जिसके बारे में हमें कोई

अनुभव न हो। उसमें तो हमें परदेशी लोगो को भी साथ लेना पडेगा। क्योकि इधर हमारा कोई आदमी जानता ही नही कि पेट्रोल किस तरह से निकालना चाहिए। या पेट्रोल का कुआ कहाँ है ? तो उसमें बहुत मेहनत करनी पड़ेगी।

अब हमे कोयला चाहिए। कोयले के बिना कोई कारखाना नही चलता। कोयला तो व्यवसाय की चाबी है। कोयले के बिना कोई काम नही चलता। न गाडी चलती है, न इजन चलता है, न कोई कारखाना चलता है। तो कोलियारी तो धरती में पडी है। हमारे देश मे बहुत-सी खानें हैं, जिनमे कोयला भरा है। लेकिन माइनो में से कोयला ग्रेजुएटो से नही निकलेगा, या सोशलिस्टो से भी नही निकलेगा। वह तो मजदूरो से ही निकलवाना पडेगा। अभी हम मजदूरो से मेहनत करके कोयला निकालने को कहेगे, तो वे उनके पास पहुँच जाएँगे और कहेगे कि हडताल करो।

क्या अब मै बताऊँ आपको ? बताने की बहुत-सी बाते है। उसमे बहुत समय लगेगा। लेकिन जब मै यह बाते कहता हूँ तो वे कहते हैं कि यह हमारा बिटर क्रिटिसिजम (कडी समालोचना) करता है। मैं बिटर क्रिटिसिज्म की बात नही करता हूँ। मै आपके दिल मे घुसना चाहता हूँ और आप को बताना चाहता हूँ कि कितनी सदियो के बाद आज आप को यह मौका मिला है। एक हजार साल के बाद आज हमारा हिन्दुस्तान जितना सगठित हो गया है, उतना वह पहले कभी नही था। अपने इतिहास को पढो तो सही। कभी आपने सोचा कि हमने अपना हिन्दुस्तान किस तरह गँवाया था ? अपने पागलपन से गँवाया था। हमारे राजा आपस मे लडते थे। हमारे अपने यहाँ के लोग एक नही थे और हमारे ही कुछ लोगो ने दुश्मन का साथ दिया था। उसी से हमने अपना देश गँवाया। अब गान्धी जी की तपश्चर्या से यह पहला मौका आया है। कई लोगो ने बलिदान किया, तब हमारे सद्भाग्य से यह मौका हमें मिला है। यह मौका गँवाओगे तो क्या करोगे ? हमारा तो दिन खत्म हुआ। हमारा काम तो पूरा हुआ। लेकिन अपनी यह गठरी आप अपने सिर पर रख कर अपना बोझा आप उठा सकें, ऐसी शक्ति हम आपको देना चाहते है। सोते हुए के ऊपर गठरी रखने से क्या फायदा ?

अगर आप लोग जागृत नही रहेगे, तो बम्बई गिर जानेवाला है। बम्बई आज तक तो देश में सब से पहला रहा है। इधर जो कुछ धन पैदा हुआ, इधर जो दिमाग पैदा हुआ, इधर जो पोलिटिकल लीडर पैदा हुए, उन पर आप

गर्व कर सकते हैं। लेकिन आज अगर आप उल्टे रास्ते पर चले तो आप गिर जाएँगे। आज तो यहाँ डेमोक्रेसी है, लोक-शासन है। उसमें लोक का साथ नही होगा, तो कुछ भी नही होगा। तो जो गलत रास्ते पर चलते हैं, उनको समझाना आपका काम है। और अगर वे न मानें तो आप को उनका साथ नहीं देना चाहिए, बल्कि कोशिश करके उन्हे रोकना चाहिए। यदि आप नागरिक अपना फर्ज नही बजाते, तो स्वराज्य मिला न मिला, एक बराबर है। उससे हमारा देश गिर जाएगा।

मैंने जितनी बातें आप लोगो के सामने रखी है, उन पर आप गहराई से सोचें। आप अपनी जिम्मेवारी उठाने के लिए कोशिश करें। मेरे दिल में जो आग भरी है, वह मैं आपके सामने रखता हूँ। यह इसलिए कि जो मौका हमें मिला है, उसका हम पूरा फायदा उठावें। ईश्वर आपका कल्याण करे।

---

(५)

गान्धी जी की हत्या के एकदम बाद

दिल्ली, ३० जनवरी, १९४८

भाइयो और बहनो,

आपने मेरे प्यारे भाई पं० जवाहरलाल नेहरू का पैगाम सुन लिया। मेरा दिल दर्द से भरा हुआ है। क्या कहूँ क्या न कहूँ? जबान चलती नही है। आज का अवसर भारतवर्ष के लिए सब से बड़े दुख, शोक और शर्म का अवसर है। आज चार बजे मैं गान्धी जी के पास गया था और एक घंटे तक मैंने उनसे बात की थी। वह घडी निकालकर मुझ से कहने लगे कि मेरा प्रार्थना का समय हो गया है; अब मुझे जाने दीजिए। तो वह भगवान के मन्दिर की तरफ अपने हमेशा के समय पर चलने के लिए निकल पडे। तब मैं वहाँ से अपने मकान की तरफ चला। मैं मकान पर अभी पहुँचा नही था कि उतने में रास्ते में एक भाई मेरे पास आया। उसने कहा कि एक नौजवान हिन्दू ने गान्धी जी के प्रार्थना की जगह पर जाते ही अपनी पिस्तौल से उन पर तीन गोलियाँ चलाई, वह वहीं गिर पड़े और उनको वहां से उठा कर घर में ले जाया गया है। मैं उसी वक्त वहां पहुँच गया। मैंने उनका चेहरा देखा। वही चेहरा था। वैसा ही शान्त चेहरा था, जैसा हमेशा रहता था। ठीक वही चेहरा था। और उनके दिल मे दया और माफी के भाव अब भी उनके चेहरे से प्रकट

होते है। आस-पास वहुत लोग जमा हो गए। लेकिन वह तो अपना जो काम उन्हे करना था, उसे पूरा करके चले गए!

पिछले चन्द दिनो से उनका दिल खट्टा हो गया था और आप जानते हैं कि आखिर उन्होंने उपवास भी किया। उपवास में चले गए होते, तो अच्छा होता। लेकिन उनको और भी काम देना था तो रह गए। पिछले हफ्ते में एक दफा और एक हिन्दू नौजवान ने उनके ऊपर वम फेंकने की कोशिश की थी। उसमें भी वह वच गए थे। इस समय पर ही उनको जाना था। आज वह भगवान के मन्दिर में पहुँच गए! यह वडे दुख का, वडे दर्द का समय है, लेकिन यह गुस्से का समय नही है। क्योकि अगर हम इस वक्त गुस्सा करें, तो जो सबक उन्होंने हमको ज़िन्दगी भर सिखाया, उसे हम भूल जाएँगे। और कहा जायेगा कि उनके जीवन में तो हमने उनकी वात नही मानी, उनकी मृत्यु के बाद भी हमने नही माना। हम पर यह धब्बा लगेगा। तो मेरी प्रार्थना है कि कितना भी दर्द हो, कितना भी दुख हो, कितना भी गुस्सा आए, लेकिन गुस्सा रोककर अपने पर काबू रखिए। अपने जीवन में उन्होने हमें जो कुछ सिखाया, आज उसी की परीक्षा का समय है। वहुत शान्ति से, बहुत अदब से, बहुत विनय से एक दूसरे के साथ मिलकर हमे मज़बूती से पैर जमीन पर रखकर खडा रहना है। आप जानते हैं कि हमारे ऊपर जो बोझ पड रहा है, वह इतना भारी है कि करीब-करीव हमारी कमर टूट जाएगी। उनका एक सहारा था और हिन्दुस्तान को वह बहुत वडा सहारा था। हमको तो जीवन भर उन्हीं का सहारा था। आज वह चला गया! वह चला तो गया, लेकिन हर रोज़, हर मिनिट वह हमारी आँखो के सामने रहेगा! हमारे हृदय के सामने रहेगा! क्योकि जो चीज वह हमको दे गया है, वह तो कभी हमारे पास से जाएगी नही!

कल चार वजे उनकी मिट्टी तो भस्म हो जाएगी, लेकिन उनकी आत्मा तो अब भी हमारे वीच में है। अभी भी वह हमें देख रही है कि हम लोग क्या कर रहे है। वह तो अमर है। जो नौजवान पागल हो गया था, उसने व्यर्थ सोचा कि वह उनको मार सकता है। जो चीज उनके जीवन में पूरी न हुई, शायद ईश्वर की ऐसी मर्ज़ी हो कि उनके द्वारा इस तरह से पूरी हो। क्योकि इस प्रकार की मृत्यु से हिन्दुस्तान के नौजवानो का जो कॉनशस (अन्तरात्मा) है, जो हृदय है, वह जाग्रत होगा, मै ऐसी आशा करता हूँ। मैं उम्मीद करता

हूँ और हम सव ईश्वर से यह प्रार्थना करेंगे कि जो काम वह हमारे ऊपर वाकी छोड गए हैं, उसे पूरा करने में हम कामयाव हो। मैं यह भी उम्मीद करता हूँ कि इस कठिन समय में भी हम पस्त नही हो जाएँगे, हम नाहिम्मत भी नहीं हो जाएँगे। सव को दृढ़ता से और हिम्मत से एक साथ खडा होकर इस वहुत वडी मुसीवत का मुकाविला करना है और जो वाकी काम उन्होंने हमारे ऊपर छोडा है, उसे पूरा करना है। ईश्वर से प्रार्थना कर, आज हम निश्चय कर ले कि हम उनके वाकी काम को पूरा करेंगे।

---

(६)

गान्धी जी की शोक-सभा में

रामलीला मैदान,
दिल्ली,
२ फरवरी, १९४८

सदर साहब, बहनो और भाइयो,

जब दिल दर्द से भरा होता है, तब जबान खुलती नही है और कुछ कहने को दिल नही होता है। इस मौके पर जो कुछ कहने को था, भाई जवाहरलाल नेहरू ने कह दिया, मै क्या कहूँ? जब से गान्धी जी हिन्दुस्तान में आए तब से, या जब मैंने ज़ाहिर जीवन शुरू किया तब से, मै उनके साथ रहा हूँ। अगर वे हिन्दुस्तान न आए होते, तो मै कहाँ जाता और क्या करता, उसका जब मैं ख्याल करता हूँ तो एक हैरानी-सी होती है। तीन दिन से मैं सोच रहा हूँ कि गान्धी जी ने मेरे जीवन में कितना पल्टा किया और इसी तरह से लाखो आदमियो के जीवन में उन्होने किस तरह से पल्टा किया? सारे भारतवर्ष के जीवन में उन्होने कितना पल्टा किया। यदि वह हिन्दुस्तान में न आए होते तो राष्ट्र कहाँ जाता? हिन्दुस्तान कहाँ होता? सदियो से हम गिरे हुए थे। वह हमें उठाकर कहाँ तक ले आए? उन्होने हमें आज़ाद बनाया। उनके हिन्दोस्तान आने के बाद क्या-क्या हुआ और किस तरह से उन्होने हमें उठाया, कितनी दफा किस-किस प्रकार की तकलीफें उन्होने उठाई, कितनी दफे वह जेलखाने में गए और कितनी दफे उपवास किया, यह सब आज ख्याल

आता है। कितने धीरज से, कितनी शान्ति से वह तकलीफें उठाते रहे, और आखिर आजादी के सब दरवाज़े पार कर हमें उन्होंने आज़ादी दिलवाई।

लेकिन इसके बाद क्या हुआ ? इसके बाद खुद हमारे एक नौजवान ने उनके बदन पर गोली चलाने की हिम्मत की। यह कितनी शरम की बात है ! उसने गोली किसके ऊपर चलाई ? उसने एक वृढे बदन पर गोली नही चलाई, यह गोली तो हिन्दुस्तान के मर्म स्थान पर चलाई गई है ! और इससे हिन्दुस्तान को जो भारी जख्म लगा है, उसके भरने में बहुत समय लगेगा। बहुत बुरा काम किया ! लेकिन इतनी शरम की बात होते हुए भी हमारे बदकिस्मत मुल्क मे कई लोग ऐसे है, जो उसमें भी कोई बहादुरी समझते हैं, कोई खुशी की बात समझते है। जो ऐसे पागल लोग है, वे हमारे मुल्क में क्या नही करेंगे ? और जब गान्धी जी के तन पर गोली चल सकती है, तो आप सोचिए कि कौन सलामत है ? और किस पर गोली नही चल सकती है ?

तो क्या गान्धी जी ने हिन्दुस्तान को जो आज़ादी दिलवाई, इसी काम के लिए ? अगर हम इसी रास्ते पर चलेंगे, तो कहाँ जा कर बैठेंगे ? हमारे पास क्या बाकी बच रहेगा ? क्या हम आज़ादी को हज़्म कर सकेंगे ? दुनिया मे हमारी क्या हालत होगी ? जब गान्धी जी ने दिल्ली में यह अन्तिम उपवास किया तो मैं तो उस रोज़ इधर से चला गया था। लेकिन मुझे बहुत शक था कि इस समय वह उपवास मे से बचेंगे कि नही। और जब वह उठे और उपवास छूट गया तो बहुत खुशी हुई। लेकिन यह खुशी कितने दिन की रही ? और कौन कह सकता है कि उपवास छूटने से फायदा हुआ, जब पीछे से उन्हे गोली से मरना हुआ। अगर वह उपवास से मरते, तो भी हमको बहुत शरम होती। लेकिन गोली से मरे, तो कोई थोड़ी शरम की बात नहीं है। सारी दुनिया में हमारा मुह काला हो गया है।

हाँ, यह कह सकते है कि यह काम एक पागल आदमी ने किया। लेकिन मैं यह काम किसी अकेले पागल आदमी का नही मानता। इसके पीछे कितने पागल है ? और उनको पागल कहा जाए कि शैतान कहा जाए, यह कहना भी मुश्किल है। लेकिन जो लोग उसके पीछे है, उनको और बढने दें, तो मुल्क मे क्या नही आ सकता है। यह आप लोगो के सोचने की बात है। जिसके पास हुकूमत है, उसकी तो है ही। लेकिन जब तक आप लोग अपने दिल साफ

कर हिम्मत से इसका मुकावला नही करेंगे, तव तक काम नही चलेगा। मगर उसका मतलब यह नही है कि आप कानून अपने हाथ में लेकर उसको सजा देने लग जाएँ। तव तो उससे भी वुरा होगा। क्योकि तव तो जैसे वह पागल हो गया, वैसे ही हम भी पागल वन जाएँगे। तो कानून में हस्तक्षेप किए विना हमे इन चीजो का विरोध करना चाहिए। अगर हमारे घर में ऐसे छोटे वच्चे हो, हमारे घर में ऐसे नौजवान हो, जो उसी रास्ते पर जाना पसन्द करते हों, तो उनको कहना चाहिए कि यह वहुत वुरा रास्ता है और तुम हमारे साथ नही रह सकते। इस तरह साफ वात न करें, तो ये चीजें वढती जाएँगी। ऐसे मौको पर इसी तरह लाखो आदमी तो जरूर जमा हो जाते है, लेकिन चन्द दिनो के वाद अगर असल चीज भूल गई, तो फिर उस से भी वुरा नतीजा आएगा।

तो गान्धी जी ने कोशिश करके हमको आजादी तो दिलवाई। लेकिन उसके वाद जिसने आज़ादी दिलवाई, उसको भी हमारे सामने मरना पडा। यह वहुत वुरा काम किया गया। जिन लोगो ने यह काम किया, गवर्नमेंट की तरफ से उसकी पूरी खोज की जाएगी। लेकिन सरकार की इस कोशिश में, आपको साथ देना हो और अपना धर्म वजाना हो, तो आप को इस चीज के प्रति अपनी नापसन्दगी और घृणा वतानी चाहिए। जव मैं इधर आ रहा था तो एक भाई ने मेरे पास चिट्ठी भेजी कि कम्युनिस्टो का एक जुलूस निकला, उस जलूस में वे कहते थे कि हम वदला लेंगे। यदि फिर भी हम इस ढग से काम करेंगे तो माना जाएगा कि गान्धी जी की वात जिन्दगी भर तो हमने सुनी नही, मानी नही, लेकिन मरने के वाद भी उसे नही माना।

वदला लेना हमारा काम नही है। इस तरह से वदला नही लिया जाता है। वैसा किया गया तो हम लोग गलत रास्ते पर चले जाएँगे। तो न किसी को मारना, न किसी के घर पर हल्ला करना और न किसी को पीटना। लेकिन यदि आपको कोई चीज मालूम हो तो तुरन्त हुकूमत को वता देना चाहिए कि इस प्रकार लोग काम करते है। तो इन लोगो को रोकना चाहिए कि वे ऐसा काम न करें। जो वुरा काम करता है, उसको रोकना, उसको ठीक तरह से रोकने की कोशिश करना हमारा काम है। लेकिन इस तरह से कोई वदला लेने की वात करे, तो उसकी वात हमें नही सुननी चाहिए। आज हम लोगो को इतनी सालो की कोशिश के वाद जो कुछ मिला है, गान्धी जी ने जो

कुछ दिलवाया है, वह चीज हमें फेंक नहीं देनी है। यह थाती गान्धी जी हमारे पास रख गए हैं। इसको हमें ठीक तरह से चलाना है। इसके लिए हमें गान्धी जी के बताए हुए मार्ग को समझकर उस रास्ते पर चलने की कोशिश करना है। यही हमारा कर्तव्य है। हम ईश्वर से माँगे कि वह हमें उस रास्ते पर चलने की शक्ति दे।

---

(७)

अपहृता नारियों के लिए अपील

१८ फरवरी, १९४८

देश की हजारो दुखित औरतो के लिए जो जोरदार अपील की जा रही है, उनके पक्ष में मै भी अपनी ओर से कुछ कहना चाहता हूँ। पिछले दिनो पूर्वी और पश्चिमी पजाव और सीमाप्रान्त में जो अराजकता फैली थी और जिसने काश्मीर की सुन्दर वादी के कुछ भाग और जम्मू प्रान्त को भी घेर लिया था, उसमें निर्दोष औरतो और वच्चो के अपने सम्वन्धियो से जवरदस्ती से छीनकर दूर किये जाने और उन पर तरह-तरह के जुल्म-अत्याचार करने से जितनी हमारी इज्जत गिरी, उतनी किसी और घटना से नही गिरी होगी। इस प्रकार की दुर्घटनाएँ तो जानवरो के रहन-सहन के नियमो के अनुसार भी नही है। ऐसे कुकर्म समाज और सभ्यता की परम्पराओ के विलकुल विपरीत है। इसलिए ऐसे लोगो के लिए इस दुनिया में कोई स्थान नही हो सकता। और हमारा कर्तव्य है कि सभ्यता के विरुद्ध ऐसे आचरण का हम दृढतापूर्वक दमन करें।

जव मै इन माताओ और वहनो की दुर्दशा और उनके कष्टो का ख्याल करता हूँ तो मेरा हृदय शोक और पीडा से भर जाता है। अच्छे घराने की पढी-लिखी स्त्रियाँ, जिनका जीवन खुशहाली की गोद में पला, जो शान्ति से अपने परिवार वालो के साथ अपना सुरक्षित जीवन व्यतीत करती थी, वहुत-सी स्त्रियाँ
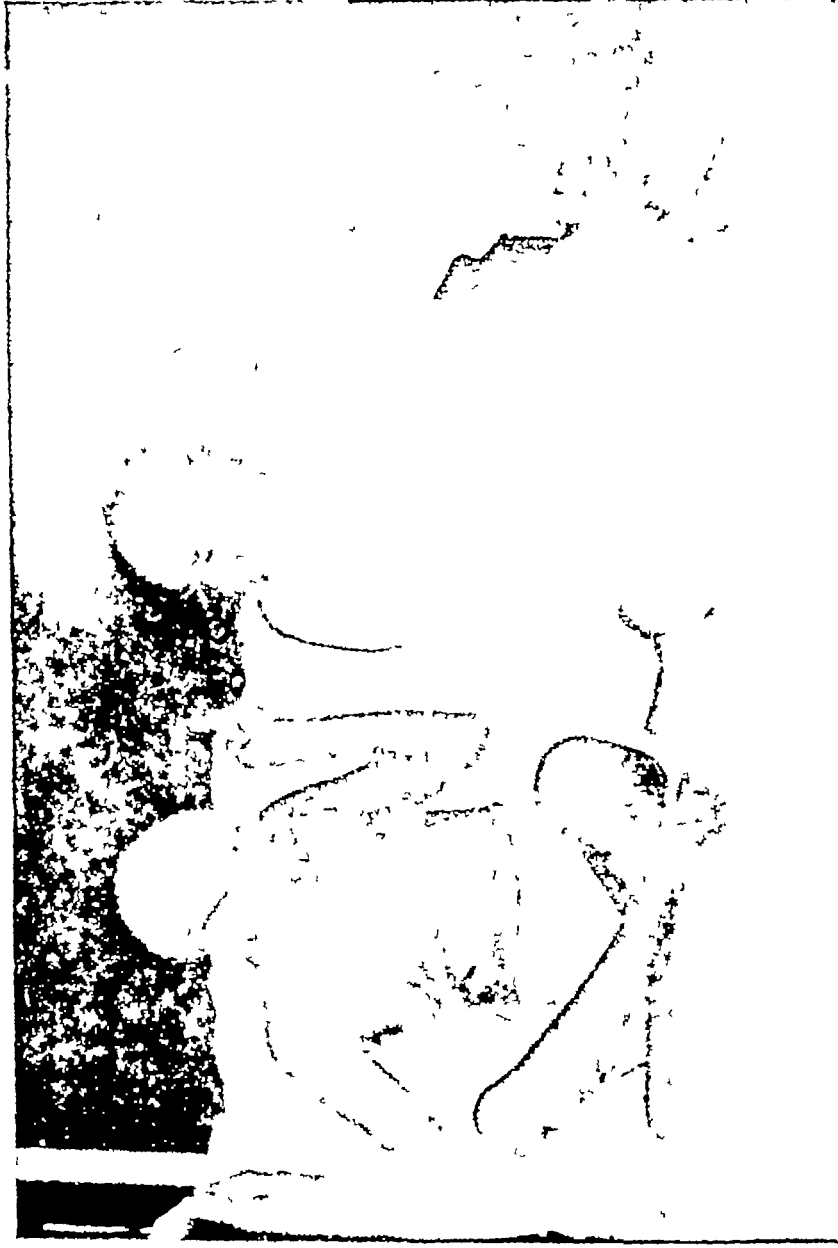
भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में सरदार पटेल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के साथ विचार विमर्श करते हुए
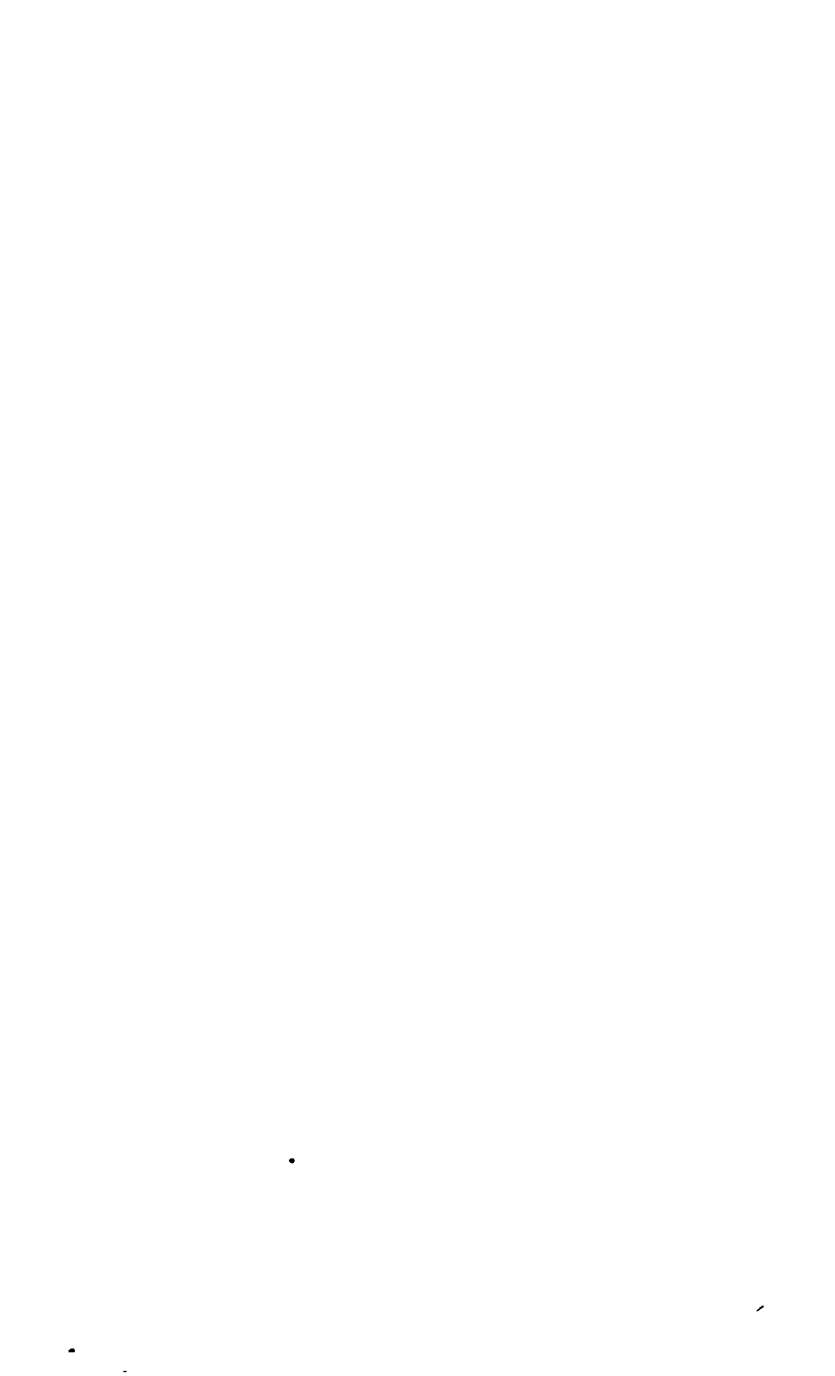
जो गरीब घरो का आभूषण थी, आज उजाड और बरबाद हो गई है। उन्हें दुराचारियो ने अपने घरो से जबरदस्ती दूर कर ऐसी हालत मे डाल दिया है, जो मानवता के नाम पर कलक है। यदि हमे मानवता को फिर से उसके पुराने स्थान पर प्रतिष्ठित करना है, तो हमारा कर्तव्य है कि हम उन अभागी औरतो को उनकी वर्तमान पतित दशा से निकाले और उनको उनकी पुरानी परिस्थिति में पहुँचा दें। यदि हम ऐसा न कर पाएँ, तो मानव-इतिहास में हमारा कोई भी स्थान न होगा और आनेवाली पीढिया हमे जानवरो से भी गया-बीता समझेंगी।

इस सत्कार्य मे जो लोग हर प्रकार की मुसीबतो को झेलकर और विभिन्न बाधाओ की चिन्ता न करते हुए लगे हुए है, उन्होने देश और मनुष्य जाति के प्रति अपना कर्तव्य पूरा किया है। इसके लिए उनकी जितनी प्रशसा की जाए, कम है। यह ठीक है कि यह समस्या इतनी महान है कि जो कुछ अब तक हो पाया है, वह सब तुच्छ मालूम पडता है। किन्तु इस थोडे-से नतीजे को हासिल करने में ही हमें कितनी मेहनत और जी तोडकर काम करने की जरूरत हुई है। अगर हम इसका विचार करे, तो हमें अनुमान हो सकता है कि यदि मानवता के खडहरो से हमे ये आभूषण बचाने है, तो अभी कितना काम हमे और करना होगा। यह स्पष्ट है कि ऐसे महान कार्य को सफलता से पूरा करने के लिए जनता और सरकार का सहयोग जरूरी है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जनता और सरकार दोनो का यह कर्तव्य है कि इस काम मे पूरी-पूरी सहायता दें। ऐसा न करना, न केवल उन आश्वासनो के खिलाफ होगा, जो दोनो सरकारो ने एक दूसरे को दिए है, बल्कि समाज और सभ्यता के सब सिद्धान्तो के भी प्रतिकूल होगा। हमे उन अपराधियो की आत्मा को भी जगाना है, जिनके कब्ज़े मे यह औरतें है और जो इस प्रकार उनसे व्यवहार करते है कि मानो वे बाजार की क्रीत वस्तुएँ या जीती हुई लूट हो। मै उनसे अपील करूँगा कि वह अपनी गलतियाँ महसूस करें और इस पर विचार करें कि उनके इस गलत रास्ते पर चलने से समाज की कितनी हानि होती है।

इस महा अपराध का दण्ड देते समय इस बात का कोई विचार नही किया जा सकता कि अपराधियो ने यह काम धर्म के नाम पर, या प्रतिशोध या लूट-खसोट की भावना से प्रेरित होकर किया था। यदि उन्हे फिर से मानव अधि-

कार प्राप्त करने है, तो उन्हे चाहिए कि वे पश्चात्ताप करें और जो बुराई उन्होने की है, उसे ठीक करने में सहायता दें। यदि वे फिर से मनुष्य बनना चाहते है, तो उनके लिए बुरी राह छोडने का यही अवसर है। उन्हे चाहिए कि वे अपनी आत्मा की पुकार सुनें, अपने धर्म के आदेश, अपने समाज के नियम और जीवन के सिद्धान्त के अनुसार चले। उन्हें चाहिए कि वे सोचें कि यदि उनकी अपनी स्त्रियो पर यह मुसीबत आती, तो वे खुद क्या करते ? मुझे विश्वास है कि अगर ये लोग शान्ति से इन बातो पर सोच-विचार करेंगे, तो अवश्य ही उन्हे अपनी भूल का अनुभव होगा और वे उन लोगो का पूरा साथ देंगे, जो इन स्त्रियो की रक्षा और सहायता का प्रबन्ध कर रहे है।

मै उन अभागे और शोकग्रस्त परिवारो से भी दो-चार शब्द कहना चाहता हूँ, जिन्होने अपनी माँ, बहनो या बेटियो को खोया है। मै उनकी पीडा और घोर यातना को समझ सकता हूँ। मै जानता हूँ कि वे अपने प्रियजनो को फिर से पाने के लिए कैसे-कैसे खतरो का सामना कर रहे हैं और करने को तैयार हैं। मुझे अभी तक ऐसा कोई आदमी नही मिला, जो इन दुखित व पीडित स्त्रियो का फिर से अपने घर में स्वागत करने के लिए राजी बल्कि उत्सुक न हो। मै उनसे यही कहूँगा कि आप हिम्मत न हारें, और अपनी कोशिश बराबर जारी रखें। जहाँ सैकडो और हजारो व्यक्तियो का प्रश्न हो, वहाँ यह सम्भव नही कि सब काम केवल सरकारी साधनो से ही हो। व्यक्तिगत अथवा सामूहिक गैर-सरकारी कोशिश, निरी सरकारी कार्यवाही की अपेक्षा अधिक सफल होती है। मै आशा करता हूँ कि कार्यकर्ता लोग निराशाओं और विघ्न-बाधाओ से हिम्मत नही हारेंगे, और उत्साह, तत्परता तथा दृढ निश्चय के साथ इस सत्कार्य में लगे रहेगे।

अपनी इन शोकग्रस्त बहनो को मैं सहानुभूति और समवेदना का सदेश भेजता हूँ। उनकी दुर्दशाओ और यातनाओ ने हमारे हृदय पर गहरी चोट पहुँचाई है। हमें उनका बराबर ध्यान रहता है। उन्हें इस बात में तनिक भी सदेह न होना चाहिए कि उनके परिवारवाले उन्हे सहर्ष वापस लेने के लिए हृदय से तैयार है और हम उनकी रक्षा और उद्धार के कार्य में किसी प्रकार की कमी न आने देगे। मै जानता हूँ कि उन्हें अपने वर्तमान जीवन का एक एक पल विष का घूट होगा। किन्तु धीरज और विश्वास से बडी-से-बडी कठिनाइया भी हल हो जाती है और कडे-से-कडा दिल भी पिघल सकता है।

आप धीरज और विश्वास को न छोड़ें और परमात्मा से प्रार्थना करें कि जो लोग आप की रक्षा करने का प्रयत्न कर रहे हैं, वे अपने शुभ कार्य में सफल हों और बुरा काम करनेवालों की सोई हुई आत्माएँ फिर से जागें, ताकि वे अपने कर्तव्य को समझ सकें।

---

(८)

पेप्सू का उद्घाटन, पटियाला

१५ जुलाई, १९४८

भाइयो, आज हम लोग एक बडे ऐतिहासिक प्रसग पर यहा हाजिर हुए हैं। हिन्दुस्तान के इतिहास में आज एक नया चैप्टर (अध्याय) लिखा जाता है और इस समय पर वह नया इतिहास बनाने में हम लोगो को भी हिस्सा लेने का सद्भाग्य प्राप्त हुआ है। इसलिए इस अवसर पर हम और हमारा देश गर्व अनुभव कर सकते है। इस ऐतिहासिक मौके पर जो भाई जमा हुए हैं, उन्हे इस समय पर ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमारा दिल साफ कर दे। जिस पवित्र काम के लिए आज हम जमा हुए है, वह काम करते हुए हम किसी प्रकार का मैल अपने हृदयो में न रखें। राजा और प्रजा सब के लिए, आज हृदय-मन्थन का समय उपस्थित है।

यह अवसर आज कितनी सदियो के बाद प्राप्त हुआ है। बहुत समय से भारत गुलामी में पडा था और आज हमें अपने जीवन में भारत को स्वतन्त्र देखने का मौका मिला है। भारत को स्वतन्त्र बनाने में जो मुसीबतें आईं, जो विडम्बना सहन करनी पडी, वह सब आपने देखी है। लेकिन जब इतनी बडी क्रान्ति होती है, तो उसमें मुसीबतें आया ही करती है। हमारा तो सद्भाग्य है कि उन सब मुसीबतो से हम करीब-करीब पार निकल आए है। आज भी बहुत-सी कठिनाइयां हमारे सामने हैं। और यदि आज हम गलती करेंगे, तो हम
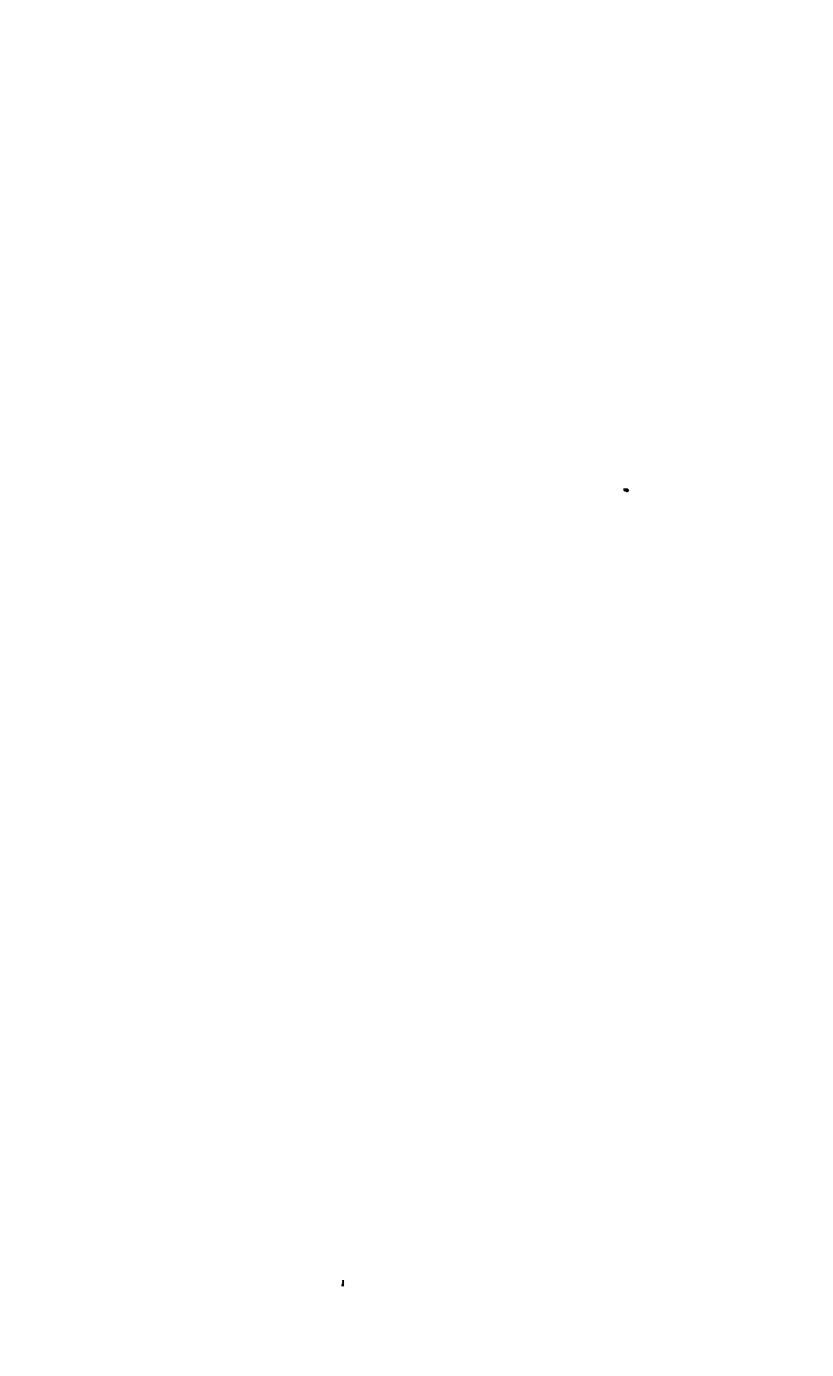
हूँ। इतने समय में तो देश में बहुत बडी क्रान्ति हो गई है। इधर चार-पांच महीनो से कुछ मैं बीमार पड गया था। आज पहली बार मैं बाहर निकलता हूँ। मेरे डाक्टरो ने मुझे इधर आने से मना किया था। उन की नाखुशी बरदाश्त करते हुए भी मैं यहाँ आ गया हूँ। क्योकि मैंने पटियाला महाराजा को इसके लिए वायदा दिया था। पटियाला महाराजा के साथ मेरी उतनी मुहब्बत भी है। उन्होने मुझ को हिन्दुस्तान को गुलामी में से निकालने में और उसे एक बनाने में हृदय से साथ दिया था। मैंने उनको जो वायदा दिया था, वह वायदा पूरा करने के लिए मैं आज इधर आया हूँ।

साथ ही आप लोगो को कुछ बाते समझाने के लिए भी मैं इधर आया हूँ। क्योकि ऐसा मौका फिर नही आएगा। राजाओ के पास से राज्य ले लेना आसान है। क्योकि जब तक हमारे ऊपर परदेमी हुकूमत थी, तब राजाओ के दिल में चाहे कुछ भी रहा हो, लेकिन तब वे भी आजाद नही थे। जैसे हम तब गुलाम थे, वे हम से भी दुगुनी गुलामी में फँसे हुए थे। अब हम सब आजाद हैं। यह आप समझ ले कि मैंने बहुत-से राजाओ के साथ प्रजा की तरफ से लडाई की। बहुत-से राजा मुझ पर कुछ नाखुश भी थे। लेकिन आज जितनी मेरी राजाओ के साथ मुहब्बत है, उतनी और किसी की नही होगी। क्योकि स्वतन्त्र राजाओ के दिल में भी देश के लिए उतना ही प्रेम है, जितना हमारे दिलो में है। उससे कम नही है। उससे कम होता, तो स्वतन्त्र हिन्दुस्तान में किसी का राज्य नही चल सकता था।

तो राजा लोग समझ गए और उन्होने अपनी जगह समझ ली। बीच में एक मौका ऐसा आया था कि कई राजा अलग राजस्थान बनाने के लिए कोशिश कर रहे थे। जब पाकिस्तान बना तो उस समय यह हिन्दुस्तान के और टुकडे करने की कोशिश भी हो रही थी। तब पटियाला महाराजा ने कहा कि ऐसा कभी नही हो सकता। उन्होने कहा कि हिन्दुस्तान के राजा हिन्दुस्तान के साथ रहेगे। उसी समय से मेरी उन से मुहब्बत हुई। वह मुहब्बत कभी टूट नही सकती। और चाहे कोई भी कहे कि हम राजाओ के साथ कैसे चल सकते है, मगर मैं आप से कहना चाहता हूँ कि मैं खुद चल सकता हूँ, तब आप क्यो न चले।

जब पहला स्वतन्त्र हिन्दुस्तान था, तो अपने पुराने इतिहास में हम देखें कि तब बडे-बडे राजर्षि हमारे देश में हो गए थे। इन्ही राजा लोगो ने हिन्दु-

स्तान के बाहर हिन्दुस्तान की सस्कृति फैलाई थी। उसी हिन्दुस्तान में उनकी सन्तान को राज्य करने का मौका मिला था।

जब मैं पिछले सितम्बर-अक्तूबर मे इधर आया था, तब आप देखते थे कि पजाब की क्या हालत थी और हिन्दुस्तान की क्या हालत थी। जब पजाब के दो टुकडे हुए, तब पजाब पर जो मुसीबते आई थी, वे किसने नही देखी है? कौन ऐसा दुष्ट और क्रूर है, जिस का हृदय रोता नही था। मेरा दिल तो तब रात-दिन रोता रहा है। मुझे वह दिन याद है, जब दस-बारह लाख मुसलमान इधर से पाकिस्तान जा रहे थे और उन के जाने का एक ही रास्ता अमृतसर शहर के बीच मे से था। सिक्ख लोगो ने इन्कार किया कि वे इधर से नही जा सकते। उधर पश्चिमी पजाब के एक हिस्से मे हमारे हिन्दू और सिक्ख भाइयो की दस-बारह लाख की कतार थी, उसको वहाँ पाकिस्तान के मुसलमानो ने रोक लिया। उस झगडे मे लाखो आदमी मुसीबत मे आ पडे। वे न इधर जा सकते थे, न उधर। कैम्पो मे रोग फैल रहा था और ऊपर पानी पड रहा था। सब लोगो को बहुत कष्ट हो रहा था। उस समय मैंने पटियाला महाराज को बुलाया और कहा कि मेरे साथ चलो। हम दोनो ने अमृतसर-निवासियो को समझाया कि यह पागलपन है। आजाद हिन्दुस्तान में हम इस तरह के पागलपन का उपयोग नही कर सकते। तब महाराजा पटियाला पर और मुझ पर हमारे सब सिक्ख नेताओ की बहुत मुहब्बत थी। आजकल मुझे अफसोस है कि मैं उतनी मुहब्बत नही देखता हूँ। उस मुहब्बत का मुझको गर्व है। क्योंकि सिक्खो को मैं इस बात का विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि उनका सब से बडा दोस्त और सबसे अधिक हित चाहनेवाला मैं ही हूँ। आज तो मैं आप लोगो से अपील करने के लिए आया हूँ कि यह आपस मे लडने का समय नहीं है। अभी बडी-बडी मुसीबतें हमारे सामने आ सकती है। अगर हमारा जहाज किनारे पर आ कर डूब जाएगा, तो हम खुदा के सामने, मुल्क के सामने, कौम के सामने, बडे गुनाहगार बन जाएँगे।

तो मैं आपको अमृतसर की घटना सुना रहा था। तब सब सिखो ने मेरा साथ दिया था। मैंने तब उन से कहा था कि हम को एक रास्ता करने के लिए और मुसलमानो को जाने देने के लिए फौज का उपयोग करना पडे, पुलिस का उपयोग करना पडे और आप पहलवान लोग हमारे किसी काम न आएँ, जिनसे हमारा लश्कर बनता है, हमारी फौज बनती है, हमारे सिपाही बनते है, यह

ठीक नही होगा। मैंने उन्हे समझाया कि आप को वालन्टियर बन कर मुसलमानो को जाने का रास्ता करना चाहिए। तब अगर वे लोग हमारे आदमियो को रोकेंगे, तो हम देखेंगे। हमारी बात उन लोगो ने मान ली। वह चीज भारत के इतिहास में हमेशा याद रहेगी।

इसी तरह से आज हमें स्वतन्त्र भारत का रास्ता काटना है। देश की मुसीबतो में आपको उसी तरह से काम करना है। छोटी-छोटी हुकूमतो का आपस में हिस्सा बाटने के लिए हमें लडाई नही करनी है। कौन मिनिस्टर हो, कौन न हो, कौन हाकिम हो, उस झगडे में हमें नही पडना है। कौन कौम का सच्चा सेवक हो, हमें तो यही काम देखना है। वही रास्ता बनाने में हमारा कल्याण है। मै आप को उसी रास्ते पर चलने के लिए निमन्त्रण देने आया हूँ।

आज आपने देख लिया है कि यहाँ हमें जो प्रधान मण्डल बनाना था, वह भी नही बना। पर मुझे इस बात का कोई अफसोस नही है। इस काम में मुझे कोई अधीरता भी नही है। जब हमें लोकशासन बनाना है, डिमोक्रेसी को जन्म देना है, तो हमें धीरज से काम लेना होगा। जिन लोगो ने कभी सत्ता का अमल नही किया है, जिसने कभी हुकूमत देखी नही है, उन के पास हुकूमत लेने का पहला मौका आता है, तो वह झिझकते ही है। लेकिन जरूरी बात यह है कि अपना दिल साफ होना चाहिए। राज्य में एक पार्टी, दो पार्टी, तीन पार्टी, चार पार्टी ऐसा पक्षापक्ष बनाने का समय अभी नही आया है। उसके लिए अभी जल्दी मत करो। जो मुल्क लोकशासन में चलता है, उस मुल्क का इतिहास आप देखें, तो आपको पता चलेगा कि जब राज्य में काफी स्थिरता और मजबूती आ जाती है, तभी वह अच्छी तरह से चलता है। लेकिन हमारे यहा अभी राज्य का पाया मजबूत नही हुआ और हमारा जहाज अभी महासागर के बीच में झोला (झकझोरा) खाता है।

कई लोग कहते है कि भारत में तो काग्रेस का राज्य हुआ है। यह तो एक पार्टी का राज्य है, एक पक्ष का राज्य है। डिमोक्रेसी में तो दूसरा दल भी होना चाहिए। डिमोक्रेसी में ऑपोज़ीशन (विरोध) भी होना चाहिए। यह बात ठीक है। लेकिन उसका जब समय आएगा, तब हम खुद ही कहेगे कि ऑपोज़ीशन बनाओ। शायद हम खुद ही ऑपोज़ीशन के लीडर बनकर बाहर निकल आएँ। लेकिन आज मै यह कहना चाहता हूँ कि अभी तक तो हमारा सब जहाज़ ही ढीला-ढीला है। उसको हमें टाईट (कसना) करना है। और

ाव तक हमारा जहाज मजबूत न बने, हम उस पर खेल नही सकते। यह ाप को सम्भालना है। अगली १५ अगस्त को हमारी आज़ादी का एक साल ूरा होगा। हमारी एक साल की आज़ादी में ही हम पर कितनी मुसीबतें ड़ी। एक छोटे-से साल भर के बच्चे पर जितनी आपत्तियां आ पड़ी, उतनी ुसीबतें शायद इतिहास मे किसी मुल्क पर नही आई। हमने वह सब बोझ झेला है। और यदि हमे आज़ादी के इस बच्चे को मजबूत बनाना हो तो हमें उसकी सलामती की बराबर कोशिश करनी चाहिए।

मै आप से कहना चाहता हूँ कि आप इस बात का भी ध्यान रक्खे कि आप किस जगह रहते है। हमारे हिन्दुस्तान की पुरानी सरहद आज चली गई है। आज हमारी नई सरहद बनी है। उस सरहद पर एक बहुत स्ट्रैटेजिक पोज़ीशन (महत्वपूर्ण अवस्थिति) मे आप रहते है। यहाँ रहते हुए आपकी क्या ज़िम्मेवारी है? यदि आप का अपने पड़ोसी के साथ मुहब्बत और मित्राचार होता और उसके दिल मे विश्वास होता, तब भी और बात थी। आज तो अवि-श्वास भरा है। यदि दोनों पड़ोसियो में परस्पर मुहब्बत न हुई, एक दूसरे का विश्वास न हुआ, तो हमारा क्या कर्तव्य है? क्या इन हालतो मे हम आपस मे लड सकते है? तो मै आप से यह कहना चाहता हूँ कि इस जगह पर आप लोग बैठे है, इसलिए आपकी सब से बड़ी ज़िम्मेवारी है। क्योकि यहाँ रह कर आप हिन्दुस्तान की सरहद पर बैठे है। सरहद के सिपाही को हकूमत का ख्याल नही होना चाहिए। उसे तो सरहद की रक्षा करने का ही ख्याल होना चाहिए। जब लड़ाई होती है, तब सब एक हो जाते है। इसी प्रकार हमारा आज कर्तव्य है कि हम सब एक बने।

कई लोग कहते है कि यह जो पटियाला और ईस्टर्न स्टेट्स (पूर्वी राज्यों) का यूनियन बनाया गया, उस में किसी की नियत कुछ ऐसी है कि जिस से कि उन्हें शक होता है। पर मैं यह बता देना चाहता हूँ कि मेरी नियत किसी तरफ बुरी नही है। लेकिन मेरी एक ख्वाहिश ज़रूर है और वह यह कि जो हिन्दु-स्तान अब बना है, उसकी हमे पूरी हिफाजत करनी चाहिए। यह हर एक हिन्दु-स्तानी का धर्म और पहला फर्ज है कि वह हिन्दोस्तान को अब कभी गुलाम न बनने दे, सब कुछ देकर भी उसकी आज़ादी की रक्षा करे।

मै चाहता हूँ अब भारत की एकता में कोई कचाई न हो, उसकी स्थिरता में कोई कचाई न हो। हमारा सगठन भी पूरा बन जाए। उनमें राजाओ ने मेरा

पूरी तरह साथ दिया। आप जानते है कि मै गुजरात से आता हूँ। उधर के जामनगर से पहले मै वहुत लडा। तब ब्रिटिश हुकूमत थी। लेकिन आज मेरी और उनकी इतनी मुहब्बत है कि हम दोनों सगे भाई जैसे हो गए हैं। क्योकि आखिर वे भी समझ गए और मै भी समझ गया कि हिन्दुस्तान की सलामती न हो, तो न राजाओ की सलामती है और न हमारी सलामती है। हमारी इज्जत छोटी-छोटी रियासतो में राज्य करने से नहीं बनती, लेकिन अगर दुनिया में हिन्दुस्तान की इज्जत बढे, तो उसमें हमारी भी इज्जत बढती है और राजाओ की भी इज्जत बढती है। तो हमारा पहला फर्ज है कि हम हिन्दुस्तान को मज़बूत कर दें। तब हम इसे दुनिया के वडे मुल्को की कतार में खडा कर सकते है। इस काम में जितना समय हम बिगाडेंगे, वह हमारा ही कसूर होगा। उसमें हमारी ही गलती होगी, हमारा गिला होगा। हमें इस काम में अधिक-से-अधिक जल्दी करनी है।

कई लोग कहते है कि हिन्दुस्तान की रियासतो में छ महीने में ही जो क्रान्ति हो गई है, वह एक बडा भारी विप्लव हो गया है। वे कहते है कि इस काम में वहुत जल्दबाज़ी की गई है। दूसरी तरफ आपको यह समझना चाहिए कि हिन्दोस्तान में जो आज़ादी का दिन आया, वह एक दिन एक सदी बराबर था। आप देखिए कि आज दुनिया कैसी हालत में पडी हुई है। जो मुल्क लडाई में पडे हुए थे, उनकी क्या हालत हुई है? जो वडी-बडी सल्तनतें दुनिया पर राज करती थी, उन का क्या हाल हुआ है? इस अस्थिर दुनिया मे हम थोडी स्थिरता से बैठ सकते है, ज़रा शान्ति से बैठ सकते हैं, तो यही सन्तोष की बात है। राजाओ का तो धर्म है कि वे रैयत का साथ दें। रैयत के लिए इस काम मे धीरज रखना ठीक है। मगर कभी-कभी वह अधीर हो जाती है। कभी-कभी हम गुस्सा भी करते है कि इन लोगो को कैसे राज्य सुपुर्द किया जाए। लेकिन चाहे जो कुछ भी हैं, वही हमारे लोग है। वे चाहे जैसे है, हमें उन्ही को ठीक करना है। इसलिए हमारा, हिन्दुस्तान की सरकार का काम है कि वह रियासतों की प्रजा को उन्नत करे। यह काम हम दो प्रकार से कर रहे है एक तो रियासतो को आपस में मिला कर उन का एक राज्य बना देना और दूसरा यह कि छोटी-छोटी रियासतो को उनके आस-पास के प्रान्तो में मिला देना। इस तरह नए वडे यूनिट (इकाई) बनाकर, वडे-बडे प्रान्त बनाकर, इन रियासतो को हम बडे भारत का अग बना रहे हैं। साथ ही हमारा दूसरा बडा कर्तव्य यह है

कि इन नए राज्यों मे हमें लोकशासन का प्रवेश कराना है। यह काम भी हम दो तरह से कर रहे है। एक ओर तो हम लोग यह काम कर रहे हैं और दूसरी तरफ रियासतों के राजा भी यही काम कर रहे है। कितने ही राजाओं ने बडी खुशी से हमें अपना साथ दिया है। बहुत-सी रियासतो मे उनके राजाओं के सहयोग से यह काम भली प्रकार पूरा हो गया है। अब थोडे-से राज्य बच रहे हैं, उन मे भी सब ने लोक-शासन का सिद्धान्त तो स्वीकार कर ही लिया है और उस पर अमल भी हो रहा है।

अब सिर्फ एक ही राज्य बाकी है, जो हैदराबाद है। बहुत-से लोग हिन्दुस्तान की सरकार के लिए सोचते है कि हैदराबाद के बारे मे वह कमजोरी क्यो दिखा रही है। लोग खीझकर पूछते है कि वह क्या कर रही है और अब क्या होगा। मैंने जब जूनागढ मे प्रवेश किया था, तभी कह दिया था कि हैदराबाद यदि नही समझता, तो जो हाल जूनागढ का हुआ है, वही हैदराबाद का भी होगा। इसके बारे मे दो मत नही हो सकते। लेकिन मेरी उम्मीद यह थी, कम-से-कम हमारे पिछले गवर्नर-जनरल लार्ड माउन्टबेटन की पूरी उम्मीद यह थी कि उनके जाने से पहले वह निजाम सरकार को समझा सकेंगे, उन्हे उनकी जगह बता सकेंगे। मॉंटेन कर हैदराबाद का सलाहकार था, वह भी अंग्रेज था। उसने और हमारे गवर्नर जनरल ने मिलकर मुझसे कहा था कि एक साल के लिए आप हैदराबाद से एग्रीमेण्ट (समझौता) करें। इस बीच हम समझौता कर लेंगे। मैंने यह बात मान ली। लेकिन जब समझौते की माग हुई, तो फिर उन्होने मॉंटेन कर को भी हटा दिया। तब हमने दूसरे सलाहकार के साथ एक साल का समझौता किया। वे लोग जो समझौता करते थे, वही निजाम का राज चलाने के लिए बैठते थे। वे लोग अब लालच मे पडे कि हम को कुछ और दिया जाए।

तो हमारे गवर्नर जनरल ने हमारी तरफ से आखिरी दिन तक कोशिश की। तब तक कोशिश की जब तक वह यहां रहे। लेकिन निजाम की सरकार तो एक प्रकार की ब्रिटिश सल्तनत थी। एक प्रिय वस्तु थी, और उस को ब्रिटिश शाहशाह का एक खास दोस्त कहा जाता था। हम भी चाहते थे कि यदि हमारे गवर्नर जनरल के हाथ से, जो उनका दोस्त है, कोई चीज हो जाए, तो बहुत अच्छा है। लेकिन उन्हे भी आखिरी दिन तक जो उम्मीद थी, वह पूरी न हो पाई। मैंने उनसे पहले से ही कहा था कि यह चीज बननेवाली नही है। चलते

चलते उन्हें भी पूरा अनुभव हो गया। मैं चाहता था कि हम पर कोई दोष न आए, इसलिए मैंने अपने गवर्नर जनरल से कह दिया था कि ठीक है, हमारी तरफ से आप जितनी कोशिश चाहें, उतनी करो। कभी हमें यह नही कहना कि हम ने कोई गलती की, या हमने उदारता नही वताई। गवर्नर जनरल ने उनके साथ समझौता करने के लिए जो-जो बातें कही, वे सब बेकार हो गई और उन्होने कह दिया कि वे बाते तो पुरानी हो गई। अब कोई समझौते की बात नहीं होगी।

अब हम भी कहते हैं कि अब समझौते की कोई बात नही होगी। जैसा मुल्क में और जगह पर हुआ है, वैसा ही इधर भी होगा। मुझे तो जरा भी उम्मीद नही कि किसी दूसरी तरह से हैदराबाद का फैसला हो सकता है। और राज्यो ने जो कुछ किया है, अगर हैदराबाद भी खुद इसी तरह से करने के लिए तैयार हो, तो हम उनकी इज्जत करेंगे। तब हम उनकी मुहब्बत करेंगे। लेकिन अगर वे डण्डे से, धोके से, या बाहर की मदद की उम्मीद से कोई रास्ता लेना चाहेगे, तो वह नही होगा। हिन्दुस्तान इस तरह से कभी बरदाश्त नही करेगा। उस तरह से स्वतन्त्र हिन्दुस्तान ज़िन्दा भी नही रह सकता है। तो हम मानते हैं कि हमने देरी की है। उसमें देरी करने की कितनी वजह थी, वह सब हम अभी आप लोगो के सामने नही रख सकते हैं।

लेकिन मैं यह एक बात कहना चाहता हूँ कि जो लोग अधीरता करते हैं, उनसे मैं कहना चाहता हूँ कि आप भरोसा रक्खें। आपके दिल में जितना दर्द हैदराबाद के लिए है, हमारे दिल में उससे कोई कम दर्द नही है। हैदराबाद की प्रजा पर जो जुल्म हो रहा है, उसके लिए हमारे दिल में बहुत दर्द है। लेकिन जब एक ऑपरेशन (चीरा-फाड़ी) करना होता है, तो उसमें कम-से-कम खराबी हो, कम-से-कम खून निकले, इस तरह से उसे काटना चाहिए। आप को विश्वास रखना चाहिए कि हम उसे काटनेवाले हैं। हम उसे छोडेंगे नहीं। बहुत दफा हमने हैदराबाद में लाठी चार्ज की बात सुनी है, बहुत दफा अपमान को बर-दाश्त किया है। लेकिन जब वक्त आएगा, तब हम आपको करके बता देंगे। इस तरह से नुकसान तो होगा। दोनो तरफ नुकसान होगा। पर उसकी जिम्मे-दारी लिए बिना हम राज्य नही चला सकते हैं। आज हैदराबाद राज्य के बाहर जो लोग पडे हैं, वे वहाँ से हुकूमत चलाते हैं। ऐसे राज्य के साथ हमारा समझौता नहीं हो सकता। अगर राजा के साथ हमें समझौता करना है, तो

हुकूमत भी उसी के पास होनी चाहिए, और उसे बकवास करनेवाले को बन्द करना चाहिए। अगर वह न हो सके, तो उसके साथ वाजिब ढग से हमे फैसला करना पडेगा। और उसके लिए हमारी पूरी तैयारी है। आज हिन्दुस्तान मे बहुत लोग सोचते है कि हम क्या कर रहे है। हम क्यो ढील दे रहे है। मै उनको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि हमारे धीरज की भी परिसीमा है। लेकिन हमारे पर ज्यादा जिम्मेदारी है, इसलिए हम अक्लमन्दी से, अच्छी नीयत से और धीरज से काम करना चाहते हैं। इसीलिए हम इतनी देर कर रहे है।

कुछ लोग यह भी समझते है कि हमारी हिन्दुस्तान की सरकार में कोई मतभेद है। कोई कहता है कि हमारी सरकार मे आपस मे मतभेद है, हम आपस में लडते है। कोई आगे बढना चाहते है, कोई पीछे हटना चाहते है। सचाई यह है कि ऐसी कोई बात नही है। आज हिन्दुस्तान की सरकार कैसी भी बनी हो, उसमे कितने भी पक्षो के लोग हो, लेकिन वे सब एक राय से और एक साथ मिलकर काम करते है। उन में जब ऐसा मतभेद होगा कि वे एक साथ नही चल सकेंगे, तो मेरे जैसा आदमी उसमे नही रह सकेगा। मै आपको इस बात का विश्वास दिलाना चाहता हूँ। आज हम सब इकट्ठे बैठे है। क्योंकि आगे हमारे सामने का पाँच मील तक का रास्ता हम सब के एक साथ इकट्ठा चलने का है। जब तक हम वह रास्ता तै नही कर लेते, तब तक हम एक साथ बैठे है। लेकिन जब हम को मालूम पडेगा कि अगले मील से हम अलग-अलग चलने-वाले है, तब हम हट जाएँगे। क्योंकि हम बेवकूफ नही है कि हम यह न समझे कि आज हिन्दुस्तान किस जगह पर बैठा है, वह किस हालत मे है और उसकी जरूरतें क्या है।

मै आपसे यह भी कहना चाहता हूँ कि अगर हमारे मे कुछ लोग बेवकूफ है, तो राजाओ मे भी कोई-कोई वैसे ही बेवकूफ है। कोई समझते है कि उन्हे किसी ज्योतिषी ने बताया है कि अगस्त मे यह सरकार टूट जाएगी और उन्हे मौका मिलेगा। वे यह नही देखते कि इतनी बडी सल्तनत टूट गई और किसके हाथ मे वह टूटी। ऐसी बेवकूफी की बातो में आप को नही आना चाहिए। कोई साधु निकलता है और कहता है कि यह राजपूतो का मौका है। कोई कहता है कि यह जाटो का मौका है। ऐसी-ऐसी बातो को माननेवाले कैसे बेवकूफ है ? यह हमारा सौभाग्य है कि साधारण जनता में इस तरह की बेवकूफी की बातो पर विश्वास करनेवाले लोग बहुत कम है।

आज हमारे लिए यह वहुत खुशी की वात है कि इस जगह पर हमने अपना आखिरी यूनियन भी वना लिया है। इस जगह पर, आज जो राजा लोग बैठे है, उन सब को मै मुवारकबाद देना चाहता हूँ। और बडी खुशी से मै इन राजाओं की तारीफ करता हूँ। मै आप सव को वधाई देता हूँ कि भारत का नया इतिहास वनने मे आप लोगो ने वहुत उदारता दिखाई और वहुत दूरन्देशी दिखाई है। इसके लिए आपको मै धन्यवाद देता हूँ, और भविष्य के लिए मै आपसे मांगता हूँ कि भले-बुरे जैसे भी हमारे लोग है, उन्ही को हमें साथ लेना है। वे गलतियां भी करें, तो उससे आपको विगडना नही चाहिए। जैसे अपने वच्चे के साथ हम उदारता का वरताव रखते है, उसी तरह इनसे भी करना चाहिए।

मै और सव लोगो से भी कहना चाहता हूँ कि राजाओ ने अगर विगाड किया होता, तो उससे हमको वहुत नुकसान हुआ होता। लेकिन उन्होने कोई विगाड नही किया, और हमारे साथ रहे। हिन्दुस्तान को आगे वढाने में और अपनी सत्ता अपनी इच्छा से आप लोगो को सुपुर्द करने में उन्होनें जो बहादुरी और समझदारी दिखाई है, उसके लिए आपको अव सोचना है। अब हम सोचें कि हमारा क्या कर्तव्य है? मै हिन्दुस्तान की रियासती प्रजा से कहना चाहता हूँ कि एक हाथ (एक व्यक्ति) से राज्य चलाना एक तरह से आसान है, लेकिन पचायत से हुकूमत चलाना और वह भी उस पचायत से जिन्होने पहले कभी राज नही चलाया, वडा मुश्किल काम है। आप देख लीजिए कि जब मिनिस्टरी वनाने का वख्त आता है, तव क्या होता है? तब कितनी मुश्किल होती है। मिनिस्टरी को जब सत्ता मिल जाती है, तव उसको चलाने के लिए कितनी मुसीवत आती है।

सव राजाओ से मेरी यह बिनती है कि आप धीरज से अपनी जनता का साथ दें। इसीलिए हिन्दुस्तान की सरकार हर जगह पर जहां-जहां रियासतो में मिनिस्ट्री वनती है, कुछ सलाहकार (एडवाइज़र) रखती है, जो अनुभवी लोग होतें हैं। हम कहते है कि भाई इन लोगो की सलाह से आप चलो। यदि कोई मुसीवत आए, तो हमारे पास आ जाओ। उसमें भी कई मिनिस्टर लोग यह मानने लगते है कि हम पर यह कण्ट्रोल (नियन्त्रण) क्यो चाहिए। हिन्दुस्तान की सरकार का एडवाइज़र हम पर क्यो रखना चाहिए? ठीक है। हम आप पर कोई एडवाइज़र लादना नही चाहते, क्योकि हमारे पास तो खुद ही बहुत कम अनुभवी अमलदार है। काम करनेवाले होशियार लोग बहुत कम हैं। तो

हम किसी को इस तरह आपके ऊपर लादना नही चाहते । लेकिन आपको यह समझना चाहिए कि एक-आध गलती की तो कोई बात नही, मगर आप अधिक गल्तिया करेंगे, तो आप तो गिर जाएँगे । सिर्फ आप ही नही गिरेंगे, अपने यूनियन को भी आप गिरा देंगे । और अगर आप उसको गिराएँगे तो आपको तो नुकसान होगा ही, आपसे अधिक आपके मुल्क को नुकसान होगा । तो सारा हिन्दुस्तान आज देख रहा है । बाहर के लोग देख रहे हैं कि यह जो रियासतो में रेवोल्यूशन (क्रान्ति) हुआ, उसको अब हिन्दोस्तान के लोग किस तरह चलाएँगे ?

हम चाहते हैं कि लोकशासन तो अपनी जगह पर रहे और देश भर में लोगो की आवाज़ से काम चले । लेकिन साथ ही हम यह भी चाहते हैं कि उसमें कोई बडी गलती न हो । छोटी-मोटी गलती तो खैर सभी करते रहते हैं । क्योकि स्वराज्य चलाने का मतलब ही यह है कि गलती करते-करते सीखना । क्योकि जिन को पानी मे तैरना है, उसे एक दिन पानी में पडना ही है । अगर वह सदा बाहर या किनारे पर रहेगा तो वह कभी तैरना नही सीखेगा । इसलिए अगर डिमोक्रेसी में हमें राज्य चलाना है, तो गलतिया तो होगी । लेकिन कोई बहुत बडी गलती हो जाए, तो उसका हमको भी अफसोस होगा, जिनके पास राज्य की सत्ता होगी, उनको भी अफसोस होगा, और जिन लोगो के बारे में वह गलती होगी, उन लोगो को तो दुख होगा ही । इसलिए हम उनको राज चलाने मे मदद देने के लिए अनुभवी अमलदार देते हैं । उन लोगो की सलाह आपको माननी चाहिए ।

जैसा कि मैंने अभी कहा, आप हिन्दोस्तान की एक बडी महत्त्वपूर्ण सीमा पर रहते हैं । इससे आपकी बहुत बडी जिम्मेवारी है, आपके सारे यूनियन की बडी ज़िम्मेवारी है । और जगह कोई गलती हो, तो शायद उससे कम नुकसान होगा, लेकिन इस जगह पर अगर कोई गलती हो, तो उससे बहुत बडा नुकसान हो सकता है और उससे मुल्क को चोट लग सकती है । इसलिए आपकी इस जगह से कोई बडी गलती नही होनी चाहिए । इसके लिए आप लोगो को अपना स्वार्थ पीछे रखकर मुल्क का स्वार्थ आगे करना है । ऐसे ही आदमियो को यहां बैठना है । दूसरे आदमी यहां बैठेंगे तो गलती करेंगे ।

मैं आपको बडी अदब से कहना चाहता हूँ कि मजहब के मामले मे आप नहीं जाइए । क्या आप यह समझते हैं कि हमने आज़ाद हिन्दुस्तान बनाने के

लिए यह जो इतनी कोशिश की, वह क्या किसी मजहब पर हल्ला करने के लिए की ? नही। हमने तो उनके मजहब पर भी कभी किसी तरह की बदनीयती नही की थी, जो हम से अलग हो गए हैं। उन्होने वहाँ पाकिस्तान तो बनाया है, लेकिन आज भी पाँच-सात हजार मुसलमान जेल में पडे हैं। खान अब्दुल गफ्फार खान बादशाह को भी उन्होने जेल में बैठा दिया है; उसने मुल्क को आजाद कराने में जितनी कुर्बानी की, उतनी और किसने की, यह मुझे बताइए तो सही ? लेकिन उसको भी आज जेल मे बैठना पडा। और फ्रान्टीयर ट्राइब के बहुत-से लोगो को जेल में बिठाने के बाद, उन ट्राइबो के ऊपर वज़ीरिस्तान में बम गोला किसने फेका ? वह कोई दूसरे मजहबवाले तो नही फेक रहे। मुझे याद है कि इन्टैरिम गवर्नमेण्ट (अन्तरिम सरकार) के ज़माने में जब कांग्रेस और लीग साथ मिलकर हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट चलाते थे, तब एक समय यह मौका आया था, जब हमारे फ्रान्टीयर से गवर्नर ने प्रोपोज़ल (प्रस्ताव) भेज था कि हमें वज़ीरिस्तान पर बम फेकने पडेंगे। तब हमारे प्राइममिनिस्टर ने विरोध किया था कि ऐसा नही हो सकता। यह ठीक नही। और जो साहब आज पाकिस्तान के प्राइममिनिस्टर है, उन्होने कहा था कि हम मुसलमानो पर बम्ब करने के लिए थोडे ही सैन्कशन (अनुमति) देंगे। पर जब सत्ता आती है, तो सारी शक्ल बदल जातीहै। तो आप यह समझ लीजिए कि हम किसी के मजहब पर हाथ फेकनेवाले नही हैं। आप यह भी समझ लीजिए कि यहाँ, हमारे देश में, हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, क्रिश्चियन और पारसी सभी के सब काम सलामत हैं। हमारा यह सैक्यूलर स्टेट (धर्म निरपेक्ष राज्य) है।

मजहब के नाम से पोलिटिक्स में कभी दखल नहीं करना चाहिए। मज़हब को अपने रास्ते पर चलने दो। अगर कभी आपको अपने मजहब के ऊपर कोई खतरा मालूम हो, तब हमारे पास आओ। हम आपको छोड के कहाँ जाएँगे ? आपके बिना हम कैसे आगे चलेगे ? मान लीजिए कि सिक्ख धर्म के ऊपर कोई खतरा आया, तब क्या पटियाला महाराज से बढकर किसी और को सिक्ख धर्म के लिए ज्यादा दुख होगा ? वह क्या हम उनको चैन से बैठने देंगे ? हमारी और उनकी दोस्ती क्या ऐसी ही है ? मैं आप लोगो से कहना चाहता हूँ कि मिनिस्ट्रियो को तोडने-फोडने की यह खटपट छोड दो। आज हमारे पास और ज़रूरी काम पडा है।

आपके साथ ही वाले ईस्टर्न पजाब (पूर्वी पजाब) में हमारी हुकूमत है।

वहाँ एक साल में दो दफा मिनिस्ट्री बदली। अब हम कब तक शरारत करते रहेंगे? आप जानते हैं कि पाकिस्तान में हमारे कितने लोग मर गए? कितने बच्चे, कितनी औरतें, कितनी हमारी बहन-बेटियाँ वहाँ मर गईं? कितनों की इज्जत गई? कितनी लडकियाँ परदेस मे उडा ली गईं? उसकी चोट तो हमारे दिल में लगी है। यह चोट रहते भी हम इस तरह से बर्ताव करेंगे, तो हम मुल्क की क्या सेवा कर सकेंगे? मैं तो चाहता हूँ कि यहाँ जो मिनिस्ट्री बनती है, उसमे और पजाब की मिनिस्ट्री के बीच में पूरी मुहब्बत होनी चाहिए। दोनो हुकूमतो को एक दूसरे की मदद करनी चाहिए। असल में दोनो हुकूमतें तो एक ही हैं। अब दोनो ही हिन्दोस्तान की सरहद पर बैठे हैं। अगर आप आपस मे लडते रहे, तो हमारा काम किस तरह चलेगा?

तो मैं तो इन सब बातो के लिए इधर आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप समझ ले कि आप के ऊपर बडी भारी जिम्मेवारी है। हमने यह यूनियन बनाने का काम तो कर लिया, लेकिन यह काम हमने इस उमीद से किया है कि यहाँ आप इस तरह से चलेंगे कि जिस मे आपकी भी इज्जत बढे, और मुल्क की भी इज्जत बढे। राजाओ की तरफ से तो हम को सहयोग का हाथ मिल ही रहा है। आपकी तरफ से भी मैं उमीद करता हूँ कि दिल की सफाई करके आप को हमारा साथ देना है। न दोगे, तो भविष्य की प्रजा आप को शाप देगी और इतिहास कहेगा कि उन लोगो को आज़ादी तो मिली, लेकिन वे नालायक लोग थे। ऐसा कभी नही होना चाहिए।

तो इस जगह पर आज हमें अपना दिल साफ कर ईश्वर को हाज़िर-नाज़िर समझकर प्रतिज्ञा करनी है कि हम मुल्क की सेवा के लिए एक होकर आगे चलेंगे, ताकि सारा मुल्क आगे बढे। हमने अगर ऐसा किया तो भविष्य के लोग कहेंगे कि हमारे पूर्वज लोग लायक थे। जिन राजाओं ने उदारता और शराफत से अपने अधिकार छोडे हैं, भविष्य की प्रजा उन पर अभिमान करेगी। राजा लोग भी यह अनुभव करेंगे कि हमने जो कुछ किया, ठीक किया।

आज मैं जिस नये यूनियन का इनॉग्यूरेशन (उद्घाटन) कर रहा हूँ, उस का नया कान्स्टिट्यूशन (सविधान) बना है। उसमे महाराजा पटियाला महाराज प्रमुख हैं और यह मेरे पास, मेरे दाहिने हाथ, कपूरथला के महाराज बैठे हैं, वह उपराज-प्रमुख हैं। उन्हें और पटियाला महाराज को मुझे एक सौगन्ध करानी है, यह मेरे पर बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी है। मैं कौन हूँ? मैं

तो उनकी रैयत होना पसन्द करता । लेकिन मुझ को आज उनका स्वागत करने का मौका मिला है। उनके ऊपर इतनी बडी जिम्मेवारी है। हम दोनों मुल्क के सेवक बनना चाहते हैं, और सच्चा सेवक बनना चाहते है। इसलिए मैं न तो किसी राजा की हैसियत से, न किसी लीडर की हैसियत से काम करता हूँ। हम दोनो हिन्दुस्तानी की हैसियत से काम करते है। मै उमीद करता हूँ कि आप लोग भी इसी हैसियत से इस चार्ज को समझ लेंगे। आप समझ जाएँगे कि आज हर हिन्दुस्तानी के ऊपर बहुत बडी जिम्मेवारी है। तो मै पटियाला महाराज को प्रतिज्ञा करने के लिए बिनती करूँगा। आज आप यह प्रतिज्ञा लेंगे और बाद में महाराज अपनी मिनिस्ट्री से यह प्रतिज्ञा करवाएँगे। यह जो स्टेटो का सगठन करना है, उसमें कोई एक या सवा महीने का समय लगेगा। लेकिन उसके पहले आज से जो काम शुरू करना है, उसमें यह दो प्रमुख राज प्रमुख और उपराज प्रमुख बन जाएँगे और वे अपनी प्रतिज्ञा ले लेंगे। उसके बाद यह जो प्रजा मण्डल और बाकी सस्थाएँ हैं, उनके लोग आपस में मिलकर एक हफ्ते में अपनी मिनिस्ट्री के नाम दे देंगे। उसके बाद मिनिस्ट्री को सौगन्ध दी जाएगी।

हम जो यह काम कर रहे है, उसमें हमारे सामने एक दिक्कत है। आज प्रजा के चुनाव से यहाँ कोई सस्था नही है। अपने प्रान्तो में हम लोग जिस तरह चुनाव करा रहे है, इस तरह से इधर कोई ढग नही है। तो यहाँ हम चुनाव से किसी को लीडर नही बना सकते हैं। सवाल यह है कि हम खुद कैसे लीडर पसन्द करें ? तो यहा जो छोटी-छोटी सस्थाएँ हैं, उन्ही के आपस के मेल-जोल से यह काम करना चाहिए। इस बारे में मुझ पर और महाराज पर बहुत बोझ डाला गया है। महाराज ने और मैंने इकार कर दिया कि यह हमारा काम नही है। आप लोगो को यह जिम्मेवारी लेनी है कि यहा मिनि-स्टर कौन बने, प्रधान कौन बने। यह आप लोगो का काम है। यदि आप से नही बनेगा, तो फिर जिस तरह हमने और कई जगहो पर किया, इसी तरह से इधर भी करना पडेगा।

आज आप को एक और बात भी समझनी है। वह यह कि आज जो चीज बनेगी या कुछ दिन बाद जो मिनिस्ट्री बनेगी, वह इन्टैरिम (अन्तरिम) मिनिस्ट्री होगी, वह ज्यादह दिन के लिए नही होगी। भारत के सब नागरिकों को मताधिकार दिया जाएगा और इसके बाद नया चुनाव होगा। वह चुनाव

हमें जल्दी-से-जल्दी करना है। उस चुनाव में जो पार्टी जीतेगी, उसका जो लीडर होगा, वह आपका मुख्य-मन्त्री बनेगा। लेकिन आज तो हमारे पास वैसा कोई साधन नही है। आज जब एक आदमी चुनना है, तो वह बोझ हमारे ऊपर नही डालना चाहिए। क्योकि फिर उसमे से लोग कहने लगेंगे कि इस सरकार को तो महाराजा ने हम पर डाल दिया, या सैन्ट्रल गवर्नमेंट ने हमारे ऊपर लाद दिया। हम ऐसा नही कहलाना चाहते। आप को हम पूरा मौका देना चाहते है। आप एक हफ्ता ले ले, दो हफ्ते ले ले, उससे ज्यादा टाइम न लगाना चाहिए। मुझे उमीद है कि आप जल्दी-जल्दी वह काम खत्म करेंगे। इसी मे आपकी भलाई है। इसी मे आपकी भी इज्जत है और हमारी भी इज्जत है। अब मैं पटियाला महाराजा को सौगन्ध दिलाने का काम शुरू करता हूँ। (तालियां।) (इसके बाद सौगन्ध दिलाई गई।)

---

(९)

इम्पीरियल होटल, नई दिल्ली

३ अक्तूबर, १९४८

लाला देशबन्धुजी, दिल्ली निवासी दोस्तो और नारियो !

आपने जो प्रेमपूर्वक मेरा स्वागत किया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। और जो मानपत्र आपने मुझे दिया है, उसके बारे में भी मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। इस समय पर मैं जो एक प्रकार का संकोच या एक प्रकार का एम्बेरेसमेंट अनुभव कर रहा हूँ, वैसा मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया है। क्योंकि इस तरह से दिल्ली में ही मेरा स्वागत करना या इस तरह से मानपत्र देना, कहाँ तक योग्य है, इस बारे में मेरा मन अतिशय शंकाशील है। और मेरे सब साथी यहाँ बैठे हैं। खुद हमारे गवर्नर-जनरल साहब और हमारे प्राइम मिनिस्टर भी यहाँ बैठे हैं। उनके सामने आप लोग मुझे अलग करके इस प्रकार का मानपत्र देते हैं, वह आपके लिए कुछ भी हो, मेरे लिए तो एक प्रकार की उद्धताई ही है और मुझ को यह चीज़ बिलकुल नापसन्द है। ६ महीने से देशबन्धु जी मेरे पीछे लगे थे। दिल्ली के चन्द और निवासी भी मेरे पीछे लगे थे। मैं टालता रहा। लेकिन मैंने समझ लिया कि इन लोगों के दिल में एक ख्याल है। ये सोचते हैं मेरे सब साथी तो ज्यादे साल तक काम करने वाले हैं, लेकिन मेरे बारे में वह समझते हैं कि इनका दिन पूरा हो गया है। क्योंकि एक तो मेरे स्वास्थ्य को बड़ी ठोकर लगी है और उसमें से मैं बहुत

मुसीबत से उठा हूँ। मेरा इस दुनिया में रहना एक प्रकार से अनुचित ही है, क्योंकि गान्धी जी के साथ मेरा जीवन भर का साथ रहा। मेरा उनका एक प्रकार का वायदा था, कौल था, कि हमें एक साथ जाना है। और मैं पीछे रह गया! उसका मुझे दुख है और मैंने कोशिश भी की लेकिन मैं तो बच गया हूँ!

अब जो कुछ बचा है, मेरी आयु के जो थोड़े दिन, और मुझ मे जो थोडी-सी ताकत बाकी है, उसे उस काम को पूरा करने मे लगाना चाहता हूँ, जो काम गान्धी जी ने छोड़ा है। क्योंकि मैं समझता हूँ कि अगर गान्धी जी जाते समय मुझ से कुछ भी कह सकते तो यही बात कहते कि तुम ठहर जाओ, और मेरा काम पूरा करो। बहुत दफे हमारी उनकी बात हुई है। बहुत दिन हम एक साथ रहे। अकेले साथ रहे, एक दूसरे के दुख-सुख में बहुत हिस्सा लिया। इस प्रकार वह चले जाएँगे, स्वप्न में भी मुझे इसका ख्याल नही था। और उनके लिए तो इस तरह चला जाना बहुत ही अच्छा हुआ। लेकिन हमारे लिए वह बहुत ही बडी शरम की बात है। और हम भी इतने नालायक निकले कि उनको इस तरह से जाने दिये। हमने उनका काम भी पूरा नही किया। वह पूरा किया होता, तो इस तरह का घृणित काम ही न होता। या हमने उनकी पूरी रक्षा की होती तो वह चीज़ न होती। लेकिन दोनो में हम गाफिल रहे। अब उसके लिए तो अफसोस ही करना है और हम कर ही क्या सकते है? हाँ, इतना हम ज़रूर कर सकते है, कि जो कुछ उन्होंने अधूरा छोड़ा है, उसी काम को पूरा करें। तभी उनके प्रति हमारी वफादारी ठीक होती है।

अभी आप ने जो मानपत्र मुझे दिया है, उसमे मेरी जो तारीफ़ की है, उसके बारे में मैं क्या कहूँ? मैं उसके दो हिस्से करता हूँ। एक तो मेरे गवर्नमेंट मे आने से पहले के समय की, जब मैं भारत की आज़ादी की लड़ाई का एक सिपाही था। तब युद्ध के जितने मौके आए, उन सब में सिपाहियो के साथ मैंने भी, जो कुछ मुझ से हो सकता था, करने का प्रयत्न किया। लेकिन मैं जानता हूँ, मुझे मालूम है कि हमारे मुल्क में सैंकडो ऐसे लोग पडे है, जिन्होंने स्वाधीनता के युद्ध मे अपना सब कुछ बलिदान दे दिया, अपनी जान तक दे दी। उन सब को हम भूल गए। वे सब कहां गए? कच्ची उम्र में अपने कुटुम्ब और अपनी सहूलियतो को छोड़ कर वे चले गए, वे हँसते चेहरे वाले नौजवान चले गए। उन्होंने मुल्क के लिए कुर्बानी की। उनको न कोई प्रसिद्धि मिली,

(१)

इम्पीरियल होटल, नई दिल्ली

३ अक्तूबर, १९४८

लाला देशबन्धुजी, दिल्ली निवासी दोस्तो और नारियो !

आपने जो प्रेमपूर्वक मेरा स्वागत किया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। और जो मानपत्र आपने मुझे दिया है, उसके बारे में भी मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। इस समय पर मै जो एक प्रकार का सकोच या एक प्रकार का एम्बेरेसमेंट अनुभव कर रहा हूँ, वैसा मैंने पहले कभी अनुभव नही किया है। क्योंकि इस तरह से दिल्ली में ही मेरा स्वागत करना या इस तरह से मानपत्र देना, कहाँ तक योग्य है, इस बारे में मेरा मन अतिशय शकाशील है। और मेरे सब साथी यहाँ बैठे हैं। खुद हमारे गवर्नर-जनरल साहब और हमारे प्राइम मिनिस्टर भी यहाँ बैठे है। उनके सामने आप लोग मुझे अलग करके इस प्रकार का मानपत्र देते हैं, वह आपके लिए कुछ भी हो, मेरे लिए तो एक प्रकार की उद्धताई ही है और मुझ को यह चीज़ बिलकुल नापसन्द है। ६ महीने से देशबन्धु जी मेरे पीछे लगे थे। दिल्ली के चन्द और निवासी भी मेरे पीछे लगे थे। मै टालता रहा। लेकिन मैंने समझ लिया कि इन लोगो के दिल मे एक ख्याल है। ये सोचते है मेरे सब साथी तो ज्यादे साल तक काम करने वाले हैं, लेकिन मेरे बारे में वह समझते हैं कि इनका दिन पूरा हो गया है। क्योकि एक तो मेरे स्वास्थ्य को बडी ठोकर लगी है और उसमें से मै बहुत

मुसीवत से उठा हूँ। मेरा इस दुनिया में रहना एक प्रकार से अनुचित ही है, क्योकि गान्धी जी के साथ मेरा जीवन भर का साथ रहा। मेरा उनका एक प्रकार का वायदा था, कौल था, कि हमें एक साथ जाना है। और मैं पीछे रह गया! उसका मुझे दुख है और मैंने कोशिश भी की लेकिन मैं तो वच गया हूँ!

अव जो कुछ वचा है, मेरी आयु के जो थोड़े दिन, और मुझ में जो थोडी-सी ताकत वाकी है, उसे उस काम को पूरा करने में लगाना चाहता हूँ, जो काम गान्धी जी ने छोडा है। क्योकि मैं समझता हूँ कि अगर गान्धी जी जाते समय मुझ से कुछ भी कह सकते तो यही वात कहते कि तुम ठहर जाओ, और मेरा काम पूरा करो। वहुत दफे हमारी उनकी वात हुई है। वहुत दिन हम एक साथ रहे। अकेले साथ रहे, एक दूसरे के दुख-सुख में वहुत हिस्सा लिया। इस प्रकार वह चले जाएँगे, स्वप्न मे भी मुझे इसका ख्याल नही था। और उनके लिए तो इस तरह चला जाना वहुत ही अच्छा हुआ। लेकिन हमारे लिए वह वहुत ही वडी शरम की वात है। और हम भी इतने नालायक निकले कि उनको इस तरह से जाने दिये। हमने उनका काम भी पूरा नही किया। वह पूरा किया होता, तो इस तरह का घृणित काम ही न होता। या हमने उनकी पूरी रक्षा की होती तो वह चीज न होती। लेकिन दोनो में हम गाफिल रहे। अव उसके लिए तो अफसोस ही करना है और हम कर ही क्या सकते है? हाँ, इतना हम जरूर कर सकते है, कि जो कुछ उन्होंने अधूरा छोड़ा है, उसी काम को पूरा करें। तभी उनके प्रति हमारी वफादारी ठीक होती है।

अभी आप ने जो मानपत्र मुझे दिया है, उसमे मेरी जो तारीफ की है, उसके वारे में मैं क्या कहूँ? मै उसके दो हिस्से करता हूँ। एक तो मेरे गवर्नमेंट में आने से पहले के समय की, जव मैं भारत की आजादी की लडाई का एक सिपाही था। तव युद्ध के जितने मौके आए, उन सव में सिपाहियो के साथ मैंने भी, जो कुछ मुझ से हो सकता था, करने का प्रयत्न किया। लेकिन मैं जानता हूँ, मुझे मालूम है कि हमारे मुल्क में सैकड़ो ऐसे लोग पड़े है, जिन्होने स्वाधीनता के युद्ध में अपना सव कुछ वलिदान दे दिया, अपनी जान तक दे दी। उन सव को हम भूल गए। वे सव कहां गए? कच्ची उम्र में अपने कुटुम्व और अपनी सहूलियतों को छोड़ कर वे चले गए, वे हँसते चेहरे वाले नौजवान चले गए। उन्होंने मुल्क के लिए कुर्वानी की। उनको न कोई प्रसिद्धि मिली,

न कोई मानपत्र मिला। असल में अगर किसी को भी मानपत्र देना उचित हो, तो वह उन्ही लोगो को दिया जाना चाहिए। अगर मैं भी मानपत्र ले सकता हूँ, तो उन्ही के नाम से ले सकता हूँ। हां, आप लोगो ने वारदोली की घटना का जिक्र किया है, उस समय तो हर मौके गान्धी जी मेरे साथ थे। मुझ पर उनकी निगरानी थी। वह देख रहे थे कि मै किसी गलत रास्ते पर न चलू। उनका आशीर्वाद भी मुझे प्राप्त था। हर काम में मेरा उनका साथ रहा। जब आखिरी लडाई हुई, जिसमें हमें करीब-करीब तीन साल लगातार अहमदनगर के किले में रहना पडा, तब तक मेरे साथ हर मौके पर महादेव देसाई थे और वह गान्धी जी के सन्देश को घोल-घोल के पी गए थे। तब मुझे बहुत आसानी रहती थी और बहुत निश्चिन्तता भी रहती थी। मुझे यकीन रहता था कि मै कोई गलती न कर पाऊँगा, क्योकि गान्धीजी के प्रतिनिधि मेरे साथ हैं। इस तरह से मेरा काम चलता था।

लेकिन जब मै गवर्नमेंट में आया, तब तक महादेव भाई तो चले गए थे। लेकिन गान्धी जी के साथ बात-चीत करने का समय मिलना भी कठिन हो गया था। क्योकि मै अपना काम छोड नही सकता था। बहुत दफा कोशिश की, लेकिन समय निकलता भी नही था और काम भी इस प्रकार था, जो काम हमारे लिए एकदम नया था। बहुत-सी मुसीबतें आई। ऐसा मौका आया, जब दिल्ली शहर में ऐसी हालत हो गई कि हम बडे परेशान हो गए। दिल्ली के वे काले दिन चले गए। पर जब मैं उनका ख्याल करता हूँ तो यही मालूम होता है कि यदि खुदा की मेहरबानी न होती, तो हिन्दुस्तान बच नही सकता था। और आज अगर हम गिर नही गए तो उसकी वजह यही है कि ईश्वर की कृपा हम पर है। नही तो वह ऐसा मौका था कि हम डूब जाने वाले थे। लेकिन बच गए। अब हम सबको भी एक प्रकार का तजुर्बा हो गया है और हम समझ गए है कि हिन्दुस्तान हम सब का है, और हम सबको इधर ही रहना है। सब को हिन्दुस्तान के वाशिन्दे बन कर रहना है और आपस में मिल-जुल कर रहना है।

आज से छ महीने पहले जब मुझसे कहा गया था कि हम आप का स्वागत करना चाहते है, तब मैंने कहा था कि भाई, आज तो हमारी हालत भी ऐसी नही है, और जब तक हैदराबाद का झगडा खतम नही हो जाता, तब तक हम मानपत्र या स्वागत के बारे में बात भी नही करना चाहते। जब तक हमें एक

दूसरे पर भरोसा नही है, विश्वास नही है, हम मानपत्र की वात कैसे कर सकते है ? लेकिन आज ईश्वर की कृपा से ऐसी हालत हो गई है कि अव सारे हिन्दुस्तान मे कही भी किसी प्रकार का कौमी वखेड़ा होने का अदेशा नही रह गया है। और न उन झगडो के लिए अव कोई वजह ही वाकी है, क्योकि हम सव समझ गए है कि जो कुछ हो गया, वह तो हो गया, कोई वुरा माने या भला माने, लेकिन वह तो हो गया ! अव हमारे मुल्क का दो टुकडा हो गया है। अगर हमारे दिल मे कोई चोरी होती, कोई अन्देशा होता या हमारी नीयत ठीक न होती, तो हम कभी वह चीज कवूल न करते। अव राजी-खुशी से हमने उसे कवूल किया। राजी-खुशी का यह मतलव नही कि हमको यह चीज़ पसन्द है। टुकडे करने की वात हमे विलकुल नापसन्द है। लेकिन हमने वह समझ लिया कि यदि हम यह चीज़ कवूल न करें, तो मुल्क का दो टुकडा तो क्या, सैकडो टुकडा होनेवाला है। इस वात को कवूल करने का मुझे कोई पश्चात्ताप नही है। और मुझे पूरा विश्वास है कि हमने यह चीज़ न की होती, तो हमारी वहुत वडी गलती होती। क्योकि उस समय की जो हालत थी, उसका चित्र मेरे सामने से कभी हटता नही है। इस चीज का ज्यादा वयान मै नही करना चाहता। लेकिन इतना मै आपसे जरूर कहना चाहता हूँ कि जो हालत मुल्क की हो रही थी, उस हालत मे से वचने का एक ही उपाय था कि हम अपने मुल्क की स्वतत्रता ले ले और परदेशियो के दवाव से वच जाएँ। स्वतत्र होकर भाई भाई लड भी सकते है, किसी दिन वे समझेगे। नही समझेगे, तो भी अपने अपने घर मे तगडा वनने की कोशिश तो करेगे।

वदकिस्मती से हमारा झगडा नही मिटा और हम गहरे पानी मे चले गए। अभी भी जव कभी मै पाकिस्तान के अखवार देखता हूँ, तो दुख होता है। कभी मै नही देखता, लेकिन मेरे डिपार्टमेंट वाले मार्क कर मेरे पास भेज देते है। यह उनका काम है। उनके रेडियो के वयान भी वे मेरे पास भेजते रहते है। कभी-कभी मुझे ख्याल होता है, क्या सचमुच वे हमसे डरते है ? कभी ख्याल आता है क्या सचमुच वे अपने आप ही से डरते है कि अपना सगठन ठीक रखने के लिए उनके पास कोई दूसरा उपाय ही नही है ? खाली हिन्दुस्तान पर जहर उगलने से वे अपनी शक्ति सगठित रख सकते है। कभी यह ख्याल आता है, कभी वह ख्याल आता है। लेकिन हमने वार-वार उनसे कहा, हमारे मुल्क में गान्धी जी के जाने के वाद हमारे प्राइम मिनिस्टर से वढकर

ट्रासपेरेंट सिन्सिएरिटी (विशुद्ध ईमानदारी) वाला व्यक्ति और कोई नही है। उन्होने भी उपाय कर देखा और कहा कि "भाई क्यो डरते हो ? हम आपका बुरा नही चाहते, भला ही चाहते है।" लेकिन न तो वे सुनते हैं, और न मानते ही हैं। अव उसका क्या उपाय है ? और दूसरी ओर यह भी होता है कि जितने मुसलमान वहा ये अखवार पढते है या उनका रेडियो सुनते है, उनका ठीक दृष्टिकोण हो ही किस तरह सकता है। वे दूसरी चीजें समझ ही नही सकेंगे। उसमें जब तक फर्क न आए, तव तक हमें जाग्रत और सावधान रहना है। इसका मतलब यह नही है कि हमें उनके साथ कोई झगडा करना है। हमें तो उनकी भलाई का ही ध्यान रखना है। लेकिन हमारे यहा उसका जहर न फैले, उतना हमें जरूर सँभालना है। हैदराबाद का किस्सा खत्म होने पर वहा जो हालत हुई और उसके वाद वहा हिन्दोस्तान के पक्ष में जो प्रदर्शन हुआ, उससे हमें पूरा विश्वास आता है और आना भी चाहिए। दुनिया को भी यह विश्वास आना चाहिए। हमें और दुनिया भर को जो चीज इतनी भयकर डरवाली लग रही थी, वह सब चीज गलत निकली।

यह एक सचाई है कि गान्धी जी की इस प्रकार की मृत्यु से हमारे देश का वातावरण ही वदल गया। हमें यह मानना चाहिए कि उनका आशीर्वाद वहा से भी हमारे देश को वरावर प्राप्त हो रहा है। जाते हुए भी वह हमारे देश की एक वहुत वडी समस्या को सदा के लिए हल कर गए। उनके सन्देश को अमल में लाने की हमें पूरी कोशिश करनी चाहिए।

आपने इस मानपत्र मे, स्टेटो के वारे में मैंने जो कुछ किया, उसका जिक्र किया है। हैदरावाद के बारे में हमारी गवर्नमेंट ने जो कुछ किया, वह ठीक ही किया। सब स्टेटो के साथ, सब प्रिन्सो के साथ, हमने वायदा किया था कि भाई किसी प्रिन्स या किसी राजा का हमें अलग फैसला नही करना है। हम सब का एक ही साथ और एक ही तरह का फैसला करेंगे। लेकिन हैदरावाद के लिए हमने अलग समझौता किया। पहले तो उसने दो महीने की मोहलत मागी कि हम को पन्द्रह अगस्त १९४७ के वाद भी दो महीना दो। १५ अगस्त ४७ के पहले और सव प्रिसेज तो भारत में मिल गए थे, केवल जूनागढ, काश्मीर और हैदरावाद ये तीन ही रह गए थे। जूनागढ तो एक छोटी चीज थी, ख्वाहमख्वाह किसी ने उस को गलत सलाह दी और वह उसमें फँस गया। लेकिन हैदरावाद का किस्सा वडी चीज थी, हमारे उस समय के गवर्नर-जनरल लार्ड

माउन्टबेटन से बढकर निजाम का पक्का हितेच्छुक और कोई नही था, इसका मैं साक्षी हूँ। उन्होने निजाम को समझाने की बहुत कोशिश की। निजाम ने दो महीने की मोहलत और मागी। निजाम के एडवाइज़र मॉगटन साहब ने भी कहा कि हम को दो महीने और मोहलत दो। हमारे कॉस्टीट्यूशनल गवर्नर-जनरल लार्ड माउन्टबेटन ने कहा कि दो महीने की इस नई मोहलत मे वह निजाम को समझाएँगे। उनको जो कुछ करना था वह हमने उन्हे करने दिया। उसका मतलब यही था कि निजाम के साथ एक प्रकार का अंग्रेज लोगो का जो सम्बन्ध था, शायद वह उसका लिहाज करे। इसलिए जहा तक वे करना चाहते थे वहा तक हमने उन्हे करने दिया। दो महीनो के बाद उसने अपना एक समझौता बनाया। सब स्टेटो के साथ जो समझौता था, उससे अलग यह समझौता था। इसको स्टैण्डस्टिल एग्रीमेंट (standstill agreement) कहते है। यह एक साल के लिए किया गया। उसमे हमने बहुत छूट-छाट दी। हमारे गवर्नर-जनरल माउन्टबेटेन साहब और मॉगटन साहब दोनो ने कहा कि हम कोशिश करके एक साल के भीतर बहुत जल्दी उनको समझा लेंगे। क्योकि हैदराबाद हिन्दुस्तान से अलग नही रह सकता और सब स्टेटो और सब राजाओ ने जो कुछ किया है, वह भी उसी प्रकार करेगा। तो भी हमने उन्हे वैसा ही करने दिया। उसके बाद जब स्टैण्डस्टिल समझौते पर हमारे दस्तखत करने का आखिरी दिन था, उस दिन हैदराबाद की ओर से दस्तखत करने वाले तीन आदमी थे : निजाम गवर्नमेंट के प्राइम मिनिस्टर नवाब छतारी, उनका दूसरा साथी मौंगटन साहब, और सुलतान अहमद। तीनो को वहा हैदराबाद में घेर लिया गया और निकलने ही नही दिया गया। आखिर तीनो ने इस्तीफा दे दिया। इन तीनो ने हम लोगो को आकर यह रिपोर्ट दी कि हम तो समझौते के लिए चले आते, लेकिन वहा हमारी कुछ चलती नही।

इस पर दूसरी गवर्नमेंट बनाई गई। अब प्राइम मिनिस्टर लायकअली साहब बैठे थे। मैंने उस समय पर कहा था कि उन लोगो को स्टैण्डस्टिल एग्रीमेंट पर दस्तखत नही करने चाहिए। लेकिन हमारे गवर्नर-जनरल साहब ने और मॉंगटन साहब ने उस समय पर भी यही कहा कि आपको व्यक्ति से क्या मतलब है, आपको तो अपना काम कर लेना चाहिए। मैंने कहा कि इसी तरह गलती होनी है, क्योकि जो इस प्रकार जबरदस्ती करके एक गवर्नमेंट को हटा दे, उसके साथ समझौता करना बड़ा खतरनाक है। लेकिन तब दोनो ने कहा कि

हम इनको समझा देंगे। तब हमने भी मान लिया। लेकिन लायकअली ने एक ओर तो दस्तखत किया, दूसरी ओर वह पाकिस्तान के साथ अपने २० करोड़ रुपये के लोन की बातचीत चला रहा था। हम से यह बात छिपाई गई थी। उसके बाद एक-एक करके जो काम उसने किए, उन सब का बयान हमने एक व्हाइट पेपर में निकाला है। वह सब बातें सुनाकर मैं आपका समय नही लेना चाहता। लेकिन मैं आपको यह जरूर कहना चाहता हूँ कि दुनिया में कोई ऐसी गवर्नमेंट नही होगी, जिसने जितनी ढीली रस्सी छोडी हो, जितनी इस किस्से में हमने छोडी। कम-से-कम अंग्रेज तो कभी ऐसा नही करते। जिस प्रकार की कार्रवाई हैदराबाद में हुई, वहाँ जितना लूट-पाट, अत्याचार और स्त्रियो पर बलात्कार हुआ, उसे कोई बरदाश्त नही कर सकता था। लेकिन हमी जानते है कि हम क्यो इस खतरे में पडे। हम नही चाहते थे कि हिन्दू मुसलमान में फिसाद हो। लेकिन जितनी ज्यादा कोशिश हमने की, उतना ही उन लोगो ने समझा कि ये कमज़ोर हैं और इन से कुछ होनेवाला नही है। वे समझे कि हम लड नही सकते। हमने बार-बार उनसे कहा कि भाई, जो हाल जूनागढ का हुआ, वैसा ही तुम्हारा हाल भी होगा। लेकिन वे हँसते थे। अब हम क्या करते? जब आखिर कोई उपाय बाकी न रहा, तब हमने नोटिस दे दिया। उसके बाद जो काम हुआ, वह तो आपने देखा ही है।

हैदराबाद के पुलिस एक्शन को दुनिया में गलत रूप से पेश करने की कोशिश हुई है। हैदराबाद में भी गलतफहमी फैलाने की कोशिश की गई। अब हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब वहा जा रहे हैं। आशा है उनकी नेकनीयती, सचाई और काबलियत से सारी गलत-फहमी दूर हो जाएगी। हिन्दुस्तान में एक भी आदमी ऐसा नही है, जो अपने दिल में यह समझता हो कि हमने हैदराबाद के साथ कोई बुराई या नालायकी की है। जब हमको यह कहा जाता है कि हमने आक्रमण किया है, तो यह समझ नही आता कि हमने किसके ऊपर आक्रमण किया है। हिन्दुस्तान के अपने ही एक हिस्से पर, जो अपना ही हिस्सा है, जो लोग अपने ही है, उन पर आक्रमण कैसा? उसका माइना मेरी समझ में नही आता। लेकिन कई लोग यह समझाना ही नही चाहते। ईश्वर की बडी दया हुई, जो सारा काम ठीक से पूरा हो गया।

अब देखें कि आज हमारी हालत क्या है। यह ठीक है कि हिन्दुस्तान अब एक बन गया है और कोई खतरा बाकी नही रहा, कही कोई फिसाद अब नही

होगा। लेकिन हम इतने से सन्तोष मान के बैठ गए, तो हमारा काम नहीं चलेगा। अभी हमें क्या काम करना है, वही सोचना चाहिए। आप जानते हैं कि जब हमने हिस्सा-बांट (पार्टीशन) कबूल किया तो उससे पहले हम अपनी आर्मी काम करना चाहते थे। क्योंकि हमारे पर उसके खर्चे का बहुत बड़ा बोझ है और इतना बोझ है कि हिन्दुस्तान उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। तो हम उसे कुछ कम करना चाहते थे। लेकिन जब फिसाद शुरू हुए तो हमने फौज कम करने का इरादा छोड दिया। उधर काश्मीर में झगडा शुरू हुआ। जब झगडा चलता रहा तो हम सोचने लगे कि हमें अपनी फौज तो कुछ बढानी पडेगी। हालत यहाँ तक पहुँची कि दस बटालियन तो हमें नैपाल से लेने पडे। अब यह सब खर्चा हम कहाँ से लाएँ और हम क्या इन्तजाम करे ? क्या हमारा मुल्क इस प्रकार का बोझ उठा सकता है ? क्या हमारी आमदनी बढ रही है ? हमारी आर्थिक दशा सुधर रही है ? ये सब चीजें हमारे सोचने की हैं। क्योंकि हम इन सब के बारे मे न सोचे, तो हमारा बुरा हाल होगा।

तो यह जरूरी है कि जिन लोगों के पास धन है और जिनके पास इल्म है, उन दोनों का इस्तेमाल हमें करना चाहिए। हमने अभी तक न कोई गवर्नमेंट चलाई है और न हमने कोई बिजनेस या इण्डस्ट्री ही चलाई है। हमने सारी उम्र तो एक परदेसी सल्तनत के साथ लडने का इल्म पाया था, सो वह कर लिया। लेकिन अब मुल्क आजाद हो गया है, अब हमें उसको उठाना है। तो जिसके पास धन है और इण्डस्ट्री (व्यवसाय) चलाने का तजुर्बा है, वे हिन्दोस्तान की आर्थिक स्थिति सुधार सकते हैं। वे लोग हमसे अलग बैठे हैं, और इधर हमारे मजदूर लोग, कारीगर लोग भी मागते है कि भई ये कीमतें तो हर रोज बढती जाती हैं और हमारे पास पूरा खाना-पीना तक भी नहीं है, सो हमको ज्यादा तनखाह दो। हमारे गवर्नमेंट सर्वेंट भी यही कहते हैं, रेलवे में लोग पडे हैं वे भी इसी तरह की बातें करते रहते हैं। सब मागते हैं, मगर कोई यह नहीं सोचता कि उसकी अपनी जिम्मेदारी क्या है। हम यह सब कहा से लाएँगे ?

हमारे जो एक्सपर्ट (विशेषज्ञ) लोग हैं, उनसे हम कन्सल्ट (राय लेने) करते रहते हैं। हम अपने उद्योगपतियों को भी कन्सल्ट करते हैं, लेबरवालों को भी कन्सल्ट करते हैं, सब को कन्सल्ट करते हैं। सब की राय लेकर और सब सोच-विचार कर हमें तो एक ही रास्ता समझ आया है कि बहुत दिन जिन लोगों ने

पैसा कमाया है, उन्हे अब देश की इण्डस्ट्री बढाने के काम में अपना रुपया लगाना चाहिए। उन्हे अब सोचना है कि खाली बैठने से क्या होगा। उनके पास नोटो का जो तोडा पडा है, वह किस काम आएगा? सब सड जानेवाले हैं। उनको यो ही रक्खे रहने से न आपको फायदा होगा, न मुल्क को फायदा होगा। अगर आपने पूरा इन्कमटैक्स (आय कर) नही दिया, तो उसमें आपने चोरी की। अब अगर आप कहें कि सब ने की, तो यह भी कोई दलील नही हुई। किसने इन्कमटैक्स पूरा दिया, किस ने नही दिया, उसका फैसला हमें किस तरह से करना है?

हमने कट्रोल हटाया तो उसका क्या नतीजा आया? जब कट्रोल हटाया तो फायदा उठानेवाले लोगो ने मनमाना फायदा उठाना शुरू किया। तो मैं आपकी तारीफ करूँ और आप मेरी तारीफ करें, उससे हमारा काम चलनेवाला नहीं है। मै हिन्दुस्तान भर के समझदार लोगो से अपील करना चाहता हूँ कि रात-दिन हमारे और आपके बीच झगडा रहने से हमारा काम नही चलेगा। यह बात हम भी समझते हैं, और आपको भी समझनी चाहिए। कहा तक आप अपना पैसा दबाकर बैठे रहेगे? जब तक आपका पैसा घूमेगा नही, तब तक न आपका काम होगा, न हमारा होगा, न मुल्क का काम होगा। तो क्या हमें हमेशा डडे से काम लेना होगा? एक आर० एस० एस० वालो ने हमारे साथ झगडा किया और दूसरा उन लोगो के साथ हमें झगडा करना पडता है जो अपने को कहते है कि हमें इधर परदेशी सस्कृति, राष्ट्रीय और आर्थिक, सब इधर लाना है। हमारी गवर्नमेंट तो एक साल से बनी है, और अभी बच्चा है। उसको तगडा बनाना हो, तो इस तरह से झगडा करने से क्या फायदा? जब तक आप लोग यह न समझेंगे कि हमारा क्या काम है, और हम सब का क्या कर्तव्य है, तब तक देश को तगडा करने का काम नही हो सकता।

कई लोग कहते हैं कि भई, देश को तगडा करने का रास्ता तो निकालना चाहिए। हम भी यह सब सोचते हैं, देश की इण्डस्ट्री बढाने की बात सोचते है। असल में जिसके पास पैसा पडा है, उनको यह बात सोचनी चाहिए। हमारे पास पैसा होता, तो हम वह सब मुल्क का व्यवसाय बढाने में लगा देते। हम अपने धनिको से पूछते है कि हमको बताइए कि कौन से रास्ते से यह काम होता है, क्योंकि यह परदेसी गवर्नमेंट नही है। कभी आप हमारी सलाह गलत मानें, या कभी हम से गुस्सा हो, लेकिन आखिर तो इस बात का फैसला करना है।

अब तो हमें हिन्दुस्तान को इस तरह ठीक बनाना है कि जिसमें हम आगे ही बढते जाएँ। और अगर हम बढने का सामान पैदा न करें, तो यह मानपत्र नही है, यह अपमान-पत्र है। मै तो यह कहता हूँ कि हिन्दुस्तान के जिन लोगो के पास इल्म है, उन लोगो को समझना चाहिए कि वे आपस में झगडा करना छोड दे।

दूसरी बात हमने यह की है कि हिन्दुस्तान मे एक प्रकार से शान्ति हो गई है और हमारा काम अब पुलिस से चल सकता है। इधर बहुत दिनो से इन्टरनल आर्डर (आन्तरिक व्यवस्था) के लिए मिलिटरी (सेना) की जरूरत नही रही, और न रहनी चाहिए। एक अच्छे राज्य में इस तरह इन्टरनल आर्डर के लिए मिलिटरी का उपयोग नही करना चाहिए। कभी-कभी करना भी पडता है। लेकिन यह मौका नही है कि हम आराम से, चैन से, सो जायें और यह समझ ले कि यह काम हो गया तो सब ठीक है। हमारे आस-पास अशान्ति है, दुनिया मे बहुत जगह पर अशान्ति है, हमारे पडोस मे दोनो तरफ अशान्ति है। अपने बॉर्डर (सीमा) पर देखिए। मैने परसो एक स्पीच दी थी, उसमें मैने बर्मा की ज़िक्र किया था। जो कुछ मै तब कहना चाहता था, ठीक तरह से उसका भाव उस स्पीच मे नही आया था। उसमे कुछ गलत-फहमी हुई। मैने कहा था कि रगून से दस मील पर बर्मा की गवर्नमेंट को शान्ति रखने के लिए फायर करना (गोली चलाना) पडता है और वहा नार्मल गवर्नमेंट नही है। दस मील तक ठीक है। क्योकि मैने अखबार में देखा है कि वहा रगून के बाहर जो बन्दूक छूटती है, उसकी आवाज रगून मे सुनी जाती है। तो वह डिस-आर्डर (अव्यवस्था) है, जिस के लिए वहा एक साल की गवर्नमेंट को फायर करना पडता है। हमारे यहा भी एक साल की गवर्नमेंट है। हमारे पास आसाम से और कलकत्ता से चिट्ठी आती है कि वहा कलकत्ता और आसाम में काम करने वाले कम्यूनिस्टो का आपस मे सम्बन्ध है। हमारे पास बार-बार, इस प्रकार की इन्फार्मेशन (सूचना) आती रहती है। हैदराबाद में तो दो डिस्ट्रिक्ट ही उन लोगो ने अपने कब्जे में कर लिए थे। कहते है कि अगर हम और देर से गए होते, तो वहा इस प्रकार की अराजकता और ज्यादा फैली होती। अब भी अगर हम सावधान न रहे तो हमारा हाल भी बुरा हो जाएगा। तो हमें सोच-समझ कर अपना काम सँभालना है।

मै हिन्दोस्तान में रहनेवाले सब लोगो को, खास तौर से कहना चाहता

हूँ कि आप यह न समझिए कि यह गवर्नमेंट तो कैपिटलिस्ट की है, हालाकि बार-बार आप लोगो को ऐसी बातें कही जाती है। लेवर में काम करने वाले हमारे कई दोस्त, जो हमारे साथ मिलते नही है, अपने अलग ख्यालात रखते है। आज हमारा जो लीडर (हमारे प्रधान मन्त्री) है, वही ट्रेड यूनियन काग्रेस के पहले प्रेसीडेन्ट थे, उन्होने उसकी वुनियाद डाली थी। उनसे वढकर मजदूर का हित चाहनेवाला कोई और मैंने नही देखा है। अव जव यह बात लोगो के ख्याल में आती है, तव कहा जाता है कि उनका (प्रधान मत्री का) तो कुछ चलता नही, वहा तो गवर्नमेंट में दो पार्टिया है। छोटे दिल के और पागल लोग ऐसी-ऐसी बातें करते है। ये समझते है कि हम ऐसे वेवकूफ हैं कि मुल्क की आजादी के लिए जिन्दगी भर साथ रहने के वाद अव हम आपस में इस प्रकार की लडाई कर लेंगे और अपनी दो पार्टिया वनाएँगे। यदि मै अपने लीडर का साथ न दे सकू और उनका पैर मै मजवृत न कर सकू तो मै एक मिनट भी गवर्नमेंट में न रहूँगा। यह मेरा काम नही है। इस तरह की वेवफाई करना मेरे चरित्र में नही है। क्योकि अपने जिन लीडर (महात्मा गान्धी) के पास से मुल्क की सेवा का धर्म मैंने सीख लिया है, उसमें इस प्रकार की वेवफाई आ जाए, तो मुझे अपघात (आत्महत्या) कर लेना चाहिए। लेकिन बार-बार छोटे दिल के आदमी ऐसी बातें करते है और भोले-भाले आदमी उनकी बात मान भी लेते है। हा कभी-कभी तो किसी वात के वारे में हम दोनो अपनी अलग राय भी रखते है। हर एक वात के वारे में हम एक दूसरे के साथ मशविरा करते है, नही तो ज्वाइट रिस्पौंसिविलिटी (इकट्ठा उत्तरदायित्व) कैसी होती है ? डेमोक्रेसी मे मशविरा ही तो किया जाता है। हम सव आपस मे अलग-अलग राय रखते है और हर सवाल पर एक दूसरे के साथ मशविरा करते हैं। नही तो ज्वाइट रिस्पौंसिविलिटी कैसे चले ? ऐसा न हो तो यहा जो पुराना राज चलता था, जिसे आटोक्रेसी (निरकुशता) राज कहते हैं, वैसा ही चले। तो ये सव गलत ख्याल है।

तो मै मजदूरो से वडी अदव से अपील करता हूँ और यह कहना चाहता हूँ कि वहुत दफे मेरे पर जो यह अटैक (आक्रमण) होता है कि यह तो विडला जी का साथी है, अमुक का साथी है, यह सव गलत है। मैंने जव से गान्धी जी का साथ किया, तव से यह एक प्रतिज्ञा ले ली कि अपनी मिल्कियत मै कोई नही रक्खूगा। यह उनके पास से मैंने सीख लिया और उससे वढ कर सोशलिज्म

कोई और मैं नहीं मानता। गान्धी जी के पास रहकर मैंने यह भी सीख लिया कि न राजाओं से दुश्मनी करना, न कैपिटलिस्ट से दुश्मनी करना, न लैंडलार्ड से दुश्मनी करना और न किसी और से दुश्मनी करना। देश के हित के लिए सब से काम लेना, और सब में एक दूसरे के लिए मुहब्बत पैदा कर अपने-अपने काम करवा लेना, यह मैंने बापू के पास से सीख लिया। यह जो स्टेटो का मामला बना है, यह भी उन्ही के पास मैंने कुछ इल्म पाया था। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि जब यह सौराष्ट्र का या काठियावाड का एक गुट बना, तो उस रोज गान्धी जी को उसकी जितनी खुशी हुई, उतना खुश मैंने कभी उन्हें नही देखा था। क्योंकि वह बहुत दिनो से जो बात चाहते थे, वह हो गई।

आज आप यह मानपत्र मुझे देते है, यह क्या मेरी कृति है? एक आदमी से क्या होता है? यह तो मैंने बार-बार कहा है कि यह ईश्वर की कृति है। लेकिन उसके साथ मेरे कई वफादार साथी भी थे। हमारी कैबिनेट तो है ही, उनके साथ बिना तो कोई चीज बन ही न सकती थी। लेकिन मैंने बहुत दफा सुना है कि यह जो पुरानी सिविल सर्विस है, वह तो उसी परदेशी सरकार ने बनाई थी। लेकिन मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि इस सर्विस मे ऐसे-ऐसे रत्न पड़े है, जिनकी कीमत बाहर के लोग नही जानते। हम भी उनकी कीमत न जाने तो हम राज चलाने के लायक नही है। ये लोग मेरे साथ न होते, तो यह काम न बनता। अब तो इस सर्विस मे चन्द लोग ही है, क्योंकि सर्विस तो टूट गई है। पहले पचास-पचपन फी सदी अंग्रेज थे, ठीक-ठीक ५५ फी सदी थे। वे सब तो चले गए। अब जो थोडे-बहुत लोग, पहले का एक चौथाई हिस्सा, सर्विस मे बाकी रही है, उसमें भी चन्द लोग ऐसे है, जिनके दिल मे यह है कि अब चलो आखिर में जितना फायदा उठा सको, उतना उठा लो। लेकिन उसमे कोई-कोई ऐसे वफादार लोग है, जिन लोगो ने बहुत वफादारी मे देश की सेवा की है, उनसे हमारे काम मे बहुत मदद मिली है। मैं उन लोगो की कदर न करूँ, तो मैं भी नालायक हूँ।

आप यह भी समझ ले कि राजाओ ने भी अपना साथ हमे दिया। जैसे हम में सब भले नही है, बुरे भी है, वैसे उनमें भी भले और बुरे दोनो है। लेकिन जब देश आजाद हुआ, तो उनको भी ख्याल हुआ कि ये लोग मुल्क का कुछ भला करना चाहते है और इस में हमें साथ देना चाहिए। अब जिसके पास राज है उसको छोड देना, जिसके पास सत्ता है, उसे छोड देना, यह कितनी

कठिन बात है। जो छोडे, उसी को मालूम पडेगा। जिसके पास नही है, उसका यह कहना कि यह आसान बात है, बेमतलब है। कुछ लोग कहते हैं कि हमने राजाओ को इतना पर्स दिया, इतना रुपया दिया, इतना पेंशन दिया। लेकिन जो जानता है उसको मालूम है कि यह एक प्रकार का बहुत बडा विप्लव है, एक बडा रेवोल्यूशन (क्रान्ति) है। हमें उनकी कोई खुशामद नही करनी पडी और उन्होने देश के हित के लिए स्वय इतना बडा स्वार्थत्याग किया। यह भगवान की बडी कृपा है और हिन्दुस्तान के सद्भाग्य और भविष्य के लिए अच्छा है।

मैंने लेबर से कहा है कि भाई, हमारे पास अगर कुछ ज्यादा हो गया, तो वह आपको ही मिलेगा। लेबर मे काम करनेवाले लोग कहते है कि ये कैपिटलिस्ट लोग हमको बहुत तग करते है। मै भी मानता हूँ कि वे तग करते है। लेकिन उसका उपाय क्या है? जब तक हम देश में अधिक धन, और अधिक इल्म नही पैदा करेंगे, तब तक जो कुछ हमारे पास है, उसमें से अधिक खर्च कर देने से वह खत्म हो जाएगा। जिन लोगो के पास छिपा हुआ धन पडा है, और वे उसे निकाल नही रहे हैं, क्योकि वे डरते हैं कि वे पकडे जाएँगे, उनके बारे मे हमे कोई रास्ता करना चाहिए। वैसा न करेंगे, तो आगे हमारा कोई काम नही चलेगा। मै उनसे भी अपील करता हूँ कि आपके पास यह जो अनीति का धन है, वह आपको नुकसान करेगा। और आज मौका है क्योकि आपकी सरकार को अच्छे काम में रुपया लगाने के लिए उस धन की जरूरत है। आपको चाहिए कि जितना गवर्नमेंट का भाग है, वह सब दे दें, नही तो आप फँस जाओगे। उससे आपको कोई फायदा नही होगा।

एक दूसरी बात मै आप लोगों से कहना चाहता हूँ, क्योंकि मै घूम-फिर नही सकता, लेकिन मेरी बडी ख्वाहिश है कि मुल्क में हर राज्य में जाकर में कहूँ और किसानो को समझाऊँ कि तुम यह क्या कर रहे हो। आप कहते हो कि हम पैदा करते है, सो हमको ज्यादा दाम मिलना चाहिए। लेकिन आपका पडोसी भूखो मरता है, उसे अगर आप अनाज न देंगे, आपको अपने खाने के लिए जितना चाहिए उतना रख कर, बाकी अनाज आप दे न देंगे, तो हिन्दुस्तान को परदेश से माल लाकर, ज्यादा दाम देकर अपना काम चलाना पडेगा। यह बहुत बुरा है। उसमें आखिर आपको ही नुकसान होनेवाला है, क्योकि उस से हिन्दुस्तान का दिवाला निकल जाएगा। वह क्यो

करते हो ? तो देश के लिए ज्यादा-से-ज्यादा धन पैदा करो, ज्यादा-से-ज्यादा अनाज पैदा करो, और ज्यादा-से-ज्यादा जितना धन और अनाज देश को दे सको, दो। उतना ही देश का काम अच्छा होगा।

इसी प्रकार कपडे का सवाल है। चन्द लोग कपडा पैदा करते है और उसका उपयोग करनेवाले ज्यादा है। चन्द लोगो ने फायदा उठाया, कुछ व्यापारियो ने भी फायदा उठाया है। वे सब ईमानदारी बरतें तो हमें क्यो टण्डा उठाना पडे ? उसमे किसी का फायदा क्या है ? वैसा करने से दुनिया मे हमारी बदनामी भी होती है। तो मै उनसे भी कहता हूँ, व्यापारियो से भी कहना चाहता हूँ कि कष्ट के मौके पर इस तरह फायदा कभी नही उठाना चाहिए। आज हमारा नैतिक अध पतन हुआ है, हम बहुत गिर गए है। कहते है कि सर्विस मे भी बहुत कोरप्शन (विकार) है, मै इस बात से कही इनकार करता हूँ ? कितनी ही बुरी बाते भी हो गई। लेकिन हमें किसी जगह पर अटक कर, आगे बढना है। जब तक हम शुरू नही करेंगे तब तक यह काम सफल कैसे हो पाएगा ? और उसमे एक आदमी से काम नही होगा, सब को मिलकर हिन्दुस्तान की आबोहवा बदलनी होगी, एटमोस्फीयर (वातावरण) बदलना होगा। जब तक हम कौमी झगडे मे फँसे थे, उसका जहर जब तक था, तब तक हम दूसरा काम नही कर सकते थे। अब यह मिट गया है, और अब अगर हम दूसरे काम मे पड जाएँ तो यह जहर फिर नही उठेगा। लेकिन अगर हम बेकार बैठे रहेगे, तो कुछ-न-कुछ फिसाद उठेगा।

आज मेरा स्वागत करनेवालो मे कई हमारे रिफ्यूजी लोग भी हैं। ऐसा कोई रिफ्यूजी न माने कि गवर्नमेंट में जो लोग बैठे है, वे उनके दर्द के बारे मे कुछ भी नही सोचते है। रिफ्यूजी भाइयो के दुख से हमको बहुत कष्ट हुआ है। लेकिन इतना बोझ हमारे पर पड गया है कि बोझा उठाना मुश्किल हो गया है। कभी आपको गुस्सा आता है, और आप समझ लेते है कि गवर्नमेंट कुछ करती नही। कभी गलत रास्ते पर ले जानेवाले लोग आप से मिलते है और कहते है कि यहा ये गवर्नमेंट वाले लोग आपकी कुछ भी परवाह नही करते और आपको उनके साथ लडना चाहिए। यदि आपको यह गवर्नमेंट पसन्द न हो, तो जो सरकार आपको पसन्द हो, आप चुन लीजिए। हम इतनी उम्र मे इस झगडे मे क्यो पडे कि जो काम आपको पसन्द न हो, मुल्क को पसन्द न हो, वही करते चले जाएँ। मै तो इसी उम्मीद पर बैठा हूँ कि जो थोडे-से

दिन बाकी है, उन्हें इस तरह इस्तेमाल करूँ जिससे मुल्क का भला हो। आप दुख बर्दाश्त करते है, उसके लिए हमारी महानुभूति आपके साथ है, लेकिन अपने दिल में कोई बुरा भाव आपको पैदा नही करना चाहिए।

एक और बात भी मैं कहना चाहता हूँ। वह यह कि रिफ्यूजियो की आड मे कितने ही लोग हैं, जो लूट-काट में पडे है। वे लोग बहुत बुराई करते है। हालत यहा तक पहुँच गई कि हमारे सप्लाई डिपार्टमेंट का परसो तनख्वाह बांटने का दिन था, तब वहा एक टैक्सी लेकर, एक मोटर लेकर कुछ लोगो ने रेड (आक्रमण) किया। एक अच्छी नई मोटर में चार आदमी बैठे, उनमें एक रिवाल्वर लेकर आया था। वहा एक बेचारा क्लार्क बैठा था, उसको रिवाल्वर से गोली मार कर वे पेटी उठा कर चले गए। कोई राज इस तरह से चल सकता है? दिल्ली शहर में, हमारे कैपिटल में इस प्रकार की गुण्डाबाजी चल सकती है? ऐसे लोगो के साथ किसी की क्या सहानुभूति रह सकती है? इस प्रकार के जो लोग भीतर घुसते हैं, उनको किसी भी जगह पर नही रहने देना चाहिए। अगर उन लोगो की तरफ जो लोग सहानुभूति बताएँगे, वे अपने को खतरे में डाल देंगे, गवर्नमेंट को खतरे में डाल देंगे और मुल्क को भी खतरे में डाल देंगे। हमें उम्मेद है कि वे लोग पकडे जाएँगे। लेकिन एक चीज़ फैल रही है और वह मै देख रहा हूँ। बहुत-से हथियार लोगो के पास आ गए है, बहुत-सा गोली-बारूद आ गया है। उसका नतीजा भी हम देख रहे है। तो उससे हमें सावधान रहना है।

दिल्ली शहर आज जितना अन-सैनिटरी (अस्वच्छ) हो गया है, इतना पहले कभी नही था। इसकी वजह यह है कि दिल्ली की आबादी बहुत बढ गई है। जितने रिफ्यूजी आए, सब यहा आबाद हुए। उन्हे कितना भी रोकें, लेकिन वे जाएँ कहा? उनके पास रहने की जगह भी नही है। आए तो जिस किसी तरह पडे है। ऐसी हालत में दिल्ली की नाजुक स्थिति हो गई है। यहा रहने को जगह नही है। जब दिल्ली में दगा-फसाद हुआ, उसमें यहा की पुलिस टूट गई, वह किसी को मालूम नही हुआ। दिल्ली की पुलिस की सब शिकायत करते हैं, ठीक है। लेकिन अब यहा जो पुलिस है, उसमें से आधी पुलिस तो रिफ्यूजियो में से है। हम कोशिश करते हैं, समझाते हैं, उनको ट्रेंड करते है कि वे ठीक काम करें। लेकिन आखिर जब तक पब्लिक ओपीनियन (जनमत) हमारे साथ न रहे तब तक कुछ न होगा। चाहिए तो यह कि सब अपना धर्म समझे

कि यह दिल्ली हमारा शहर है, इसमे कुछ भी गडबड होती है तो उससे हमारी बदनामी होती है, हमारी गवर्नमेंट की बदनामी होती है। हमारे शहर में हर मुल्क के एम्बेसेडर्स (राजदूत) आकर बैठे है। यहा तो गान्धी जी के आदर्श राज्य के मुताबिक चलना चाहिए। सब लोग मिल-जुल कर अदब से, और सभ्यता से बात करे। न कोई ऊँची आवाज़ से बात करे, न कोई किसी से लेने-देने की बात करे। सब काम सफाई से करे। रात और दिन छोटे-छोटे बच्चे-बच्ची भी सब जगह निर्भय होकर घूम-फिर सके। किसी को किसी से नफरत न हो, किसी को कोई दुख न हो, इस प्रकार का राज्य हमारे शहर मे होना चाहिए। पुलिस की क्या ज़रूरत है? तो मै आप सबसे, खास करके दिल्ली निवासियो से, हृदय से अपील करता हूँ कि सही स्वागत तो यह होगा कि जो हम चाहते है, उसमे आप हमारा साथ दे। तभी हम आगे बढ सकते है।

एक दफ़ा फिर मै आप सब का शुक्रिया अदा करता हूँ।

---

(१०)

गुजरात और महाराष्ट्र समाज के अभिनन्दनोत्सव में

१२ अक्तूबर, १९४८

काका साहब, महाराष्ट्र और गुजरात के भाइयो और बहनो !

चन्द दिन हुए, काका साहब ने मुझ से कहा कि हम एक स्नेह-सम्मेलन करना चाहते है और गुजराती और महाराष्ट्र समाज, सब एक साथ आपसे मिलना चाहते है। काका साहब ने कहा तो मैं इन्कार कैसे करता ? मैंने कबूल कर लिया कि मै आ जाऊँगा। और आज यहा आने का मतलब यह है कि एक राष्ट्र पर्व के दिन आप सब से मिलने का मौका मुझे मिले। क्योकि आज हिन्दुस्तान का एक बहुत बडा और बहुत पुराना राष्ट्र पर्व है। यह दशहरा हम सब के लिए बहुत बडे उत्सव का दिन है, क्योकि इस दिन हमारे देश की एक बहुत बडी विजय हुई थी। तभी से आज के दिन हिन्दुस्तान हर साल अपना उत्सव मनाता चला आता है।

आज हिन्दोस्तान का एक और प्रकार के उत्सव का दिन भी है। क्योकि आज हमारे हिन्दोस्तान में कोई खतरा बाकी नही रहा, कोई झगडा-फिसाद बाकी नही रहा है और अब एक प्रकार से सारे हिन्दुस्तान में शान्ति का वातावरण स्थापित हो गया है। यह बहुत अच्छी बात है। क्योकि जब तक मुल्क में शान्ति नही होती, तब तक मुल्क की प्रगति नही हो सकती और हम आगे भी नहीं बढ सकते। हमें आजादी तो मिली, पर उसके साथ देश का टुकडा

होने से एक वदकिस्मती भी साथ मिली। इसीसे आज़ादी से जो खुशहाली होनी चाहिए, वह खुशहाली हम लोगो को नही मिली। यह शायद हमारे पूर्व पापो का फल होगा, या हमारी ही कुछ त्रुटिया होगी कि जैसा हमने कभी अनुमान भी नही किया था, उस प्रकार का वायुमण्डल पैदा हो गया, जिसमे वहुत-सी खून-खरावी हुई और दुनिया में कम-वेश हमारी वदनामी भी हुई।

हर कौम या हर राष्ट्र खाली अपनी तलवार से वीर नही वनता। तलवार तो अपनी रक्षा के लिए ज़रूरी वात है, लेकिन राष्ट्र की प्रगति का माप उसकी नैतिक प्रगति से ही किया जा सकता है। पिछले कितने ही सालो से दुनिया में हमारे मुल्क की इज्जत वढ गई, वह हमारे एक महान् व्यक्ति की उच्चता का फल था। वह हमारे महान् नेता सारी दुनिया को नैतिक उपदेश देते रहे और हमारे मुल्क में तो रात-दिन उसका प्रचार होता रहा। तो अकेले गान्धी जी की तपश्चर्या, उनकी नैतिक शक्ति और आत्मशक्ति से हमारे गुलाम देश की भी इज्जत वढ गई। उनके तपोवल से हमारे देश का नैतिक स्तर भी ऊँचा उठ गया था। लेकिन पिछले साल हम झगड़े मे पड गए और उससे खून-खरावी हुई। गुलामी से छूटने मे जो वुराइया और मुसीवते आई, उन्हे हम छोड भी नही सकते थे। जव हमारा हाथ पत्थर के नीचे पडा हो, तो उसे निकालने मे मुसीवत तो होती ही है। तो गुलामी हटाने मे जो मुसीवते आई, उसमें वहुत-से ऐसे काम हुए, जिनसे हमको नुकसान हुआ। लेकिन आज उस सव चीज़ में से हमारा देश निकल आया है। अव एक टुकडा हमने अलग कर दिया, जो लोग हमारे साथ नही रहना चाहते थे, उनको हमने अलग कर दिया और कहा कि भाई खुशी से मज़े से अपना काम करो। देखो, उसका भी स्वाद देखो कि उसमें क्या मिठास है? जव आप यह कहेगे कि हम से गलती हुई, तव हम दोनो सोचेगे। लेकिन अगर आपको लगे कि गलती नही हुई, और यह जो ज़हर के प्रचार पर आपने सारी रचना की, उसी पर आपको चलना हो, तो रहो। क्योंकि हमें मालूम है कि कोई कौम ज़हर के प्रचार पर जिन्दा नही रहती। प्रेम पर, चरित्रवल पर और नीति पर ही कौम ज़िन्दा रहती है।

जव आसपास ऐसी हालत है कि हमारा मुल्क सलामत नही है, तो हमारे मुल्क की रक्षा का इन्तजाम पूरा होना चाहिए। वह न करे, तो जिसके पास राज की लगाम है, वह गुनाहगार हो जाएगा। अव आजकल सत्ता हमारे हाथ में है, तो हमारा यह धर्म हो जाता है कि हम मुल्क की हिफाजत करें। लेकिन

उस का मतलव यह है कि हमारे मुल्क के भीतर जो अपने भाई-वहन हैं, मराठे, गुजराती, वगाली, पजावी, मद्रासी, हर प्रान्त के अलग-अलग रहनेवाले है, लेकिन सव-के-सव हिन्दुस्तानी है, चाहे वे हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिक्ख हो, पारसी हो, या किसी भी मजहव के हो, सवकी हमें रक्षा करनी है। इस मुल्क में जितने मजहव है, जितनी भाषाएँ हैं, उतने मजहव और उतनी भाषाएँ किसी और मुल्क में नही है। लेकिन तो भी हमारे सारे मुल्क की सस्कृति एक ही है। यह हिन्दी सस्कृति है। अव हमारे देश में इतने लोग रहते हैं, वे अगर झगडे में पड जाएँ, तो इस प्रकार की हालत नही होनी चाहिए कि हमें फौज से काम लेना पडे। यह काम पुलिस का है। भीतर मुल्क में शान्ति रखने के लिए हमें कम-से-कम पुलिस रखनी पडे, ऐसी हालत होनी चाहिए। अव आप देखें कि गुजराती कहा-कहा पडे है। पूना में जाओ तो वे वहा भी पडे है, महाराष्ट्र में, शोलापुर में, जहा भी जाओ, वहा आपको गुजराती मिलेगे। सतारा में जाओ, कोई भी जगह पर जाओ, गुजराती ज़रूर मिलेगे। इसी तरह महाराष्ट्रीय भी सव जगह मिलेगे। अहमदाबाद में जाओ, सूरत में जाओ, सारे प्रान्त में वे मिलेगे। इसी प्रकार वम्वई में जाओ, तो हर प्रान्त के लोग वहा आप को मिलेगे। वे वहा किस तरह से रहते है ? वह किसी फौज के डर से आपस में मिलकर रहते है ? या वन्दूक के डर से रहते है ? नही, वह हमारी सस्कृति का परिणाम है कि हम एक दूसरे के साथ इस तरह रहते हैं जैसे हम सव एक वाप की प्रजा है। हम अनुभव करते हैं कि हम सव हिन्दोस्तानी हैं। तो हमें इस देश में मिल-जुलकर रहना है। लेकिन आप अपना मजहब अपनी इच्छा से चला सकते हैं। हम हिन्दुओ में भी वैष्णव हैं, शैव है, जैन हैं और अनेक प्रकार के मजहव हैं, लेकिन वह झगडे की वात नही है। मजहब के बारे में झगडा नही होना चाहिए। हमारी जो ईश्वर की मान्यता है, वह हमारी खुद की है। जो हमको पसन्द हो, हम मानेंगे। तो मजहव व्यक्ति की अपनी चीज़ है। मजहव के लिए सव को पूरी आजादी होनी चाहिए। उसमें दूसरे के साथ झगडा नही करना चाहिए। इसी प्रकार हमारा जो रोजगार है, जो धन्वा है, उसमे भी हमें कोई झगडा नही करना है। तो हम जो आपस में मिल-जुलकर रहते हैं, वह किसी तोप-वन्दूक के डर से नही रहते हैं, लेकिन मुहव्वत के वल पर रहते है।

इस प्रकार सारा हिन्दुस्तान वना हुआ था। वदकिस्मती से हमारे मुल्क में

परदेसी लोग आ गए। पहले पहल जब परदेसी लोग आए तब हमारा समाज भी सड गया था, हम गिर गए थे। तो जो परदेसी लोग इधर आए, उन्होंने हमारे मजहब पर आक्रमण किया और हमारे मुल्क मे जबरदस्ती अपने मज़हब का प्रचार किया और यहा के लोगो का ज़बरदस्ती धर्मान्तर किया। अब हमारे अपने लोग धर्मान्तर करके अलग मज़हब मे चले गए, उसमे किसकी गलती है ? जो ज़बरदस्ती करनेवाले थे, उनकी जो गलती थी, वह तो थी ही, लेकिन हमारी अपनी गलती भी जरूर थी। हमारे मे से लाखो लोग ईसाई हो गए, करोड़ो मुसलमान हो गए, वह क्यो ? इसमें हमारी अपनी गलती थी। हम मे से जो गरीब थे, उनकी रक्षा हमने नही की और ज्यादातर जो लोग गए, वे गरीब थे और उन पर ज़बरदस्ती की गई थी। लेकिन जब एक बार गए तो पीछे वहा ही डट गए और ऐसे डट गए कि जो असली थे, वे उनसे भी अधिक बुरे बन गए। अब इस तरह से जो सिलसिला जारी रहा, उसमे आगे चलकर ऐसी हालत हो गई कि एक दूसरे देश के लोग यहा आ गए और दो सौ सालो से वे बीच मे बैठ कर हिन्दू और मुसलमानो मे झगड़ा पैदा करते रहे। इसी झगड़े से उनको फायदा था। इसी से उनको इधर अपना राज जमाने मे आसानी हो गई। बहुत समय के बाद हिन्दू और मुसलमान दोनो समझे कि यह तो बुराई हो रही है और इस से हम दोनो मर रहे है। तो बहुत समय के बाद दोनो समझे और कहने लगे कि हमे आपस में मिलकर इन परदेसियो को हटाना चाहिए। तब हटाने की कोशिश शुरू हुई।

इस परदेसी राज मे चन्द लोग ही पढ़े-लिखे थे। इनमें से कुछ पढ़े-लिखे लोग परदेसियो के साथ मिलकर उनकी खुशामद कर कुछ इधर-उधर टुकडा लेते थे। थोडा-सा हिस्सा लेते थे। बाकी पढ़े-लिखे लोग सब से पहले अंग्रेजो की चाल को समझे। उधर सारी जनता को तो एक ही बात सिखाई जाती थी कि अंग्रेज के राज मे बाघ और बकरी एक घाट पर पानी पी सकते है, इसलिए उनका राज अमर रहे। जब हम पढ़ते थे, तो हमारे स्कूलो में यही चीज़ सिखाई जाती थी। तब हमको हमारी गुलामी इतनी मीठी लगने लगी कि हम तो यही समझते थे कि यह राज्य अमर रहे। अब बाकी जो पढे-लिखे लोग थे, जो लोग अंग्रेजो के नौकर नही थे, वे सब से पहले समझे कि यह चीज तो बुरी है। तो पढ़े-लिखे हिन्दू और मुसलमान मिलकर काम करने लगे। लेकिन जितने अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग थे, वे उखड़ने लगे, क्योंकि वे टिक न सकते थे।

सब से पहले आम जनता में लोकमान्य तिलक ने प्रवेश किया। उन्होने समझ लिया कि जब तक हम जनता को साथ न ले, तब तक यह काम होने वाला नही है। सब से पहले लोकमान्य ने ही यह काम शुरू किया कि जनता को साथ लिया जाए। बहुत सालो तक लोकमान्य ने बहुत कष्ट उठाया और राष्ट्र की शक्ति को सगठित किया। उनकी तपश्चर्या सफल हुई और जब उनका देहान्त हुआ, तब महात्मा गाधी जी ने मुल्क के सामने एक बात रक्खी कि हमारा यह धर्म है और हमें आज यह प्रतिज्ञा करनी है कि लोकमान्य का जो काम बाकी रह गया है, उसे हम परिपूर्ण करेंगे। उन्होने यह प्रतिज्ञा निभाई।

जब से महात्मा गान्धी हमारे नेता बने, तभी से उन्होने कहा कि हमारे पास कोई हथियार नही, तो उससे क्या आता जाता है? अगर हम सरकार को, परदेमी सल्तनत को, उसका राज्य चलाने में सहयोग नही देंगे तो हमारे सहयोग के बिना वह राज नही चला सकते है। यह सब से बडी बात थी। इस चीज़ से हमारे देश में बहुत ज्यादा शक्ति पैदा हुई और दिन-पर-दिन वह बढती गई। अब यह जो शक्ति बढती गई, वह यहा तक पहुँच गई कि यहा जो परदेसी सल्तनत थी, उनको लगा कि अब इधर रहना मुश्किल है। एक ही तरीके से वे यहा रह सकते है कि यहा हिन्दू मुसलमान दोनो के बीच में झगडा कराएँ। तो हिन्दू मुसलमान के बीच झगडा पैदा हुआ। उसमें उनका तो स्वार्थ था। अपने राज्य की सलामती के लिए और राज्य करने के सुभीते के लिए उन्होने यह सब किया। लेकिन हमारी यह बेवकूफी थी कि हम लडे। आज अब उस झगडे में पडने की कोई ज़रूरत रह नही गई। क्योकि आखिर लडते-झगडते हमने फैसला किया कि भई, हम एक साथ नही रह सकते और जब तक हमारा आपस का फैसला नही हो जाता, तब तक तीसरी ताकत को हटा नही सकते और ज़माने की सब से बडी जरूरत यह है कि इस तीसरी ताकत को हटाओ। मुल्क को परदेसियो के हाथ से निकालो और गुलामी में से निकल जाओ। पीछे अपने आप सब रास्ता निकल आएगा। इसलिए हमने आपस में फैसला किया कि मुल्क को बाट दो। वह हमने कबूल कर लिया और हम अलग हो गए।

इस तरह अलग होने में जितनी बुराइया आनेवाली थी, वे सब आई। जो बुराइया आई थी, वे अब हट गई है। लेकिन एक बुराई हट जाती है, तो उसमें से दूसरी बुराई निकलती है। आज हमारे देश में एक भावना पैदा हुई

है, जो हमको बहुत बड़े खतरे मे डालनेवाली है। यह भावना इस बात की है कि आज बगाली सोचने लगे है कि बगाल सिर्फ बगालियो के लिए है, महाराष्ट्र के लोग सोचने लगे है कि महाराष्ट्र महाराष्ट्रियो के लिए है, उधर मद्रास के लोग कहते है कि मद्रास मद्रासियो के लिए है। इस प्रकार के जो प्रान्तीय भाव आ गए है, उन से राष्ट्रीय भावना का खून होता है।

यह प्रान्तीयता का भाव एक जहर है, जिसका प्रभाव धीरे-धीरे आगे बढता है। आज मेरे पास बहुत-सी शिकायतें आती है। बगाली और बिहारी आपस मे यहा तक लडते है कि एक दूसरे के साथ काम-धन्धा नही कर सकते है, मार-पीट मे पड जाते हैं। इसी प्रकार उड़ीसा और बिहार के और तामिल-नाद और आन्ध्रो के बीच में चलता है। उधर आसाम और बगाल का चलता है। हम लोग गुजरात और महाराष्ट्र मे इस प्रकार का काम कभी नही करते थे और न हमें करना ही चाहिए। आपस मे कुछ भी झगडा हो जाए, तो उसका फैसला शराफत से कर लेना चाहिए। इसी प्रकार का काम गुजरात और महाराष्ट्र का आपस ही मे नही, सारे हिन्दुस्तान मे होना चाहिए। क्योकि अब हिन्दुस्तान के पास यह एक पहला मौका आया है, जब सैकडो सालो के बाद हमने हिन्दुस्तान को एक बनाया है। इतना बडा हिन्दोस्तान इतिहास में और कभी नही था। पहले बहुत समय तक अलग अलग छोटी-छोटी रियासतें थी। अधिकाश समयो मे हमारा देश टुकडो मे बँटा रहा। अब हमने सबको साफ करके एक नक्शा बनाया। अब हमारा काम है कि उसको उठाएँ। तो जब हिन्दुस्तान को दुनिया के और मुल्को के मुकाबले में रखना हो, तो हमें छोटी-छोटी बातो के झगडो में नही पड़ना चाहिए।

साथ ही आपको यह भी देखना चाहिए कि यह जो हमारा एक अग, एक अवयव काटकर अलग कर दिया गया, उसमें से बहुत खून गिरा है और वह गिरना ही था। एक जिन्दा अग को काटने से खून तो गिरता ही है और उसकी चोट भी बहुत लगती है। जो पिछला विश्वयुद्ध हुआ था, उसकी चोट भी सारी दुनिया को लगी थी और उससे हम भी नही बचे थे। इन दो चोटो का फल यह हुआ है कि आज सामान्य लोगो के कष्टो का अन्दाज लगाना भी कठिन है। इतना अधिक कष्ट है। हर चीज का, यहा तक कि जिन्दगी की जरूरियात की और खाने-पीने की चीजो का दाम भी बहुत अधिक बढ गया है। इतना अधिक बढ गया है कि सामान्य लोग उसको बरदाश्त नही कर सकते। आज मजदूर

लोग है, वह मजदूरी का दाम ज्यादा मागते है। वे मागेंगे भी, क्योकि उनको भी खाने-पीने का सामान चाहिए। उनको भी आज आज़ादी मिली है। आज तक तो वे गुलाम थे और उनको बन्दूक से डराकर काम चलाया जाता था। अब तो मुहब्बत से ही काम चल सकता है। व्यापारी लोग है, उन्होने पिछली लडाई में कुछ पैसा बनाया और अभी भी उनकी पैसा बनाने की वह आदत छूटती नही। क्योकि जहा ज्यादा लालच हो जाता है, वहा नैतिक बन्धन छट जाता है। हमारे व्यापारी आज भी ज्यादा लेने की कोशिश करते है। अब इसी प्रकार जो चलता गया और हम उसी ढग से चलते गए तो हम खड्डे में गिर जाएँगे। फिर लोग अँग्रेजो के राज की याद करने लगेंगे और यहा तक कहने लगेंगे कि हमको आज़ादी तो मिली, लेकिन उससे गुलामी ही अच्छी थी। ऐसा कभी नही होना चाहिए।

हमारा नक्शा तो अब एक हो गया। लेकिन अब हमारा धर्म है कि हम आगे बढें। तो उसके लिए क्या करना चाहिए ? सब से ज़रूरी बात तो यह है कि अब हम मुल्क में कोई फिसाद न होने दें। झगडे का जितना भी ज़हर हो, वह हम अभी छोड दें। पीछे देखा जाएगा। अभी तो ज़रूरत है कि हमारे मुल्क में ताकत आए और भाई-भाई सब तगडे हो। जब तगडे हो कर वे लडेंगे तो लडने में भी कुछ मजा होगा। लेकिन मुर्दा क्या लडेगा ? आज हमारे पास कोई ताकत नही है और इसी कारण दुनिया में हमारी अभी तक ऐसी कोई इज्जत भी नही है। तो आज अगर हम अपने मुल्क की ओर सब से अधिक ध्यान देकर मुल्क में अधिक-से-अधिक धन पैदा नहीं करेंगे, तब तक हमारा काम नही चलेगा। जितना अनाज खाने के लिए चाहिए, उतना आज हमारे यहा पैदा नही होता। इसी कारण परदेस से हम अन्न मँगवाते हैं। अब परदेसी लोग समझ गए है कि हिन्दुस्तान में खाना नही है। आज़ादी से पहले एक साल में बगाल में तीस लाख आदमी भूख से मर गए थे। दुनिया के लोगो का बराबर ख्याल है कि इधर दुष्काल पडे, तो लोग कीडी के माफिक मरते है। तो जब वे जानते है कि हिन्दुस्तान के पास पूरा अनाज और धान नही है, तो वे हम से पूरा दाम लेते हैं। हमें भी अपनी नाक बन्द करके पूरा दाम देना पडता है। इसी प्रकार जितना कपडा हमको चाहिए, उतना कपडा हमारे यहा पैदा नही होता। गाधी जी ने तो बार-बार कहा और जब से वह हिन्दुस्तान में आए थे तभी से यहा चर्खा लेकर बैठे थे कि भाई अपना कपडा आप पैदा करो। लेकिन कोई उनकी

बात माने और करे, तब तो काम हो। गान्धी जी की जय सारा देश बोलता था, लेकिन कपडा पैदा करने के लिए चन्द आदमियो ने ही चर्खा चलाया। जब जनता ने चरखे को नहीं अपनाया, तो व्यापारियो ने भी पूरा फायदा उठाने की कोशिश की।

हम सब को अब यह समझ लेना चाहिए कि कम-से-कम पाच साल तक हमें आपस में मिलकर मुल्क का काम करना है और इसके लिए अपने स्वार्थ का थोडा-सा त्याग करना है। गान्धी जी ने तो अपनी सारी लडाई त्याग के ऊपर बनाई थी। उनका कहना था कि कुर्बानी करो। जेल मे जाना पडे तो अपने कुटुम्ब की भी परवाह मत करो। फासी पर जाना पड़े, तो फासी पर जाओ। लेकिन इस परदेसी हुकूमत से निकल जाओ। मुल्क ने वह तो किया और परदेसी हुकूमत से भी छूट गए। जिन लोगो ने कुर्बानी की, वे लोग अब यह समझते है कि भई, हमें उसका बदला मिलना चाहिए। वे कहते है, हम जेल गए थे, हम को कुछ दो। हमारी मिल्कियत गई थी, वह हमको दो। हमारे लोगों मे ऐसी भावना पैदा हो गई है। तो भाई, लोभ तो पाप का मूल है। सन्तो का कहना है कि लोभ से पाप की भावना पैदा हो जाती है। लोभ ही से ईर्ष्या होती है। ईर्ष्या से हम झगडे मे पड जाते है और तब हम एक दूसरे से डरने लगते है। लोभ ही के कारण पहले हम व्यक्ति से डरते है, फिर प्रान्तो से डरने लगते है।

हमारे देश मे अगर प्रान्तीय भावना बढ गई, तो हमारे मुल्क के लिए बहुत खतरा पैदा हो जाएगा। हमने पहले भी अपने मुल्क को इसी तरह गमाया था। तभी परदेसी इधर आए थे। हम लोग आपस मे लडते रहे, इसी से परदेसी इधर आए। जब अंग्रेज आए, तो एक कौम ने उनका साथ दिया, कभी एक राजा ने उनका साथ दिया, कभी दूसरे राजा ने। वे जमा होकर यहा बैठ गए, और हम एक दूसरे से लडने लगे। अब ऐसा नही होना चाहिए। नहीं तो इतनी मेहनत के बाद आजादी का जो मौका हमें मिला है, वह हाथ से चला जाएगा।

यों बाहर की चिन्ता आप छोड दीजिए, क्योंकि आज जो वातावरण है, उसमे हमें मिलिटरी और आर्मी से मुल्क की रक्षा करनी है। उसके लिए आप को गवर्नमेंट को देखना है, और आपको उसकी परवाह नही करनी है। हम उसका बराबर बन्दोबस्त करेंगे। हमारे मुल्क के ऊपर कोई बाहर से हमला

करे, ऐसी नौबत हम कभी न आने देंगे। दुश्मन को हमारा दरवाजा कभी खुला नही मिलेगा। हम उसका वरावर बन्दोवस्त करेंगे। लेकिन हमारे देश के भीतर जो हालत है, उसमें हमें आप लोगो का साथ अवश्य चाहिए। आपका साथ नहीं मिलेगा, तो काम नही होगा। और अगर हमारी भीतर की हालत ठीक न हो, तो हम वाहर का काम भी नही कर सकते, क्योकि आज की दुनिया में हमें जो फौजें रखनी पडती है, उन फौजो के साथ और भी वहुत-सी चीजें हमें चाहिए। आप देख लीजिए कि हमें जव एक हैदरावाद पर हल्ला करना था, तव उसी के लिए हमें कितनी तैयारी करनी पडी। हमें हल्ला करना पडा, क्योकि हैदराबाद का दिमाग विगड गया था और वे समझे थे कि अव अँग्रेज गए, तो हम स्वतन्त्र हो गए। अगर हैदरावाद कोई व्यक्ति होता, तो हम उसे पागलखाने में भेज देते। लेकिन वह तो वम्बई जितना वडा है। उसमें जिन लोगो के पास सत्ता थी, उन लोगो ने यह समझा कि अव तो कौन हमको रोक सकता है। और उनको यह उम्मीद भी थी कि हम को पाकिस्तान मदद करेगा या कोई परदेसी लोग मदद करेंगे, जो उनके पुराने दोस्त थे। लेकिन उन्होने हमारी ताकत की कोई परवाह नही की। वे समझे कि हम तो लड ही नही सकते, या हम में कोई ताकत है ही नही। हमने वार-वार कहा कि जो हाल जूनागढ का हुआ, वही तुम्हारा भी हो जाएगा। समझ जाओ। लेकिन उन्होने नही सुना। अच्छी वात है। नही सुना, तो आखिर देख लिया। वहुत-से बाहर वाले लोग गुस्से भी हुए कि यह क्या हुआ? और सौ चूहे मार के विल्ली हज करने के लिए जाती है, ऐसी अँग्रेजो की चाल है। सारी दुनिया में सदियो से आज तक अँग्रेजो ने इसी तरह से काम किया, हमने उसकी अपेक्षा वहुत अच्छी तरह से काम किया। लेकिन उनको वहुत क्रोध आया कि यह कैसे हो गया? अब वे पच कैसे वनेंगे। ठीक है, अब यह तो भीतर की बात थी। लेकिन वाहर की वात हो, तव कितना क्या कुछ करना पडेगा? जव भीतर के लिए हमको इतना कुछ करना पडा।

हमारा पडोसी, जो हमारे से ही अलग हुआ, वार-वार हमको दुश्मन कहता है। हमें वार-वार दुश्मन कहकर वह हमारे साथ दोस्ती कैसे करेंगे? उसने दुश्मन होना हो तो उसकी इच्छा। हम तो चाहते हैं कि हम दोस्ती रखें। लेकिन इसी तरह से वह हमें दुश्मन-दुश्मन कहते रहें, तो दोस्ती नही हो सकती। मुहब्वत के लिए तो उन्हें अपनी चाल बदलनी पडेगी। हम तो

उनकी जगह पर जाना नही चाहते है, लेकिन वे हमारे काश्मीर मे जाकर घुस गए हैं। जब तक वे वहा से नही हटेंगे, तब तक दोस्ती की बात उनकी जबान पर अच्छी नही लगती। अब वे कहते है कि काश्मीर के बिना पाकिस्तान रह नही सकता। नही रह सकता, तो आओ पीछे। किसी ने रोका है? लेकिन हम वहा से हटनेवाले नही हैं। हम इस तरह से कभी नही हटेंगे।

मैंने आपसे कहा, अब आकर हम अपने नीचे की ओर देखें। बर्मा में देखें, मलाया मे देखें, चाइना मे देखें और साउथ-ईस्ट की सब जगहो को देखें। सब देशो मे आपस मे झगडा-ही-झगडा चलता नजर आता है। ऐसा ही अगर हिन्दुस्तान मे भी हुआ, तो हमने जो कुछ पैदा किया है, वह सब गुमा देंगे। ऐसा नही करना चाहिए। उसके लिए हमें क्या करना है? सब से जरूरी बात यह है कि हमें अपनी मध्यस्थ सरकार को और भी अधिक मजबूत बनाना चाहिए। हमारे कई लोग कहते है कि मध्यस्थ सरकार का कोई विरोध नही करता, इसलिए हमे उसका विरोध करना चाहिए। करो, ठीक है। विरोध करने मे कौन ना कहता है, करो। लेकिन विरोध करने का मतलब यह नही कि कोई काम ही नही होने देना चाहिए। अब देखो, हमारे जहाज आकर वहा बन्दरगाह पर पडे है। हमने परदेस मे अनाज मगवाया था, अब जहाज बम्बई के बन्दर मे आकर पडे है। अब वहा जो मजदूर डॉक पर काम करनेवाले है, वे आज हडताल पर चले गए है। और जहाज वहा पडे है। इधर मजदूर हडताल करता है और उधर जिन के पास अनाज पहुँचाना चाहिए वहा पहुँचा नही सकते। अब उनको कोई यह नही कहता कि भाई, हमारे हिन्दुस्तान की आर्थिक हालत ऐसी है कि थोडा-सा दुख बरदाश्त करो। अगर आप यह न करेंगे तो हमारे अपने लोग भूखे मरेंगे। जब आप हडताल करते है तो हजारो लाखो की भूख की परवाह नही करते। अब यहा तक कहते है कि रेलवे में हिस्सा करो। रेलवे मे लेबर का हिस्सा कर दो। पोस्ट आफिस चलता है, तो उसमें भी लेबर का हिस्सा कर दो। सब चीजो मे मजदूरो का हिस्सा कर दो। क्या दुनिया में किसी और जगह पर ऐसा हो गया है, जो अब हिन्दुस्तान में ही ऐसा करना है? कल ही तो हमारी गुलामी गई है। अभी तो हमारे पैर भी पूरी तरह मजबूत नही हुए। उसके पहले यह सब चीज एक साथ कर दो। यह कैसे हो सकता है? हम भी चाहते है कि हमारे मजदूर तगड़े हो और हमारे मुल्क में

किसी एक आदमी के पास अधिक धन न हो। हम तो चाहते है कि सबके पास चर्खा हो। लेकिन हमें समझना चाहिए कि कहां तक हम आज खडे हैं और कहा तक हमें जाना है।

तो मैंने कहा कि हमें अपनी मध्यस्थ सरकार को मजबूत बनाना चाहिए। साथ ही हमें अपनी रक्षा के लिए फौज भी चाहिए। हमारी लशकरी ताकत ऐसी होनी चाहिए कि जिस से हमें कोई डर न रहे। पहले जैसे हैदराबाद के कुछ लोगो ने सोचा था कि ये क्या लडेंगे, इनके पास तो कुछ है ही नही, वैसी बात फिर कोई सोच न सके। अब हमारे भीतर तो सब समझ गए। बाहर का भी खूब मजबूत होना चाहिए। तो वह कैसे मजबूत हो ? आज हमें फौज रखनी हो तो पुराने ढग की फौज से काम नही चलेगा। अब तीर या तलवार की लडाई नही रही है। जब हैदराबाद में हमारे टैक पहुँचे और उनकी आवाज सुनाई दी तब दुश्मनो के पेट में जो खाया था, सब हिलने लगा। वे सोचने लगे, यह तो हमने नही देखा था। हम तो रोज ऊपर से हवाई जहाज में पैसा खर्च कर के इतने हथियार बन्दूक लाए थे। लेकिन बन्दूक की गोली तो वे अभी चला नही पाए कि दूर से हमारी तोपों की आवाजें आने लगी। उन्होने सब ठडा कर दिया। हमने तो पहले ही कहा था, मगर तब किसी ने हमारी सुनी नही। इसलिए हमें नश्तर तो चलाना पडा, मगर हम ने इस तरह नश्तर चलाया, जिस से कम-से-कम खून निकले।

लेकिन यह जो हमारे पास सामान था, उसी प्रकार का सामान कहा से आता है ? और अपनी रक्षा के लिए हमें और भी क्या-क्या सामान चाहिए ? वह न हो, तो काम चलता नही है। उसके बिना आज की कोई फौज नही चल सकती। उसके बिना तो, जो रजवी का हाल हुआ, वही हाल हमारा भी हो। तो हमारे पास पूरा और अच्छा सामान चाहिए। वह सब सामान हिन्दुस्तान में बनना चाहिए। तो क्या-क्या सामान चाहिए ? आर्मी को ले जाने के लिए ट्रक्स चाहिए, बहुत-सी मोटर लौरी, और जीप्स चाहिए, बडे-बडे टैंक्स, जिसमें तोपे रहती है, चाहिए। ये बडी-बडी चीजें हिन्दोस्तान मे कहा होती है ? हमारे यहा तो अभी कोई चीज नही बनती। अगर परदेसी लोग भी हमको ये चीजें न दें, तो हम बेकार हो जाएँगे। इसलिए वह चीजें हमें अपने मुल्क में पैदा करनी है। तो वह सब पैदा कैसे हो ? उसका इल्म हम को जान लेना चाहिए कि उन्हे किस तरह से पैदा किया जाय। तो हमें और झगडा

छोडकर अपना यह जरूरी काम खुद करना है। अब यह जो ट्रक्स चलते है, मोटरें चलती हैं, उनको घोडे के समान पानी नही पिलाते, उनको पैट्रोल पिलाना पडता है। तो पैट्रोल कहा से लाना है? हिन्दुस्तान में तो बहुत थोटा-सा पैट्रोल है। जो है, उस को भी ठीक से निकालने का अभी तक कोई अच्छा इन्तजाम नही है। तो हम क्या करे? गैसोलीन हमारी धरती में काफी पटा है, लेकिन कौन निकाले उसे? आज तक हम तो एक ही इल्म सीखे थे कि चलो जेल में। दूसरी बात तो अभी तक हम सीखे ही नही। लडाई तो हमने बहुत की, लेकिन राज चलाने का काम इस तरह से नही चलता। यह बहुत ही कठिन और विचित्र काम है। सो यह चीज भी हमें इधर पैदा करनी है। अब फौज के लिए बारूद-गोला चाहिए, तोप-बन्दूकें चाहिएँ, यह सब पैदा कैसे हो? यह किसी को ख्याल नही कि गोला, बारूद कहा से आता है, उसका दाम कितना देना पडता है। फौज के लोगों के लिए यूनीफार्म चाहिए, कपडा चाहिए। आप के पास टुकडा हो न हो, धोती हो न हो, टोपी हो न हो, तो भी काम चल सकता है, पर फौज का काम नही चलेगा। फौज के सिपाहियो के पेट के लिए भी आपसे तीन गुना, चार गुना खाना जरूर चाहिए, तभी काम चल सकता है, नही तो नही चलेगा। क्योंकि जिससे लडाई का काम लेना हो, उसको इस कदर खाना जरूर देना चाहिए कि वह खूब तगडा रहे।

सब चीजें अगर हम अपने मुल्क में पैदा न करे तो हमारा काम नही चल सकता है। और यह सब पैदा करना हो, बारूद-गोला, बन्दूक, तोप, कारें, ट्रकें, जीप्स सब पैदा करनी हो, तो बडे-बडे कारखाने चाहिएँ। यह काम चर्खा से नहीं होता। चर्खा की जो फिलॉसफी गान्धीजी की है, वह अगर हिन्दुस्तान माने और दुनिया माने, तो दुनिया में कोई दुखी न रहेगा, न कोई भूखा रहेगा, न कोई नगा रहेगा। लेकिन वह हमने छोड़ दिया है। हम वह नही करते है। गान्धीजी ने बार-बार कहा कि हिन्दुस्तान में करोडो लोग बेकार पडे है। अगर ये सब एक घटा भी चर्खा चलाएँ तो और कपडे की जरूरत नहीं रहेगी। लेकिन वह माननेवाले नही है। यहा घर में पानी का नल लग गया तो कूएँ पर कोई जानेवाला नही है। ऐसी हालत हो गई है, तो हमें समझना चाहिए कि या तो गान्धीजी के रास्ते पर चलो, तब कुछ हो सकता है, या इस रास्ते पर चलो, जो दुनिया का रास्ता है। वह रास्ता यह है कि हमारा

घर मजबूत होना चाहिए और ऐसा नही होना चाहिए कि घर-घर हमारी लडकिएँ बिकती रहे। गैर लोग औरतो को उठा ले जाएँ और हम बेकार रोते ही रहें। इसके लिए हमें बन्दोबस्त करना है कि हमारी केन्द्रीय सरकार और हमारी आर्मी मजबूत हो। और अगर हमें अपनी आर्मी मजबूत रखनी हो, तो उसके लिए जितने सामान की ज़रूरत होती है, वह सब हमें इधर बनाना चाहिए और वह सब बनाने के लिए हमें कारखाने चाहिएँ।

तो इन कारखानो को कौन चलाए ? बहुत से लोग कहते है कि इन्हे नेशनलाइज़ करो। सब कारखानो को राष्ट्रीय कर दो। अरे, हम में तो अभी अपनी गवर्नमेंट चलाने की भी पूरी ताकत नही आई है। वह कारखाना चलाना तो फिर दिवाला निकालने की बात है। क्योकि हम वह इल्म जानते ही नही है। तो इसके लिए हमारे जो धनिक लोग हैं, उनको समझाना पडेगा। उनको साथ लेना पडेगा। सो खाली धन का साथ नही है। उनके दिमाग को भी साथ लेना पडेगा कि मिलो को कैसे चलाया जाए। अब भी तो हमारे यहा बडे-बडे कारखाने बने हुए है। सब चीज़ें हमने गुलामी में भी बनाई तो अब आज़ादी में इससे ज्यादा क्यो नही बना सकते ? बना सकते हैं। दुनिया भर में जितना इल्म है, उससे ज्यादा हमारे लोगो के दिमाग में है। लेकिन हम सगठित होकर चल नही सकते हैं। व्यक्तिगत अलग-अलग अपनी अपनी राय रखते हैं। वह नही होना चाहिए। हमें अपने समाज को सगठित करना चाहिए। तो इस सगठन के लिए पहले तो हमें निश्चय कर लेना चाहिए कि हम आपस में झगडा या फसाद नही करेंगे।

देश के हित की खातिर पाच साल मिल कर काम कर लो। हम लोग तो अब बुड्ढे हुए। हमारा काम तो देश को गुलामी से छुडाना था सो वह तो पूरा हो गया। लेकिन देश को उठाने के लिए नौजवान तैयार न हो तो फिर बहुत मुश्किल हो जाएगी। यह बात नही है कि हमारे नौजवानो में दिमाग न हो। उनका दिमाग तो बहुत तेज़ है। बल्कि वह ज्यादे तेज़ हो गया है, उसी से मुसीबत होती है। जब दिमाग ज़रूरत से ज्यादा तेज़ हो जाता है, तो हर चीज़ में गलती निकालने लगता है। हर बात की टीका करना या टिप्पणी करना और उस पर प्रैक्टिकल (व्यावहारिक) निगाह से न देखना एक बहुत बडा दोष है। किताब में क्या लिखा है, सिर्फ यही देखने से काम नही चलता। वह तो हाथ-पाव चलाने की बात है।

हमे अपने व्यापारी और धनिक लोगो से उनका इल्म भी लेना पडेगा, उनका साथ भी हमें लेना पडेगा। उनसे भी हम कहेगे कि आओ भाई, मुल्क जैसे हमारा है, वैसे तुम्हारा भी है। मुल्क मे आज बहुत मैदान पडा है, उसमें जितना काम आप कर सको, करो। परदेसियो के समय जितना तुम करते थे, इससे ज्यादा करने का मौका अब तुम्हे मिलेगा। हालत यह है कि धनी हम से डरते हैं। हमारा उनको भरोसा नही है। हम उनका भरोसा नही करते। इस तरह से काम नही चलेगा। हमे एक दूसरे पर विश्वास पैदा करना चाहिए। तभी काम चल सकता है। मजदूरों का धनिको के साथ झगडा, प्रान्त का प्रान्त के साथ झगडा। हम इसी तरह से आपस मे झगडा करते रहे, तो इस मे हमारे देश का काम न चलेगा। हम हिन्दुस्तान के किसी भी प्रान्त में रहते हैं, असल मे हम सब हिन्दुस्तानी है। हमारा यह प्रथम कर्तव्य है कि हम हिन्दुस्तान की रक्षा को मजबूत करें और हिन्दुस्तान की आजादी की पुष्टि करे। सब को एक साथ मिलकर दशहरे जैसे राष्ट्र के पर्व पर सकल्प करना है कि हम पहले जैसे खुशहाल थे, उसी प्रकार हम खुशहाल बनेगे और अपने देश को उठाएँगे। आप महाराष्ट्र और गुजरात के लोग दोनो यहा मिले है, वह तो एक गगा जमुना के सगम जैसा है। लेकिन हमे तो हिन्द सागर जैसा बनना है, जिस में भारत की सब नदियां मिलती है।

मुझे आशा है कि अब मुल्क में ईर्ष्या का जहर, या इसी तरह की कोई नीच भावना नही रहेगी और सब प्रेम से मिल-जुलकर अपना काम करेगे। इस तरह यहा ऐसा वायुमण्डल बनेगा, जिसमे हमें मुल्क को उठाने के लिए बहुत मौका मिलेगा। हमारे नौजवानो को बहुत काम करना है। हमने तो कोशिश करके जितना हम कर सकते थे, वह कर लिया। आज हमारे नौजवानो के लिए मैदान खुला पडा है। और उन्हे काम करने का बहुत मौका है। लेकिन अगर वे काम करना छोड देगे और ऐसा समझेंगे कि बस एक आर्टिकल लिख लिया या एक व्याख्यान दे दिया तो उस से काम न चलेगा। उससे कोई नेता-गिरी अब नही मिलेगी। लोग तो अब उसी को पसन्द करेंगे जो काम कर के दिखाए। तो स्वराज्य की बहुत जोखिमदारी है। गुलामी मे तो हमें एक ही रास्ते पर चलना था कि जिस किसी तरह परदेसी को हटाओ। लेकिन यह जो आपस मे झगडे की बात है, और आपस की कमजोरी है, हमारे खुद के भीतर की कमजोरी है उसको हटाना बहुत ही कठिन काम है। हमे अपने मे

अन्तर्दृष्टि पैदा करनी है और हमारे में जितनी कमज़ोरिया है उनको हटाकर हिन्दुस्तान को उठाने में ईश्वर का साथ मागना है। ईश्वर से प्रार्थना कर तथा गान्धी जी को याद कर हमें अपने मुल्क को उठाने के रास्ते पर चलना है। यही हमारा कर्तव्य है।

ईश्वर आपको इसमें सफलता दे।

---

(११)

चौपाटी, बम्बई

३० अक्तूबर, १९४८

बम्बई प्रान्तिक कांग्रेस समिति के प्रतिनिधि गण, बम्बई निवासी भाइयो और बहनो !

आप लोगो ने मेरे प्रति जो अद्भुत प्रेम दिखाया है, उसके लिए प्रथम तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि मैं आपका अत्यन्त ऋणी हूँ और आप का शुक्रिया अदा करता हूँ। जो बात भाई पाटिल ने मेरे बारे में आपके सामने कही है, उसके बारे में मैं आप का समय नही लूगा और कुछ नही कहूँगा। संक्षेप में मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि इन्सान कुछ नही कर सकता। जो कुछ होता है, वह तो इन्सान को प्रतीक लेकर होता है। करने वाली शक्ति जो उसके पीछे है, वह सामने नही आती। इसमें जो ईश्वर की इच्छा होती है, वही होता है। आज करीब एक साल के बाद मुझे आप लोगो के दर्शन करने का मौका मिला है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ और मागता हूँ कि आप लोगो का मेरे प्रति जो प्रेम है, जो सद्भावना है, मैं उनके लायक बनूं। अब मेरी उम्र भी काफी हो चुकी है और आराम करने का मेरा अधिकार हो गया है। लेकिन दिल चाहता है कि जो चन्द दिन बाकी है, उनमें भी कुछ काम हो जाए और हिन्दुस्तान किसी तरह से स्थिर हो जाए। हमारा देश मजबूत हो जाए और भविष्य में कोई खतरा न रहे, तो अच्छा है। इसलिए इन बचे हुए दिनो

में, जितनी भी हो सके मैं कोशिश करना चाहता हूँ। आप जानते है कि हिन्दुस्तान पर पिछले एक साल में बहुत मुसीबतें पडी है, हमें बहुत-सी कठिनाइयो में से गुजरना पडा है। हमको दिन-रात चिन्ता रहती थी कि यदि हम से कोई अपराध हो गया, तो हिन्दुस्तान नीचे गिर जाएगा। इसलिए हमें रात-दिन सावधान रहना पडता था।

किसी को जिस की उम्मीद नही थी, ख्याल तक नही था और न जिस का कोई मनसूबा ही था, ईश्वर की इच्छा से वही काम हो गया। जब मैंने हिन्दुस्तान के दो टुकडे मजूर किए, तब मेरा दिल दर्द से भरा हुआ था और मेरे साथियों की भी यही हालत थी। हम लोगो ने राजी-खुशी से इस चीज को स्वीकार नही किया। हमने लाचारी से इसे कबूल किया। तो भी वह सच्चे दिल से किया। क्योकि हमारे दिल में कोई पाप नही था। हम चाहते थे कि हम जब साथ नही रह सकते, तो अलग ही हो जाना ठीक है। और हमने यह भी देखा कि अगर आज अलग नहीं होंगे, तो हिन्दुस्तान के दो टुकडे तो क्या टुकडे टुकडे होने जा रहे है, जिसका परिणाम बहुत बुरा होगा। हमने जो हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता के लिए इतने साल कोशिश की, हमारी वह सारी कोशिश मिट्टी में मिल जाएगी और हमको आजादी नही मिल सकेगी। क्योकि तब हम आपस मे बुरी तरह से लड रहे थे। जहा-जहा मौका मिल्ता था, वहा एक दूसरे की जड काट रहे थे। इस हालत में मुल्क का आज़ाद होना मुश्किल था। तब हमारे सिर पर एक तीसरी सत्ता बैठी थी, जो उसका पूरा फायदा उठाती थी। हमने सोचा कि हमारा प्रथम कर्तव्य है कि इस सत्ता को यहा से हटा दिया जाए और जितनी भी जल्दी हो सके उसे हटाया जाए। उसके लिए जितनी भी कीमत अदा करनी पडे, हम देंगे। इसलिए हमने यह मजूर कर लिया कि यदि हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता चन्द दिनो में स्वीकार हो जाए और विदेशी हुकूमत यहा से जल्दी हट जाए, तो हम इस प्रकार के टुकडे हजम कर लेगे। और हमने उन्हे हजम भी कर लिया।

उसका जो कुछ परिणाम हुआ, हमने भोग लिया। बहुत लोगो को कष्ट हुआ और आज भी हो रहा है। एक ज़िन्दा अवयव हमारे शरीर से काट लिया गया। हमारे अग से बहुत सा खून गिरा, बहुत नुकसान हुआ। लेकिन जो नुकसान होनेवाला था, उससे बहुत कम हुआ। उसका ख्याल मैंने अपने दिल में पूरा-पूरा रखा। इसलिए आज भी, जबकि मैंने यह विभाजन स्वीकार किया था,

उस समय का ख्याल करता हूँ तो मेरे दिल में कोई पश्चात्ताप नहीं होता। पहले मेरा ख्याल कभी यह टुकड़े मंजूर करने का नहीं था। लेकिन गवर्नमेंट में आने के बाद जब मैंने तजुर्बा किया तो समझ में आया कि अगर यही हालात रहे तो जिस तरह जो चीज़ है, वैसे ही चलती जाएगी, और हमारे साथ कुछ भी न रहेगा। तब हमने सोच-विचार कर यह काम किया कि पाकिस्तान के नेता लोग ही, जिस पाकिस्तान को एक प्रकार से 'चूहों का खाया हुआ पाकिस्तान' (मोथ-इटन पाकिस्तान) कहते थे, उसी पाकिस्तान को हमने मंजूर कर लिया। इसका क्या मतलब है? वे उसे क्यों कबूल कर लेते हैं? हमारे दिल में इसका पूरा चित्र था। हमने सोचा कि उनकी नीयत बुरी है और ठीक नहीं है। इस चीज़ को कबूल कर फिर आक्रमण करने की उनकी नीयत है। उसके लिए हमारा पूरा इन्तजाम होना चाहिए और वह भी ऐसा कि जिसमें उन्हें किसी प्रकार की सफलता न मिले। इसके पीछे उनका साथ देनेवाले बाहर के लोग थे। बड़े-बड़े लोग थे, बड़ी-बड़ी शक्तियां थीं। उनके साथ पाकिस्तान कबूल कराने में जो लोग थे, उन्होंने पीछे भी उन का साथ दिया। लेकिन जब हमने यह चीज़ देखी कि उनकी नीयत साफ नहीं है, तो हमने भी पूरी तैयारी की।

हमारे पास पांच छः सौ रियासतें थीं। इतनी रियासतों के अलग-अलग टुकड़े हो जाते, तो देश नष्ट हो जाता। ऐसी हालत थी कि तब हिन्दुस्तान के पास कोई चीज़ न थी। पुरानी हुकूमत ने हमारे साथ एक प्रकार का समझौता किया था, उसमें यह चीज़ थी कि जो सार्वभौम सत्ता थी, वह खतम हो गई और राजाओं को छूट हो गई कि वह चाहें तो हिन्दुस्तान के साथ रहें या चाहें तो अलग रहें। इस मामले में हमने यह कभी नहीं सोचा था कि छोटे-छोटे राजा भी हिज़ मैजस्टी बन जाएंगे। कोई कोई तो अपने को हिज़ मैजस्टी कहने भी लगे। इस चीज़ से हमें सबसे बड़ा खतरा था। ईश्वर की कृपा से बहुत से राजाओं में अपने देश के प्रति प्रेम भावना थी। उन्होंने भली बुरी कोई भी बात की हो, पर उनकी नीयत अच्छी थी। हमने भी माना और उन्होंने भी कि हिन्दुस्तान के साथ रहना अच्छा है। जिन लोगों ने बाहर जाने की कोशिश की, उन्होंने धक्का खाया।

इस तरह से १५ अगस्त के पहले ही हमने सारे राज्यों को हिन्दुस्तान में शरीक होने के लिए राजी कर लिया। केवल तीन राज्य ही बाहर रहे। एक जूनागढ़, दूसरा हैदराबाद और तीसरा काश्मीर। अब जब झगड़े की कोई और

चीज़ बाकी न रही, तो पाकिस्तान ने इन तीनो राज्यो में अपना हाथ डाला। हमने बहुत कहा कि आपको अपना अलग हिस्सा मिल जाने के बाद आप का हमारे घर में हाथ डालना चोर डाकुओ का काम है, उसका नतीजा अच्छा नही होगा। लेकिन वह नही माने और जूनागढ मे जा कर नवाब से दस्तखत करवाए। हमने कहा कि जिन लोगो ने नवाब से दस्तखत करवाया, वही उसकी रक्षा करें, हम नही करेंगे। खुदा के यहा उनको इसका जवाब देना पडेगा। उस बेचारे नवाब को यहाँ से ले जाकर कैदी बनाकर छोड दिया। यहाँ की आज़ादी से पाकिस्तान की जेल उसे ज्यादा पसन्द होगी, ऐसा मेरा ख्याल है।

उसी समय काश्मीर में भी इस प्रकार की कार्रवाई हुई कि जो लोग फ्रांटियर के बाद बोर्डर (सीमा) पर थे, जो ट्राइबल एरिया मे रहते थे, उन्हे बहकाया और काश्मीर में भेजा। जिसकी लडाई अभी तक चलती है। पहले तो ट्राइबल पीपुल (सरहदी लोगो) को वहाँ भेजा, क्योकि सरहद का काम बडे खतरे का था। सरहद की हालत ऐसी थी कि आज तक किसी तरह से लालच, रिश्वत और जिस किसी तरह समझा-बुझा कर इतने साल अपना काम चलाया गया था। अब जब अँग्रेज हट गए और पैरामाउट पावर खत्म हो गई, तो उसके बाद यह ट्राइबल पीपुल पाकिस्तान के ऊपर नजर करने लगे। अब पाकिस्तान ही की उन्हें सभालने की जिम्मेवारी थी। हमारी तो थी नही। उनके पास सामान पूरा था या नही, यह तो हमें नही मालूम, पर पाकिस्तान ने उन्हे हमारे ऊपर काश्मीर में भेज दिया। अब बहुत से लोग, जो बाहर के हैं, जो पूरी हालत समझ नही सकते हैं उनका यह कहना था कि जिस जगह ज्यादातर मुसलमान हो, वह पाकिस्तान का ही हिस्सा है, ठीक नही है। क्योकि हमारे अपने मुल्क में चार करोड मुसलमान रहते है। इतने मुसलमान जहाँ रहते हो, वहाँ का राज्य साम्प्रदायिक हो ही नही सकता। हम किसी दूसरे सम्प्रदाय के साथ ऐसा व्यवहार नही कर सकते, जैसा कि मजहबी राज्यों में होता है। हमारे साथ काश्मीर में ज्यादा मुसलमान है। उन्ही लोगो से काश्मीर की लडाई चल रही है, यह आप जानते ही हैं। और इसमें पाकिस्तान की ख्वारी हो रही है। पहले तो वे इस लडाई में भाग लेने की बात से ही इकार करते थे। अब उन्होने अपना लश्कर ही रख दिया है। हमारा तो उधर पडा ही है।

तीसरी जगह हैदराबाद थी। वहाँ भी पाकिस्तान ने हाथ डाला, हालाकि वहाँ भी उनका कोई सम्बन्ध नही था। बस, हिन्दुस्तान को हैरान करना

और हिन्दुस्तान को छिन्न-भिन्न करना ही उनकी नीयत थी। पहले तो कहते थे कि हमारा तो कोई इन्ट्रैस्ट (हित) है ही नही, हम कुछ नही जानते। किन्तु जब आहिस्ता-आहिस्ता सब भेद खुल गया, तो उससे मालूम पडा कि हैदराबाद का प्राइम मिनिस्टर ही एक प्रकार से पाकिस्तान का प्रतिनिधि था।

हैदराबाद ने जब हमारे साथ समझौता किया, तो वह ऐसा था कि जैसा हमने किसी और राजा के साथ नही किया था। उसमे हमने बहुत उदारता दिखाई थी। उधर उनका पाकिस्तान को २२ करोड रुपया देने का मशवरा भी जारी था। इस तरह हमारे साथ धोखेबाजी की। तो भी जब तक लार्ड माउट-बैटन यहाँ थे, हमने हैदराबाद का मामला उनकी मर्जी पर छोडा था। क्योकि ब्रिटिश गवर्नमेंट की नीति ऐसी थी कि शुरू से हैदराबाद के साथ अलग बर्ताव किया गया था। तो जहाँ तक हो सका, हमने भी उदारता का व्यवहार करने की कोशिश की। लेकिन गवर्नर जनरल के जाने के आखिरी दिन तक उम्मीद थी कि वह इग्लैण्ड जाने से पहले खुद हैदराबाद जाकर निजाम से कागजात पर दस्तखत करवा लाएँगे। वह नही हुआ और इसका उसे बहुत दुख था। गवर्नर जनरल के जाने के बाद इस चीज का फैसला हमे तो करना ही था। किन्तु जब हम फैसला करने की सोच रहे थे, तब वह पाकिस्तान सरकार की मदद से और इग्लैण्ड मे उनके जो साथी और साथ देनेवाली शक्तियाँ थी, उनकी मदद से, यूनाइटेड नेशन्स आर्गेनाईजेशन की सिक्योरिटी कौंसिल मे जाने का छिपा बन्दोबस्त कर रहा था। इस बीच गोआ पोर्ट खरीदने की भी उसने कोशिश की। बाहर के मुल्को से आर्म्स और एम्यूनीशन (हथियार और गोला-बारूद) लाकर भरने की कोशिश भी की गई। किसी तरह की कोर-कसर नही रखी गई। इन सब का कौन जिम्मेवार है, उसका फैसला आज नहीं होगा।

खुद निजाम साहब कहते है कि उनको तो एक कैदी बना कर इन लोगो ने यह सब काम किया। इन बन्दी बनाने वाले मे उनके प्रीमियर आदि भी थे। अब खुद ही यह भी कहते है कि उन्हें यू० एन० ओ० मे नही जाना है, और जो प्रतिनिधि उनकी तरफ से सिक्योरिटी कौंसिल में गए है, उनको वापस लौट आना चाहिए। इन प्रतिनिधियो को जो रुपया दिया गया था, उसमे से जो खर्च होने से बाकी बच रहा, वह पाकिस्तान के हाई कमिश्नर के नाम कर दिया गया। अपना कुटुम्ब तो उस प्रतिनिधि ने पहले ही पाकिस्तान भेज दिया था। इस प्रकार की नियत से तो वहाँ काम चल रहा है। उस पर तुर्रा यह

कि वह शान्ति चाहते है, सुलह चाहते है, मुहब्वत चाहते हैं। इन वातो का कोई मतलब नही निकलता। मै एक और चीज़ भी वता देना चाहता हूँ कि हमने अभी तक पाकिस्तान के खिलाफ या उससे लडने का कोई काम नही किया।

चाहे हैदरावाद हो, या काश्मीर, जूनागढ हो या और कोई और, किसी भी हालत में कोई वाहर की शक्ति हमारी आन्तरिक व्यवस्था में दखल नही दे सकती। चाहे हिन्दुस्तान खत्म हो, या पाकिस्तान खत्म हो, या दुनिया खत्म हो जाए, हम किसी का दखल वर्दाश्त नही कर सकते। हमने पाकिस्तान सच्ची नीयत से कवूल किया है और आज तक भी हमारी नीयत साफ है और हम उसका भला ही चाहते है। वह अगर खुद अपने हाथो से अपना खड्डा खोदना चाहते हो, तो उसमें वे गिरें, उसमें भी हम अलग रहेगे। मै आज भी यही बात कहता हूँ।

लोग मुझसे कहते है कि हैदरावाद का क्या करोगे। कोई कहता है कि उसके टुकडे-टुकडे कर दो और आसपास के तीन प्रान्तो मे मिला दो। कोई कहता है कि निज़ाम को उठा दो। कोई कहता है कि रेस्पासिबल गवर्नमेंट (उत्तरदायी सरकार) वना दो। सब अपनी-अपनी राय देते है। ठीक बात है। हम सव सुनते है और सोचते है। लेकिन एक वात पक्की है कि हैदरावाद के लोगो और हैदरावाद की जनता का भला जिस चीज में है, हम वही काम करेंगे। इसका फैसला भी जनता ही करेगी। हम उससे अलग नही हो जाएँगे।

एक दूसरी बात भी पक्की है कि निज़ाम को रखने के लिए या निज़ाम की डाइनेस्टी (वंश) रखने के लिए, या निज़ाम का कोई भी इन्ट्रेस्ट (हित) रखने के लिए यदि कोई वाहर वाला मदद करेगा, तो पहले उसे हमसे लडना होगा। इससे हम डरते नही हैं। यह हमारा आन्तरिक मामला है, हमारे घर का मामला है। चर्चिल हो या कोई उससे भी वडी शक्ति हो, हम उसे बर्दाश्त नही करेंगे। हमें काश्मीर के मामले में आज भी कहा जाता है, जब वहाँ के मुसलमान चाहते है, तो हिन्दुस्तान क्यो बीच में पडता है। यदि काश्मीर के मुसलमान आज हमसे कह दें कि हम चले जाएँ, तो हम तुरन्त वहाँ से हट जाएँगे। क्योकि हम कवूल करते है कि काश्मीर में मुसलमान ज्यादा हैं। पर जव कि काश्मीरी मुसलमान ही हमसे कहते है कि उन्हें हिन्दुस्तान में रहना है,

तो हम मुसलमानों के साथ धोखाबाजी कैसे कर सकते हैं? हमने वादा किया है कि अगर वह हिन्दुस्तान में रहना चाहते हैं, तो हिन्दुस्तान ख्वार ही क्यों न हो जाए, हम उनका साथ नहीं छोड़ेंगे। इस तरह से जब काश्मीर की प्रजा, हिन्दू और मुसलमान दोनों और वहाँ का राजा चाहता है कि वह हिन्दुस्तान में रहे, तो इंग्लैण्ड में रहने वाले टोरी हो या लिबरल, या कोई और शक्ति हो, उसे बीच में पड़ने का कोई अधिकार नहीं है, और न हम किसी की सुनेंगे। कोई चाहे लाख कोशिश करे। हमें बड़ा अफसोस होता है कि हिन्दोस्तान के हर मामले में, वह जहाँ चाहते हैं, दखल देते हैं। इसलिए मैं साफ कर देना चाहता हूँ कि जब तक यह लोग नहीं समझेंगे कि हिन्दुस्तान अब आज़ाद है, तब तक हमारा उनका साथ रहना बहुत कठिन है।

हम उनकी भी मुहब्बत चाहते हैं, क्योंकि हम दुनिया भर की मुहब्बत चाहते हैं। मगर मुहब्बत इन तरीकों से कायम नहीं रहती। यदि इसी तरह हमारी आन्तरिक व्यवस्था में दखल दिया गया, तो हमारे सामने यह प्रश्न होगा कि हम अपनी व्यवस्था कैसे करें। लोग कहते हैं हमें कॉमनवेल्थ में रहना चाहिए। खैर, अब तो हमारे प्रधान मन्त्री वहाँ गए हैं। वह जब आएँगे, तो सब चीज़ हमारे सामने रखेंगे। तब हम देखेंगे कि हिन्दुस्तान के हित में क्या चीज है। हमारे सामने पहला सवाल यही रहेगा कि हिन्दुस्तान की भलाई की दृष्टि से जो बात ठीक हो, वही की जाए।

यदि चर्चिल का यह ख्याल है कि हिन्दुस्तान को बचाने वाला वही है, तो मेरा कहना यह है कि उसको भी यह फैसला कर लेना चाहिए कि अपने इंग्लैण्ड को बचाएँ। क्योंकि वे दिन अब चले गए। वह खुमारी और वह मगरूरी के दिन अब चले गए। आज दुनिया दूसरी तरह से चल रही है। अगर सारी दुनिया एक दूसरे के साथ मिल कर मुहब्बत, सचाई और इन्साफ से नहीं चली, और दुनिया के देश गान्धी जी के बताए रास्ते पर न चले, तो दो लड़ाई तो यह दुनिया जिस किसी तरह बर्दाश्त कर सकी, पर तीसरी बरदाश्त न कर सकेगी। दुनिया खत्म हो जाएगी। दुनिया का नाश हो जाएगा। इस तरह से किसी का काम नहीं चलेगा।

दूसरी एक बड़ी चीज यह है कि हमारे ऊपर जो पाकिस्तान के कारण आपत्ति आई, उसे हम भूल नहीं सकते। उससे दुनिया भर में हमारी बदनामी हुई, यह भी हम नहीं भूल सकते। लेकिन उससे ज्यादा जो हमारे ऊपर

काश्मीर और हैदराबाद का भारी सकट पडा, उसमें सबसे बडा हैदराबाद का था। जिसके कारण हमारे देश के अन्दर की कौमी हवा इतना बिगड रही थी कि उसको ठीक करने में बहुत दिक्कत मालूम हो रही थी। यह सब हमने किसी-न-किसी तरह समाल लिया। बीच में और भी आपत्तियां आई कि उनसे बचाव करना कठिन हो गया। देश में ऐसी कारवाही हुई कि गान्धी जी की मृत्यु इस प्रकार से हुई। हमें बडी शर्म से कबूल करना पडता है कि इस तरह की बात से हमें बहुत नुकसान हुआ। जिसे हम सुधार नही सकते। एक तो विभाजन की आफत, और दूसरी बापू के मरने की। जिस समय हमें उनकी सलाह, उनके साथ और उनके आशीर्वाद की सबसे अधिक ज़रूरत थी, उसी समय वह हमसे छिन गए। लेकिन मुझे कहना पडेगा दुनिया की दृष्टि मे और उनकी अपनी दृष्टि में, यह मृत्यु जिस तरह हुई, बहुत बहादुरी की मृत्यु थी। काश कि मेरी भी ऐसी ही मृत्यु हो। जिन लोगो ने ऐसा किया, उनको अगर पश्चात्ताप न होगा, तो उनका किसी तरह भी कल्याण नही होगा और साथ ही हमारा भी। यह बहुत बडी आपत्ति थी, जिसमें से हम अभी गुज़र कर आए है।

हैदराबाद में इतनी ज़बर्दस्त आपत्ति होते हुए भी सारे हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमानो में कोई फिसाद न हुआ। इसका मतलब यह है कि हिन्दुस्तान में रहने वाली दोनो जातियो में परस्पर एक प्रकार का विश्वास पैदा हो गया है, और हम शान्ति से अपना काम कर सकते है। अब हम यह चाहते हैं कि इन अनुभवो से पाकिस्तान वाले भी समझदारी से काम ले और हमारे मामलो में दखल न दें। क्योकि उनके दखल देने से हिन्दोस्तान में रहने वाले मुसलमानो को परेशानी होती है। पाकिस्तान की तरफ से उन्हे कोई मदद तो मिलती नही, और उल्टा नुकसान होता रहता है। इससे हमको भी नुकसान होता है, क्योकि उस हालत में हम अमन और चैन से बैठ कर कोई काम नही कर सकते।

एक बरस में हमने जो काम किया, वह तो ठीक ही है। समझो तो यह मैं एक सफाई दे रहा हूँ। हाँ, तो हमने हिन्दुस्तान को एक बना दिया। पर इसी से काम नही बनता। अभी तो हमें एक मजबूत एकता की जरूरत है। अभी क्या आप कह सकते है कि एक साल में जो सारा नक्शा बदला है, वह पक्का बन गया है ? उसका एक ही उदाहरण मैं देता हूँ। जब गान्धी जी की मृत्यु हुई, तब कोल्हापुर स्टेट के राजा के हाथो से हमने सत्ता ले ली थी और वहाँ

मन्त्रिमण्डल बनाया था। वहां जो लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल बना, उसने क्या काम किया, और वहां लोगो का क्या हाल हुआ, यह सब आप जानते ही होंगे, क्योंकि आप लोग तो पास मे ही रहते है। वहां जितने भी ब्राह्मण थे, उन सबके चुन-चुन कर मकान जलाए गए। उनकी माल मिलकियत की लूट हुई। आस-पास की छोटी रियासतो मे भी ब्राह्मणो को काफी परेशान किया गया। करोडो का माल लूट लिया गया और बहुतो को जान से मार डाला गया। यह सब इसलिए किया गया, क्योंकि गान्धी जी का खून करने वाला एक ब्राह्मण था। यदि इसी प्रकार हमने काम किया, तो काम नही चलेगा। इससे तो पहले के हिन्दुस्तान का नक्शा ही अच्छा था। तो जिन लोगो ने अपने हाथ मे सत्ता ली है, वह सत्ता किस तरह से चला रहे है यह भी देखना है। वहां के राजा की सम्मति से हमने एक कमेटी बनाई और एक हाई कोर्ट के जज को जांच के लिए भेजा। उस कमीशन की रिपोर्ट और समरी प्रकाशित हुई। उस रिपोर्ट से आपको पता लगेगा कि वहां मिनिस्ट्री ने किस तरह से काम चलाया। अगर इसी तरह से राजाओ के हाथ से सत्ता लेकर हम काम चलाएँगे, तो हमारे लोग अंग्रेजो को याद करने लगेंगे कि इससे तो हमारा गुलाम देश अच्छा था।

अभी तक हमने जो कुछ किया है, वह एक प्रकार से अच्छी खेती के लिए खेत साफ करने के बराबर है। पर अब भी खेत बोने के लिए काफी काम करने को बाकी पड़ा है। आज हमने राजाओ के हाथ से सत्ता लेकर प्रजा के प्रतिनिधियो को दे तो दी है, पर वहां किस प्रकार काम चलता है और हमारी वहां क्या-क्या जिम्मेवारी है और कितनी हद तक जिम्मेवारी पूरी हो रही है, अगर यह सब हम सोचें, तो हमें धक्का लगेगा। इसीलिए हमारे सामने अभी जो काम करने को बाकी है, वह बहुत बडा है। अभी तो हमने केवल शुरुआत भर की है। जो कुछ हमने किया है, वह भी बडी बात है, लेकिन इतनी बडी नही कि जो काम बाकी रहा है, उसे हम भूल जाएँ। अभी तो हमारे पास सांस लेने का भी समय नही है, आराम का समय नहीं है। यह सोचने का भी समय नही है कि हमारी आयु कितनी है। अभी तो रात-दिन हमें काम करना है। तभी हिन्दुस्तान उठ सकता है, नही तो वह गिर जाएगा।

हिन्दुस्तान कितने साल के बाद आज़ाद हुआ है? जब इतनी सदियो के बाद हमारे पास आज़ादी आई है, तो हमें देखना यह है कि क्या कर्तव्य हमें बांधता है। हमें यह भी देखना चाहिए कि हमारे आस-पास क्या हालत है।

हमारे पडोस में ब्रह्मा, मलाया, हिन्दचीन और चीन हैं। वहाँ क्या आप शान्ति देखते हैं ? आस-पास शान्ति नही है। साथ ही हमारे पडोसी की नीयत भी अच्छी नही है। तो इस प्रकार के वातावरण से जहर पैदा होता है। मैं वम्वई निवासियो के सामने इस चीज़ को वडे सकोच के साथ रखता हूँ। यह मेरा पर्सनल (व्यक्तिगत) कार्य नही है। लेकिन आज हमें मुल्क के प्रान्तो को ठीक रूप में अलग करना है। लोग कहते हैं कि यह काम तुरन्त करो, जिस तरह हो सके, करो। यह करने में भाषा की मर्यादा भी नही रखनी है। कुछ लोग ऐसा कहते है कि वम्बई को वर्लिन वना दो। इसका मायना यह है कि हम हिन्दोस्तान को खत्म करेंगे। यह तो ऐसी वात हुई कि लक्ष्मी तिलक करने आई, तो हम कपाल धोने के लिए चले गए। मेरी वडे अदव से आपसे प्रार्थना है कि आप यह सोचें कि जव हम गुलाम थे, तव तो वडी मुहब्बत से रहते थे और जव आज़ाद हुए, तव आपस में क्यो लड़ें ? मैं अखवार वालो से और आप सभी से प्रार्थना करता हूँ हमें इस तरह काम नही करना चाहिए। इस रास्ते से हमारा हिन्दुस्तान गिर जाएगा और हमारी भविष्य में आनेवाली प्रजा हमें श्राप देगी कि हम ऐसे लोग थे कि एक महान पुरुष ने अपनी तपस्या से हिन्दुस्तान को आज़ादी दिलवाई और अपना प्राण समर्पण कर दिया और जव आज़ादी मिल गई, तव हम ऐसे गल्त रास्ते पर चले। ऐसा नही होना चाहिए। जो काम हमने एक साल में किया, उसके वारे में वडी-वडी वातें करने से काम नही चलेगा। आगे क्या करना है, यह भी हमें देखना है। जो कोई अपनी पुरानी पूजी पर ही खाता खोलता है और पूजी का सही उपयोग नही करता है, वह आखीर में इन्सालवेंट (दिवालिया) हो जाता है। तो तुरन्त ही हमें यह सोचना चाहिए कि हमारा दूसरा कदम क्या होना चाहिए।

आज हमारे सामने सवसे वडा प्रश्न क्या है ? सवसे वडा प्रश्न तो हिन्दुस्तान की शान्ति है, जिसमें हमें काफी कामयावी भी मिली है। फिर भी इस शान्ति को मज़बूत वनाओ। उसके लिए आपस में स्नेह, प्रेम और मेल चाहिए। दूसरा वडा प्रश्न वहुत विकट है। उसी से हम सवसे ज्यादा परेशान हैं। वह यह है कि हिन्दुस्तान मे जितना अनाज चाहिए, उतना नही है, इसलिए वाहर से लेना पडता है। इस काम के लिए हमें नाक वन्द करके दाम देना पडता है, सो देते है। करोडो रुपया हमें वाहर देना पडता है और वहुत सा रुपया जहाज के किराये पर ही लग जाता है। करीव १५, १६ करोड रुपया तो अनाज लाने

का किराया ही होता है। हमारे पास और जरूरी सामान भी नही है। यदि आज हमारी सामर्थ्य होती, तो हमने अपने जहाज क्यो न बनाए होते ? हमारे पास धन हो, तो बाहर से जहाज खरीद कर ही क्यो न ले ले और उनका उपयोग करे। किराये में हमारे जहाज निकल आएँगे, इतना फायदा हमे मिल जाएगा। पर हम ऐसा काम नही करते। ऐसी चीजे नही सोचते। ऐसी बहुत सी और बातें भी है।

हम अनाज क्यो नही पैदा करते ? अनाज और कपडा दो चीजे हमें चाहिए। हमारे मुल्क मे खाने को रोटी और पहनने को कपडा ये दो चीजे हो जाएँ, तो हम और मुसीबतो को बरदाश्त कर सकते है और चैन से रह सकते है। इतना शान्तिप्रिय हमारा मुल्क है। कपडा भी हमारे पास पूरा नही है और इसी कारण उसका दाम बढता जाता है। जितना कपडा हम पैदा करते है, उसे सबको पहुँचाने के लिए जिस तरह से व्यवस्था करनी चाहिए, वह भी नही होती। उसके लिए हमे क्या करना है ? उसके लिए हम कंट्रोल करते है। कंट्रोल के खिलाफ बहुत लोग है। कुछ लोग पक्ष में भी है। अगर हम कंट्रोल उठाते है, तो कई लोग भाव बढा कर फायदा उठाते है। कई लोग गुस्सा होते है। अभी हमारी एक साल की ही गवर्नमेंट है। इसे अपनी व्यवस्था ठीक रखनी है, शान्ति रखनी है और साथ ही इन चीजो का भी प्रबन्ध करना है।

पुरानी गवर्नमेंट की जो मशीनरी थी, वह तो टूट गई। पिछले २०० साल से जो गवर्नमेंट चलती थी, वह सिविल सर्विस के एक ढाँचे पर चलती थी, जिसे स्टील फ्रेम कहते थे। उससे मशीन ठीक चलती थी, क्योकि वह उसी काम के लिए बनाई गई थी। लेकिन जब सत्ता हमारे पास आई, तब इस मशीन के दो टुकडे हो गए। परदेसियो का एक टुकडा तो चला गया। क्योंकि ५० से ५५ प्रतिशत उनमें परदेसी थे, वह चले गए। हम लोगो ने हिन्दुस्तान के दो टुकडे किए थे, उनमे कई दूसरे टुकडे मे चले गए। बाकी थोडे से लोग बच रहे। हमने हर जगह अपनी एम्बेसी (दूतावास) बनाई, अपने-अपने एम्बेसेडर (राजदूत) बनाए। कई उसमे चले गए। हमारे पास बहुत कम आदमी बच रहे। इसीलिए बहुत कम आदमियो से ही हम काम चला रहे है। कुछ लोग कहते है कि सिविल सर्विस वाले लोग पुराने ढग से काम करते है। वह कुछ ठीक काम नही करते। लेकिन जिन लोगो को अनुभव

हमारे पडोस में ब्रह्मा, मलाया, हिन्दचीन और चीन है। वहाँ क्या आप शान्ति देखते हैं ? आस-पास शान्ति नही है। साथ ही हमारे पडोसी की नीयत भी अच्छी नही है। तो इस प्रकार के वातावरण से जहर पैदा होता है। मैं बम्बई निवासियो के सामने इस चीज को बडे सकोच के साथ रखता हूँ। यह मेरा पर्सनल (व्यक्तिगत) कार्य नही है। लेकिन आज हमें मुल्क के प्रान्तो को ठीक रूप में अलग करना है। लोग कहते हैं कि यह काम तुरन्त करो, जिस तरह हो सके, करो। यह करने में भाषा की मर्यादा भी नही रखनी है। कुछ लोग ऐसा कहते है कि बम्बई को वर्लिन बना दो। इसका मायना यह है कि हम हिन्दोस्तान को खत्म करेंगे। यह तो ऐसी बात हुई कि लक्ष्मी तिलक करने आई, तो हम कपाल धोने के लिए चले गए। मेरी वडे अदब से आपसे प्रार्थना है कि आप यह सोचें कि जब हम गुलाम थे, तब तो बडी मुहब्बत से रहते थे और जब आजाद हुए, तब आपस मे क्यो लडें ? मैं अखबार वालो से और आप सभी से प्रार्थना करता हूँ हमे इस तरह काम नही करना चाहिए। इस रास्ते से हमारा हिन्दुस्तान गिर जाएगा और हमारी भविष्य में आनेवाली प्रजा हमें श्राप देगी कि हम ऐसे लोग थे कि एक महान पुरुष ने अपनी तपस्या से हिन्दुस्तान को आजादी दिलवाई और अपना प्राण समर्पण कर दिया और जब आजादी मिल गई, तब हम ऐसे गल्त रास्ते पर चले। ऐसा नही होना चाहिए। जो काम हमने एक साल में किया, उसके बारे में बडी-बडी बातें करने से काम नही चलेगा। आगे क्या करना है, यह भी हमें देखना है। जो कोई अपनी पुरानी पूजी पर ही खाता खोलता है और पूजी का सही उपयोग नही करता है, वह आखीर में इन्सालवेंट (दिवालिया) हो जाता है। तो तुरन्त ही हमें यह सोचना चाहिए कि हमारा दूसरा कदम क्या होना चाहिए।

आज हमारे सामने सबसे बडा प्रश्न क्या है ? सबसे बडा प्रश्न तो हिन्दुस्तान की शान्ति है, जिसमें हमें काफी कामयाबी भी मिली है। फिर भी इस शान्ति को मजबूत बनाओ। उसके लिए आपस में स्नेह, प्रेम और मेल चाहिए। दूसरा बडा प्रश्न बहुत विकट है। उसी से हम सबसे ज्यादा परेशान हैं। वह यह है कि हिन्दुस्तान में जितना अनाज चाहिए, उतना नही है, इसलिए बाहर से लेना पडता है। इस काम के लिए हमें नाक बन्द करके दाम देना पडता है, सो देते है। करोडो रुपया हमें बाहर देना पडता है और बहुत सा रुपया जहाज के किराये पर ही लग जाता है। करीब १५, १६ करोड रुपया तो अनाज लाने

का किराया ही होता है। हमारे पास और जरूरी सामान भी नही है। यदि आज हमारी सामर्थ्य होती, तो हमने अपने जहाज क्यो न बनाए होते ? हमारे पास धन हो, तो बाहर से जहाज खरीद कर ही क्यो न ले ले और उनका उपयोग करे। किराये में हमारे जहाज़ निकल आएँगे, इतना फायदा हमे मिल जाएगा। पर हम ऐसा काम नही करते। ऐसी चीज़ें नही सोचते। ऐसी बहुत सी और बाते भी है।

हम अनाज क्यो नही पैदा करते ? अनाज और कपडा दो चीजे हमें चाहिए। हमारे मुल्क मे खाने को रोटी और पहनने को कपडा ये दो चीज़ें हो जाएँ, तो हम और मुसीबतो को बरदाश्त कर सकते है और चैन से रह सकते है। इतना शान्तिप्रिय हमारा मुल्क है। कपडा भी हमारे पास पूरा नही है और इसी कारण उसका दाम बढता जाता है। जितना कपड़ा हम पैदा करते है, उसे सबको पहुँचाने के लिए जिस तरह से व्यवस्था करनी चाहिए, वह भी नहीं होती। उसके लिए हमे क्या करना है ? उसके लिए हम कट्रोल करते है। कट्रोल के खिलाफ बहुत लोग है। कुछ लोग पक्ष में भी है। अगर हम कट्रोल उठाते है, तो कई लोग भाव बढा कर फायदा उठाते है। कई लोग गुस्सा होते है। अभी हमारी एक साल की ही गवर्नमेंट है। इसे अपनी व्यवस्था ठीक रखनी है, शान्ति रखनी है और साथ ही इन चीज़ो का भी प्रबन्ध करना है।

पुरानी गवर्नमेंट की जो मशीनरी थी, वह तो टूट गई। पिछले २०० साल से जो गवर्नमेट चलती थी, वह सिविल सर्विस के एक ढाँचे पर चलती थी, जिसे स्टील फ्रेम कहते थे। उससे मशीन ठीक चलती थी, क्योकि वह उसी काम के लिए बनाई गई थी। लेकिन जब सत्ता हमारे पास आई, तब इस मशीन के दो टुकडे हो गए। परदेसियो का एक टुकडा तो चला गया। क्योकि ५० से ५५ प्रतिशत उसमे परदेसी थे, वह चले गए। हम लोगो ने हिन्दुस्तान के दो टुकडे किए थे, उसमे कई दूसरे टुकडे मे चले गए। बाकी थोडे से लोग बच रहे। हमने हर जगह अपनी एम्बेसी (दूतावास) बनाई, अपने-अपने एम्बेसेडर (राजदूत) बनाए। कई उसमे चले गए। हमारे पास बहुत कम आदमी बच रहे। इसीलिए बहुत कम आदमियो से ही हम काम चला रहे है। कुछ लोग कहते है कि सिविल सर्विसेज वाले लोग पुराने ढग से काम करते है। वह कुछ ठीक काम नही करते। लेकिन जिन लोगो को अनुभव

है, वह जानते हैं वे कैसा काम करते हैं। बाहर वाले लोग कुछ भी नहीं जानते कि भीतर की हालत क्या है। राम ही जानते है और कोई क्या जाने! ऐसी तो हमारी हालत है। तो मैंने कहा कि बहुत थोडे आदमी हमारे पास रहे है। इनमें से जो काम करने वाले लोग हैं, जिनको देश से प्रेम है, काम करने की लगन है, वे सदा हमारा साथ देते हैं। तो एक साल में रियासतो का काम हुआ और जो काश्मीर की लडाई का काम हो रहा है, उसमें अगर यह लोग दिल से साथ नही देते, तो यह काम नही हो पाते। जो लोग कहते है कि यह तो पुरानी सर्विस की रीति और ढग है, वे एक प्रकार का अन्याय करते हैं। मैं इस मौके पर कहना चाहता हूँ कि आप इसे पूरी-पूरी तरह से समझ ले कि हमारी मुसीबत और हमारी दिक्कतें क्या है? काम करने वालो को क्या-क्या परेशानियाँ उठानी होती है, इसे भी आप पूरी तरह से समझ ले। ताकि आपको मालूम हो जाए कि हमें बाद में क्या करना है। अब जो सर्विस का खड्डा है, जो कमी है, उसे पूरने के लिए भी हम कोशिश कर रहे है। यह काम चन्द रोज़ में तो हो नही सकता। यह काम ऐसा नही है कि जो भी आदमी आया, उसे बैठा दिया जाए। इससे काम नही होगा।

अब रही यह बात कि कट्रोल को हमने काफी दिनो बाद क्यो उठाया। अब उठाया हैं, तो उसका नतीजा भी देख लिया। अब हम देख रहे है कि अनाज पूरा नही पड रहा है। कपडे पर से भी कट्रोल उठाया, उससे भी कोई फायदा नही हुआ। बहुत लोग गुस्से हुए। उनका अधिकार था। पर हम कितना भी गुस्सा करें, उससे हमारा काम नही चलेगा। हमें सोचना है कि हम किस तरह करें। बहुत से लोगो ने लडाई में पैसा कमाया। उसमें सरकार को टैक्स का पूरा भाग देना चाहिए था, वह भी नही दिया। वह लोग अब पैसा लेकर बैठे है, इधर नोटो का तोडा पडा है। वे बाहर निकालने में डरते हैं, क्योकि पैसा बाहर निकाले, तो उस पर इन्कम टैक्स लगेगा। सो पैसा बाहर निकलता नही, और कोई इडस्ट्री चलती नही। इधर काम बढता जाता है। जब ज्यादा माल पैदा न हो, तो कीमतें बढ जाती है। मजदूरों को ज्यादा देना पडता है। अगर मजदूरो को ज्यादा दें, तो गवर्नमेंट सर्विस में जितने इम्प्लाइज़ (कार्य-कर्ता) काम करते है, उनको ज्यादा देना पडता है। यह जो सिलसिला चलता है, वह कहाँ जा कर खत्म होता है, यह आप देखिए।

चीन में एक जूता चाहिए, तो कितना रुपया देना पडता है, उसका हिसाब

मैं नही जानता। हमारा मुल्क नया-नया आजाद हुआ है, अगर यहाँ भी यही चीज होने वाली है, तो आजादी से क्या फायदा? गरीब लोग, जिनके लिए हमने इतनी मेहनत की, लोगो ने इतनी कुरबानियाँ की, उन्हे क्या फायदा? यह हमें समझना चाहिए। हिन्दुस्तान में मजदूर हो, व्यापारी हो, प्रोफेसर हो, महाराज हो, जमीदार हो, कोई भी हो, सबको समझना है कि हम जिस रास्ते पर आज चल रहे है, अगर उसी पर चलते रहे तो देश गिर जाएगा।

हमने अपने दुश्मनो का मुकाबला किया और आगे भी करेंगे। इसमे डर काहे का है? लेकिन जितना मुकाबला करना पडे, उतनी ही ज्यादा तैयारी भी करनी पडती है। हमने जब आज़ादी ली और पाकिस्तान कबूल किया, तब हमने सोचा था कि शान्ति से रहेंगे तो कुछ आर्मी कम करेंगे, हमारा खर्चा कम हो जाएगा। ठीक है। और यदि खर्चा कम होगा, तो काम ठीक चलेगा। लेकिन काम तो उल्टा करना पडा। हमे अपनी फौज़ बढानी पडी। एक बात बिल्कुल पक्की है कि हिन्दुस्तान की तटस्थ सरकार को मजबूत होना चाहिए और हिन्दुस्तान की आर्मी को भी मजबूत रखना चाहिए, क्योंकि आज के हालात में हमे चौकीदारी की जरूरत है। जब ये दो चीजें ठीक हो, तो हमारा काम आगे बढेगा। लेकिन इन दो चीज़ों को बहुत अच्छा और मजबूत बनाने के लिए ही और भी तो बहुत कुछ करने की जरूरत होती है।

आपने देखा कि करीब-करीब ६, ७ महीनो तक हैदराबाद का प्राइम मिनिस्टर कहता था कि हिन्दुस्तान के पास क्या है? हिन्दुस्तान कभी हैदराबाद पर हमला नही कर सकता। उन्हे पूरा विश्वास था कि पाकिस्तान उनकी मदद करेगा, इसलिए बार-बार वे कहते भी थे हिन्दुस्तान में हिम्मत नही है। अब जब उनमें थोडा सा छेद किया, तो सारी हवा निकल गई। यह तो आपने देखा ही। मगर देखा कब? जब हिन्दुस्तान के ५००,६०० टैंक देखे, जिनकी आवाज से छक्का छूट जाता है। तब समझ गए कि आए! उस समय तक वे नही मानते थे कि हमारे पास यह चीज है। हम बराबर कहते थे कि हम उनका नश्तर बराबर करने वाले है, लेकिन चाकू इस तरह रखेंगे कि कम-से-कम खून निकले। ऐसी चीज होगी हिन्दुस्तान और हैदराबाद में। हमने ऐसा ही किया। तब उनको समझ में आई कि हम जो समझते थे कि हिन्दुस्तान के पास कुछ भी नही, यह गलत था। उन्होने देखा कि ये चीज़े तो उन्हे खतम कर देंगी और २४ घंटे में खतम कर देंगी। इससे ज्यादा देरी भी नही लगेगी। तीन दिन के

बाद जब चौथा दिन आया, तो उसमें कोई ज्यादा समय लेने की बात नही थी।

तो आपने देखा कि ये सब चीज़ें हमें रखनी पडती हैं, हिन्दुस्तान की फौज का पूरा सामान, हवाई जहाज, नौका, टैंक, गोला-बारूद आदि। वह सब हम कहाँ से लाते है? इसके लिए कितना खर्चा करना पडता है? इसके लिए हमें क्या-क्या तैयारी करनी पडती है? इन सब चीज़ो का भी यदि आप ख्याल करें तो आप समझेंगे कि यह कोई आसान काम नही है, यह बहुत कठिन काम है। आप यह भी जानते हैं कि हम लोगो ने कभी राज-काज तो चलाया नही। हम कोई एडमिनिस्ट्रेशन (शासन) चलाने वाले तो थे नही। हमारे पास कोई अनुभव भी नही था। हमने तो केवल एक ही चीज़ सीखी थी, और वह यह कि जेल जाना, या गोली आए तो गोली भी खानी। मगर राज्य किस तरह से चलाना होता है, यह तो हम जानते नही थे। यह जो काम हमारे सिर आकर पडा, बडी मुसीबत का काम है। फिर भी हम कोशिश कर रहे है। जो लोग हमारी टीका कर रहे है और कहते है कि हमको औपोज़ीशन (विरोधी दल) की ज़रूरत है, उनसे मैं बडी अदब से कहता हूँ कि आज औपोज़ीशन (विरोध) की ज़रूरत नही, आज कोऑपरेशन (सहयोग) की ज़रूरत है। हिन्दुस्तान के सब लोग मिल कर यदि हिन्दुस्तान को नही उठाएँगे, तो फिर पीछे पछताना पडेगा। इसलिए मैं आज कहता हूँ और सबसे कहता हूँ कि भाई, ये चीज़ें छोड दो और झगडों में न पडो। हिन्दुस्तान जब मज़बूत बन जाएगा और एशिया की लीडरशिप लेने का उसका अधिकार हो जाएगा, तब आप जितना खेलना चाहोगे, खेलना, कूदना, लडना, मस्ती करना, जितना झगडा करना है, कर लेना। लेकिन यदि इस समय झगडा-फिसाद करोगे, तो बदनामी होगी। यदि इस समय पर झगडा होगा, तो आपके हाथ में जो चीज़ आई है, वह भी गिर जाएगी। तो मैं कहता हूँ कि इस समय तो सावधानी की बहुत अधिक ज़रूरत है।

अब मैं आपके सामने सबसे बडी बात रखने लगा हूँ। और वह बात अन्य जगह नही बन सकती, वह केवल बम्बई में ही बन सकती है। वह यह है कि हिन्दुस्तान में आज जो हमारा आर्थिक तन्त्र है, वह तितर-बितर हो गया है। और यदि हम इसे ठीक नही करेंगे, तो आर्मी भी गिर जाएगी, क्योकि आर्मी के लिए जितना हमें खर्चा चाहिए, जो सामान हमें चाहिए, वह यदि हमारे पास

नहीं होगा, तो हमारी गाडी चल नहीं सकेगी। आज दुनिया मे सारा खेल पैसे का है और पैसा केवल नासिक के कारखाने मे नोट छापने से नहीं बनता। अगर ऐसा किया जाए, तो वह एक तरह की कृत्रिम चीज होगी और उनमें बहुत नुकसान होगा। उसे रोकना है। वह इस तरह से कि सबको थोडा-थोडा कष्ट उठाना पडेगा। धनी को उठाना पडेगा, मजदूर को उठाना पडेगा, व्यापारी को उठाना पडेगा, किसान को उठाना पडेगा। सब को यह समझ लेना चाहिए कि यह फायदा करने का समय नही है, और देश की भलाई के लिए हमारे कंधो पर जो थोडा-थोडा बोझ पडता है, उसे हमें खुशी से उठाना चाहिए।

इसलिए बम्बई मे रहने वाले जो कारखानो के लोग है, मिल मालिक लोग हैं, उनमे भी मैं अपील करना चाहता हूँ कि यदि आपसे कोई कहता है कि हम धनी को खत्म करना चाहते हैं, तो उससे हमें डरना नहीं चाहिए। क्योंकि आपको समझना चाहिए कि धनी को खत्म करने से यदि दूसरी जगह धन पैदा हो, तब तो ठीक है। नही तो यदि धन पैदा करने वालो को खत्म कर दो, तो हिन्दुस्तान ही खत्म हो जाएगा। जो ये बाते करते है, वे अपनी लीडरशिप रखने के लिए ही ऐसी बाते करते है। उनसे आपको घबराना नही चाहिए। पर आपको यह जरूर समझना चाहिए कि आज सच्चे दिल से हिन्दोस्तान का साथ देने का समय है। और आप लोगो को यह भी समझ लेना चाहिए कि यदि आप लोगो की थोडी सी भी बदनामी हुई, तो आपकी सारी प्रतिष्ठा चली जाएगी, सारी इज्जत चली जाएगी। जब कपडे पर से हमने कंट्रोल उठाया, तब जो परिणाम हुआ, उसमें चाहे कोई भी गुनहगार हो, किसी का भी कसूर हो, पर यदि आप का भी उसमे हिस्सा है, तो आपने बडी भारी गलती की है।

आज व्यापारी लोग मारे-मारे फिरते है, इनके साथ उनके गुमाश्ता लोग भी मारे-मारे फिरते हैं। वे बेकार हो गए है, यह मैं जानता हूँ। मगर उनमें हमारा सबका कसूर है। इस सवाल को यदि हल करना हो, तो सबको बैठ कर हल करना चाहिए। आपको देखना चाहिए कि सरकार क्या चाहती है? वह किसकी गवर्नमेंट है? क्या वह पराई सरकार है? क्या वह परदेस को पैसा भेजना चाहती है? क्या वह स्वार्थ के लिए कुछ कर रही है? हमारे लीडर (प्राइम मिनिस्टर) की दुनिया में इतनी तारीफ और इज्जत हो रही है; जिसने सारी जिन्दगी इतनी कुर्बानी की, जो दिन रात इतनी मेहनत कर अपनी

ज़िन्दगी खत्म कर रहा है, दिन-रात काम करने से जिसे जवानी में बुढापा आ रहा है, क्या हम उसका उतना साथ दे रहे हैं, जितना साथ हमें देना चाहिए ? यह सब हमें सोचना है। तो मैं यह कहता हूँ कि जब हम और हमारी गवर्नमेंट चाहती है कि दाम नही बढना चाहिए, तो आप का फर्ज़ है कि नफा छोड दो। लडाई के जमाने में आपने बहुत कमाया, अब उसको छिपाना पडता है। उसे सामने लाओ तो मुसीबत। तो मेरी सलाह यह है कि आपने पहले जो कमाया, सो तो ठीक है। मगर आज आपको थोडा नफा कमाना चाहिए और गवर्नमेंट का साथ देना चाहिए। गवर्नमेंट जितना नफा मुनासिब समझे, वही आपको लेना चाहिए। आप ऐसी चीज़ें बनाएँ, जो कि सब लोगो के काम में आएँ। इससे भाव भी गिर जाएँगे, कपडे का दाम भी गिरेगा और अनाज का दाम भी गिरेगा।

एक चीज़ का दाम गिरने से दूसरी चीज़ का दाम गिरेगा, और दूसरी से तीसरी का। इस तरह से यह चक्कर घूमता है। यह बडा विकट प्रश्न है, लेकिन इस प्रश्न को आप ही हल कर सकते है और आप ही को इसे हल करना है। गवर्नमेंट को आप अपना दुश्मन न समझें और ऐसा न मानें कि गवर्नमेंट एक तरह से हमको खत्म करना चाहती है। हाँ, खत्म करने में भी मै ही पहला हो जाऊँ, यदि कोई मुझे रास्ता बताए कि इनको खत्म करने से मुल्क का फायदा होता है। क्योकि हमारे पास ऐसी गवर्नमेंट नही है, जैसी अँग्रेज़ो के पास है। उनके पास शिक्षित मैन पावर (शिक्षित जनशक्ति) है, यदि वे एक इण्डस्ट्री (व्यवसाय) चलाना चाहें और उसे नैशनलाइज़ (राष्ट्रीय करण) करना चाहे, तो वे तुरन्त वैसा कर सकते है। हम अगर नैशनलाइज़ करें, तो बरबाद करके छोड देंगे और देखेंगे कि हमने दोनो तरफ से खोया। हमारे पास तो राज चलाने के लिए भी जितने चाहिए, उतने आदमी नही है। पुरानी सर्विस टूट गई है। हमारे खुद की मिनिस्ट्री और जो प्रान्तो की मिनिस्ट्रियाँ हैं, वे बहुत मुसीबत से काम कर रही हैं। उसके पास भी अनुभवी आदमी कम है। असली काम चलाने वाले बहुत कम है, बाकी उनकी सलाह से चलते हैं। अनुभव न होने से वे कोई-कोई काम बिगाडते भी है।

स्टेटो (रियासतो) के जितने यूनियन बने है, उन सभी यूनियनो में तीन आदमी मुझे देने पडते है, एक सलाहकार, एक फाइनाशियल अडवाइज़र (आर्थिक सलाहकार) जो फाइनास (अर्थ) की जाँच करता है और सलाह

देता है कि बजट में कितनी कमी है, कितना टैक्स लगाना चाहिए आदि और तीसरा चीफ सेक्रेटरी (मुख्य सचिव)। ये तीनों आदमी हम सिविल सर्विस के अफसरों में से देते हैं। तो भी, इतना कम होते हुए भी स्टेटवाले क्या कहते हैं ? वह डरते हैं और कहते हैं कि भाई साहब, यह तो बाहर के आदमी आप हमारे ऊपर ले आए। क्या हम बाहर के आदमियों को कबूल करें ? इससे तो हमारी स्वतन्त्रता पर लात पड़ती है। इससे अगले इलेक्शन (निर्वाचन) में हमको वोट्स नहीं मिलेंगे, क्योंकि अभी तक तो लोग डेमोक्रेसी (जनतन्त्र) को समझते ही नहीं हैं। हम उनको समझाते तो हैं, पर हमें मालूम है कि सीखने में अभी बहुत समय लगेगा। पर क्या यह काम आसानी से हो सकता है ? जो करता है, उसे ही मालूम होता है। आपने देखा कि ट्रावकोर में थानुकुले लीडर था। उसने इलेक्शन में लड़कर ट्रावकोर का राज्य अपने हाथों में लिया। वह वहाँ प्राइम मिनिस्टर बना। पर दो महीने भी उनकी नहीं चली और वह हटा दिया गया। दूसरा कोई आया। इसमें भलाई-बुराई की कोई बात मैं नहीं कह रहा। वहाँ जो हुआ, ठीक हुआ। लेकिन इस तरह से हमारे केन्द्र का कारबार चले, तो लोगों की मुसीबत आ जाए।

मैं यह कहना चाहता हूँ कि अभी तो हमारा पहला कर्तव्य यह है कि हम चीजों का दाम कम करें। मैं व्यापारी लोगों से भी कहना चाहता हूँ कि उन्होंने जो पैसा बनाया, उसी से यह मुसीबतें आईं। गुमाश्ते लोग तो आज रोते हैं। उनका कर्तव्य था कि वे उस समय गवर्नमेंट को बताते कि व्यापारी लोग किस तरह टैक्स की चोरी करते हैं। वह नहीं बताया और अपने-अपने स्वार्थ में पड़ गए। तो भी मैं आपसे यही कहना चाहता हूँ कि हम सबको एक साथ मिल कर काम करना है। मैं अगर आप से नाराज हो जाऊँ तो क्या गाली दूं ? उससे क्या फायदा निकलेगा ? मैं इस तरह से काम नहीं करता। मैं इस तरह की लीडरशिप नहीं कर सकता। मैं आपके हृदय में प्रवेश करना चाहता हूँ। क्योंकि जब तक बम्बई का ढंग नहीं बदलेगा, तब तक हिन्दुस्तान का कल्याण नहीं होगा। बम्बई के पास हिन्दोस्तान के कल्याण की चाबी है। तो बम्बई की सब जनता को मैं समझाना चाहता हूँ कि लड़ाई के परिणाम से जो अनीति हमारे भीतर घुस गई है, उसे हम हटाएँ, और गान्धी जी ने जो पवित्रता हमें दर्शाई थी, उस पर चलें। जैसे सत्याग्रह की लड़ाई के दिनों में आप ने कुर्बानी की और अपने पड़ोसियों का ख्याल रखा, एक दूसरे का ख्याल रखा, वैसा

ही आप अब भी करें। हमें अब भी वही आबोहवा पैदा करनी होगी, तभी हमारा काम चलेगा।

आपने जो रुपया ब्लैक मार्केट मे कमाया है, वह किस तरह से कमाया है, यह याद करो। अब या तो देश का काम कर लो, या पैसा बना लो। अगर आप स्वार्थ को ही देखते रहेगे, तो यह चीज आखिर सब को डुबोएगी। आज हमारा सबसे बडा काम यह है कि हम दाम गिराएँ। अगर दाम एक दफा गिर जाएँ, तो मजदूरो को भी यह समझ आएगी कि अब खाने-पीने का दाम गिरा, तो हमारा खर्च भी कम हो गया है, अब हमें ज्यादा मांगने की जरूरत नही है। जो लोग बराबर स्ट्राइक करवाते है, हडताल करते है, चन्द दिनो के लिए उन्हे लेबर की लीडरशिप मिल जाती है। लेकिन वह आखिर उन्हे ले डूबेगी। उसमें कोई तैरनेवाला नही है, सब डूब जाने वाले है। तो मज़दूरो को भी मेरी सलाह यह है कि वह न समझें कि जो मज़दूरो को हडताल करने की सलाह देता है, वही उनका भला चाहता है। हम जो इतनी उम्र में गवर्नमेंट का बोझ घसीट रहे हैं, इसका मतलब यह नही है कि हम मज़दूरों के सिर पर बोझ डाल कर धनी लोगो की जेब में पैसा डालें। हम तो चाहते हैं कि आप का भला हो। लेकिन अगर कूएँ में पानी न होगा, तो हौज़ में कैसे आएगा ? कूएँ में पानी भरा रहेगा, तो हौज़ में भी भरा रह सकेगा।

हमें सब चीज़ें अपने मुल्क में पैदा करनी है, तो जितना हमारे पास पैसा है, उसका उपयोग नये-नये कारखाने बनाने और इडस्ट्री बढाने में करें तो देश आगे बढ़ सकता है। नही तो मैं आप को फिर यह वार्निंग (चेतावनी) देता हूँ कि अभी जो कुछ यूरोप में हुआ, वही हमारे यहाँ होगा। यूरोप को उठाने के लिए अमेरिका कोशिश कर रहा है। आपने यह भी सुना होगा कि इगलैण्ड भी ३००, ४०० करोड पाउड का लोन (कर्ज़) लेता है। हमें कौन लोन देगा ? हम कहाँ से पूजी लाएँगे ? और यदि आज हम लोग ले भी लें, तो भी जिन लोगो ने नोट जमा कर रखे है, वह तो उन्हें निकालेगे नही। क्योकि उन्हे डर है कि अगर निकालेंगे, तो इन्कम टैक्स में पकडे जाएँगे। तो वह लोग निकालते नही, क्योकि ब्लैक मार्केट में जो नफा उन्होने कमाया है, वह तो अब आता नही। और जब तक उसका फैसला नही हो जाता, तब तक काम आगे नही चल सकता। तो इन्कम टैक्स की चोरी करने वालो की जाँच के लिए गवर्नमेंट ने एक कमीशन बैठाया है। उसे बैठाया तो पहली मिनिस्ट्री ने था, जिसमें

लियाकत अली खां फाइनेंस मिनिस्टर (अर्थ मन्त्री) थे। उनकी नीयत दूसरी थी। पर उसके बाद जब हमारे पास यह गवर्नमेंट आई, तब हमने इसे मजबूत बनाया। पर केवल कमीशन बनाने से तो काम नहीं चलता ? उसके लिए तो एविडेंस (गवाही) चाहिए। अब कहाँ छिपा है वह पैसा ? एक लम्बी-चौड़ी प्रश्नोत्तरी बना कर उनके पास भेज दी जाए, तो वे अपने वकीलों से उसका जवाब दे देंगे। अब यह काम चलते-चलते दो साल हो गए और कुछ पैसा नहीं मिला। यह काम ऐसा ही चलता रहेगा, तब व्यापारी भी अपना पैसा नहीं निकालेंगे और नोटों के गट्ठे छिपे रहेंगे। उधर गवर्नमेंट को पैसा नहीं मिलेगा और इधर कमीशन का खर्चा बढ़ता रहेगा। इससे न कोई काम होगा और न कोई फायदा होगा। इस तरह से हम सब चीजें अगर एक दूसरे से लड़कर करेंगे, तो आखिर देश में कोई काम नहीं होगा। तो मेरी यह सलाह है कि समझदार लोग बैठ कर रास्ता निकालें। समझदार लोग कहाँ होते हैं ? जो धन पैदा करते हैं उनमें बुद्धि होनी चाहिए और जो व्यापारी लोग हैं, उन्हें समझना चाहिए कि इस तरह से देश डूब जाएगा और उनका पैसा भी खत्म हो जाएगा। आपस में विश्वास और सहयोग किए बिना इस तरह से काम नहीं चलेगा।

तो मेरी सलाह यह है कि मैंने जो कहा, उस पर आप सोचें और अपना रास्ता बदलें। आप देश में शान्ति और प्रेम का वायुमण्डल पैदा करें। मुझे बड़ा अफसोस हुआ, जब मैंने सुना कि बम्बई में आज प्रान्त-प्रान्त को अलग करने के लिए आन्दोलन चल रहा है। ऐसे आन्दोलन से जहर फैलता है। क्यों ? क्या हम गुजराती और महाराष्ट्रीय जब तक गुलाम थे, तब तक आपस में मुहब्बत से नहीं रहे ? तब हम कभी झगड़ते थे ? यदि आपको अलग महाराष्ट्र चाहिए, तो ले लीजिए। मगर उसका ढंग दूसरा होगा। आप इस तरह से क्यों लड़ते हैं ? लड़ने की क्या जरूरत है ? बैठ कर इंसाफ से काम कर लीजिए। न्याय में काम करनेवाले हमारे देश में बहुत लोग हैं, उनका कमीशन बना दो और वे जिस तरह कहें, काम करो। इस तरह अखबारों में जहर फैलाने, प्रोसेशन्स (जलूस) निकालने और मीटिंग्स करने की बातें तो तभी तक ठीक थीं, जब तक हम गुलाम थे। अब आजाद होकर हमें अनुभव करना चाहिए कि हम भले हैं, जवाबदार हैं और अपना राज्य चलानेवाले लोग हैं। हमें इस तरह से क्यों काम करना पड़े? आपका और हमारा, सबका जो लीडर था, वह भी यही

सलाह देकर गया कि भाई, एक दूसरे पर विश्वास करो और एक दूसरे से मिलकर काम करो। इसमें कोई मेरा निजी स्वार्थ नही है, लेकिन मै यह सलाह देना चाहता हूँ कि आज हम कोई जहरीली आवोहवा पैदा न करें और समझ-बूझ कर काम अच्छी तरह से करें, मोहव्वत से काम करें।

मैने आप से कहा कि हमें हिन्दुस्तान को मजबूत वनाना है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से हमारा देश बहुत बडा बन गया है। दुनिया में ऐसे बडे देश बहुत कम है, जैसा हिन्दुस्तान है। इसको यदि हम मजवूत वना ले, तो हमें किसी चीज की कमी न रहेगी और हमारी इज्जत वहुत वढ जाएगी। इसके लिए हमें सामान पैदा करना है। मैने जैसे वताया कि हमें ज्यादा धन पैदा करना है, ज्यादा माल पैदा करना है। इस काम के लिए हम आपस में बैठ कर सोचें और सरकार के साथ मिलकर काम करें। हमें आपस में झगडने की जरूरत नही है। हमें आपस में विश्वास का वायुमण्डल पैदा करना है। यदि हम यह सब करें, तो हिन्दुस्तान का भला होगा। हमारा जो सबसे बडा नेता था, जिसने दुनिया में हमारी इतनी इज्जत बढाई, वह महात्मा गान्धी थे। उन्ही के बताए रास्ते पर अगर हम चले, तो वह हमको आशीर्वाद देंगे। मै ईश्वर से यह मांगता हूँ कि हम उसके लायक बनें। जय हिन्द!

---

(१२)

नागपुर विद्यापीठ में भाषण

३ नवम्बर, १९४८

आपके विद्यापीठ ने मेरे ऊपर जो प्रेम जाहिर किया है और जिस तरह आपने मेरा स्वागत किया है, इसलिए सबसे पहले मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। दान अनेक प्रकार के होते हैं और सुपात्र को ही दान देना ठीक होता है। लेकिन जो दान के योग्य नहीं होता, उसको दान नहीं देना चाहिए। पदवी का दान पदवी के योग्य पुरुष को दिया जाता है। लेकिन आपने उसके लिए मुझको पसन्द किया है और मेरे ऊपर जिन्दगी भर के लिए बोझ डाल दिया है। क्योंकि पदवी-दान में आपने लिख दिया है कि इस पदवी की योग्यता मुझमें मेरी जिन्दगी भर में रहे। (हँसी) यह मेरे लिए बड़ी मुसीबत की बात है। इसलिए मुझे कहना पड़ता है कि पदवी दान को मैंने जिन्दगी मे कभी स्वीकार नहीं किया। यह मेरा धर्म नहीं है, मेरा कर्म नहीं है। लेकिन आपके प्रेम में फँसा, इसलिए मैंने इसे कबूल किया। तो आप लोगों के आशीर्वाद से और ईश्वर की कृपा से मैं इस सम्मान को निबाह सकूं, तो अच्छी बात है। नहीं तो उसके लिए आप और मैं दोनों दूषित हो जाएँगे। क्योंकि आपने जिसको पसन्द किया, वह समझ-सोचकर पसन्द करना था।

नागपुर में जब मैं पिछली दफ़ा आया था, तो इसी जगह पर मैंने जो कुछ कहा था, उसका मुझे पूरा स्मरण है। आप लोगों को भी वह सब स्मरण

होगा। आज भी जब मैं नागपुर आया हूँ, तो भारतवर्ष की आधुनिक स्वतन्त्रता की लड़ाई का सारा इतिहास मेरे सामने आ खड़ा हुआ है। क्योंकि नागपुर में कांग्रेस का एक बहुत बड़ा वार्षिक अधिवेशन हुआ था, उसी में भारत की स्वतन्त्रता की नींव डाली गई थी। वह एक ऐतिहासिक सम्मेलन था। इसके बाद जो बनाव बने, वे सब आपके सामने बने। आज भी मेरे सामने वह चित्र आ खड़ा होता है, जब कांग्रेस की वर्किंग कमेटी की बैठक हुई थी और जब पुण्य-स्मरणीय श्री जमनालाल बजाज को दो साल की सज़ा हुई थी। उसके बाद झंडा सत्याग्रह का काम कांग्रेस की कार्यकारिणी कमेटी ने मेरे सुपुर्द किया था। वह सारा चित्र मेरे सामने है। जो काम उसके बाद हुआ, वह आपके सामने है। उसके इतिहास में मैं जाना नहीं चाहता, लेकिन जितनी बातें उसमें से फलित हुई हैं, उनके सम्बन्ध में आपका ध्यान जरूर खींचना चाहता हूँ।

आज आज़ादी तो हम लोगों को मिल गई, लेकिन उस आज़ादी की योग्यता हममें है, इसके बारे में मुझे उसी तरह शंका है, जिस तरह उपाधिदान के सम्बन्ध में है। जो आज़ादी हिन्दुस्तान को मिली है, उसकी हिन्दुस्तान में कितनी योग्यता है, इसके बारे में हम सबको सोचना चाहिए। आज हमारे यहाँ सब लोग अपेक्षा करते हैं कि आज़ादी मिल गई, तो इसका मतलब है कि सब चीज हो गई। और अब भला-बुरा जो कुछ भी हो, उसका उत्तरदायित्व सरकार के ऊपर डाल देना चाहते हैं। भला करे तो वही, बुरा करे तो वही। उसी की सब जिम्मेवारी है। लोग समझते हैं कि हमारा काम अब समाप्त हो गया। उदाहरण के लिए ऐसा समझ लें कि आपने पदवी-दान मुझे दी, उसे मैंने स्वीकार कर लिया, और अब मुझे अपनी योग्यता के बारे में कुछ भी सोचने की जरूरत नहीं रह गई।

आजाद होकर आज हमें अपने भविष्य की ओर ध्यान देना है। ऐसा न करेंगे, तो यह बहुत बुरी बात होगी। यही आपको भी सोचना है। आज़ाद तो हम कुर्बानी से हुए हैं। जो लोग कुर्बानी करने वाले थे, उन्होंने तो खाली कुर्बानी का फल चाट लिया। लेकिन जो आज़ादी का फल है, वह देश भर को मिलना चाहिए। वह किस तरह मिले, यही रात दिन सोचने की बात है। पिछली लड़ाई में और उसके बाद से दुनिया में सब जगह कमोबेश नैतिक स्टैण्डर्ड गिर गए या टूट गए। किसी एक मुल्क में ही नहीं, कमोबेश सभी मुल्कों में, कहीं ज्यादा और कहीं कम। छोटे-मोटे स्वार्थों में अधिकांश लोग पड़ गए।

'८ को सरदार पटेल सौराष्ट्र के उद्घाटन समारोह में जाम साहब
वानगर ने राजप्रमुख के पद की शपथ लेते हुए

हमारी आजादी की जो लडाई थी, उस लडाई में त्याग, कुर्बानी, सत्य और अहिंसा आदि के तेजस्वी हथियार थे। उनका परिणाम भी बहुत उज्ज्वल नजर आता था। लेकिन जो विश्व-युद्ध हुआ, उसके जो हथियार थे, वे संहार के थे। वे सब सृष्टि संहार के हथियार थे। उसके पीछे, जिस तरह समुद्र मन्थन के बाद जहर निकला था, उसी प्रकार का जहर निकल आया। अब यह जहर तो निकला, पर उस जहर को पीने वाला कोई न निकला। परिणाम यह हुआ कि वह जलता रहा और आखिर फूट बहा। उससे दुनिया बहुत परेशान हुई। हम भी परेशान हैं। तो जो मुल्क आजाद थे, वे तो उसको हजम कर सकते हैं। लेकिन हमारी तरह जो गुलाम थे, क्योंकि आजादी तो हमें अब आकर मिली है, उनके लिए उसको हजम करना बहुत कठिन बन गया है। कोई ऐसा न समझे कि हम आजाद हो गए तो सब कुछ हमें स्वयमेव मिल गया। हमको अब काम करने की आजादी मिली है। यह बात हम सब को समझनी है। तो मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि आजादी की लडाई मे हमने जो त्याग, कुर्बानी और बलिदान किया, उससे भी ज्यादा त्याग और बलिदान हमें आज उस आजादी को मजबूत बनाने में करना है। हमें अपने देश को ऊपर उठाना है, भारत को अपने पैरो पर खडा करना है। अभी तो वह एक साल का बच्चा है। उसको हमे अच्छी तरह से और ऐसी खुराक देनी है, जिसे वह पचा सके और जिससे उसकी भूख बढे।

आज हर एक हिन्दुस्तानी को अपना कर्तव्य समझना चाहिए कि उसे देश की आजादी की हिफाजत करनी है। जो युवक हमारे हिन्दुस्तान के विद्यापीठो में पले है, उन्हे यह बात विशेष रूप से समझनी है। जो विद्यार्थी यहा पढ रहे हैं और जो हमारे भविष्य के नागरिक है, उनका कर्तव्य है कि इन बातो को सोचे और समझे क्योकि उनको कल सारे हिन्दुस्तान का बोझ उठाना है। हम समाजवाद, साम्यवाद और टीका-टिप्पणीवाद इन सब वादो को छोड दे। वाद का समय जब आएगा, तब हम भी उनपर बातें कर सकते है। परन्तु आज हमारे पास उसके लिए समय नही है। आज तो हमारे पास एक साल की स्वतन्त्रता है, वह भी टूटी-फूटी दशा में है। हमें सोचना है कि आज दुनिया मे हमारी जगह कहाँ है? हम कहाँ बैठे है? हमारे आस-पास क्या वायुमण्डल है? अगर इन सब चीजो को हम नही देखेंगे, तो आजादी हमको हजम नही होने पाएगी और भविष्य की प्रजा हमको शाप देगी, वह कहेगी एक तपस्वी ने अपनी

तपश्चर्या से हिन्दुस्तान को आज़ादी दिलवाई थी, लेकिन उस समय के लोग इतने नालायक थे कि उसे हज़म नही कर सके। इस चीज को हमें और आपको सोचना है।

जो विद्यार्थी भविष्य में देश के नागरिक वननेवाले है और जो युवक आज देश के नागरिक है, उन दोनो को एक वात मै वडी अदव से समझाना चाहता हूँ। वह यह कि हमारा मुल्क आजाद तो हुआ है, लेकिन उसका पैर अभी तक जैसे सोया हुआ है। हमारे देश में वहुत सी घटनाएँ घटी है। एक साल मे वहुत मुसीवत से हम अपने पैरो पर खडे हुए हैं। लेकिन हमारे पैर अभी तक मजबूत नही हुए। वेपरवाही से हम गिर जाएँगे। इसलिए अव किसी फन्दे में हमें नही पडना है। एक ही चीज़ पर हमे अपनी दृष्टि स्थिर करके वैठना है। वह चीज क्या है ? वह यह कि हमारा मुल्क किस तरह से शक्तिवान वनेगा, किस तरह मजबूत वनेगा ? आप जानते है कि हमारा मुल्क तभी ताकतवान बन सकता है, जब कि हमारा दिल साफ हो। हम जितने भी भारत के निवासी है, वे सब समझ जाएँ कि उन सबका भारत के प्रति क्या ऋण है, क्या धर्म है। तभी भारत मजबूत बन सकता है।

हम पर जो परदेसी सल्तनत इधर थी, वह तो चली गई। हम भी चाहते थे कि वह चली जाए। यह बहुत ठीक हुआ, अच्छा हुआ। हम पर जो भारी बोझ था, वह हट गया। वह बोझ तो हट गया, मगर तब हमारी हालत ऐसी नही थी, हमारे पास कोई ऐसा तन्त्र नही था कि जो हिन्दुस्तान का सारा बोझ अनुभव के साथ उठा सकता। परदेसी राज्य में जो तन्त्र चलता था, वह तो टूट गया। और वह हमारे काम का रह भी नही गया था। लेकिन उसकी जगह पर दूसरा तन्त्र वनाना, यह कोई एक दिन का काम नही था। उसके लिए तो वहुत समय लगेगा।

यह बोझ उठाने के लिए, स्वतन्त्र भारत का बोझ उठाने के लिए, जिन पर बोझ पडने वाला है, उनको वहुत ठीक ढग से और अच्छी तालीम लेनी पडेगी। यह तालीम कुछ तो हमारे विद्यापीठ में मिलेगी, और कुछ सृष्टि के महान और खुले विद्यापीठ में। यह आसान चीज नही है। इसमें समय लगेगा। लेकिन उतने समय तक सव लोगो को वहुत सावधान रहने की जरूरत है। आपकी विद्यापीठो से जो स्नातक निकलते है, उनको भी सावधान रहने की ज़रूरत है। जो शिक्षा देनेवाले आचार्यगण हैं, उनको भी सावधान रहने की ज़रूरत है,

क्योंकि नए भारत में सबसे पहली जरूरत होगी, चारित्र्य की ही। यदि हमारा चरित्र ठीक नहीं होगा, और यदि इस विद्यापीठ से हम चरित्र की छाप लेकर न निकले, तो जो बोझ हमारे ऊपर पडनेवाला है, उसे हम उठा नही सकेंगे।

आज हमारे लिए सारे एशिया में मैदान खुला पडा है। उस जगह पर नेतागिरी की जगह खुली है। उसे कौन ले सकता है? यदि हिन्दुस्तान अपनी जगह सँभाल ले, यदि हम लोग सच्चे दिल से सावधान हो जाएँ, तो सारे एशिया की नेतागिरी हिन्दुस्तान के पास आ सकती है। चाहे कितनी ही मुसीबतो से हम उठे हो, चाहे हमारी कितनी ही थोडी उम्र हो, चाहे हमारा अनुभव कितना ही थोड़ा क्यो न हो, लेकिन पुरानी जो विरासत हमको मिली है, वह बहुत बडी है। जो हमारा लीडर था, उसने पिछले ३०, ३५ सालो से सारे हिन्दुस्तान को जो तालीम दी थी, उससे सारी दुनिया में हमारी प्रतिष्ठा बनी। उस चीज़ को हम सँभाल लें, तो हमारा देश एशिया का नेता बन सकता है।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि भारत एक बहुत बड़ा मुल्क है। उसका टुकड़ा तो हो गया, तो भी जो बाकी बचा है, वह भी बहुत बड़ा है। दुनिया मे कम मुल्क इतने बडे है, जिसमें इतनी आबादी हो, इतनी जगह हो, और इतनी समृद्धि भरी हो। हमारे देश में जो सिद्धि भरी है, उसे हमें निकालना है। हम उसे न निकालेंगे, तो कौन निकालेगा? हमारे जो नौजवान विद्यापीठ मे तालीम ले रहे हैं, यह उनका काम होगा। लेकिन उसके लिए आपको पूरे ध्यान से, अपने चित्त को एकाग्र कर एक ही स्मरण करना है, एक ही रटन रटना है, वह यह कि भारत को किस प्रकार मजबूत बनाया जाए? तभी यह चीज हजम हो सकती है। जिस प्रकार का हिन्दुस्तान हम बनाना चाहते है, उस प्रकार का हिन्दुस्तान हम तभी बना सकते है।

लेकिन यदि यह हम समझें कि अब तो हम आज़ाद हो गए, इसलिए हमें सब अधिकार हड़प लेने है, उनके मोह में पडना है, और पदो के लालच में पड़ना है, तो उसमे हम बडे संकटो और झगडो में पड जाएँगे। तब आजादी भी हमारे हाथ से चली जाएगी। यह चीज ठीक नहीं है। जिसके पास पावर (शक्ति) है, वह ठीक तरह से उसे चलाए, इसके लिए हमें उसके ऊपर चौकसी करना है। लेकिन उसके पास से सत्ता छीनकर हमारे पास आ जाए, ऐसी कोशिश हमें नहीं करनी है। जो गलती करते है, उन्हे हम गलती न करने दें, उन्हें सावधान करके ठीक रास्ते पर ले आएँ, लेकिन हम बैर

तपश्चर्या से हिन्दुस्तान को आज़ादी दिलवाई थी, लेकिन उस समय के लोग इतने नालायक थे कि उसे हज़म नही कर सके। इस चीज को हमें और आपको सोचना है।

जो विद्यार्थी भविष्य में देश के नागरिक बननेवाले हैं और जो युवक आज देश के नागरिक हैं, उन दोनो को एक बात मैं बडी अदब से समझाना चाहता हूँ। वह यह कि हमारा मुल्क आजाद तो हुआ है, लेकिन उसका पैर अभी तक जैसे सोया हुआ है। हमारे देश में बहुत सी घटनाएँ घटी है। एक साल मे बहुत मुसीबत से हम अपने पैरो पर खडे हुए है। लेकिन हमारे पैर अभी तक मजबूत नही हुए। बेपरवाही से हम गिर जाएँगे। इसलिए अब किसी फन्दे में हमें नही पडना है। एक ही चीज़ पर हमें अपनी दृष्टि स्थिर करके बैठना है। वह चीज क्या है ? वह यह कि हमारा मुल्क किस तरह से शक्तिवान बनेगा, किस तरह मजबूत बनेगा ? आप जानते है कि हमारा मुल्क तभी ताकतवान बन सकता है, जब कि हमारा दिल साफ हो। हम जितने भी भारत के निवासी हैं, वे सब समझ जाएँ कि उन सबका भारत के प्रति क्या ऋण है, क्या धर्म है। तभी भारत मजबूत बन सकता है।

हम पर जो परदेसी सल्तनत इधर थी, वह तो चली गई। हम भी चाहते थे कि वह चली जाए। यह बहुत ठीक हुआ, अच्छा हुआ। हम पर जो भारी बोझ था, वह हट गया। वह बोझ तो हट गया, मगर तब हमारी हालत ऐसी नही थी, हमारे पास कोई ऐसा तन्त्र नही था कि जो हिन्दुस्तान का सारा बोझ अनुभव के साथ उठा सकता। परदेसी राज्य में जो तन्त्र चलता था, वह तो टूट गया। और वह हमारे काम का रह भी नहीं गया था। लेकिन उसकी जगह पर दूसरा तन्त्र बनाना, यह कोई एक दिन का काम नहीं था। उसके लिए तो बहुत समय लगेगा।

यह बोझ उठाने के लिए, स्वतन्त्र भारत का बोझ उठाने के लिए, जिन पर बोझ पडने वाला है, उनको बहुत ठीक ढग से और अच्छी तालीम लेनी पडेगी। यह तालीम कुछ तो हमारे विद्यापीठ में मिलेगी, और कुछ सृष्टि के महान और खुले विद्यापीठ मे। यह आसान चीज नही है। इसमें समय लगेगा। लेकिन उतने समय तक सब लोगो को बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है। आपकी विद्यापीठो से जो स्नातक निकलते है, उनको भी सावधान रहने की ज़रूरत है। जो शिक्षा देनेवाले आचार्यगण है, उनको भी सावधान रहने की ज़रूरत है,

क्योंकि नए भारत मे सबसे पहली जरूरत होगी, चारित्र्य की ही। यदि हमारा चरित्र ठीक नही होगा, और यदि इस विद्यापीठ से हम चरित्र की छाप लेकर न निकले, तो जो बोझा हमारे ऊपर पडनेवाला है, उसे हम उठा नही सकेंगे।

आज हमारे लिए सारे एशिया में मैदान खुला पडा है। उस जगह पर नेतागिरी की जगह खुली है। उसे कौन ले सकता है? यदि हिन्दुस्तान अपनी जगह सँभाल ले, यदि हम लोग सच्चे दिल से सावधान हो जाएँ, तो सारे एसिया की नेतागिरी हिन्दुस्तान के पास आ सकती है। चाहे कितनी ही मुसीवतो से हम उठे हो, चाहे हमारी कितनी ही थोडी उम्र हो, चाहे हमारा अनुभव कितना ही थोडा क्यो न हो, लेकिन पुरानी जो विरासत हमको मिली है, वह वहुत वडी है। जो हमारा लीडर था, उसने पिछले ३०, ३५ सालो से सारे हिन्दुस्तान को जो तालीम दी थी, उससे सारी दुनिया मे हमारी प्रतिष्ठा वनी। उस चीज़ को हम सँभाल लें, तो हमारा देश एशिया का नेता वन सकता है।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि भारत एक वहुत वडा मुल्क है। उसका टुकडा तो हो गया, तो भी जो वाकी वचा है, वह भी वहुत वडा है। दुनिया मे कम मुल्क इतने वडे हैं, जिसमें इतनी आवादी हो, इतनी जगह हो, और इतनी समृद्धि भरी हो। हमारे देश में जो सिद्धि भरी है, उसे हमें निकालना है। हम उसे न निकालेंगे, तो कौन निकालेगा? हमारे जो नौजवान विद्यापीठ मे तालीम ले रहे हैं, यह उनका काम होगा। लेकिन उसके लिए आपको पूरे ध्यान से, अपने चित्त को एकाग्र कर एक ही स्मरण करना है, एक ही रटन रटना है, वह यह कि भारत को किस प्रकार मजवूत वनाया जाए? तभी यह चीज हज़म हो सकती है। जिस प्रकार का हिन्दुस्तान हम वनाना चाहते है, उस प्रकार का हिन्दुस्तान हम तभी वना सकते है।

लेकिन यदि यह हम समझे कि अव तो हम आज़ाद हो गए, इसलिए हमे सव अधिकार हडप लेने हैं, उनके मोह मे पडना है, और पदो के लालच में पडना है, तो उसमे हम वडे सकटो और झगडो में पड़ जाएँगे। तव आजादी भी हमारे हाथ से चली जाएगी। यह चीज़ ठीक नही है। जिसके पास पावर (शक्ति) है, वह ठीक तरह से उसे चलाए, इसके लिए हमे उसके ऊपर चौकसी करना है। लेकिन उसके पास से सत्ता खीचकर हमारे पास आजाए, ऐसी कोशिश हमें नही करनी है। जो गलती करते है, उन्हे हम गलती न करने दें, उन्हे सावधान करके ठीक रास्ते पर ले आएँ, लेकिन हम वैर

और ईर्षा में न पड़ें। वैर और ईर्षा आदि तो हमको नुकसान करनेवाली है। इन सबको छोड़कर गान्धीजी ने जो मार्ग बताया है, उसी मार्ग पर चलकर हम प्रेम, सत्य और आदर का वायुमण्डल पैदा करें, तभी हम अपने देश को मजबूत बना सकते हैं। उसके लिए भी हमारे मुल्क के नौजवानो को सावधान रहने की जरूरत है।

बहुत से विद्यालयो में और खुद हमारे सरकारी तन्त्रो में भी जो नौजवान हैं, उनके दिल में कही-कही भिन्न-भिन्न ख्याल डाले जाते है। कोई लोग यह सिखाते हैं कि कांग्रेस की गवर्नमेंट की तरफ से जो लोग काम चलाते हैं, उनमें मुसलमानो की तरफ कुछ ज्यादा झुकाव होता है और उससे हिन्दू संस्कृति का नुकसान होता है। यह छोटे दिल की बात है। हमने हिन्दुस्तान का टुकड़ा करके मुसलमानो के लिए एक अलग हिस्सा दे दिया। उसके बाद हम कोई ऐसी चीज करनेवाले नही है, जिसमें भेद-भाव रहे। हिन्दुस्तान में रहनेवाले हिन्दू, मुसलमान, पारसी, क्रिश्चियन या सिख कोई भी हो, सब हमारे लिए समान हैं। यदि हम इस प्रकार का भाव पैदा न करें, इस प्रकार का वायुमण्डल पैदा न करें, तब हिन्दुस्तान खतरे में रहेगा। यह आपको समझ लेना चाहिए। मुसलमान अपनी जगह पर रहे, हिन्दू अपनी जगह पर रहें, छोटी-छोटी कौमें अपनी जगह पर रहे। सब कोई अपने मजहब के आप मालिक है। जो जैसा चाहे अपना मजहब और अपना खुदा मान ले। उसमें हमें कोई झगड़ा नही करना है। हिन्दुस्तान का टुकड़ा होने के बाद इस मुल्क में रहनेवाला हर एक व्यक्ति हिन्दुस्तानी है। यहाँ कोई गैर नही है।

हिन्दू तो यहाँ बहुत बड़ी ताकत में पड़े है, उनको डर क्यो लगता है? वे क्यो डर कर नौजवानो को गलत रास्ते पर चलाने की कोशिश करें? जो कोई छिपे-छिपे अपने नौजवानों को ऐसी चीज सिखाता है, वह हिन्दू संस्कृति और भारतीय संस्कृति को नुकसान पहुँचाता है, चाहे वह दिल में कितना ही समझता हो कि वह हिन्दू संस्कृति की रक्षा कर रहा है। आपको जो कुछ करना है, खुल्लमखुल्ला करो। जितना काम छिपाकर करोगे, आप में उतनी ही एक प्रकार की भीरुता पैदा हो जाएगी। कायरो को छिपा काम करने की जरूरत होती है, बहादुर मर्दो को नही। सो आप को जो काम करना है, खुला करो। जब परदेसी सल्तनत थी, तब दूसरी बात थी। उसका हथियार भी दूसरा था। आज किसके साथ हमें लड़ना है? आज हमें क्या आपस में

लड़ना है ? अगर ऐसा हुआ तो समझ लो कि सब फूटनेवाला है। तब आपके पास कोई चीज़ रहनेवाली नही है। आपस में लडने से बढकर अधिक बुरी और कोई बात नही हो सकती। अपने देश का पुराना इतिहास देखिए। क्यो हमें इतने साल तक गुलामी उठानी पडी ? इसी कारण कि हम आपस मे लडते थे।

आज तो हमारे राजा-महाराजा भी समझ गए है कि हमारी रक्षा और हमारी इज्जत भारत की एकता में है। तो यह बात आप क्यो न समझे ? कौन-सी चीज़ ऐसी है, जिसके लिए अब आपको आपस मे लडना है ? अब परदेसी के साथ तो आपको लडना है नही। अब तो जिसके पास राज्य की बागडोर है, उसके ऊपर वह काम छोड दीजिए। हमारे किसी बौर्डर (सीमा) से अगर हमे कोई खतरा हो जाए, तब तो हमे लडना ही पडेगा। वह खतरा जितना है, वह हमारे ख्याल मे है। उसके ऊपर जितनी ज़रूरत है, उतना ख्याल हम रखेगे। उस सम्बन्ध मे आपको सोचने की ज़रूरत नही है।

आपको ज्यादा खतरा जिस चीज मे है, वह आपको सोचने की ज़रूरत है। अगर देश मे आपस मे फूट होगी, एकता न होगी तो बहुत बडा खतरा है। जितना जहर ५, ७ साल से था, वह अब फूट गया। उसमें से मवाद निकल गया। अब वह चीज भूल जानी चाहिए। उसके ऊपर अब परदा डाल देना चाहिए। जिसको इधर रहना पसन्द नही है, वह यहाँ से चला जाए। लेकिन जितने इधर रहते है, वे अब एक कुटुम्ब मे है और इसी तरह से उनको रहना पडेगा। हो सकता है कि हमारे यहाँ अभी तक कोई ऐसा हो, जिसका दिल अभी इधर ठीक नही हो। वह यहाँ से चला जाएगा। वह यहाँ रह ही नही सकता। लेकिन आपको यह समझना चाहिए कि जो बाकी हिन्दुस्तान पडा है, वह तभी मजबूत बनेगा, कि जब आप यह समझ ले कि हम सब हिन्दुस्तानी है। लेकिन हमारी आज़ादी का एक साल भी नही हुआ, कि हम समझने लगे कि हम महाराष्ट्रियन है, हम गुजराती है, हम बगाली है, हम मद्रासी है, हम बरारी है, और हमारे भाषावार अलग-अलग टुकडे होना चाहिए, तो फिर कैसे चलेगा ? एक तरफ हम कोशिश करते है कि हम सारे भारत-वर्ष को एक कर दे। दूसरी तरफ हम कोशिश करने लगे कि हमारे अलग-अलग टुकडे हो जाएँ ! यह रास्ता तो राष्ट्रीयता को खून करने का है। उसमें से देश भर मे ज़हर फैलेगा।

हां, समय आएगा, जब इस प्रकार का काम भी हमें करना होगा और तब हम इसे ठीक तरह करेंगे। लेकिन वह सभ्यता से और सफाई से ही हो सकता है। उसके लिए हम सब में भाई का-सा प्रेम होना चाहिए। उसके लिए जरूरी वातावरण पैदा करना मूर्ख लोगो का काम है। आज यह समय नही है कि हम इस प्रकार का काम करें। आप देखते है, अभी थोडे ही दिन पहले हमने आपका जितना बडा प्रान्त है, इसी प्रकार के, बल्कि उससे भी बडे हैदराबाद स्टेट का फैसला किया।

वहाँ कितने साल से एक प्रकार का राज्य चलता था। जिस प्रकार का वह राज्य चलता था, उससे वहाँ की राजनीति में, जो ज़हर भर गया था, क्या वह चन्द दिनो में निकल गया? नही। इतना बडा फोडा था, उसमें से पस निकालने के लिए उसे कितने दिनो तक धोना पडेगा, तब वह ठीक होगा। आपके सामने इतनी बडी जो एक चीज बन गई है, उसकी कीमत आज आप नहीं आंक सकते। इसके लिए तो बहुत समय लगेगा। भविष्य का इतिहासकार उसको तवारीख में लिखेगा। आपको समझना है कि हमारे सिर पर बडे-बडे फोडे निकले थे, और उन फोडो को ठीक कर हम हिन्दुस्तान में पूरी एकता और शक्ति लाने का काम कर रहे हैं।

आप को मालूम है कि हिन्दोस्तान में ५६२ रियासतें थी। इतनी रियासतें हिन्दुस्तान को एक तरह अलग-अलग टुकडे किए हुए थीं। उन सब की अलग-अलग राज्य-व्यवस्था थी। जब परदेसी सल्तनत हमको छोड कर चली गई, तो कौन उम्मीद करता था कि एक साल में इस सारी समस्या को हम ठीक कर लेंगे। किसे ख्याल था कि इस सारी कार्रवाही में न किसी को नुकसान होगा, न कोई मार-पीट होगी। परमात्मा की कृपा से पूरी शान्ति से, अमन से और प्रेम से यह सब काम हो गया। मै आपको बतलाता हूँ कि यह जो प्रान्तो को नये ढग से अलग-अलग बनाने का काम है, वह भी हम उसी तरह कर सकते है। पर अभी वह करना ठीक नही है। इस तरह की जल्दबाजी से वह काम हो नही सकता। यदि महाराष्ट्र को अलग होना हो तो सब महाराष्ट्रियनो को आपस में बैठकर बात कर लेनी है। उसके बाद जिनसे अलग होना है, उनसे बात करनी है, जैसे जिन राजाओ की राज्य-सत्ता हमें लेनी थी, हम उन सब के साथ बैठे थे।

पिछले दिसम्बर में मै १२ घटो के लिये इधर आया था। तब आप लोगो

को मालूम भी न पडा था। मैं शाम को आया था और सुवह चला गया इधर राजाओ की जितनी सत्ता थी, वह सव जेव मे डालकर चला गया। यह किस तरह से हुआ ? राजाओं से पूछो कि उनको क्या चोट लगी है। लेकिन काम ऐसा हुआ कि उनको भी ठीक लगा और आप लोगो को भी ठीक लगा। इसी प्रकार यह काम भी हो सकता है। लेकिन यदि कहो कि वम्वई को हम वर्लिन वना देगे, तो मैं यही समभूगा कि कोई नादान यह वात कर रहा है। यह कोई समभदारी की वात नही है। आज जव हिन्दुस्तान की आजादी एक साल की हुई है तव इस जुवान से यह वात निकलने लगे, कि आजादी क्या चीज़ है, लोग यही नही समभे, तो यह कितनी वुरी वात है। इसी तरह नागपुर व वरार में से वडा वरार वनाना हो, तो वह भी वन सकता है। लेकिन खाली नक्शे में रंग वदल देने से कोई वडी चीज न वनेगी। जैसे हमने राजाओ के पास से सारी पावर (शक्ति) लेकर लोगो को दे दी और उससे मैप (नक्शे) में फर्क हुआ. वह तो ठीक है। उससे चित्र तो अच्छा लगता है। लेकिन क्या भीतर भी कोई फर्क हुआ है ? राजाओ की जो रियाया थी, उसको भी कोई फर्क मालूम पडा है ? वह न मालूम पडा हो, तो आपको समभना चाहिए कि कोई फर्क नही पडा। तव तो खाली नक्शे की शवल में ही फर्क हुआ है।

असली फर्क तो तभी होगा, जव राजा भी महसूस करें कि यह अच्छा हुआ है और रियाया भी महसूस करे कि ठीक हुआ है। जैसे हमको आजादी मिली। आज हिन्दुस्तान में कोई महसूस नही करता है कि हम को आजादी मिली है, क्योकि कोई फर्क नही पडा है। यह फर्क तो तभी पडेगा, जव हम खाली गवर्नमेंट पर देश की भलाई-वुराई का सारा वोभ डालने की आदत छोडकर, हम सव अपनी-अपनी जिम्मेवारी महसूस करेंगे। हम समभें कि हमारा क्या धर्म है, हमे क्या करना चाहिए, किस प्रकार से हमें सरकार का साथ देना चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि गवर्नमेंट में कोई विरोध नही है। इस तरह से ठीक नही है। परन्तु विरोध का शौक करने का समय तो तव आएगा, जव हिन्दुस्तान ताकतवर हो जाएगा। आज विरोध करने से लाभ क्या ? आज विरोध करने से चन्द एलेक्शन (चुनाव) होगे। एलेक्शन में विरोध करने वाले हार जाएंगे। काग्रेस उसी जगह पर खडी रहेगी। इससे क्या फायदा होगा ? हमें यह सीखने की जरूरत है कि आज हमारा कर्तव्य क्या है। हर

हिन्दुस्तानी का, हर सिटिजन (नागरिक) का धर्म क्या है यह सब सीखने-सिखाने की आज जरूरत है। यूनिवर्सिटी में, विद्यापीठ में सभी जगह हमें कर्तव्य का पाठ सीखना है। यह चीज आप सीखे, तभी काम होगा।

आज तो मै नागपुर के हालात नही जानता। लेकिन बहुत-सी यूनिवर्सिटियाँ मैंने देखी है। जिनमें शिक्षा देनेवाले लोग यह समझते है कि हम समाजवाद सीखें, साम्यवाद सीखें, और उस पर बहस चलाएँ। यह ठीक है। इससे अपनी एक तर्क-वितर्क की शक्ति खिल जाएगी। लेकिन हिन्दुस्तान उससे ताकतवान नही बनेगा। हाँ, नौजवानो की विचार-शक्ति खिले, वह एक प्रकार की योग्यता है। लेकिन उसके साथ-साथ अगर अपनी जवाबदारी, अपनी जिम्मेवारी महसूस करना हम नही सीखेंगे और काम करने के लिए हाथ-पैर चलाना हम नही सीखेंगे, तो देश का काम नही होगा।

हमने तो कही तर्कवाद या वितर्कवाद नही सीखा। हम पर तो जो बोझ आता रहा, उसको उठाते रहे। इस तरह ससार के विद्यापीठ से हमने कुछ-न-कुछ सीख लिया। जो कुछ सीखा, अपने अनुभव से सीखा। इस विद्यालय में से, या नागपुर विद्यापीठ में से जो नौजवान निकलेगे, वे क्या खाली तर्कवाद करते रहेगे ? क्या वे खाली टीका-टिप्पणी करने की सीख लेंगे या कुछ आर्टिकल लिखने या कुछ व्याख्यान देने की सीख लेंगे ? अगर केवल यही सब हुआ, तब तो पुरानी चाल चलनेवाली बात होगी। उसमें कोई फायदा न होगा। लेकिन बोझ उठाने के लिए हमें अपने कन्धे मजबूत कर लेने चाहिए। काम करने के लिए हमें अपने पैर मजबूती से गाड लेने चाहिए और काम करने की सीख लेनी चाहिए। हम भले ही न बोले, मगर हमारा काम बोले। मै तो चाहता हूँ कि हमारी जुबान कम बोले, काम ज्यादा बोले। इस प्रकार काम करने की बात आप सीख लेगे, तो उससे आपका और देश का बहुत बडा फायदा होगा।

---

(१३)

स्टेट्स एडवाइज़री कौंसिल का उद्घाटन, नागपुर

४ नवम्बर, १९४८

प्रधान मन्त्री, महाराजाओ और अन्य सज्जनो,

मैं मध्यप्रान्त में विद्यापीठ के आमन्त्रण पर आया था। इस मौके पर आपने एडवाइज़री कौन्सिल का इनआगुरेशन (उद्घाटन) मेरे हाथ से करवाने का निश्चय कर लिया। इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। क्योंकि इस बारे में मैं आप लोगो को चन्द बातें कहना चाहता हूँ। ऐसा मौका बार-बार नही आ सकता। हिन्दुस्तान मे यह जो बडा भारी विप्लव हुआ है, जिससे देशी रियासतो की समस्या इतने थोडे समय मे हल हो गई है। यह सब क्योकर हुआ, किस तरह से हुआ, इसे अभी कम लोग जानते है। उससे क्या लाभालाभ हुए, उन सब के मूल्य आँकने में अभी समय लगेगा। जो कुछ हुआ, उसे कम लोग जानते है।

आप लोगो ने मुझे जो मानपत्र दिया है और इस मानपत्र मे आपने मेरे काम की कदर बूझी है, इसलिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। सक्षेप मे मैं आपको बतलाना चाहता हूँ कि मेरे दिल में रियासतो को एकत्रित करने की और उन्हे हिन्दुस्तान मे मिलाने की कल्पना किस तरह उद्भूत हुई, उसका ख्याल मैं आपके सामने रखना चाहता हूँ। जब मैंने हिन्दुस्तान सरकार के गृहमन्त्री का पद स्वीकार किया, तब मुझे कोई ख्याल न था कि इन देशी रियासतो का काम मेरे पास आनेवाला है। उनका क्या नक्शा बनेगा, यह तो

मैंने कभी सोचा ही नही था । लेकिन थोडे दिनो के वाद मुझे मालूम पडा कि मध्यप्रान्त में वस्तर नाम की एक रियासत है । उस रियासत की धरती में काफी धन भरा हुआ है । उसका उपयोग कौन करे, किस तरह से करे, इसके वारे में मेरे पास किसी ने एक रिपोर्ट भेजी । इस रिपोर्ट में मुझे सावधान किया गया था कि वस्तर में कच्चा सोना भरा है, लेकिन उसका उपयोग हिन्दुस्तान के हित में नही, वल्कि हिन्दुस्तान के अहित में होनेवाला है । यह कह कर उसमें सारा वयान दिया गया था । उस रिपोर्ट में विस्तार से लिखा था कि वस्तर स्टेट की भूमि में क्या-क्या कीमती चीज़ें भरी है और उनको किस तरह से मार्टगेज़ किया जाता है । उसमे लिखा था कि हैदरावाद रियासत को वहुत वडी लम्बी लीज़ (ठेके की अवधि) के लिए सारी स्टेट का यह अमूल्य धन दिया जा रहा है । पोलिटिकल डिपार्टमेंट यह काम कर रहा है । वस्तर स्टेट का राजा समीर (नावालिक) है, और वालिए (शासक . गार्जियन) परदेसी हैं। ये परदेसी लोग वहाँ काम कर रहे है और वहुत ज़ोरो से यह काम चल रहा है ।

जव मैंने यह देखा तो मैंने पोलिटिकल डिपार्टमेंट से पुछवाया कि वस्तर स्टेट में कोई लीज़ हो रही है ? और उसके वारे में आप लोगो ने क्या प्रोग्राम वनाया है । वह सव मुझको वतलाओ । पहले तो उन लोगो ने थोडी आनाकानी की। लेकिन फिर मेरे पास यह चीज़ आई कि हैदरावाद स्टेट के साथ वस्तर का सम्वन्ध रेलवे से वनाया जाए । और यह रेलवे हैदरावाद स्टेट वनवाए । वस्तर की माइन्स (खानो) में जितना खनिज है, उनका लीज़ किया जाए और वहुत लम्वे पीरियड (समय) के लिए यह लीज़ दिया जाए । पोलिटिकल डिपार्टमेंट में यह सव कोशिश हो रही थी। यह भी कि वहुत जल्द यह काम हो जाए । पर उस पर दस्तखत कौन करे ? मैंने पोलिटिकल डिपार्टमेंट से कहा कि यह चीज़ आप नही कर सकते । अव आपको तो यहाँ से जाना ही है । उन्होने कहा कि प्रस्ताव करने वाले स्टेट के शासक हैं। हमने कहा कि अव आपको इस झगडे में नही पडना है । इस समय पर तो वे खुद दस्तखत नही कर सकते थे, क्योकि हमने इसमें रोडा डाल दिया था । तव उन्होने राजा को, जो अभी छोटा था, गद्दी पर वैठा दिया । क्योकि उसकी दस्तखत लेना आसान था । वह अभी कच्चा वच्चा था। यह सव दाँव-पेच अभी समझता नही था।

तब उनको मैंने दिल्ली में बुलवाया। महाराजा अभी इतना समझदार नही था; इसलिए मैंने उनके रिश्तेदार मयूरभंज के महाराजा को भी साथ ही बुलाया। तब वे दोनो दिल्ली में आए। मयूरभंज के महाराजा सयाने आदमी है, लेकिन वह बस्तर पर कुछ प्रभाव डाल सकेंगे, ऐसा मैंने नही पाया। महाराजा बस्तर तो अभी बहुत ही नाअनुभवी बच्चा था। उस निर्दोष से दस्तखत कराना मेरी राय से एक प्रकार का गुनाह था। उसको राज्य चलाने का न कोई अनुभव था और न इल्म था। तब इस मामले का क्या बनेगा, यह चीज कहाँ बैठेगी, इस बात का मुझे अन्देशा हुआ। मैंने सोचा कि जल्द ही पोलिटिकल डिपार्टमेंट को हटाया जाए, तो यह काम हो सकता है। यही एक किस्सा नही था। और भी बहुत से किस्से थे। कितने ही छोटे-छोटे लडको को गद्दी पर बिठा दिया गया था।

तब हमारी यह कोशिश हुई कि हम इस पोलिटिकल डिपार्टमेंट से जितनी जल्द फारिग हो जाएँ, उतना ही अच्छा हो। पोलिटिकल डिपार्टमेंट भी कोशिश कर रहा था कि जाते-जाते जितना काम उसे अपने हित में करना है, वह सब कर लें। उधर मै सोच रहा था कि भविष्य मे रियासतो का क्या होना चाहिए, और किस तरह से काम होना चाहिए।

तब मैंने एक ड्राफ्ट तैयार किया, जिसके अनुसार वह हक भारत सरकार को मिल जानेवाले थे। मैंने उन महाराजाओ को बुलाया और कहा कि इस बात पर विचार करने के लिए यदि आपको वक्त चाहिए, तो वक्त लो। लेकिन अपनी जिम्मेदारी समझ कर इस पर दस्तखत करो, तब मैं कबूल करूँगा। उन लोगो ने नही किया। मैं चला गया। मै स्टेशन पर गया। वहाँ मैं रेल में बैठा था। वहाँ पर उन लोगो ने दस्तखत नही किए। लेकिन मेरे पीछे उन लोगो ने एक पैगाम भेजा कि एक घटा ठहर जाइए। तो मैं रेलगाडी में ही ठहर गया और मेरा सेक्रेटरी उनके पास रहा। उसने उन लोगो को समझाया। तब उन लोगो ने दस्तखत कर दिए और मुझको ये दस्तखत रेल में भेज दिए।

अब लोग तरह-तरह की बाते कहते हैं। बहुत से लोग तो समझकर कहते है और तारीफ करते है। और कई लोग यह कहते है कि यह तो हिटलर का काम किया। उन लोगो को यह मालूम नही था कि मैंने दस्तखत करवाए नही थ। मैंने तो उन्ही पर छोड दिया था और मैं चला गया था। लेकिन उन

लोगो ने दस्तखत कर के मेरे पास भेज दिया। खुद उनके दिल मे आ गया कि हिन्दुस्तान के हित में, उनके अपने हित मे, और रियासत के हित में यह चीज है। तभी उन्होने दस्तखत किए। हाँ, एक वात मैंने जरूर कही थी कि यह चीज जल्द करने की है, क्योकि मेरा काम एक ही रियासत के साथ नहीं है। मेरा तो छोटी-वडी सभी रियासतो के साथ काम है। मुझे यह काम जल्द पूरा करना है। अगर जल्दी यह काम नही हुआ, तो उसमें रुकावट डालनेवाली शक्तियाँ पडी है, वे सव काम विगाड देंगी। तो वे लोग समझ गए और उन्होने दस्तखत कर दिए।

वहाँ से मै सीधा नागपुर आया। नागपुर में भी मैं कोई ज्यादा ठहरा नही था। जो राजा-महाराजा यहाँ वैठे है, वे जानते है कि मैंने उन पर कोई दवाव नही डाला और न किसी प्रकार का लालच उनको दिया। ऐसा कोई काम मैंने नही किया। खाली उनको समझाया कि यह सव क्या चीज़ है। उन लोगो ने पूरी समझपूर्वक चन्द घण्टो में अपने दस्तखत मुझे दे दिए और सुवह मै चला गया। यह तो उस सारे काम की शुरुआत हुई थी। लेकिन जव यह काम हो गया, तव सारे हिन्दुस्तान में और हिन्दुस्तान के वाहर भी एक चमत्कार सा हो गया। सवको हैरानी हुई कि यह क्या हो गया। लेकिन जिन रियासतो ने दस्तखत किए थे वह तो कर दिया, लेकिन उसके वाद जो काम हुआ, उसका सारा यश यहाँ के राजा महाराजाओ को मिला, जिन्होने समझपूर्वक जल्दी-जल्दी दस्तखत किए थे। मैंने उसमें कुछ नही किया। खाली मैंने उन्हे समझाया कि मेरी योजना क्या है और हिन्दुस्तान किस तरह से चलनेवाला है। (तालियाँ)

आपकी सलामती भी इसी मे है, हिन्दुस्तान की सलामती भी इसी में है। जिन लोगो के दिल में देशप्रेम जागृत हुआ, उन लोगो ने दस्तखत किए। उसके वाद तो आप जानते हैं कि मुझे सौराष्ट्र, जहाँ सारे हिन्दुस्तान के वरावर रियासतें पडी थी, वल्कि उससे भी ज्यादा रियासतें वहाँ थी, उनको मिलाने का वहुत वडा और विकट काम था। यह काम करने में मुझे उन लोगो से सहायता मिली, क्योकि उन लोगो ने अच्छे समय पर शुरुआत की थी। लेकिन जिन लोगो से मैंने कोई उम्मीद नही रखी थी, ऐसे लोगो ने भी सौराष्ट्र में मेरा साथ दिया। यह वात ठीक है। तो करीव-करीव २५०-३०० रियासतो का एक गुट वन गया और इससे एक सौराष्ट्र का जन्म हुआ।

महाराष्ट्र की जितनी रियासतें थी, उन लोगो ने तव तक अलग रहने का एक इन्तजाम किया था। जिसकी आधारभूत वात थी एक प्रकार का जवावदार राजतन्त्र अपनी प्रजा को देना, और काम चलाना। लेकिन इस सम्वन्ध में जो काम की शुरुआत हो गई थी, उसका असर महाराष्ट्र पर पडा और वहाँ जितने नौजवान राजा थे, वे सव मेरे पास आए और कहने लगे कि हम तो वम्वई राज्य में मिलना चाहते है। हम इस तरह से अलग नही रहना चाहते। मैंने कहा कि आपको मुवारकवाद है। उन्होने कहा कि हम तो यह करना चाहते है लेकिन क्या आप हमको ऐसा करने देंगे? मैंने कहा कि क्यो नही? तव उन्होने कहा कि कुछ और राजा कहते है कि क्योकि उन लोगो ने कांग्रेस के साथ इस प्रकार का समझौता कर लिया है कि उन्हे अलग रहना है, तो इस प्रकार पृथक कायम रहने से उन्हे रक्षण मिलेगा। मैंने कहा कि यह वात तो गलत है। कांग्रेस ने किसी के साथ न ऐसा समझौता किया है, न कोई ऐसा वन्दोवस्त किया है और न किसी को इस प्रकार की गारण्टी दी है।

तव सव राजाओ का एक डेपुटेशन आया और मैंने उनको समझाया कि यदि आप यह समझते है कि छोटी-छोटी रियासते एक प्रकार अपनी प्रजा को जवावदार राज्यतन्त्र का अधिकार देकर अपने पृथक् भविष्य को कायम रखने की गारण्टी ले लेगी, तो आप का यह ख्याल गलत है। वह वन नही सकता। जवावदार राज्यतन्त्र कोई हँसी खेल नही है। रेस्पासिविल गवर्नमेंट (उत्तरदायी सरकार) का मायना यह नही है कि हमारे मुल्क मे इस प्रकार के छोटे-छोटे टुकडे वनाकर हम अंग्रेजो के रेस्पासिविल गवर्नमेंट की नकल करेंगे। वह तो हमारे मर जाने की वात हो जाएगी। इस तरह से नही हो सकता। यह न आपके इंटरेस्ट (हित) में है और न हमारे। आपको मिल जाना हो तो मिलो। नही तो भविष्य में यदि कभी आप प्रोटेक्शन (सुरक्षा) के लिए सेण्ट्रल गवर्नमेंट (केन्द्रीय सरकार) के पास या कांग्रेस के पास आना चाहेंगे तो आपको कोई रक्षण नही मिलेगा। तव सेण्ट्रल गवर्नमेंट भी आपको प्रजा के सामने इस प्रकार का रक्षण नही देगी। क्योकि अव युग वदल गया है। उससे तो यही अच्छा है कि आप अपने आप ही समझ-वूझ कर किसी राज्य में शामिल हो जाओ।

तव उन लोगो ने मान लिया और कहा कि आप जो कहते है, वही ठीक

बात है। पीछे गुजरात के सब राजा भी मिल गए। इस प्रकार सब रियासतें मिलने लगी। उन पर किसी का भी दवाव नही था। इसका एक उदाहरण आपको देना चाहता हूँ। मयूरभज के महाराजा मेरे पास आए और कहने लगे कि मैंने अपनी प्रजा को वचन दिया है कि हम तुम्हे जवाबदार राजतन्त्र देनेवाले हैं। इसके लिए हमारे यहाँ आजकल चुनाव भी चल रहा है। उन्होने कहा कि उन लोगो को इस प्रकार का वचन देने के वाद अगर मैं उसमें से हट जाऊँ, तो मेरे ऊपर वचन भग करने का आरोप आएगा। तव मैंने कहा कि मैं किसी पर दवाव नही डालूगा। आप खुशी से अलग रहिए। लेकिन पीछे आपको पछताना पडेगा। तब मुझे याद करोगे। वह अलग रहे। आज तक भी वह अलग है। लेकिन आज जब ये रियासतें उसमें मिल गई, तव से वह अपने राज्य में अभी तक नही गए और न वहाँ जाना ही चाहते हैं। जव तक उनका राज्य उसमें न मिल जाए, तब तक वह वहाँ नही जाएँगे। अनुभव से उनको मालूम हो गया कि उसमें कोई मिठास नही है। तो अव वहाँ रेस्पा-सिबिल गवर्नमेंट के जो लोग थे, जिन्हे प्रतिनिधि मण्डल कहा जाता है, उन्होने कहा कि हमें उडीसा में मिला दो। लोग भी यही कहते हैं। महाराजा का दिल भी उन्होने देख लिया, और वे खुद भी चाहते है। तो अनुभव से उन लोगो को यह सब मालूम हुआ।

लेकिन मध्यप्रान्त की सरकार और यहाँ के महाराजाओ ने बहुत सभ्यता और वहुत समझदारी से काम किया। उसके लिए मैं इन लोगो को मुबारकबाद देना चाहता हूँ। (तालियाँ) क्योकि एक साल पूरा बीत गया, और मेरे पास एक भी शिकायत नही आई। न रैयत की ही तरफ से, न राजाओ की तरफ से और न गवर्नमेंट की तरफ से ही। यह बहुत खुशी की बात है। अब यह सव काम तो हुआ। छोटी-मोटी रियासते सव मिल गई।

उसके बाद हैदराबाद का जो सवाल आया, वह तो आपके सामने ही है। जो अभी वना है, उसे वताने में आपका समय नही लूगा। लेकिन कहने का मतलव यह है कि मेरे काम की जो कदर आप करते है, उसका समय अभी नही आया। यह तो थोडे से समय में इतना परिवर्तन हो गया है। राजाओं ने त्याग किया, उन्होने अपनी सत्ता छोड दी। जिसे अपनी कोई कीमती चीज छोडनी पडती है, वही इस तरह के काम की कदर कर सकता है। जिसने कभी कोई त्याग नही किया वह उसकी पूरी कदर नही कर सकता। मेरे दिल में इन

महाराजाओ के काम की पूरी कदर है और मैंने इन लोगो से हिन्दुस्तान सरकार की तरफ़ से वादा किया है कि आप लोगो की इज्जत और आप लोगों की जगह कायम बनी रहेगी। क्योकि आपने पूरी सभ्यता से हिन्दुस्तान का साथ दिया है।

लेकिन मैंने जो अभी कहा था कि अभी कदर करने का समय नही आया, उसका मतलब यह है कि अभी तो यह परिवर्तन मैप (नक्शे) का ही हुआ है। अभी हमे पता लगाना है कि दिल का परिवर्तन कितना हुआ है। जब यह काम चलता जाएगा, तब हमारी रियासतो के लोगो को मालूम पडेगा कि यह अच्छा हुआ है और इससे उनका भला हुआ। आज जो यह क्रान्ति हुई है, उसका मिठास जब उनको मिलेगा, तब वे उसकी कदर कर सकेंगे। बस्तर स्टेट की जो रिद्धि-सिद्धि है, वह जब निकलेगी, तब लोगो को फायदा मिलेगा, प्रान्त को फायदा मिलेगा, मुल्क को फ़ायदा मिले तब लोगो को उस चीज का पता चलेगा। इसी तरह हमारी रियासतो में बहुत ही ऋद्धि-सिद्धि भरी हुई है। उस को हमें बाहर निकालना है और हिन्दुस्तान की नस में उसका खून देकर हिन्दुस्तान को ताकतवान बनाना है। तभी हमारे इस काम की कदर होनेवाली है। मुझे मानपत्र के देने का अवसर आज नही है, वह अवसर तो तब आएगा, जब यह सब काम सिद्ध हो जाएगा। अभी तो जैसा यह नक्शे का फेर-फार हुआ है, वही ठीक है।

जिस तरह से आप लोगों ने इस काम में मेरा साथ दिया, उससे मुझे इतना फ़ायदा मिला कि और जिस जगह काम में मुसीबत आती थी, वहाँ पर मैं आपका उदाहरण देता था। मै उनसे कहता था कि भाई, यह करते हो। देखो मध्यप्रान्त के राजा-महाराजा, वहाँ की सरकार, और वहाँ के लोग किस तरह और किस खूबी से मिल कर काम करते है। उसी तरह से तुम भी काम करो। अब परदेसी यहाँ नही हैं। वे सब चले गए हैं। अब हमारे रास्ते में कोई रुकावट नही है। अब हमे आपस में मिलकर हिन्दुस्तान को मजबूत बनाना है। उससे काम मे आप झगड़ा क्यो करते है? इस काम मे इस झगड़े से क्या फायदा कि एक स्टेट बिहार में मिले या उडीसा मे। और आपका काम देखकर और राजा भी मेरे पास आते है और कहते है कि भाई, हम तो और जगह पर राज्य के समूह में मिल गए थे। लेकिन हमें तो प्रान्त में मिल जाना है, क्योकि वहाँ हमारी इज्जत भी बराबर रहती है, हमारी

शान भी रहती है। वही हमको सुख मिलेगा। इसलिए हमको प्रान्त में मिला दो। हमें अलग नही रहना है। उसका कारण यही है कि आप लोगो का काम बहुत अच्छा चल रहा है।

आपने इस काम को आगे बढाने में एक और स्टेप (कदम) भी लिया है। यह कदम है एडवाइजर्स बोर्ड (सलाहकार मण्डल) बनाने का। क्योकि आज जब तक कानून में फर्क नही होता, तब तक दूसरा काम नही हो सकता। मैंने शुरू में कहा था कि कुछ लोगो को अपने साथ लेने के लिए हमें कोशिश करनी चाहिए। इस प्रकार के लोगो को हमें अपने साथ लेना चाहिए, जिन्हे काम का कुछ-कुछ अनुभव भी हो। अगर कोई लोग क्राउड (भीड) बनाकर चिल्लाने लगे, तो उससे लोकशाही नही बनती है। यह बहुत जवाबदारी का काम है। तो उसको आहिस्ते से सीखना पडेगा। क्योकि रियासत में जिस प्रकार का काम एक तरह से चलता था, यह दूसरे ढग का था। एक हाथ से काम करना एक तरह से आसान भी है और एक तरह से कुछ अच्छा भी है। उससे भी ठीक काम तो चल सकता है। लेकिन उसमें लोगो का साथ न हो, तो न उससे लोगो को राहत मिलती है और न उसका फायदा ही मालूम पडता है। तो चाहे थोडा बिगाड भी हो तो भी लोगो को उसमें लेने की कोशिश करनी चाहिए। यह एडवाइजरी बोर्ड बनाकर आप पहला कदम आगे उठाते है, और मेरे पास से इस काम की शुरुआत कराते है, तो हमारा यह कर्तव्य है कि उसका पूरा फायदा लोगो को पहुँचाएँ। इस तरह से हमे यह काम करना चाहिए।

हमारी रियासतो में, और खासकर मध्यप्रान्त की रियासतो में, बहुत-से लोग ऐसे है, जो पिछडे हुए है। राजाओ-महाराजाओ की जो मर्यादा है, उनकी जितनी कदर होनी चाहिए, वह तो हमेशा होनी ही चाहिए। क्योकि हमारे पास मुल्क का बोझ उठाने के लिए जितने आदमी चाहिए, उतने भी आदमी नही है। बहुत कम आदमी है।

आज हमारे लोग छोटी-मोटी बातो के लिए, छोटी-मोटी जगहो के लिए लडते है। इस सब मे क्या पडा है? हमारे देश में इतनी जगह पडी है। हम पर हिन्दुस्तान का राज्य आकर पडा है। उसमें से परदेसी हट गए है। उन लोगो की वह सारी जगह हमारे पास पडी है। उस जगह को सम्हालने के लिए हमारे पास आदमी नही है। तो इसमें लडाई-झगडे की क्या जरूरत है? यदि लोग लायक बन जाएँ, तो काम करने के लिए इतना बडा मैदान चारो तरफ

सरदार पटेल बम्बई में दक्कन की रियासतों के महाराजाओं से बातचीत करते हुए

खुला पड़ा है। लेकिन हमें उसके लिए लायक बनना है। तभी हमारा काम होगा। केवल हमारे देश का ही नही, सारे एशिया का मैदान खाली पड़ा है। हम में शक्ति होनी चाहिए, हमारे पास ताकत होनी चाहिए, हम में बुद्धि होनी चाहिए। हम सबको एक साथ मिलकर सारे देश को ऊँचा उठाना है। जिस प्रेम से आपने मेरे काम की कदर की, मै उसके लिए एक बार और आपको धन्यवाद देता हूँ।

---

(१४)

भारत में बने दूसरे जहाज* का जल-प्रवेश

दिल्ली,
२० जनवरी, १९४८

सिन्धिया कम्पनी के डाइरेक्टर गण तथा नारियो और गृहस्थो,

मुझे बडी खुशी होती अगर मैं खुद विजगापत्तन के यार्ड पर पहुँच गया होता। लेकिन मेरी शारीरिक अवस्था देख कर सिन्धिया कम्पनी ने जो यह प्रबन्ध करने की मेहरबानी की, इसके लिए मैं उनके प्रति आभार प्रदर्शित करना चाहता हूँ। कुछ कुदरत के हाथ की बात है कि जहाज पानी में तभी जा सकता है कि जब उसके योग्य मिनिट या समय आ जाए। तो वहाँ से जब तक हम को सिगनल नही मिलता है, तब तक यह बटन दबाने का काम मैं नहीं कर सकता। इसलिए आप लोगो का और मेरा समय व्यर्थ न जाए, इस इच्छा से, मुझे जो कुछ कहना है, वह मै पहले ही कह देना चाहता हूँ। इस रस्म में हिस्सा लेने का मुझको मौका दिया, इसके लिए मै सिन्धिया कम्पनी को धन्यवाद देना चाहता हूँ।

मेरा और सिन्धिया कम्पनी का परिचय वहुत दिनो का है, यहाँ मै उसकी याद दिलाना चाहता हूँ। सिन्धिया कम्पनी ने जो काम किया है, वह काम वहुत कम लोगो को मालूम है। यहाँ जब पिछली परदेसी हुकूमत थी, उसके

*इस जहाज का जल-प्रवेश सरदार पटेल ने दिल्ली बैठे-बैठे ही किया था। बटन दबाते ही जहाज पानी में उतर गया था।

साथ जिस प्रकार हमारी आजादी की लडाई चलती रही, उसी प्रकार वल्कि उसके साथ-साथ, सिन्धिया कम्पनी की अपने क्षेत्र मे लडाई चलती रही। जैसी कुर्बानी हम लोगो को यहाँ करनी पडी, उसी प्रकार की कुछ दूसरे ढग से, इन लोगो को भी करनी पडी। उनका इतिहास, जो लोग उसमे हित रखते है, उन्हे मालूम है। और जव हम इस शिपिंग कम्पनी का इतिहास याद करते है, तव ऊपर से इन्हे दवाने की कितनी कोशिश की गई, वह सारा इतिहास भी हमारे सामने खडा हो जाता है। और ऐसे मौके पर हमें सवसे पहले डयूटी कुरीन का स्मरण आता है, जो एक स्वदेशाभिमानी गृहस्थ था और जिसका नाम चिदम्बरम् पिल्लाइ था। उसे किन-किन तरीको से दवाया गया, उसे कितनी-कितनी कठिनाइयाँ और मुसीवते सहन करनी पडी, वह सव हमारे सामने आ जाता है।

सिन्धिया कम्पनी ने यह सव लडाइयाँ अच्छी तरह से और वीरता से लड़ी और आखीर में उनमें सफलता पाई, जैसे हमने भी सफलता पाई। उनका और हमारा काम एक ही साथ पूरा हुआ है। दूसरी तरह से उनका भी काम स्वाधीनता-प्राप्ति से शुरू होता है, और हमारा भी शुरू होता है। हमारी आजादी एक साल की है। उनका जो काम सफल हुआ है, वह भी एक साल से शुरू हुआ है, जव हमारे प्रधान मन्त्री ने उनके वनाए पहले जहाज का जल-प्रवेश करवाया था। जैसी उनकी समस्याएँ है, जैसी उनकी जरूरते है और जैसी उनकी मुसीवतें है, ठीक वैसी ही हमारी भी है। सिन्धिया कम्पनी अपने पैरो पर खडा होने की कोशिश कर रही है, हाथ-पैर फेक रही है और इधर-उधर से मदद की माँग कर रही है। हम भी यही कोशिश कर रहे हैं और चाह रहे है कि जिस किसी तरह से हम अपने पैरो पर खडे हो जाएँ। हमें आशा है कि चन्द दिनो मे हम इन सव मुसीवतो का मुकावला कर लेंगे लेकिन हमारे खुद खडे रहने की कोशिश में हमें सिन्धिया कम्पनी की फ़तह-मन्दी की जरूरत है। क्योकि उनके हित मे हमारा हित भी समाया हुआ है। साथ ही हमारे हित मे उनका हित है।

सिन्धिया कम्पनी के सचालको ने भारत सरकार के पास एक आवेदन-पत्र भेजा है और वे वहुत जल्दी कुछ-न-कुछ जवाव चाहते है। मेरा इस प्रकार यहाँ उसका जवाव देना कहाँ तक सही होगा, वह मै नही जानता हूँ। क्योकि हमारे उद्योग मन्त्री भी यहाँ ही वैठे है, और उस कोने पर अन्य नाना मन्त्री

भी यहा बैठे है, उनकी सहानुभूति और उसकी सम्मति न हो, तो गवर्नमेंट की तरफ से किसी को कोई वायदा देना बडी मुसीबत हो जाती है और दें भी, तो भी सफल वही होता है, जिसमें सबकी सहमति हो। जब हमारे प्रधान मन्त्री ने पिछले साल आपको भरोसा दिया था, तो मेरी भी हिम्मत चलती है कि जो कुछ इशारा आपने किया है, उसके सम्बन्ध में यह कहूँ कि उस पर हम लोग बहुत सहानुभूति से और जितना हो सके उतना जल्दी, उसका फैसला करेंगे। क्योकि हम जानते है कि जो वागवटा का काम है, शिपिंग इण्डस्ट्रीज का काम है, वह सबसे बडा जरूरी काम है और इसीलिए गवर्नमेंट ने पिछले अप्रैल में एलान किया है, कि यह एक ऐसी इण्डस्ट्री है, जिसे गवर्नमेंट अपने हाथ में लेना चाहती है। और अगर सरकार ने अपने हाथ में ले लिया तो भी जो काम सिन्धिया कम्पनी ने किया है, जो योजना सिन्धिया कम्पनी ने बनाई है, उसको वह अच्छी तरह से आगे बढाना चाहती है। उसे आगे बढाने में सिन्धिया कम्पनी का भी साथ लेना है। और हम कुछ भी काम करें, शिपिंग इण्डस्ट्री में गवर्नमेंट और सिन्धिया कम्पनी की एक दूसरे की सहायता और परस्पर सहयोग के बिना यह उद्योग आगे चलनेवाला नही है। उनका जो अनुभव है, उसका हम पूरा फायदा उठाना चाहते है। हमारा और उनका सहयोग प्राप्त कर मुल्क को फायदा देना यही हमारी इच्छा है। आप भी यही चाहते है और हम भी यही चाहते है।

अब जो लडाइयाँ आपने लडे, बडी सफलता और बडी कुशलता से लडी। इसलिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। उसका सबूत तो पिछले साल उसी समय मिल गया था, जब प्रधान मन्त्री ने अपना पहला जहाज़ पानी में उतारा था। बहुत दिन नही हुए, जब विदेशी वेस्टिड इन्टरैस्टो (विदेशी हितो) ने, हमारे मुल्क में, बहुत समय से पैर जमा कर बैठी हुई विदेशी सरकार की मदद से, हमारे इस उद्योग को रोकने की और इसे रौंदने की काफी कोशिश की थी। वालचन्द भाई ने मुझे मेरा वह भाषण याद दिलाया, जो आज से दस साल पहले सिन्धिया हाउस की ओपनिंग सेरिमनी (उद्घाटन समारोह) करते हुए, मैंने दिया था। आज आप की यह उन्नति देखकर मुझे बडी खुशी होती है। तब मैंने जो कुछ कहा था, वह सम्पूर्ण सही निकला है। आज हिन्दुस्तान की सरकार पर वह धब्बा नही है, जिसकी उसने याद दिलाई है। तो सिन्धिया कम्पनी ने अपने सीधे रास्ते पर खडे रह कर, सीधे मार्ग पर चलने की कोशिश

की, उसमें जो रुकावटें थी वे सब निकल गई। मुझे उम्मीद है कि अब उनके रास्ते में कोई ऐसी रुकावट नही आएगी, जिससे आगे की प्रगति अटकानी पडे।

इस मौके पर मुझे कुछ ज्यादा कहने को नही है। लेकिन आखिरी धन्यवाद से पहले मैं उन मजदूरो, कारीगरो और स्टाफ के लोगो से, जिन लोगो की तरफ से मुझको मानपत्र दिया गया है, दो शब्द कहना चाहता हूँ। मैंने इसका भी डर नही रखा है कि मुझे कोई गैर समझेगा, और इसकी मुझे परवाह भी नही है। लेकिन बडी मुहब्बत से हर मौके पर मैंने मजदूरो को सावधान किया है और साफ-साफ बात की है? क्योकि जो साफ बात कहता है, वही अपना सच्चा हितकर है, यह हमे समझना चाहिए। तो मुझे मजदूरो की तरफ से जो मानपत्र दिया गया है, उसके लिए मैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ। लेकिन मैं बडे प्रेम से एक सलाह भी उन्हे देना चाहता हूँ कि यदि कूएँ में पानी नही होगा, तो हमारे गुजरात में एक कहावत है कि, जो हमारा 'ध्वारा' यानी चौबच्चा है (जिसमें से जानवर पानी पीते है) में भी पानी नही आएगा। तो हमारा प्रथम कर्तव्य यह है कि जिस इण्डस्ट्री के साथ हमारा पाला पडा है, जिससे हमें रोटी पैदा करनी है, उस इण्डस्ट्री को किसी भी तरह से चोट न लगे, उसका किसी तरह से बिगाड न हो। इतना सँभाल के जितना माँग सकते है, उतना माँगना चाहिए। वह हमारा हक है। और उस हक के लेने-देने मे अगर ज्यादा-से-ज्यादा मदद आज कोई गवर्नमेंट कर सकती है, तो काग्रेस गवर्नमेंट ही कर सकती है। क्योकि हिन्दुस्तान की आज़ादी की लडाई में मजदूरो ने जो साथ दिया है, उसको हम कभी भूल नही सकते है। और आखिर आज़ादी की लडाई लड कर हिन्दुस्तान की आज़ादी लेने का हमारा उद्देश्य क्या था? जब हमारे मुल्क मे गरीब-से-गरीब लोगो को, जो मजदूरी करते है, मेहनत करते है, और पसीना बहा कर अपनी रोटी पैदा करते है, आज़ादी का स्वाद न मिले, तब तक आज़ादी का कोई मतलब नही, कोई फल नही। हमेशा हमारी यही कोशिश रहेगी कि आपको ज्यादा-से-ज्यादा मिले। लेकिन ऐसी गलती कभी न करना, जैसा बार-बार और जगह-जगह पर किया जाता है। आपके यहाँ भी दो-तीन महीने की एक स्ट्राइक हुई थी, ऐसा मुझे स्मरण है। उसमे लाखो रुपये का नुकसान हुआ था। चाहे एम्प्लायर्स (मालिक) की गलती हो और चाहे हमारी गलती हो, हमे ऐसी जिद कभी नही करनी चाहिए, जिससे देश का नुकसान हो। जैसा महात्मा गान्धी जी ने पहले से

अहमदाबाद के मजदूरो से मजूर करवाया था, उसी तरह अपने झगडो का फैसला हमें पचायत से करना है। वही सबसे अच्छा तरीका है और आज अपनी सरकार से बढकर कौन पचायत आप लोगो के हित में सबसे अच्छी होगी? यह तो आप की अपनी सरकार है। आज मजदूरो को सलाह देनेवाले बहुत लोग ऐसे है, जो अपनी नेतागिरी के लिए ज्यादा-से-ज्यादा मांग करवाते हैं और फिर फसाद करवाते हैं। आपके सच्चे सेवक की हैसियत से मैं कहता हूँ कि आपने मुझे जो मानपत्र दिया है, वह अगर सही हो, वह अगर दिल से हो, तो मेरी बात पर अच्छी तरह सोचिए और अपनी सरकार की, अपने लोगों की और अपने मुल्क की सहानुभूति कभी न गमाइए। अगर आप जनता के हित को भी सामने रखकर अपना काम करेंगे तो आपका हमारा साथ हमेशा रहेगा।

अब मुझे आपका ज्यादा समय नही लेना है। आज जो अपने मुल्क में यह दूसरा जहाज बना है, उसकी जल-प्रवेश-विधि करने का, इस रस्म में हिस्सा लेने का जो मौका आपने मुझे दिया, उसके लिए मै आपको, सिन्धिया कम्पनी को और वालचन्द भाई को मुबारकबाद देना चाहता हूँ, धन्यवाद देना चाहता हूँ। मै उम्मीद और प्रार्थना करता हूँ कि ये जहाज और इनके साथ जिनका कभी भी सम्बन्ध होगा, वे सब सुखी हो और आबाद हो। ऐसे नए-नए जहाज विजगापत्तन की गोदी में बहुत से बनें और जल्दी-जल्दी बनें, ऐसी उम्मीद भी हम रखते है। ये सब जहाज दुनिया के और देशो की बन्दरगाहो में पहुँचें और झडे की इज्जत बढाएँ, क्योकि वह हमारे देश का झडा है। हर जगह पर वे अपना नाम और अपनी कीर्ति कायम रखें। इतना कह कर मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ और आप सबसे भी चाहता हूँ कि आप सब भी यही प्रार्थना करें कि हमारा यह नया जहाज हिन्दुस्तान के बाहर सब मुल्को के बन्दरगाहो में हिन्दुस्तान की इज्जत बढाए और अपनी भी इज्जत बढाए।

जयहिन्द!

(१५)

अलाहाबाद युनिवर्सिटी का कन्वोकेशन भाषण

२५ नवम्बर, १९४८

गवर्नर साहिबा, वाइस चासलर साहव, नवस्नातको, विद्यार्थियो और वहनो,

आपने इस कन्वोकेशन में इकट्ठे हुए मान्य जनो के सामने प्रवचन देने के लिए मुझे बुला कर, और मुझको 'डाक्टर आफ लाज' की डिग्री देकर मेरा जो सम्मान किया है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। जब मैं उन मान्य व्यक्तियो और योग्य पुरुषो का ध्यान करता हूँ, जिन्होने पूर्व काल में आपके सामने प्रवचन दिए है और जिन्हे आपकी तरफ से आनरेरी डिग्रियाँ मिली है, तो मैं अपने आपको एक अपरिचित समाज में पाता हूँ। स्कूल कालेज की पढाई में मैंने कोई खास नाम पाया हो, मैं कोई ऐसा दावा नही करता। मैंने जो कुछ पाठ पढे है, वे जीवन के महान विश्वविद्यालय में पढे हैं। मैं विद्वान होने का कोई दावा नही करता। कला या साइन्स के विशाल गगन में भी मैंने कोई उडान नही भरी है। मेरा काम तो कच्ची झोपडियो में और गरीब किसानो के खेतो, ऊसर जमीनो या शहरो के गन्दे मकानो और मोरियो में रहा है। सार्वजनिक जीवन में भी मैं कोई नीतिज्ञ या कोई पालिटीशन नही, बल्कि मार्क एन्टनी की तरह एक सीधा-सादा अक्खड आदमी रहा हूँ। आज ये सम्मानित उपाधि आपने मुझे दी है। वह मेरे दिल और दिमाग के किन्ही विशेष गुणो की प्रशसा मे नही, बल्कि साधारण आदमियो के उन

गरीब वर्ग के मर्द-औरतो के सम्मान में दी है, जिनकी सेवा करने का गौरव मुझे मिला है।

जब पिछले साल हमारे राष्ट्र के नेता हमारे प्रधान मन्त्री ने आपके कन्वोकेशन में प्रवचन दिया था उस समय बडी अदल-बदल और उथल-पुथल हो रही थी। पजाब में जो काड हुए थे, उनकी बाढ में तो हम लगभग बह ही गए थे। तब हमारी बुद्धि सदेह और निराशा से मलिन हो गई थी और हमारे दिलो पर क्रोध और बुरी भावनाओ का राज्य था। प्रधान मन्त्री ने उस समय कुछ खास उद्देश्यो का जिक्र किया था और हमारे सामने चाल-चलन जैसे नियम रखे थे। उस समय वह फैली हुई शक्तियो पर विजय पाने का मार्ग बताते थे। आज सौभाग्य से हम उस काली घडी में से निकल आए है, जो कि आजादी पाने के इतनी जल्दी बाद ही निर्मम विधि ने हम पर डाली थी। हमारे इतिहास में हमको यह सबसे भारी धक्का लगा था। मगर अपनी सच्ची अन्तर्भावना और सच्ची श्रद्धा के बल से हमने उसे सहार लिया। कभी-कभी ऐसा मालूम होता था कि हमारी आजादी का आधार ही भारी खतरे में पड गया है। फिर भी उसे हमने जिस किसी तरह सँभाल लिया था।

आज मैं बडी गम्भीरता से आपसे पछता हूँ कि क्या हमने उस आजादी का असल मतलब समझा है, जो वर्षो की कोशिशो के बाद और इतने दुख झेल कर हमने पाई? क्या हमने अपने आपको इस काबिल बनाया है कि आजादी के साथ जो ज़िम्मेदारियाँ हम पर आ गई है उन्हे हम निभा सकें? मै चाहता हूँ कि आप गम्भीरता से इस बात को सोचें कि क्या हमारे चलन में आजादी के प्रेमियो की सच्ची भावना पाई जाती है? क्या हम अपने कर्तव्य और अनुशासन का ध्यान रखते हुए उसी तरह काम कर रहे हैं, जैसा कि हम उस समय करते थे, जब हम आज़ादी की लडाइयाँ लड रहे थे? आप में से हर एक को यह देखना चाहिए कि आज़ादी ने हमारे लिए क्या-क्या समस्याएँ खडी कर दी हैं और आप उन्हे हल करने में क्या मदद कर रहे हैं। अगर हर एक देशवासी अपना फर्ज़ अदा करने लगे तो राष्ट्र उन समस्याओ को पक्के और असरदार ढग से सुलझा सकेगा। अनुभव से सीखना बडा महँगा पडता है। पर अनुभव से भी अगर हमने कुछ न सीखा, तो निश्चय ही हम बरबादी और तबाही की ओर चले जाएँगे।

मै आपको उस लडाई की कुछ बातें बताने लगा हूँ, जिसके अन्त में हमने

वह अनमोल निधि पाई, जो आज हमारे पास है। मुझे आशा है, आप उन्हे धीरज से सुनेंगे। सत्य और अहिंसा उस लड़ाई के प्रधान गुण थे। आत्म-बलिदान, दुख और त्याग उन सिपाहियो के बैज थे, जिन्होंने यह लडाई लडी। सहिष्णुता और एकता हमारे सकेत शब्द थे और सेवाभाव हमारा पथ-प्रदर्शन करता था, स्वार्थ भावना नही। हमने घोर युद्ध किया, परन्तु स्वच्छता के साथ। सकुचित स्थानीय विचारो ने हमें कभी नही डिगाया, बल्कि हमने अपने देश के बडे हितो को सदा अपने सामने रक्खा। शक्ति और अधिकार के पदो का हमारे लिए कोई आकर्षण नही था। हम छोटे-से-छोटे लोगो के साथ रहे। उन्ही के साथ हमने सभी तरह के दुख भी उठाए और देश के बडे-से-बडे लोगो के साथ टक्कर ली। मै यह सब कुछ डीग मारने के लिए नही कह रहा हूँ। बल्कि एक गर्व की भावना से यह सब आप को बता रहा हूँ। क्योकि जो कुछ मैंने कहा है वह, सब बीते समय के इतिहास के पन्नो पर बडे-बडे अक्षरो में लिखा है।

परन्तु आज देश का जो नक्शा हमारे सामने है, वह उससे कितना भिन्न है। ऐसा लगता है, मानो एक बरस मे ही हममे से वह भावना और वह गुण निकल गए है, जो उस लडाई मे थे। जो भावना हमने उस महान गुरू की प्रेरणा से और उसकी रहनुमाई में पाई थी, खेद है कि अब हमारा वह नेता हमारे साथ नही। उसका चला जाना, और उससे जो भारी चोट हमे लगी, वे दोनो स्वय इस बात का फलस्वरूप थी कि हम उस मार्ग से हट गए थे, जो उसने हमारे लिए बनाया था और जिस पर एक वक्त हम ऐसी सफलता के साथ चले थे। अब तो ऐसा मालूम होता है कि हमे जालसाजियाँ करने मे और सत्ता पाने के लिए दौडधूप करने में आनन्द आता है। आज हमारे जो मुकाबले होते है, उनमे खेल के स्वस्थ नियमो का ध्यान न कर हम उन्हे गन्दा बना देते है। हम केवल चाल के रूप मे सत्य को सराहते हैं, जब कि हमारे मिजाजो और दिलो पर हिंसा का राज है। हमारी बुद्धि और हमारे काम सिकुडे मार्ग में ही चलते है। हमारे बडे-बडे उद्देश्य और देश के महान हित हमारी आँखो से ओझल होते जा रहे है। हमारे दिलो मे गडबडी और बेतरतीबी फैली हुई है। सिपाहियो का वह समस्त अनुशासन और जनता के प्रति अपने धर्म की भावना हम लोगो मे कम होती जा रही है। मै आपको विश्वास दिलाता हूँ कि इस चित्र मे मै कोई बात बढा कर नही दिखा रहा हूँ। हाँ, जो परिवर्तन हुआ

है, उस पर मैं जानबूझ कर ज़ोर दे रहा हूँ। क्योंकि मैं समझता हूँ कि आज जो हालत है और जो समस्याएँ मुल्क के सामने है, उन्हे हम तभी सुलझा सकेंगे, जब कि हम उस भावना और उन गुणो पर और भी अधिक ज़ोर दें, जिनसे बीते जमाने में हमें इतना लाभ हुआ था।

आखिर इस बात को तो हमें ध्यान में रखना ही चाहिए कि हमें आजादी ऐसे समय में मिली है, जब कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रो में हमारे चारो ओर समस्याओ का एक तूफानी समुद्र-सा फैला हुआ है। मनोवैज्ञानिक और भौतिक दोनो रूपो से युद्ध से शान्ति की ओर परिवर्तन बहुत देर से हुआ और इसका फल यह हुआ कि हम अब भी घबराहट और अनिश्चितता की परिस्थितियो में फँसे हुए हैं। हमारी सारी आर्थिक व्यवस्था बिगड गई है और हमारी नागरिकता की भावना एक ओर तो युद्ध की तबाहियो और दूसरी ओर युद्ध-जनित बडे मुनाफो के कारण पतित हो गई है। युद्ध के कारण हर जगह बन्धन ढीले पड गए। इस कारण ज़रूरत से अधिक उत्साह से आजादी की एक विचित्र सी कल्पना व्याप्त हो गई है। वास्तव में यह आज़ादी नही, बल्कि उच्छृङ्खलता है। हमारी उदार अन्तर्भावनाओ में से ज़िम्मेदारी का वह गुण निकल गया है, जिसके बिना हमारे विचारो और कामों में न कोई व्यवस्था रह सकती है न कोई ढग ही। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो में भी आजकल जिस तरह एकमात्र शक्ति-नीति और आपसी सदेह का प्रभुत्व है, वह लडाई से पहले नही था।

हमारे अपने घर में भी ज़रा छोटे क्षेत्र में, वही दुखदायक बातें नज़र आती है। उनके अतिरिक्त हमारी अपनी निजी समस्याएँ भी है। राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से हम इस समय एक गढे के किनारे खडे है। एक भी गलत कदम उठाया कि तबाही अवश्यम्भावी है। हमारे रहने का खर्च असाधारण रूप से बढ गया है। हम जो पैदा करते है, वह उतना नही होता, जितनी की हमे ज़रूरत है। ज़रूरी चीज़ो को बाहर से मँगाना हमको बहुत महँगा पड रहा है। इतना खर्च सहने की हममें शक्ति नही है। जो कुछ हमारे पास है, वह भी आसानी से और न्यायोचित हिस्से से सबको नही मिलता। हमारे कारबार पर और हमारे माली ढांचे पर एक पक्षाघात सा गिर गया है। हमारे हाथ में सत्ता आने के साथ ही देश का बँटवारा हो जाने के कारण भी देश में अनेक कठिनाइयाँ और पेचीदा समस्याएँ खडी हो गई है। शासन को चलाने के प्रधान

यन्त्र में भी योग्य आदमियों की कमी हो गई है। हमें शासन सम्बन्धी कामों और नीतियों को देश की नई सीमाओं के अनुकूल बनाना है। हमें अपने आर्थिक, भौगोलिक, आदर्शवादी और सास्कृतिक प्रश्नो को एक राजनीतिक तथ्य के आधीन करना पड रहा है। यह काम स्वयं ही अत्यन्त विशाल और दुष्कर है। इधर हमारी रक्षा की सर्विसेज़ भी अभी शैशवावस्था में हैं। उन्हे हमें मज-बूत बनाना है और आवश्यक शस्त्र देने हैं। हमें एक ओर तो जमीदारो और ज़मीन को जोतने वाले किसानो के और दूसरी ओर मिल मालिको और कार-खानों में काम करने वाले मज़दूरों के बीच के सम्बन्धो को ठीक करना है। इस सब के साथ-ही-साथ हमें अपनी सीमाओ पर भी उत्तर मे, दक्षिण में, पूर्व में और पश्चिम में सभी ओर हमे सावधान रहना है। एशिया के बाकी देशो में भी घरेलू झगडे हो रहे हैं। कितने ही देशो में आपस में युद्ध छिडे हुए हैं। मुल्क की आज़ादी के दुश्मन अक्सर अन्दर ही होते है, वे बाहर से कम आते हैं। हमको बडी सावधानी से अपने राष्ट्र की एकता, पूर्णता, और सुरक्षा का एक ओर तो अन्दर की फूट डालने वाली शक्तियो से बचाव करना है, दूसरी ओर बाहर वालो के आक्रमण के मनसूबो से अपने देश को बचाना है। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण मे दूसरे काम भी अभी हमें करने हैं। इनमें प्रधान है, अपने जीवन स्तर को ऊँचा करना और अपने राष्ट्रीय चरित्र को ऊँचा बनाना। पहले काम के लिए हमें अपनी प्राकृतिक शक्तियो से काम लेना है और साइन्स के साधनो से पूरा फायदा उठाना है। दूसरे काम के लिए हमे अपनी समस्त राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली को बिलकुल बदल देना होगा।

भाइयो और बहनो, मुझे आशा है कि मैंने आपको इस बात का काफी परिचय दे दिया है कि एक राष्ट्र की हैसियत से और विश्व के नागरिक होने के नाते हमारे सामने जो समस्याएँ है, वे कितनी कठिन और नाजुक है। अब हमें यह सोचना चाहिए कि क्या हम इन समस्याओ की विशालता और जल्दी-से-जल्दी उनको सुलझाने की आवश्यकता को पूरी तरह समझते हुए अपने कर्तव्य-पथ की ओर चल रहे है? मेरा विचार था कि ऐसी घडी मे हम अपना पूरा ध्यान अपनी एकता और अपने सामूहिक बल पर देंगे। मगर इसकी जगह हम अपनी शक्तियो को व्यर्थ के अन्तर्प्रान्तीय डाह मे खो रहे है और छोटी-छोटी भाषाओं के आधार पर पृथक-पृथक इकाइयाँ बनाने की बात सोच रहे है। और यह सब कुछ उस समय किया जा रहा है जब कि हमें राष्ट्र की

माँग और उसकी जरूरतो की ओर अपना पूरा ध्यान देना चाहिए। इस समय जब कि हम सबको मिल कर एक हो जाना चाहिए था, हम अलग-अलग होने की कोशिश कर रहे हैं और यह भी किसी महत्वपूर्ण विचारो के भेद के कारण नही, वल्कि स्वय नेता वनने की इच्छा के आधार पर।

आज तो इस वात की आवश्यकता है कि हम अपनी सारी शक्ति लगा कर ज्यादा-से-ज्यादा औद्योगिक कारखाने खडे करे। परन्तु उसकी जगह हम बराबर धमकियाँ देकर और हडतालें सगठित कर अपनी पैदावार में भारी कमी कर रहे हैं। इस तरह हम अपनी औद्योगिक उन्नति को रोक रहे हैं और देश को नुकसान पहुँचा रहे हैं। हम अपने गडे धन को दवाए वैठे हैं जब कि हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम उसे राष्ट्र के हित के लिए पैदावार के काम में लगाएँ और वह किसी से पीछे न रह जाएँ। आज हमारा मजदूर वर्ग भी धन पैदा करने से पहले ही उसके वँटवारे पर झगडा करने लगा है। इस समय, जव कि हमें ज्यादा-से-ज्यादा वचत करनी चाहिए और अपने साधनो से बडी किफायत से काम लेना चाहिए, हम अनावश्यक खर्च कर रहे है और अपने आराम और आसाइश की गैर ज़रूरी चीज़ो पर, जिनके विना हमारा काम मज़े मे चल सकता है, रुपया गवाँ रहे है। साथ ही हम लोगो में नैतिक मूल्यो की अनुभूति स्पष्ट रूप से कम हो गई है। लडाई के समय की जो अनैतिकता फैल गई थी, उसके कारण घूसखोरी और वेईमानी अभी तक ज़ोरो पर है। हम नागरिकता के प्रारम्भिक कर्तव्य और जिम्मेवारियाँ भी नही जानते। कानून की साख वनाए रखने की वजाय हम अपने रोज के जीवन में उसे तोडते हैं। अनुशासन, ऊँचा चरित्र और शारीरिक तन्दुरुस्ती ये तीनो एक स्वस्थ राष्ट्र के जीवित चिन्ह है। आप अपने अन्दर देखिए और वनाइए आप में ये तीनो जरूरी चीज़ें कहाँ तक है? जीवन के किसी भाग को लीजिए, विद्यार्थी, अध्यापक मजदूर, नौकरी देनेवाले, व्यापारी, सरकारी नौकर, राजनीतिज्ञ चाहे आप कोई भी हो, आप अपने से एक प्रश्न कीजिए कि क्या आप एक स्वस्थ राष्ट्र के नागरिको की तरह काम कर रहे है? मुझे विश्वास है कि इसका जवाव पक्की तरह हाँ मे वहुत कम जगह मिलेगा। हम सबको शरम के साथ यह मानना पडेगा कि हमने ज़रूरत के समय अपने राष्ट्र का साथ नही दिया।

मैं आपको यह भी साफ-साफ वता देना चाहता हूँ कि मैं जो यह अन्तरा-

वलोकन कर रहा हूँ, वह एक निपट निराशावादी या विश्वासहीन व्यक्ति के रूप में नही कर रहा। वल्कि यह तो मै एक पैदायशी आशावादी के रूप मे कर रहा हूँ। मुझसे ज्यादा उन गुणो को और कौन जान सकता है, जो हमने, हमारे देश ने, अपनी आजादी के पहले ही साल में दिखाए है और जिन वातों से हमारी साख वढी है। अगर मै अपने अवगुणो पर ज़ोर दे रहा हूँ, तो वह केवल एक चेतावनी के रूप में दे रहा हूँ, जिससे कि हम गाफिल न हो जाएँ। जिससे हम अपने कौमी पुनर्निर्माण के काम मे पक्के इरादे से लग जाएँ। हमारा कर्तव्य है कि आज जव हमारी आजादी का यह शिशु केवल साल भर का है, हम इस वात का पक्का प्रवन्ध करें कि यह वालक वड़ा हो और स्वस्थ, ताकतवान् और हट्टा-कट्टा वने।

मै यह नही चाहता कि इसको सव तरफ से वचाकर रखा जाए। इसको तो जीवन सघर्ष के वीच में रह कर ही वढना चाहिए। उसी हवा में पलने से यह तगडा होगा। तभी इसमे तेज आएगा। उसी तेज के वल पर यह दुनिया का सामना करेगा। हमे अपनी आजादी की वुनियाद मजवूती से और विलकुल ठीक-ठीक रखनी चाहिए क्योकि इसी वुनियाद पर हमें एक विशाल भवन वनाना है। एक ऐसा भवन, जो हमारे पूर्वजो से मिली हमारी महान सम्पत्ति के योग्य होगा, जो आजकल के युग का गर्व होगा और जो आने वाली पीढियो के लिए एक अनमोल विरासत होगा। केवल आजादी की रक्षा करना ही काफी नही है, वल्कि हमें तो यह सावित करना है कि हम इसके योग्य है। इस देश में जो छोटे-से-छोटा भी है, हमें उसे भी यह महसूस कराना है कि वह आजाद है। खेत में काम करने वाले किसानो, झोपडो में रहने वाले गरीवो और कारखानो में काम करने वाले मजदूरो—सभी को इस योग्य होना चाहिए कि वे गुलामी और आजादी के भेद को समझ सकें। तभी हम यह कह सकेंगे कि हमने आजादी ली है और उसके योग्य वन गए है।

इसलिए हमें अपनी आजादी को सगठित करना है अपनी एकता और शक्ति को वनाना है। पिछले जमाने मे जो हम पिछड गए थे, उस कमी को आज हमे पूरा करना है और इस मुल्क को पहले से वहुत अधिक अच्छा और स्वस्थ वनाना है। यह कर लेने पर ही हम अपने सकुचित उद्देश्यो और क्षुद्र आकाक्षाओ पर ध्यान दे सकते है। लोगो को यह समझना चाहिए कि जिस समय हमने आजादी पाई, अगर उस समय हम आजाद न हुए होते तो हमें कैसे-कैसे

सकटो का सामना करना पडता। हम लोग उन परिस्थितियो को भी जानते हैं, जिनसे भारी तबाही हो सकती थी और जिनका हमने पिछले वर्ष में सफलता से मुकाबला किया है। यह सब कुछ इसी कारण सम्भव हुआ कि राष्ट्र का हृदय सच्चा है, और हमारी सच्ची अन्तर्भावनाएँ और हमारी श्रद्धा शुरू के इन झगडो को सफलतापूर्वक सम्हाल सकती थी।

अगर हमने उन बुरी प्रवृत्तियो को, जो अब दिखाई दे रही है और जिनकी चर्चा मैंने अभी-अभी की है, बढने दिया तो इससे बहुत से खतरे पैदा हो जाएँगे। हम लोग मुसीबतो में फँस जाएँगे और दल-दल में धँसते चले जाएँगे। वैसा हुआ तो हम अपनी आजादी का गला, उसके पैदा होने के लगभग तुरन्त बाद ही घोट देंगे। हिन्द का इतिहास हमें बताता है कि हमने अपनी आजादी उन सकुचित उद्देश्यो और स्वार्थपूर्ण आकाक्षाओ के बदले में दे डाली थी, जिन्होने हमारे बडे उद्देश्यो और राष्ट्रीय अभिलाषाओ को ढक लिया था। राष्ट्रीय सकट के उस युग में जब हर एक का यह कर्तव्य था कि वह देश की रक्षा में अपना कन्धा लगाए, हमारे देश के कई भागो में फूट पड गई और वह अलग-अलग दलो में बँट गया। व्यक्तिगत आकाक्षाओ ने हमें राष्ट्रीय हितो की ओर से अन्धा कर दिया और आपसी नफरत ने एकता और अनुशासन की सारी भावनाओ को नष्ट कर दिया। आज हमें यह समझ लेना चाहिए कि किसी कौम के लिए अपने इतिहास के पाठ को भूल जाना खतरे से खाली नही होता।

मै आपसे और आपके जरिए मुल्क भर से यह अपील करता हूँ कि हमें अपनी शक्ति को किफायत से बरतना चाहिए। हमें अपने सीमित बल का सचय करना चाहिए, जिससे कि हम उन सकटो का मुकाबला कर सकें, जिनसे हमारे कौमी अस्तित्व को भी खतरा है। अपने राष्ट्र को सच्चे और स्वस्थ ढग पर बढाना हमारा कर्तव्य है। जो राष्ट्रीय एकता हमने इतनी कठिनाई से प्राप्त की है, पहले उसे हम सगठित और एकरूप तो कर ले, उसके बाद हम और विभिन्नताओ की बात करें। हम उन्ही बातो पर ध्यान दें, जिनसे कि एकता पैदा होती है, न कि उन पर जो हमें अलग-अलग करती हैं। हालत ऐसी है और समस्याएँ इतनी विशाल और पेचीदा है कि जो कुछ हमने कर लिया है, उसी पर सन्तोष करके हम बैठ नही सकते। आजादी के पहले वर्ष में हमने जो कुछ करने की कोशिश की है—विदेशों में दूतावास, लीगेशन, कास्युलेट आदि स्थापित करना, विदेशी मामलो में हमारा भाग लेना, रियासतो को समस्त राष्ट्र का अग

बनाना और उनको प्रजातान्त्रिक रूप देना, शासन और रक्षा की सर्विसो का पुनर्निर्माण, अपनी आन्तरिक सुरक्षा को मजबूत बनाना, उन्नति की अनेक योजनाओ को तैयार करना और उन पर अमल करना, शरणार्थियो को लाना, और उनको फिर से बसाना—यह सब असल में उन बड़े कामो की शुरुआत हैं, जिनको अभी अपने हाथ में लेना है ।

कोई भी विदेशी नीति, चाहे वह कितनी भी अच्छी तरह सोची हुई क्यो न हो, विदेशो में हमारी कोई सस्था, चाहे वह कितनी भी कुशल क्यों न हो, कोई विशेष असर नही डाल सकती, जब तक कि उसके पीछे एक ठोस शक्ति न हो । आज की अन्तर्राष्ट्रीय सभाओ में किसी मामले की विजय केवल इसी कारण नहीं होती है, कि वह सच्चा है और उसमें नैतिक बल है । किसी सच्चे और बलवान मामले को भी उसे प्रस्तुत करनेवाले देश की शक्ति और साख का समर्थन प्राप्त होना चाहिए । विदेशी मामलो में हिन्द को एक काफी बडे क्षेत्र में अनेक अवसर प्राप्त है । एशिया में उसका सब से ऊँचा स्थान है और आज की परिस्थितियो में इस विशाल महाद्वीप मे अकेला यही देश अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियो को स्थिर करनेवाला बन सकता है । इस प्रदेश में हिन्द को पर्याप्त और उचित मात्रा मे काम करना चाहिए । हमारी बचाव की सेनाएँ पूरी तरह कुशल है । वे असरदार ढग से काम कर सकें, इसके लिए उनके पीछे एक महान औद्योगिक प्रयत्न होना जरूरी है । अगर हमको बचाव के जरूरी सामान के लिए विदेशो के आसरे रहना पड़ा, तो हमारे अस्तित्व के लिए भी संकट पैदा हो जाएगा ।

ससार की वर्तमान आर्थिक व्यवस्था मे हमें विदेशी मुद्रा को किफायत से काम में लाना चाहिए । हमें विदेशो से आए हुए माल पर बहुत कम निर्भर रहना चाहिए । और अपनी ज़रूरी चीज़ें, जहाँ तक सम्भव हो, खुद पैदा कर लेनी चाहिए । आज हमे जहाज़ भी बनाने है, जो हमारा माल विदेशो मे ले जाएँगे और जरूरी सामान इधर लाएँगे । हमारा समुद्रतट बहुत लम्बा होने के कारण हमारे अस्तित्व के लिए एक मजबूत समुद्री फौज और एक तिजारती बेडा होना भी जरूरी है। अगर हमें अपने लोगो का पेट भरना है, तो हमें अपने यहाँ अधिक अनाज पैदा करना चाहिये । अगर हमें अपने सब लोगो को उनकी कम-से-कम ज़रूरत के लायक कपडा भी पहनाना है, तो अब की अपेक्षा हमें कहीं अधिक कपड़ा बनाना होगा । पानी से बिजली निकालने का भी एक विशाल

प्रोग्राम हमें हाथ में लेना है, जो साधारण लोगो के जीवन-स्तर को ऊँचा करने का साधन बनेगा। दामोदर घाटी बाँध, हीरा कुद बाँध, भाखडा बाँध, और इसी तरह चबल, कोसी, तुगभद्रा, गोदावरी, नर्मदा और ताप्ती की बहु-उद्देशी योजनाएँ इस बडे प्रोग्राम के कुछ उदाहरण हैं। हमें देश की छिपी हुई दौलत से लाभ उठाना है। पेट्रोलियम, कोयला, लोहा, वाक्साइट, और दूसरे खनिज जो इस मुल्क में बहुतायत से पाए जाते हैं, परन्तु अनुभवी आदमियो और कारीगरो की कमी और पर्याप्त पूजी के अभाव के कारण उनकी ओर हम ध्यान नही दे सके थे। अब उधर भी हमें काम करना है।

पर यह सब करके भी हम अपनी विशाल आजादी के एक छोटे-से भाग को ही छू सकेंगे। हमारा देश कृषि प्रधान है और हमारे सामने खेती के मज-दूरो की एक बहुत बडी सख्या की भी समस्या है, जो साल में काफी समय के लिए खाली रहते हैं। उनके लिए और उन पर आश्रित उनके परिवारो के लिए हमें को-आपरेटिव ढग पर घरेलू धधो की एक कुशल और सुसगठित व्यवस्था बनानी है और उसको बढाना है। हमें एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा की बुनियाद भी रखनी है, जो हमारे लोगो की प्रकृति, उनकी ज़रूरतो और उनकी विशेष योग्यता के अनुकूल हो। हमें स्वस्थ बुद्धि और स्वस्थ शरीरो के आधार पर एक स्वस्थ और सबल राष्ट्र बनाना है।

अब रियासतो को लीजिए। जिस सफल ढग से रियासतो को राष्ट्र का अग बना लिया गया है और उन्हे प्रजातान्त्रिक रूप देने की कार्रवाई की जा सकी है, उसके लिए मुझे बहुत-सी बधाइयाँ और मानपत्र दिए गए हैं, और मेरी बहुत प्रशसा की गई है। मगर जैसा मैंने अपने नागपुर के भाषण में कहा था, कि अगर मैं इन सब का अधिकारी भी हूँ तब भी अभी बधाई देने का समय नही आया। असली काम तो अब शुरू हुआ है। वह यह है कि सदियो से जो कुछ हमने खोया है, उसको पूरा किया जाए और रियासतो में एक ऐसी शासन व्यवस्था बनाई जाए, जो एकदम मज़बूत और कुशल हो। हमें इस बात का पक्का प्रबन्ध करना है कि पुराने और नये को मिलाकर एक ऐसा सुन्दर चित्र बनाया जाए, जो कुल हिन्द के नक्शे में ठीक बैठ जाए। आप इस बात का ध्यान रखें कि बहुत-सी रियासतो में जनतन्त्र-शासन के प्रारम्भिक साधन भी नही थे और बहुत-सी रियासतो में स्थानीय पचायतें आदि भी नही थी, और

अगर कही थी भी, तो वे अपनी शैशव अवस्था में ही थी। इस सम्बन्ध में वे बाकी भारत से बहुत अधिक पिछडी हुई थी। इन रियासतो में भी हमने करीब-करीब रातो-रात में आधुनिक शासन व्यवस्था का भवन खडा कर दिया है। इसके लिए प्रेरणा और बढावा हमें ऊपर से मिला है, नीचे से नही। यह पौदा बाहर से लाकर वहाँ लगाया गया है, और जब तक यह वहाँ की धरती में जड नही पकड़ता, तब तक इसके गिर जाने का खतरा है।

कुछ ऐसे विशेष उत्साही लोग भी है, जो यह समझते है कि रियासतों की समस्या हल हो गई है। ये लोग अभी से आगे बढने को उतावले है। मैं उन लोगो से रियासतो की समस्या के इस चित्र पर शान्ति से विचार करने को कहूँगा, जो अभी मैंने आप के सामने खीचा है। असलियत को न देखना मूर्खता होगी। अगर कही तथ्यो को सचाई के साथ देखने से इकार कर दिया जाता है, तो वे अपना बदला लेते है।

मैंने अब तक आपके सामने उन कठिन और भारी जिम्मेवारियो का चित्र रखा है, जो उन लोगो पर पडी है, जिन्हें इस देश के भावी शासन का निर्माण करना है। मुझे विश्वास है कि आप मुझसे सहमत होगे कि इन जिम्मेवारियो का परिणाम ऐसा है कि, जो हमारा सारा ध्यान अपनी ओर मागता है। आज हमारे पास तुच्छ झगडो में नष्ट करने के लिए ज़रा भी समय नही है। यह समय दलबन्दियो और निजी प्रतिद्वन्द्विता का नही है। अगर आज़ादी की लड़ाई के लिए हमे भरपूर बलिदान देने और कष्ट सहन करने की आवश्यकता थी, तो राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के काम में भी पूरी कोशिश और पक्के इरादे से काम करने की ज़रूरत है। बल्कि देश के हित में नि.स्वार्थ भाव से जुट जाने की ज़रूरत आज आज़ादी की लडाई के ज़माने से भी ज्यादा है। यह हमारे अस्तित्व का प्रश्न है और इसी प्रश्न को हल कर हम अपनी आज़ादी की रक्षा कर सकते है, जिस आज़ादी को कीमत देकर हमने प्राप्त किया है। हमें उन भारी ज़िम्मेदारियो को समझना चाहिए, जो आज़ादी के साथ हम पर आई है। जो कीमती विरासत हमें अपने महान नेता की तपस्या से और अपने शहीदो के बलिदान से मिली है, उसे हमें फेक नही देना है। अगर हम इस मौके पर ऊपर नहीं उठे और राष्ट्रीय पुनरुत्थान के इस पवित्र काम में हमने अपने-अपने क्षेत्र अपनी शक्ति के अनुसार भाग नही लिया तो इतिहास और आगे आनेवाली हमारी सन्तानें हमें कभी क्षमा नही करेंगी।

ज़रूरत की इस घड़ी में देश सेवा की खास ज़िम्मेवारी आप लोगो पर है। पुरानी पीढ़ी के हम लोगो के जीवन का अब सायकाल आ रहा है। हमें तो सूर्यास्त और सन्ध्या के तारे की प्रतीक्षा है। हमारे दिन अब बीत गए हैं, और हमें गर्व है कि अपनी ज़िन्दगी में ही हमने देश की आज़ादी हासिल कर ली। हम अपने को सौभाग्यशाली समझते है कि हमको कुछ वर्ष ऐसे भी मिल गए हैं, उनमें इस आज़ादी को सगठित करने की यथाशक्ति कुछ सेवा भी कर सके। देश के नेतृत्व का बीडा जल्दी ही आपको उठाना पड़ेगा और सार्वजनिक कामो का सचालन करना होगा। आप अपने जीवन की उस अवस्था पर हैं, जब मनुष्य का वास्तविक निर्माण होता है। आप विश्व-विद्यालय को छोड़कर जा रहे है और अपने व्यावहारिक तथा सासारिक जीवन के द्वार पर खड़े है। अपने-अपने व्यवसायो में आपको मातृभूमि की सेवा करने के बहुत-से मौके मिलेंगे। आपमें से जो अभी पढाई जारी रक्खेंगे, या जो अपनी पढाई समाप्त कर जीवन के महान विश्वविद्यालय में दाखिल हो जाएँगे वे सब भविष्य के लोग हैं। आप को अपनी बुद्धि, आत्मा और शरीर को उन कामो के योग्य बनाना है, जो आपके सामने है। हमने आपको वह सब से कीमती उपहार दिया, जो हम दे सकते थे। जिन जजीरो और बेड़ियो से हमारी भारत माता के हाथ पैर जकड़े हुए थे, वे आज तोड़ दी गई है। हिन्द अब आज़ाद लोगो का देश है। अब आपको गुलामो की तरह व्यवहार नही करना पड़ेगा, जैसा कि पहले किसी समय में करना पड़ता था। आज़ाद लोगो की हैसियत से अब आपको अपना मस्तक ऊँचा रखना है। आपको अपनी आज़ादी की इज्जत और उसका नाम बनाए रखना है। जब हम गुलाम थे, तो हम अपनी कमियो और बुराइयो के लिये बहाने ढूढ सकते थे। तब हमारे पास दोष धरने के लिए बने-बनाये पात्र मौजूद थे और अपनी सभी कमियो के लिए हम अपनी परतन्त्रता का नाम ले सकते थे। परन्तु अब हम इस अयोग्यता की बिना पर दूसरो से सहानुभूति या अनुकम्पा नही प्राप्त कर सकते। अब अपने भाग्य के निर्माता हम ही हैं और इसे जैसा हम चाहे वैसा बना सकते हैं।

इसलिए मैं आपसे अपील करता हूँ कि जो समस्याएँ मैंने आपके सामने रखी है, उन पर आप रचनात्मक रूप से विचार कीजिए। याद रखिए कि विध्वस करना आसान है, परन्तु निर्माण के काम में असीम शान्ति और मेहनत की ज़रूरत होती है। पुरानी इमारत ढाने से पहले अपने नये भवन का रूप निश्चित

कर लो। उन लोगो के बहकाने में मत आओ, जिनकी विध्वंस वृत्ति, उस पेड़ की जड तक काट डालने में सकोच नही करती, जो उन्हें छाया और आश्रय देता है। आपको धोखे में आकर किसी नयी विचारधारा को नही अपनाना चाहिए। जब तक कि आपका निश्चित मत न हो जाए तब तक किसी नई विचार-धारा के अनुसार आपको आचरण नही करना चाहिए। और आज तो आपके सामने एक ही मापदण्ड होना चाहिए, वह यह है कि जो कुछ आप कर रहे है उससे राष्ट्र की समस्याओ को सुलझाने में कोई रचनात्मक मदद मिलेगी या नही। अधसोचे हल पहले-पहल किसी को भले ही आकर्षक लगे, पर अन्त में उनसे हानि और विनाश ही होता है। आज हमारे पास तजर्बे करने के लिए भी समय नही है। जितना समय हमारे पास है, वह सब-का-सब हमे अपनी आर्थिक व्यवस्था ठीक करने में, अपने साधनो को बढाने के काम मे लगाना है, ताकि उन लोगो की बढती हुई माँगें पूरी की जा सकें, जो काफी समय से बेहद गरीबी की हालत में पडे हुए है। आपको पूरी जिम्मेदारी और विवेक की भावना से काम करना है। मेरा कथन है कि जीवन का निचोड़ अनुशासन है। अनुशासन के बिना मनुष्य समाज या राष्ट्र उन्नति नही कर सकते, अनुशासन आपकी जमातो में और खेल के मैदानो में भी उतना ही ज़रूरी है, जितना वह आपके भावी व्यवसाय में है।

देश को इस समय सधे हुए और अनुशासन की शिक्षा प्राप्त युवकों की ज़रूरत है न कि गैर ज़िम्मेदार उत्पात मचानेवालो की। इस तरह आपके पास दृष्टि भी होनी चाहिए और आदर्श भी। जब तक कि आपके सामने अपनी मातृ-भूमि के भविष्य का यह गौरवमय दृश्य और उसकी महानता और उसके भाग्य की एक आदर्श कल्पना नही है, तब तक आप अपने वर्तमान कर्तव्यो और ज़िम्मे-दारियो को सच्चे रूप मे नही समझ सकते। पर आपको यह अवश्य ही समझ लेना चाहिए कि अपने जीवन मे कुछ कर सकने के लिए आपको अपने पैर हमेशा मज़-बूती से पृथ्वी पर जमाए रखने चाहिए। केवल दृष्टि और आदर्शवाद से कुछ न होगा। आपको इन्हे ठोस कार्य के रूप मे बदलना होगा और अपने उद्देश्यो को वास्तविकता के कठोर क्षेत्र में पाना होगा। आपको यह याद रखना चाहिए कि अपनी उच्च आकांक्षाओं को अन्य आकाक्षाओ द्वारा ही परास्त कर देना एक बड़ी दर्दनाक घटना है। आप को उस धातु का बनना चाहिए, जो पूर्व निर्धा-रित भाग्य को चुनौती देकर आपत्तियो पर हँस सकती है। सबसे पहले मातृ-

भूमि की सेवा और लगन तथा ध्यान की प्राप्ति होनी चाहिए। आप चाहे किसी भी देश या भू-भाग में जाएँ, आपका कुछ भी व्यवसाय या धन्धा क्यो न हो, आपको सदा अपने देश के हितो का ध्यान रखना चाहिए और अपने दरिद्र देश-वासियो की नैतिक और भौतिक उन्नति को अपना आदर्श बनाना चाहिए। आप ऐसा कोई काम न करें जिससे आपके देश की आजादी खतरे में पड़े। बल्कि अपना जीवन देकर भी आप उसकी रक्षा का प्रयत्न कीजिए।

जयहिन्द !

---

(१६)

कांग्रेस विषय समिति, जयपुर

१७ दिसम्बर, १९४८

सदर साहब, जो प्रस्ताव आपके सामने रखा गया है, उस पर बहुत-से सशोधन भी रखे गए है। प्रश्न बडा विकट है, इससे इसपर बहुत बहस हुई है। दूसरे इस विषय पर दिल खोलकर बोलने से तकलीफ होती है। फिर भी अगर चन्द बातें मै आपके सामने न रखू, तो मै शरणार्थियो की कुसेवा करूँगा। इस बात में हमारा मतभेद नही है कि शरणार्थियो की पूरी मदद की जाए। मतभेद इसमे होता है कि जो कुछ किया गया है, उसकी थोडी-सी तारीफ तो छोड दो। तब मुझे कुछ तकलीफ नही होगी। आज आपकी गवर्नमेंट है। वह अपना कर्तव्य पालन नही करती है, तो उसे उठा क्यो नही देते? चाहे कोई भी गवर्नमेंट बनाओ, इस मामले में वह कोई पूरा सन्तोष नहीं दे सकेगी, यह इतनी कठिन समस्या है। साथ-साथ जो मुसीबत हम पर आई, उसका भी सामना हमें करना है। केवल प्रस्ताव और संशोधन पास करने से मकान नही बन जाते। हर एक आदमी अलग-अलग राय बताता है। मकान तो तब बनेगा, जब उसके लि

कांग्रेस के जयपुर अधिवेशन की विषय समिति मे शरणार्थियो के बारे प्रस्ताव पेश करते हुए सरदार पटेल ने १७ दिसम्बर ४८, शुक्रवार की दोप के १२½ बजे यह भाषण दिया था।

भूमि की सेवा और लगन तथा ध्यान की प्राप्ति होनी चाहि
किसी भी देश या भू-भाग में जाएँ, आपका कुछ भी व्यवसाय या ध
आपको सदा अपने देश के हितो का ध्यान रखना चाहिए और
वासियों की नैतिक और भौतिक उन्नति को अपना आदर्श बना
ऐसा कोई काम न करें जिससे आपके देश की आजादी खतरे
जीवन देकर भी आप उसकी रक्षा का प्रयत्न कीजिए ।

जयहिन्द !

मुझे जो वात सूझी, वह मैंने कही। मैं तो हमेशा शान्ति चाहता हूँ। अगर शान्ति नही चाहता, तो जिन्दगी भर गान्धी जी के पास कैसे रहता ? मेरे दिल में जो वात आती है, कह देता हूँ। हिन्दू को वुरा लगे, मुसलमान को वुरा लगे, इसकी मुझे परवाह नही। जिस भाषा में कहना चाहिए, शायद वह मैं नही सीखा हूँ। इतनी कमी ज़रूर है। दूसरी जिन्दगी में इस काम के लिए पुनः मुझे गान्धी जी के पास जाना पडेगा।

हमने हिन्दुस्तान की जो जवाबदारी ली है, उसे हम छोड़नेवाले नही है। अगर हमारे वौर्डर (सीमा) पर कोई आए, तो उसके लिए हमारी पूरी तैयारी है। यही मैंने ऐसा कहा था। जो कुछ व्यावहारिक हो, वही करने की नीति से हमारा काम होगा। हमारी उम्मीद तो यह है कि जितने लोग पूर्व वगाल से आए है, उनको वापस जाना ही है। डाक्टर चोइथराम और मेहरचन्द के कहने से हमने हाई पावर कमेटी भी वनाई।

आपको मेरी यही सलाह रहेगी कि शरणार्थी की सेवा करनी हो, तो सरकार की सहानुभूति प्राप्त करो। जो लोग आज पडे है, उन्होने कभी हाथ पाँव नही चलाया। वे शहरो के रहनेवाले हैं। उनका काम कठिन है। केवल प्रान्तो के मन्त्रि-मडलो से यह काम नही होगा। उनको यहाँ रहना है, यही घघा-रोजगार करना है, तो यह सव उनकी सहानुभूति से होगा।

मैंने जो वातें कही है, वे सव आपके भले के लिए ही कही है। कुछ कड़ी वात भी कही हो, पर वुरे दिल से नही कही।

जरूरी सामान मिलेगा। कौन ऐसा मूर्ख होगा, निष्ठुर होगा, जिसकी सहानुभूति शरणार्थियो से न होगी। लेकिन इस सहानुभूति से शरणार्थी के पेट को कुछ नहीं मिलेगा। इस प्रस्ताव में हमें ऐसी भाषा का उपयोग नही करना चाहिए, जिस से शरणार्थी का दिमाग उलटा चले। आपका मकसद दूसरा हो, तो अलग बात है।

आप लोगो से मैं यह कहना चाहता हूँ कि गुस्से में आकर जो लोग बोलते हैं, उस से आपको क्रोध में बह नही जाना चाहिये। आप को देखना चाहिए कि जो लोग उस प्रश्न पर काम कर रहे हैं, वे क्या करते हैं और क्यो करते है।

देश भर पर टैक्स डाल दो, यह कहना तो आसान है। हमारी कुछ गलती हो तो हमारे पास आओ, हम से बहस करो, हमें समझाओ। मगर कोई आकर कहते हैं कि नही करोगे, तो शान्ति नहीं रहेगी। मैं कहता हूँ कोई भी कुछ भी धमकी दे, मुल्क मे अशान्ति नही होगी। आपको दुख है, तो वह क्रोध की आग बढाने से कम नही होगा। मैं अनुभव से कहता हूँ कि आपके लिए देश भर में पूरी सहानुभूति थी। मगर आप जिस तरह से काम करते हैं, सहानुभूति कम होती जाती है। यह कठिन प्रश्न हल करने के लिए दिमाग ठण्डा रख कर जो कुछ भी हो सके, वह हमें करना है। हमारी गवर्नमेंट में कोई भी ऐसा नही है, जिसे शरणार्थियो से पूरी सहानुभूति न हो। फिर भी अगर यो ही गवर्नमेंट पर हल्ला किया जाएगा, तो उसका बुरा परिणाम आएगा। हमने रिफ्यूजी मिनिस्टरी बनाई, इसी काम के लिए केबिनेट की कमेटी बनाई। मगर गवर्नमेंट पर हल्ला करने से शरणार्थियों को नुकसान होगा। शरणार्थियो को अगर आप बहका दें और मुल्क में अशान्ति करवाएँ, तो उसकी ज़िम्मेवारी आप पर होगी। अगर कांग्रेस ज़िन्दा नही है, तो मुरदे के पास चिल्लाने से क्या फायदा ?

कोई राजा-महाराजा हो, चोर-डाकू हो या कोई दुखी आदमी हो, मगर किसी को अशान्ति करने का अधिकार नही है। सिन्ध, पजाब, बलूचिस्तान और फ्रटियर में तो मामला साफ हो गया। वहाँ कोई हिन्दू सिख रहेगा ही नही। परन्तु पूर्व बगाल का मामला कठिन है। वहाँ के हिन्दू नरम और कमज़ोर लोग हैं। मगर पजाबी लोग तगडे हैं। हमारे पास आकर भी वे झगडते हैं, उन में इतनी जिन्दगी है। पूर्व बगाल के लोगों की मुसीबत इसलिए ज्यादा है कि वहा तो लोग खाली भूखे मरते है, वहाँ इज्जत का भी सवाल है। इसलिए मैंने कहा कि साथ बैठकर फैसला करो। कोई दूसरा रास्ता हो तो मुझे बताइए।

मुझे जो बात सूझी, वह मैंने कही। मैं तो हमेशा शान्ति चाहता हूँ। अगर शान्ति नही चाहता, तो जिन्दगी भर गान्धी जी के पास कैसे रहता? मेरे दिल में जो बात आती है, कह देता हूँ। हिन्दू को बुरा लगे, मुसलमान को बुरा लगे, इसकी मुझे परवाह नही। जिस भाषा में कहना चाहिए, शायद वह मैं नही सीखा हूँ। इतनी कमी जरूर है। दूसरी जिन्दगी में इस काम के लिए पुनः मुझे गान्धी जी के पास जाना पडेगा।

हमने हिन्दुस्तान की जो जवाबदारी ली है, उसे हम छोडनेवाले नही है। अगर हमारे बौर्डर (सीमा) पर कोई आए, तो उसके लिए हमारी पूरी तैयारी है। यही मैंने ऐसा कहा था। जो कुछ व्यावहारिक हो, वही करने की नीति से हमारा काम होगा। हमारी उम्मीद तो यह है कि जितने लोग पूर्व बगाल से आए हैं, उनको वापस जाना ही है। डाक्टर चोइथराम और मेहरचन्द के कहने से हमने हाई पावर कमेटी भी बनाई।

आपको मेरी यही सलाह रहेगी कि शरणार्थी की सेवा करनी हो, तो सरकार की सहानुभूति प्राप्त करो। जो लोग आज पडे हैं, उन्होने कभी हाथ पाँव नहीं चलाया। वे शहरों के रहनेवाले हैं। उनका काम कठिन है। केवल प्रान्तों के मन्त्रि-मडलो से यह काम नही होगा। उनको यहाँ रहना है, यही घधा-रोजगार करना है, तो यह सब उनकी सहानुभूति से होगा।

मैंने जो बातें कही है, वे सब आपके भले के लिए ही कही हैं। कुछ कड़ी बात भी कही हो, पर बुरे दिल से नही कही।

---

(१७)

फतह मैदान, हैदराबाद

२० फरवरी, १९४९

हैदराबाद रियासत के रहनेवाले भाइयो और बहनो,

आप लोगो से मिलने का यह पहला ही मौका मुझे मिला है और इस मुलाकात से मै बहुत खुश हूँ। बहुत दिनों से आपसे मिलने की मेरी इच्छा थी। आप जानते है कि पिछले कुछ दिनो में आप लोगो को बहुत कष्ट उठाना पडा और उधर हम लोगो को भी आपकी वजह से एक प्रकार की निद्राविहीन रातें काटनी पडी। हम सब को बहुत परेशानी हुई, लेकिन परमात्मा की कृपा से सारा काम इस तरह हो गया कि आप लोगो का कष्ट भी कम हो गया और हमारी इज्जत भी बच गई। नही तो, काम तो होता ही, लेकिन दुनिया में हमारी बदनामी होती और नुकसान भी बहुत होता। अब कई लोग मुझको सलाह दे रहे है कि मुझे क्या करना चाहिए। बहुत से लोग बिना माँगे ही अच्छी-अच्छी राय दे रहे है और मुझे सबकी राय सुननी भी चाहिए। सो मै सुन भी रहा हूँ। जब यह मुसीबत उठी थी, तब भी बहुत लोगो ने मुझे इसी तरह राय दी थी और जवाब मे मैने कहा था कि आप लोग हम पर भरोसा कीजिए और ईश्वर पर भरोसा कीजिए, सब ठीक हो जाएगा। आपने देखा कि ईश्वर पर भरोसा रखने से हमारा काम बिगडता नही है। तो आज भी जो लोग मुझे अच्छी-अच्छी सलाहे दे रहे है, कि मैं जल्दी में सब बातो का फैसला कर

सरदार पटेल हैदराबाद के राजप्रमुख निजाम साहब के साथ

दूं। हम इसको उठा दें, उसको उठा दें या इसको बैठावें, उसको बैठावें। उन सबको मैं अदब से एक सलाह देना चाहता हूँ कि जैसी आप लोगो की चिन्ता है, उससे हमारी चिन्ता कम नही है। हम भी रात-दिन यही बातें सोचते है। हैदराबाद के दो करोड निवासियो की भी हमको बहुत फिकर रहती है। आपकी सलाह के लिए मैं आपका बहुत शुक्रगुज़ार हूँ। लेकिन काम तो मुझे अपनी अक्ल से ही करना होगा। आप भरोसा कीजिए कि हम वही कार्य करेंगे जिससे हैदराबाद के लोगो का भला होगा, दूसरी तरह का कोई काम हम नही करेंगे। तो आपको हम पर भरोसा रखना चाहिए।

आपको समझना चाहिए कि जब तक हैदराबाद रियासत में पूरी शान्ति नही होती, तब तक रियासत में राज्य की क्रान्ति करना यह बडी भयकर चीज़ है। हमें यहाँ कोई ऐसा एक्सपेरीमेंट या तजुर्बा नही करना है कि जिससे हैदराबाद की रियासत को जोखिम हो या इसके लोगो का नुकसान हो। हमने एक बात तो आप से पहले ही साफ-साफ कह दी थी, कि हैदराबाद का भविष्य क्या होगा, इसका फैसला आप लोगो को करना है, हमें नही करना है। सारी दुनिया में हमने एलान किया है कि हैदराबाद का भविष्य भला या बुरा बनाना उसके निवासियो का काम है। लेकिन उसमें हमारी भी काफी ज़िम्मेवारी है, इस लिए अपना बोझ भी हम फेंक नही सकते। तो आप सबको यह समझ लेना चाहिए कि किस रास्ते पर चलने से हैदराबाद का भला होगा और हम क्या करें जिससे दुनिया के लोग और मुल्क के लोग समझ लें कि हैदराबाद के लोग सयाने और समझदार हैं। इसी से आपकी इज्जत बढेगी और इसी से आपका भला होगा। जब आपके यहाँ कौमी जहर का वायुमण्डल बन गया था और ज़हर की बाढें चलती थी, तो उसमें भले-बुरे सभी लोग बह गए थे। जो काम कभी नही करने चाहिए, वे काम भी किए गए। लेकिन उस बुराई का नतीजा भी सब को भोगना पड़ा, बुरे लोगो को, आपको और कुछ दरजे तक हमको भी भोगना पडा। क्योकि जब आग भडकती है, तो उसमे से जो चिनगारिया उडती है, उनसे आस-पासवालो को भी कुछ-न-कुछ नुकसान पहुँचता ही है। तो अब वह बाढ निकल गई है। जो मैल उभर आया था, वह अब बैठ रहा है। अब पानी शान्त और निर्मल हो गया है। उसको हमे फिर से मैला नही करना, बल्कि गगा के जैसा निर्मल करना है। उसका इलाज यही है कि सब कौमो के लोग पिछली बातें भूल जाएँ। ऐसा समझ ले कि उन्होने एक बुरा स्वप्न देखा था। अब तो सही रास्ते पर

चलने के लिए हमें अपना मार्ग साफ करना है। हमें भी इस काम में आप लोगो को मदद देनी है। आपको यह समझ लेना चाहिए कि आपको हैदराबाद का भविष्य स्वय बनाना है। इसमें हमारा और कोई स्वार्थ नही है।

अगर हमें अपनी प्रणाली बदलनी है, तो वह इस प्रकार से बदलनी चाहिए, जैसा कि हमने पहला काम किया। उसमें कम-से-कम नुकसान हुआ है। यह ढाँचा भी हमें इस सफाई से बदलना चाहिए कि जिससे कम-से-कम नुकसान हो। यदि हम ऐसा नही करेंगे तो हमने अभी जो इतना बड़ा काम किया है, वह भी हम बिगाड देंगे। इसमें आपका भी भला नही है और हमारे लिए तो वह बदनामी का कारण बनेगा ही। हम बदनामी नही चाहते। आप हिन्दुस्तान के बीच में पडे हैं। एक तरह से हिन्दुस्तान के दो हिस्से हो गए है और जिन लोगो ने हमारे मुल्क में इस प्रकार का आन्दोलन शुरू किया था, वे लोग जो चाहते थे, वह उन्हे मिल गया। अब हमारे मुल्क में वैसे ही कोई लोग हो, जो मानते हों कि हमारे मुल्क में दो अलग-अलग नेशन (कौम) हैं, तो उन लोगो को बहुत जल्द, वहीं अपना स्थान बना लेना चाहिए, जहा उनकी नेशन के लोग गए है। किसी के दिल में ऐसी ख्वाहिश हो, और जिसकी सहानुभूति रात दिन वही रहती हो, जिसकी वफादारी वही रहती हो, वह खुदा को याद करके वही चले जाएँ, तो अच्छा होगा। क्योंकि ऐसा न करने से उनको भी नुकसान होगा, पाकिस्तान को भी नुकसान होगा और हमको भी नुकसान होगा। तो, मै यह नही मानता हूँ कि अब ऐसे कोई लोग भारत में है और मै यह भी मानता हूँ कि यदि हैदराबाद में कोई लोग ऐसे है, जिनके दिमाग में अभी तक कोई ऐसी चीज बाकी है कि हैदराबाद का भविष्य बनाने में, या हैदराबाद की हुकूमत को रखने या पलटने में बाहर की कोई सत्ता या बाहर का कोई इसान, किसी तरह से दखल दे सकता है। अगर कोई है, तो वह धोखे में है और यह उसका पागलपन है। मै कहता हूँ कि बाहर की कोई ताकत हमारे मुल्क में दखल नहीं दे सकती, क्योंकि यह हमारा भीतरी मामला है। कोई उसमें किसी प्रकार की न मदद कर सकता है, न किसी प्रकार का दखल दे सकता है। इसी तरह हैदराबाद का भविष्य क्या होगा, यह निश्चय करना आप ही लोगो का काम है। इसमें दूसरा कोई कुछ नही कर सकता। लेकिन मैं आपको यह कहना चाहता हूँ कि मुझे इस बात की बडी फिक्र है कि जिन लोगो पर यह बोझ पडनेवाला है, उन लोगो के कन्धे इतने मजबूत नही है कि वे इस बोझ को आराम से उठा सकें। तो

इसके लिए मै आप सब लोगों से खास करके उन लोगो से, जिन्होंने पिछले ५, १० सालों में कुछ कुर्बानियाँ की है, बहुत नम्रता से कहूँगा कि आप लोगो का प्रथम कर्त्तव्य यह है कि आप हैदराबाद का वायुमण्डल बदलें। उसमें आप की पूरी जिम्मेवारी रहेगी।

जो लोग उम्मीद रखते है कि हैदराबाद की रियासत का बोझ उन्हे उठाना है, उनको मै मुबारकबाद दूंगा। लेकिन साथ ही मै यह भी कहूँगा कि यह बोझ उठाना बहुत बडी बात है। यह आसान बात नही है। आपका यह सद्भाग्य है कि इस युग में आपका जन्म हुआ, जब कि हिन्दुस्तान की तवारीख लिखी जा रही है, इतिहास बनाया जा रहा है और इस जमाने मे आप इस महत्वपूर्ण जिम्मेवारी पर बैठे है। तो आपको यह देखना चाहिए कि हैदराबाद के जिन निवासियो ने कुछ बुराइयाँ या गलतियाँ भी की है और आज वे हैदराबाद के नव-निर्माण में भाग लेने के लिए तैयार हैं, तो उन्होने जो कुछ पहले किया है, वह सब आपको भूल जाना चाहिए। अब वैसी कोई चीज आपको बीच में नही लानी है। तो, जिन लोगो ने स्वतन्त्रता के मैदान में कुर्बानी की, उनको मुबारक है। वे उसके लिए मगरूर हो सकते हैं। मगर जिन लोगो ने कुर्बानी की, उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि अब और भी ज्यादा कुर्बानी करने का वक्त आया है। अब आप दिखाइए कि आपके कन्धो मे कितनी ताकत है। तब आपकी कदर होगी और तब इतिहास में आपको जगह मिलेगी। यह पावर पोलिटिक्स (शक्ति राजनीति) का मामला नही है, यह पद के लिए दौड-धूप करने का मामला नही है और मेरी उम्मीद है कि हैदराबाद की कांग्रेस पर चाहे हमारा कुछ भी प्रभाव न हो, लेकिन हिन्दुस्तान की कांग्रेस का नाम उसने लिया है और इस तरह हिन्दुस्तान की कांग्रेस का वह बच्चा है। उसके हाथ में हिन्दुस्तान की कांग्रेस की इज्जत है। तो अगर उनके कामो से उनकी इज्जत में कुछ भी बट्टा लगे, तो वे हैदराबाद को नुकसान पहुँचाएंगे और मुल्क को नुकसान पहुँचाएंगे। मुझे आशा है कि ये लोग अपनी जिम्मेवारी समझेंगे।

यह देख कर मुझे बहुत खुशी होती है कि आपमें से बहुत से लोगो ने यह वायदा दिया है कि इस प्रकार का कोई काम नही करेंगे, जिससे हमें उनके लिए कोई चिन्ता करने की जरूरत पडे। मै उन सबको मुबारकबाद देता हूँ। इन लोगों ने काफी काम किया है, काफी कुर्बानी की है। कई लोग कहते है कि ऐसे लोगो को राज देने से क्या होगा। यो तो लोग हमारे बारे में भी

कहते थे कि जो ज़िन्दगी भर जेल में पड़े रहे, वे लोग क्या राज करेंगे ? लेकिन अब ज़माना बदल गया है और जो लोग प्रजा के प्रतिनिधि हैं, उन्ही के पास राजसत्ता जाने वाली है। लोग पूछते है कि आपका लीडर कौन होगा ? आप जिसे चुनेंगे, वही आपका नेता होगा। हमने आज जो इन्तज़ाम किया है, वह तो एक टैम्परेरी (अस्थाई) चीज़ है। हमने हैदरावाद में आज जो कुछ व्यवस्था बनाई है, यह व्यवस्था एक "केअर टेकर गवर्नमेंट" (इन्तज़ामी सरकार) है, जिसका मतलव यह है कि आप लोग अपना वोझ उठाने के लिए जब तक अपने लीडर तैयार कर लेंगे, वहाँ तक के लिए यह सरकार है। लेकिन उसका जो स्थायी ढांचा वनाने का काम है, वह आपके हाथ में है।

कई लोग कहते हैं कि जल्दी से-जल्दी इस गवर्नमेंट को हटा कर दूसरी लोक सरकार बनानी चाहिए। हम भी चाहते है कि हम क्यो बोझ उठाएँ। हम अपने हाथ में ज़िम्मेवारी क्यो रखें ? आप लोग खुद अपनी ज़िम्मेवारी उठाइए। हम यह करने के लिए तैयार है। लेकिन हम इस प्रकार की गाडी आपके सुपुर्द करना चाहते है कि यदि आप कुछ धक्का भी न लगाएँ, तो कई दिन तो अपने-आप ही चलती रहे। लेकिन हम आपको ऐसी गाडी भी नही देना चाहते जो शुरू ही में पटरी से उतर जाए। ऐसा हो तो उसमें आप लोग मर जाएँगे और हमारी भी वदनामी होगी। ऐसी सलाह जो लोग देते है, उनसे मै कहता हूँ कि आप हैदराबाद की आबोहवा तुरन्त ऐसी बना ले, जिसमें हम जल्दी से जल्दी अपने अफसरो को यहाँ से हटा ले। हमारे पास अपने लिए भी पूरे आफीसर्स नही है। लेकिन आपको यह समझना चाहिए कि ९० फी सदी या उससे भी ज्यादा पुराने अफसरो या पुराने काम करने वाले लोगो का दिल दूसरी तरफ था, उनकी राय दूसरी थी, अब हमें उनको रास्ते पर लाना है। उनको तुरन्त फेंक देना ठीक नही। उनका दोष भी नही था। हम इस तरह कर भी नही सकते, क्योकि इस तरह राज नही चल सकता। उनको उठा-उठा कर फेंक देना, यह कोई लायक आदमियो का काम नही है। उन पुराने लोगो में से जो वफादारी से और योग्यता से काम करने के लिए तैयार है, उनको तो हमने रखा ही है। भले पिछली हुकूमत के ज़माने में उन्होने कुछ गलत भी काम किया हो। वे गलतियाँ हमे याद नही करनी चाहिए। भविष्य मे वे क्या करने वाले है, यह हमे देखना है। कई लोग हम से

कहते है कि उनका विश्वास कैसे किया जाय। उनमें से मैंने बहुत से ऐसे अफसरो का विश्वास किया है, जिनके साथ हम जिन्दगी भर लडे, जिन्होने हमें जेलो में डाला। विश्वास रखना हमारा काम है, लेकिन जो विश्वासघात करे, उसका घात करना भी हमारा धर्म हो जाता है। (तालियाँ)

तो आप लोगो को पुराने अफसरो से डरना नही चाहिए। लेकिन परमात्मा ने हमको हैदराबाद के दो करोड आदमियो की ज़िम्मेवारी दी है और यह ज़िम्मेवारी हम फेक नही देंगे। मै आपसे कहना चाहता हूँ कि हम लोग हैदराबाद में आए और यहाँ हम ने एक केअर टेकर गवर्नमेंट बनाई, उसको कितना टाइम लगा? पिछले दिनो मे यहाँ कितनी मार-काट हुई? मैंने सुना है कि अभी तक यहाँ ऐसे लोग है जो औरो को भी मारने की तैयारी में है। हमें चीन और वर्मा से सबक लेना चाहिए। हमारे देश के आसपास जो चल रहा है, जो आग फैल रही है, उसी आग मे हमें हिन्दुस्तान को नही जलाना है। सारी ज़िन्दगी वरवाद कर हम लोगो ने आज़ादी इसलिए नही ली। यह जो आज़ादी हमें मिल गई है, वह हमें हजम करनी है। हमें ऐसा काम भी नही करना है कि हिन्दुस्तान के लोग कहने लगें कि इस आज़ादी से तो पहली गुलामी ही वेहतर थी। हम लोग जो रात-दिन मेहनत कर रहे है, उसका उद्देश्य यही है कि आप लोग खुद अपना बोझ उठाने के लिए तैयार हो जाओ। हमारे जो चन्द काग्रेस के काम करने वाले लोग इतने दिनो के वाद वाहर आए है, मालूम नही पिछले दिनो वह क्या काम करते थे? चन्द दिनो से वे वाहर निकले है। वह देख ही रहे है कि कितने लोग उनका साथ देते है।

आप लोग खाली एक-एक वोट देने के लिए तैयार हो जाएँ, केवल उससे काम नही चलेगा। यहाँ हैदराबाद मे जो पुरानी पोलीस है, उनका दिल किसी चीज़ में नही है। वे इस प्रकार की हालत में पड़े है कि सारी ज़िन्दगी जो काम किया, अव उसी से उल्टा काम करना पडता है। हम लोगो ने जो थोडी-सी पोलीस वाहर से लाकर रखी है, वह यहाँ के लोगो को जानती नही, उनको पहिचानती नही। उन्हें अभी यह मालूम नहीं कि यहाँ चोर कौन है और साहूकार कौन है। और जब पकडने का समय आता है, तो बहुत से लोग कहने लगते है, मै तो कोई साम्यवादी नही हूँ, समाजवादी नही हूँ, मै तो कांग्रेसमैन हूँ। लेकिन जब पकडने वाले लोग चले जाते है, तो तुरन्त मालूम पड जाता है कि वह तो झूठ वात कहते थे। तो आज तक हैदराबाद में

एक तरह से काम चला। हमारे लोगो के इधर आने तक काग्रेस वाले यहाँ काम करते थे। काग्रेस ने यहाँ काफी कुर्बानी की। लेकिन जिस तरह से काम करना चाहिए, उस तरह से सब लोग काम नही कर सके। क्योकि कई लोग समझे कि अगर हम अहिंसा से, सत्य से, और ठीक तरह से काम लेने के लिए जाएँगे तो हमको कोई मौका मिलने वाला नही है। तो जो हथियार सामने आया, उसी का उपयोग करने लगे। कई लोग तो मेरे पास भी आए और कहते थे कि हमको ५,००० राइफल दो तो हम हैदराबाद सर करेंगे। मैं उनसे कहता था कि अपना दिमाग ठीक करके आओ, तुम पागल हो। हम लोग जानते है कि हमारे पास राइफलें तो बहुत पडी है, लेकिन यह काम राइफल का नही है। यह काम इस तरह से नही हो सकता। जिन लोगो ने यहाँ रात-दिन काम किया, उनमें से बहुत से काग्रेसमैन है। असल में काग्रेस का जो दो प्रकार का काम था, उसमें से एक प्रकार का काम तो बिल्कुल नही किया गया। यह काम था प्रजा की सेवा करना, रचनात्मक काम करना और लोगो को सही रास्ते पर लाना। वह काम बिलकुल नही किया गया। जो प्रजा की सेवा करना चाहता है, वह कैसी भी हुकूमत क्यो न हो, चुपचाप प्रजा की सेवा करता है। लेकिन अब तो हमें सेवा का सारा दरवाजा खोल देना है। आप लोग उसके लिए तैयार हो जाओ। लेकिन अब हम किसी को वह रास्ता देने वाले नही है, जिसमें लूटमार का मौका हो, जिसमें धोखाबाजी का मौका हो और जहाँ खाली पोलिटिक्स के पीछे दौडना हो।

मै यह सिर्फ बात ही नही करता। यह हमें अमल में करके दिखाना है। यह परमात्मा के सामने हमारा दायित्व है। यह हैदराबाद के दो करोड निवासियो के भविष्य का सवाल है। इसमें चन्द आदमी आके धोखाबाजी करते है, एक प्रकार टैररिज्म (आतक) फैलाते है कि यहाँ कोई काम न करने दो। वह सब अब नही चलेगा। जब आप लडते थे, तो उसमें भले बुरे सभी शामिल हो जाते थे। वह अब चल नही सकता। यदि काग्रेसमैन यहाँ खुद उनकी बन्दूक से मारता है, तो ऐसी हालत में अच्छा यह है कि तुम गाडी मत चलाओ। इस तरह से मैं आपके हाथ जिम्मेवारी दूगा नही क्योकि मै हिन्दुस्तान की हुकूमत की तरफ से आप लोगो को सलाह देने के लिए आया हूँ। पूरी जिम्मेवारी के साथ मै आपको यह सलाह देता हूँ कि पिछली सब बातों को भूल जाओ, क्योकि हमें जल्दी ही आगे चलना है। हैदराबाद हिन्दुस्तान के पेट के समान

है। हिन्दुस्तान के जिगर में, हिन्द के पेट में, यदि टयूमर (पेट का फोड़ा) पडा है, तो हिन्दुस्तान तन्दुरुस्त नही रह सकता। तो जो पुरानी हुकूमत यहां थी, वह तो हट गई। परन्तु उसी से हमारा रोग चला गया, या टयूमर मिट गया, ऐसा नही हो सकता। जब तक आप लोग स्वच्छ न हो जाएँ, आप लोग सावधान न हो जायँ और आप लोग आपस में मिल न जाएँ, तब तक इस रोग का इलाज नही होगा। तो हमारी रियासत में जितने लोग है, उनको पिछली बातें भूल जानी चाहिए। हिन्दू हो, मुसलमान हो, हरिजन हो, किसी भी कौम के लोग हो, सबको आपस में एक दूसरे का भय निकाल देना है और एक दूसरे के साथ अविश्वास को निकाल देना है। सबको यह समझना चाहिए कि वह पुरानी रात चली गई है, और अब नई सुबह आई है। प्रातः काल के बाद पिछली रात के दुःस्वप्न को हमें याद नही करना चाहिए। जिन लोगो को इधर रहना है, उन सबको एक हो जाना चाहिए। जिसमें एक होने की शक्ति न हो, उनको मै अभी से सलाह देता हूँ कि वे जल्दी-से-जल्दी हैदराबाद को छोडकर चले जाएँ।

मै आपसे यह भी कहना चाहता हूँ कि रियासत मे जो भी सरकार बनेगी, वह लोकमत से बनेगी। हमें सबको मौका देना है। लेकिन जिनकी यहाँ महान ताकत है और बडी जमात है, उनको यहाँ बडा हिस्सा मिलने ही वाला है। उसको कोई रोक नही सकता। क्योकि डेमोक्रेसी (प्रजातन्त्र) की यह नीति है कि जो मेजोरिटी (बहुमत) है, उनको ज्यादा हिस्सा मिलता ही है। लेकिन यहाँ जो माइनोरिटी (अल्पमत) है, उसके दिल में भी यह विश्वास पैदा हो जाना चाहिए कि यदि हम हैदराबाद के प्रति वफ़ादार रहेंगे, तो हमें कोई खतरा नही हैं। उनको भी मौका मिलेगा, जैसे सब को मिलता है। जिस प्रकार की डेमोक्रेसी सारे हिन्दुस्तान में है, उसी प्रकार की डेमोक्रेसी हैदराबाद मे भी होगी। तो आप जल्दी से अपना उत्तरदायित्व सम्भालने की तैयारी करें। पिछले डेढ-दो सालो मे जो काम यहाँ किया गया, वह सब उल्टा हुआ और उससे बहुत नुकसान हुआ। उसने हैदराबाद की हालत बिगाड दी। इतना ही नही, बल्कि हैदराबाद में कोई काम ही नही होने दिया। यहाँ ऐसे लोग हुकूमत कर रहे थे, जो एक तरफ हमारे साथ समझौता कर रहे थे और दूसरी तरफ पाकिस्तान को लोन (कर्ज) देने की कोशिश कर रहे थे। क्या मै भी उन चीजों को याद करना नही चाहता ? मुझे ऐसी चीज़ की याद करने से दुख होता है।

लेकिन अभी भी वहाँ से सामान आता है। क्या हैदराबाद का भी दिमाग उन लोगो में पडा है ?

तो मैं कहना चाहता हूँ कि हैदराबाद का सवाल हैदराबाद को हल करना है। इसके लिए कोई बाहर से आने वाला नही है, कोई और बाहर से सलाह नही दे सकता। हैदराबाद को हिन्दोस्तान कभी छोड भी नही सकता और न कभी उसको नेगलेक्ट (उपेक्षित) कर सकता है। तो हमारे ऊपर एक जिम्मेवारी है कि हम हैदराबाद को जल्दी-से-जल्दी ठीक कर ले। इसमें मुझे कोई सलाह देने की जरूरत नही है। अगर यहाँ बोझे उठाने के लिए कोई लोग तैयार हो, और दूसरे सब कोई उन्हें मदद देने के लिए तैयार हो तो उन्हे उत्तरदायित्व देने में जितनी मदद बन सकेगी मै दूगा। लेकिन मेरे हाथ से कोई मैला काम नही होगा। क्योकि मैं हिन्दुस्तान की तरफ से जिम्मेदारी से बोल रहा हूँ। मैं सबसे पुन कहूँगा कि यदि कोई पुराना पाप अपने दिल में रखेगा, या पुराना जहर बाहर निकालेगा तो वह हैदराबाद का नुकसान करेगा और खुद अपना भी नुकसान करेगा। पिछली बातो को भूल जाओ और जल्दी से हैदराबाद की आबोहवा साफ कर दो। साफ करने का मतलब यह है कि हम एक दूसरे के साथ मिलकर हैदराबाद की आर्थिक और राष्ट्रीय स्थिति ठीक करने में लग जाएँ। यहाँ जो साम्यवादी या कम्युनिस्ट लोग हैं, जो नौजवान कम्युनिस्ट बनके इधर हैदराबाद में बढ आए हैं, उनमें कई लोग तो सिर्फ उत्पात करने के लिए इधर आए है, क्योकि इस तरह उन्हे काफी पैसा मिलता है। मै उनसे कहता हूँ कि हैदराबाद को छोड दो, दूसरी जगह पर जाओ, क्योकि हैदराबाद में एक कम्युनिस्ट को भी मै सहन नही करूँगा। (तालियाँ)

मेरी बात का मतलब यह है कि हैदराबाद में जो जहर फैल रहा है, वह सारे हिन्दुस्तान का काम बिगाड रहा है। इसीलिए इन लोगो को हैदराबाद छोड कर बाहर चले जाने की सलाह मैं दे रहा हूँ। तो बहुत से लोग आस-पास से आ कर इधर पडे है। जितने कम्युनिस्ट यहाँ पकडे जाते है, वह बाहर से आए हैं। वह बाहर से क्यो आए ? इसीसे मैं उनसे कहता हूँ कि तुम बाहर जाओ, जहाँ तुम्हारे लोग है, वहाँ जाओ। तुम इधर क्यो आए ? जब इस तरफ हैदराबाद की आजादी की लडाई चलती थी, तब कुछ-न-कुछ बहाना निकाल कर वे इधर आ गए। उसमें उन्होंने क्या काम किया, वह मैं कहना नही चाहता। भला किया, बुरा किया, रुकावट की, वह सब कुछ मैं कहना नही चाहता। लेकिन

मैं यह ज़रूर कहना चाहता हूँ कि अब काम बिगाड़ने का समय नहीं रहा। कोई कहता है कि इन लोगों ने अच्छा काम किया। ठीक है, अच्छा किया होगा। लेकिन अच्छा और बुरा दोनों को मिलाने से नतीजा जो निकलता है, वह बुराई का ही होता है। आज हैदराबाद का सारा काम इसीलिए रुक रहा है। देखिए, हमें अब चुनाव का काम करना है। तो यदि यहां मतपत्रक बन जाए, इलेक्टोरल रोल बन जाए तब तो हमारा काम आगे चले। और इलेक्टोरल रोल बनाने के लिए हमें बाहर से आफ़िसर ला के रखने हैं। यह कम्युनिस्ट लोग वहाँ भी पहुँच गए हैं और इलेक्टोरल रोल बनाने के काम में भी रुकावट डालते हैं।

साथ-ही-साथ एक और काम भी आप को करना है। हमारे मुल्क में, जैसा कई और जगहों पर है, हजारों लोग अस्पृश्य माने जाते हैं। उनकी हालत बहुत बुरी है। इन अस्पृश्य लोगों की सेवा भी आज हमें करनी है। हम कोई ऐसा काम न करें, जिसकी वजह से उनके दिल में ऐसी भावना पैदा हो जाए कि हैदराबाद तो आज़ाद हुआ, लेकिन हमारी आज़ादी अभी नहीं आई। जैसी गुलामी पहले थी, वैसी गुलामी अब भी है। हमने सारे हिन्दुस्तान में से अस्पृश्यता को नष्ट करने के लिए आन्दोलन शुरू किया है, कानूनों से हमने अस्पृश्यता को बन्द किया है। यहाँ की काग्रेस का यह भी कर्तव्य हो जाता है। हमें अपनी सारी ताकत इन लोगों को उठाने के लिए खर्च करनी है।

दूसरा काम मज़दूरों का है। हैदराबाद में जो कारखाने चलते हैं, जो इण्डस्ट्रीज़ चलती हैं, उनमें मज़दूरों को क्या वेतन मिलता है? यह आज तक कुछ भी चला हो, लेकिन अब इस तरह से नहीं चल सकता। हिन्दुस्तान में मजदूरों के लिए जो कानून हैं, हिन्दुस्तान में उन्हें जो वेतन मिलता है और जिस प्रकार उनका संगठन बनता है, वह सब हमें यहाँ भी करना है। इस प्रकार मज़दूर को राहत मिलनी चाहिए और उसको उत्तेजना मिलनी चाहिए, ताकि वह ज्यादा से-ज्यादा काम करे। लेकिन यह जो कम्युनिस्ट लोग यहाँ आए हैं, और जो हमारे यहाँ फले-फूले हैं, उसका कारण हम भी तो हैं, कि हमने मज़दूरों और गरीबों को दबा रखा है। हमने किसानों को भी इसी तरह दबाया, मज़-दूरों को इसी तरह से दबाया और उससे कम्युनिस्टों को उनमें काम करने का मौका मिला। तो जिस प्रकार मछली को पानी में घूमने की जगह मिलती है, मौज मिलती है, उस प्रकार कम्युनिस्ट लोगों को इधर मौज मिल गई।

हमें अब यह सोचना चाहिए कि हमें किस रास्ते पर चलना है। हैदराबाद रियासत में यदि हमें जल्दी से राष्ट्रीय और आर्थिक उन्नति करनी है, तो हमारा कर्तव्य हो जाता है कि हम जल्दी से-जल्दी स्वस्थ हो जाएँ। मैं यह देखने के लिए आया हूँ कि हैदराबाद की हालत क्या है। और मैं खुश हूँ कि आप लोगो ने अब ऊपर की शान्ति तो पैदा कर ली है। लेकिन मैं भीतर की हालत देखना चाहता हूँ। जब तक भीतर की शान्ति ठीक न हो, ऊपर की शान्ति कभी भी टूट जाएगी। यह टूटनी नही चाहिए। क्योकि जब तक पूरी शान्ति न हो जाए, तब तक हमारी प्रगति नही चल सकती। तो, हमें यहाँ पूरी शान्ति पैदा करनी है। यह भी आपको देखना है कि आज तक हैदराबाद के राज्य का कारोबार एक साथ में था और इस वजह से यहाँ की एक कौम में ज्यादा प्रगति नही हुई। अब आप लोगो की ख्वाहिश है कि आपको भी उसमें हिस्सा मिले। हिन्दुस्तान मे भी यही हालत थी। हम सब लोग उसी कोशिश में थे कि हिन्दुस्तान विदेशियो के हाथ में से छूट जाए। तब जैसी कुर्बानी आप लोगो ने की, हम लोगो ने भी की थी। हमें आजादी मिली, आप लोगो को भी मिली। लेकिन हम लोगो ने सत्ता अपने हाथ में ले ली है, आप लोगो को अभी सत्ता नही मिली।

हम लोगो ने जब सत्ता हाथ में ली, तो वहाँ बहुत बिगाड हुआ। हमारे न चाहते हुए भी बिगाड हुआ और सारी दुनिया में हमारी बदनामी हुई। उसी प्रकार इधर नही होना चाहिए। हमारे यहाँ बिगाड इसलिए हुआ कि हमें मजबूरी से मुल्क के दो हिस्से करने पडे। वहाँ पहले ही काफी जहर भरा हुआ था, वह फूट गया। हैदराबाद में भी जहर तो भरा हुआ है, लेकिन इस जहर को हमने फूटने नही दिया। अगर यहाँ परदेसी हुकूमत होती, तो उसी तरह से होने वाला था। यहाँ बहुत लोगो ने कोशिश भी की थी कि वैसा ही हो। लेकिन खुदा की मेहरबानी से हम लोग बच गए। अब जब बच गए हैं, तो हमें इस प्रकार काम करना है कि ज्यादा विगाड न हो। इसी में आप सबका हित है। हमारे मुल्क में नौजवान बिगड जाते है और गलत रास्ते पर चलते है। मैं चाहता हूँ कि उन्हें गलत रास्ते पर चलने का मौका न मिले। इसलिए जितना काम करना है, वह तो हमें करना ही है, लेकिन हमें किसी भी तरह हैदराबाद में लाठी से काम लेने वालो को चलने नही देना है। बन्दूक से और लाठी से काम लेना हो तो वह फौज का और पोलीस का काम है, दूसरे का नही। वह उनके पास रहनी चाहिए, क्योकि वह समझते हैं कि कहाँ बन्दूक चलानी है, कहाँ नही

चलानी। यह दूसरे का काम नही है। जिसे कलम से काम लेना है, उसको बन्दूक दे देने से वह अपनी खुदकुशी करेगा, या दूसरे को मार आएगा। तो मैं आपसे अदब से कहना चाहता हूँ कि हमारे मुल्क में, हमारे राज्य मे, जब कोई नौजवान गलत रास्ते पर चलते है, तो उनको समझाने की कोशिश करना आपका काम है। यह खाली काग्रेस का ही काम नही। यह सबका काम है। यदि कोई गलत रास्ते पर चलना चाहे, हिंसा से काम लेना चाहे, तो उसको वैसा नही करने देना चाहिए। उसको पुलिस के सुपुर्द कर देना चाहिए।

कई लोग मुझसे कहते हैं कि पुलिस मे या और जगह पर बिना झूठ के काम नही चलता। मैं मानता हूँ कि नही चलता होगा। क्योकि जहाँ बुराइयों के लिए काफी अवकाश है, वहाँ वे होती ही होगी। अभी तक तो समय भी बहुत कम हुआ है। अभी तक लोगो मे विश्वास पैदा करने का काम नही हो पाया है। वह काम खाली अमलदारो से या आफीसरो से नही होगा। लोक नियुक्त सस्था काग्रेस के ऊपर यह बोझ है। उसको यह काम करना है। काग्रेस का दरवाजा हम खोल दें। उसमे ऐसे सब लोगो को हमें स्थान देना है, जो काग्रेस का प्रोग्राम कबूल कर लें। अगर उसमे लोग इस ख्याल से आएँगे कि भीतर घुस के कुछ गडबड करेंगे, तो वह कुछ नही कर सकेंगे। आप लोगो को घबराने की कोई जरूरत नही है। काग्रेस यदि हैदराबाद की रियासत के लोगो का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार हो, और थोडा-सा दरवाजा खोलकर कुछ गिने-चुने लोगो को आने दे, तो उससे काम नहीं चलेगा। अपना दरवाजा खुला रखो, हिम्मत से काम लो और साफ काम करो तो सारी रियासत आपके पीछे चलेगी, कोई भी उसमें रुकावट नही डाल सकेगा।

जो चन्द बाते मैंने आपके सामने रखी है, उन सबके बारे में आपको सोचना है। मैंने कोई कडुवी बात कही हो, तो आपको यह समझना है कि वह दवा है। दवा कडुवी तो होती है, पर बहुत फायदा करने वाली होती है। मैंने आपको जो दवा दी है, वह घोलकर अगर आप लोग पी जाएँगे, तो उससे आपको बहुत फायदा होगा और आपकी तबियत ठीक हो जाएगी। आपकी तबियत जल्दी ठीक हो, तो मुझे बहुत बड़ी खुशी होगी, क्योकि हम लोग अपने सिर का बोझ आपके सिर पर डालना चाहते हैं। आप उसे उठा लीजिए। आपका बोझ हमारे ऊपर ज्यादा दिन नही रहना चाहिए। क्योकि हमको दुख होता है कि कहाँ तक हम आपका बोझ उठाएँ? तो हम आपसे ज्यादा परेशान हैं।

यह बोझ आप सब जल्दी उठाएँ। उसकी तैयारी करें। जो कांग्रेस में नही है, वह भी हमसे कहते है कि भई जल्दी यह काम करो। यह राजकाज कांग्रेस वालो को ही दे दो। इससे हमे कोई नुकसान नही है और न कोई बखेडा होने वाला है। ऐसा हो जाए, तो हमारी फौज अपनी बैरको में बैठकर मौज करे। वह इधर क्यो आए? आपके सामने मिलिटरी को क्यों लाना पडे? यह तो जब जमाना था, तब उसे लाना पडा। अब वह चला गया और अब फौज की क्या जरूरत है? उसको हम क्यो तकलीफ दें? जब हिन्दुस्तान पर मुसीबत हो, तब उनका काम है।

और जो हैदराबाद की पुरानी पुलिस है, उसको मै बडे अदब से कहना चाहता हूँ कि खुदा का नाम याद करके जो तुम खाते हो, उसको हराम न करो। यदि आप से यह काम नही होता, तो मेहरबानी करके छोड दो। क्योकि अब जमाना बदल गया है। अब हमें इन्साफ से और वफादारी से काम करना है। जितना पैसा हम लेते है, उसको हराम नही करना है। हमें पूरा काम करना है। न हो सके तो हट जाएँ। हैदराबाद की रियासत मे जो अमलदार लोग पडे है, उनसे भी मै कहूँगा कि आप लोगो को पिछला सभी कुछ भुलकर ठीक तरह से काम करना है। क्योकि यदि आपके दिल में कभी कोई ख्वाहिश हो कि हैदराबाद में कोई पलटा हो जाए तो कोई दूसरी चीज आएगी, यह होने वाला नही है। हिन्दुस्तान का इतिहास बदल गया, उसका भूगोल बदल गया और अब हम इस तरह से काम करना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान के रहने वाले सब लोगो का कल्याण हो और सब का भला हो। सबको अच्छी तरह से खाना-पीना मिले, कोई दुखी न रहे। उस काम में आप लोगो को साथ देना है। पहले हम गलत रास्ते पर चलते थे, अब हमें सही रास्ते पर जाना है। तो सही रास्ते पर चलने में आप लोगो को मदद करनी है। नही करनी, तो मेहरबानी करके छोड दीजिए।

मै आप सबसे यह कहना चाहता हूँ कि जो ढाँचा, जो तन्त्र हमारे पास है, वह इस प्रकार का तन्त्र है कि यदि वह आपके हाथ में देंगे, तो आप उसे चला न सकेंगे। जो कुछ भी बनेगा, वह आखिर हमारे पास तो रहने वाला नही है। जब चुनाव होगा, तो जिसे आप वोट देंगे, सत्ता उसी के पास जाएगी। तब इसके भीतर बैठकर आप इस चीज को किस तरह से चलाएंगे, वह आपका ही काम होगा। तो आपको ऐसा काम नही करना चाहिए, जिसमें आपका

ही नुकसान हो। उससे खाली आपका ही नही, सारे हिन्दुस्तान का नुकसान होगा। आज दुनिया बहुत छोटी हो गई है। कोई भली-बुरी चीज़ हम इधर करे, तो वह सारी दुनिया मे जाती है। दुनिया कहती है कि ये ऐसे पागल और बेवकूफ है कि इस तरह से काम करते है। हैदराबाद का दरवाज़ा सब तरफ से खुला है। परदेशी लोग तो इधर आते है और देखते हैं। हमे कोई धोखा नही करना था, जो हम हैदराबाद के दरवाज़े बन्द करते। क्यो हम धोखा करे? हमने एलान कर दिया कि हैदराबाद का भविष्य हैदराबाद के लोगो के सुपुर्द है। आज सारी दुनिया का एक ही रास्ता है। डेमोक्रेसी (प्रजातन्त्र) को सब कबूल करते है। कोई दूसरा रास्ता हो ही नही सकता। तो हम किसी को रोकने की कोशिश क्यो करे? क्या हमारे में कोई ऐब है? क्या हम कोई ऐसी बुरी चीज़ करना चाहते है, जिसे हम दुनिया से छिपाएँ? हम ऐसा कोई काम नही करना चाहते, जो हमे छिपाना पडे।

हैदराबाद मे आपकी सरकार बन जाय, ऐसी मेरी ख्वाहिश है। उसमे मेरी जो कुछ मदद होगी, उसे करने को मै तैयार रहूँगा। मै आपसे बहुत अदब से और प्रेम से प्रार्थना करूँगा कि आप लोग खुदा की बन्दगी करते रहे कि बहुत दिनो तक हमने दुख उठाए हैं और अब अधिक दुख हमारे सर पर न आएँ। साथ ही यह भी कि हम योग्यता प्राप्त करें और ईश्वर हमको गलत रास्ते पर न चलने दे। मै एक दफे फिर भी नौजवानो से प्रार्थना करता हूँ कि गलत रास्ते पर न चलो। हमको मजबूर न करो कि हमारे हाथ से आप लोगों को जेल मे जाना पडे या आपके पीछे गोली लेकर सिपाहियो को भेजना पड़े। यह बहुत बुरा काम है, इससे हमको बहुत कष्ट होता है। इससे आपको भी कष्ट होना चाहिए। इतिहास मे कई सदियो के बाद हिन्दुस्तान को मौका मिला है। इतना बडा एक हिन्दुस्तान, आज़ाद हिन्दुस्तान, पहले कब था? अब उसकी जगह कहाँ होनी चाहिए? दुनिया के मुल्को मे अपनी जगह पर बैठाने का जो सौभाग्य हमे प्राप्त हुआ है, उसको हम फेक दे तो इससे अधिक बुरा और क्या होगा। हमे ऐसे काम करने चाहिए कि भविष्य की प्रजा कहे कि हमारे पूर्वज बडे लायक थे, बहुत नेक थे। आपकी औलाद होना वे गर्व की बात समझे। देखिए, आपके सामने क्या हो रहा है? हमारे लोग मारे-पीटे जाते है। देखिए, बर्मा मे क्या हो रहा है। वहाँ से भाग-भागकर लोग मद्रास मे आ रहे हैं। हम तो आज़ाद हुए, लेकिन हमारे जो लोग पड़े है, उनकी अब तक जो इज्जत होनी

चाहिए, वह नहीं हुई। क्यो ? इसलिए कि हम खुद आज़ाद तो हुए, लेकिन हम स्वस्थ नही हुए। हमारी आज़ादी ऐसी होनी चाहिए कि दुनिया में सब जगह हमारी इज्जत बढ़े और सब लोग मानें कि हम लोग नेक हैं। इसी प्रकार की आज़ादी के लिए हमने काम किया था। उसमें हैदराबाद अलग नही रह सकता। उसको भी हमें साथ लेना है। उसको साथ लेने की हमने भरसक कोशिश की है। इसी में आप सब का सुख है। एक दूसरे के साथ किसी का वैर बढा कर नुकसान करने के लिए हमने वैसा नही किया।

आज आप लोगो ने बड़े प्रेम से मेरा जो स्वागत किया, इसके लिए मैं आपका ऋणी हूँ। आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ। बहुत धूप में भी आप इतनी बडी सख्या में इतने समय से मेरी बात सुनने के लिए बैठे रहे। इससे मुझे बहुत खुशी होती है। लेकिन अगर आप मेरा स्वागत करते हैं, मुझ पर प्रीति रखते है, तो मेरी बात आपको सुननी चाहिए और उसे मानना चाहिए। मैं जो कुछ कहता हूँ, आपकी भलाई के लिए कहता हूँ, मुल्क की भलाई के लिए कहता हूँ। खुदा हाफिज़ !

---

(१८)

उस्मानिया युनिवर्सिटी में

२१ फरवरी, १९४९

उस्मानिया विद्यालय के कुलपति, कुलनायक, सभ्यगण, विद्यार्थी भाइयो और वहनो,

आप लोगो ने मुझ पर जो इतनी इज्जत वख्शी, उसके लिए मैं आप का शुक्रिया अदा करता हूँ। चन्द दिनो पहले जब आपके विश्वविद्यालय के कुलनायक मुझे निमन्त्रित करने मेरे पास दिल्ली में आए और पदवीदान की वात मेरे सामने रखी, तो मैं झिझकने लगा। क्योकि मैं नही समझता हूँ कि विश्वविद्यालय की किसी पदवी के लिए मुझ में कोई योग्यता है। मैंने तो दुनिया के खुले विद्यालय की शिक्षा पाई है, और अनुभव से दुनिया का कुछ-न कुछ रंग-ढग देख लिया है। लेकिन जव मैं यह आलीशान महल देखता हूँ, और इनमें जो खूवियाँ भरी है, अपनी कल्पनाशक्ति से जव मैं उनका ख्याल करता हूँ, तव मैं डरता हूँ कि क्या सचमुच इस विद्यालय की डिग्री लेने की मेरी योग्यता है ? (हँसी)

मैं जो कहता हूँ यह हँसी मजाक की वात नही है। मैं सही वात कहता हूँ। इसमें सारे भारतवर्ष के पुराने से लेकर आजतक के जो कल्चर (संस्कृति) थे, उन सवको जिस तरह मिलाया गया है, वह एक वहुत वडी खूवी है। उसी खूवी को यदि हमने समझ लिया होता और हमारे जो अलग-अलग कल्चर

चाहिए, वह नहीं हुई । क्यो ? इसलिए कि हम खुद आजाद तो हुए, लेकिन हम स्वस्थ नही हुए । हमारी आज़ादी ऐसी होनी चाहिए कि दुनिया में सब जगह हमारी इज्जत बढ़े और सब लोग मानें कि हम लोग नेक है । इसी प्रकार की आजादी के लिए हमने काम किया था । उसमें हैदराबाद अलग नही रह सकता । उसको भी हमें साथ लेना है । उसको साथ लेने की हमने भरसक कोशिश की है । इसी में आप सब का सुख है । एक दूसरे के साथ किसी का वैर बढा कर नुकसान करने के लिए हमने वैसा नही किया ।

आज आप लोगो ने बडे प्रेम से मेरा जो स्वागत किया, इसके लिए मै आपका ऋणी हूँ । आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ । बहुत धूप में भी आप इतनी बडी सख्या में इतने समय से मेरी बात सुनने के लिए बैठे रहे । इससे मुझे बहुत खुशी होती है । लेकिन अगर आप मेरा स्वागत करते हैं, मुझ पर प्रीति रखते है, तो मेरी बात आपको सुननी चाहिए और उसे मानना चाहिए । मैं जो कुछ कहता हूँ, आपकी भलाई के लिए कहता हूँ, मुल्क की भलाई के लिए कहता हूँ । खुदा हाफिज !

---

(१८)

उस्मानिया युनिवर्सिटी में

२१ फरवरी, १९४९

उस्मानिया विद्यालय के कुलपति, कुलनायक, सभ्यगण, विद्यार्थी भाइयो और बहनो,

आप लोगों ने मुझ पर जो इतनी इज्जत बख्शी, उसके लिए मैं आप का शुक्रिया अदा करता हूँ। चन्द दिनो पहले जब आपके विश्वविद्यालय के कुलनायक मुझे निमन्त्रित करने मेरे पास दिल्ली में आए और पदवीदान की बात मेरे सामने रखी, तो मैं झिझकने लगा। क्योकि मैं नहीं समझता हूँ कि विश्वविद्यालय की किसी पदवी के लिए मुझ में कोई योग्यता है। मैंने तो दुनिया के खुले विद्यालय की शिक्षा पाई है, और अनुभव से दुनिया का कुछ-न कुछ रग-ढग देख लिया है। लेकिन जब मैं यह आलीशान महल देखता हूँ, और इनमें जो खूबियाँ भरी हैं, अपनी कल्पनाशक्ति से जब मैं उनका ख्याल करता हूँ, तब मैं डरता हूँ कि क्या सचमुच इस विद्यालय की डिग्री लेने की मेरी योग्यता है? (हँसी)

मैं जो कहता हूँ यह हँसी मजाक की बात नही है। मैं सही बात कहता हूँ। इसमें सारे भारतवर्ष के पुराने से लेकर आजतक के जो कल्चर (सस्कृति) थे, उन सबको जिस तरह मिलाया गया है, वह एक बहुत बडी खूबी है। उसी खूबी को यदि हमने समझ लिया होता और हमारे जो अलग-अलग कल्चर

है, उनको हमने दिल से मिला दिया होता, तो आज हिन्दुस्तान की शक्ल ही दूसरी होती। लेकिन हम भूले-भटके लोग गलत रास्ते पर चले और उसके बुरे असर से हिन्दुस्तान की कोई यूनिवर्सिटी भी बच नही सकी। तो आप कैसे बचते ? मै इसमें आप का कोई दोष नही निकालूगा। लेकिन मैं हृदय से आपसे एक विनती करूँगा, जिसके ऊपर आपको पूरी तरह सोचना है। इस विश्वविद्यालय में जिन नौजवानो ने शिक्षा पाई है और जिनको आज पदवी दी जाती है, उन लोगों के ऊपर जो जिम्मेवारी आने वाली है, उसका ख्याल करने के लिए मै बडे अदब से आप से अर्ज करूँगा। क्योकि आप लोगो ने इतने बडे जल्से में, इतने साक्षियो के सामने आज शपथ ली है। आपने प्रतिज्ञा की है कि यह पदवी लेकर आप जिन्दगी भर इस प्रकार की कोशिश करते रहेगे कि योग्यता से अपना जीवन निबाहे। यदि इतने नौजवान सच्चे दिल से यह कोशिश करते रहे, तो मेरे दिल में पक्का विश्वास है कि हिन्दुस्तान का भविष्य उज्ज्वल हो सकता है। और इतने नौजवान यदि समझ लें कि जिस प्रकार इस विश्वविद्यालय में कल्चरो का मिलान किया गया है, उसी तरह से हमें अपने दिलो का मिलान करना है, तब हमारी भलाई होगी।

जो कुछ हमारी किस्मत में था, वह हो गया। और जो कुछ हुआ, उसके ऊपर हमें परदा डाल देना चाहिए। अब तो अपना भविष्य, और अपने मुल्क का भविष्य बनाने का काम हमारे सिर आ पडा है। हम में इस बात की योग्यता है या नही, यह तो खुदा को ही मालूम है। लेकिन मै आपसे कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान मे चार करोड मुसलमान रहते हैं। उन्हे ३० करोड बाकी गैर-मुसलमानो के साथ मिलकर रहना है। हम सब को मिलकर हिन्दुस्तान का भविष्य बनाना है। यदि पाकिस्तान का भविष्य ठीक करना हो, तो वह भी हमीं लोग कर सकते है, वह दूसरो से नही हो सकता। (तालियाँ) क्योंकि आप को यह समझना चाहिए कि हम इस भूमि में पैदा हुए, इसी मिट्टी से बने और आखिर में इसी मिट्टी में हमें मिल जाना है। तो जैसा महात्मा गान्धी ने ज़िन्दगी भर हमको सिखाया, कि सब मजहबो में जो अच्छी बातें हैं, सब मजहबो में जो सही चीजें है, उन्हें घोल-घोल कर पी जाने की कोशिश करनी चाहिए। हमारा अपना मजहब तो अच्छा है ही, मगर और मजहब भी अच्छे है। मजहब में जाने-अनजाने जो बुराई और गुस्सा आ गया है, उसको हमें निकाल देना है। उससे हमें अलग रहना है। इस विश्वविद्यालय के जो

प्रोफेसर और आचार्य लोग है, उन पर वहुत वडी ज़िम्मेवारी है । आप लोग, जो इस में शिक्षा पाते है और जो पदवी लेने की कोशिश कर रहे है, उन पर इससे भी वडी ज़िम्मेदारी है । क्योकि कल हिन्दुस्तान के भविष्य का वोझ आप लोगो के ऊपर पडने वाला है ।

मै आपसे यह कहना चाहता हूँ कि वहुत दिनो के वाद हमारा मुल्क गुलामी से छूट गया है और आज हमारे सामने वहुत से मैदान है । काम करने का वडा मैदान हमारे सामने खुला पडा है । यदि हमारे मे योग्यता होगी, तो हमे वहुत से ओपनिंग (निकास) मिलने वाले है । लोगो को डिग्री लेने के वाद पहले चाकरी हासिल करने के लिए जो दौडभाग करनी पडती थी, वह आप लोगो को नही करनी पडेगी । परन्तु यह तभी होगा, यदि आप मे योग्यता होगी । कई सदियो के वाद यह मौका हमे मिला है । तो हमारा कर्तव्य है कि इससे लाभ उठाएँ । यह डिग्री लेकर हमने यह प्रतिज्ञा ली कि हम खुदा की वन्दगी करेंगे और अपने फर्ज़ पूरे करेंगे, इसके लिए खुदा हमें योग्यता दे । हमें नम्रता से कहना चाहिए कि यह हमारा मुल्क है, जिसमे हमारा जन्म हुआ, जिसमे हमने शिक्षा पाई और जिसमें हमें अपनी जिन्दगी वसर करनी है । अपने मुल्क की तरक्की के लिए हमारा क्या कर्तव्य है, क्या ज़िम्मेदारी है, यह सव चीज़ हमारे ख्याल रखने की है । पीछे जो हमारी गल्तियाँ हुई, खुदा वैसी गल्ती हमसे फिर न कराए, इसके लिए भी हमे प्रार्थना करनी है । खुदा की इवादत करना और भाई भाई की तरह हिन्दुस्तान मे रहना हमारा फर्ज़ है । हिन्दुस्तान की इज्जत वढाने के लिए, हिन्दुस्तान के सच्चे सपूत के मुआफिक हम रहे और रहना सीख ले, तभी यूनिवर्सिटी की जो डिग्री हमने पाई है, इसकी योग्यता हममें होगी ।

वाइस चासलर साहव ने मेरे वारे में जो वातें कही, उनके वारे में मै आपसे कुछ न कहूँगा । क्योकि मै जानता हूँ कि मै कहाँ हूँ और मेरा स्थान क्या है । मुझे यदि अपनी जगह का ख्याल न होता, तव तो मै पागल हो जाता । लेकिन मै जानता हूँ कि मै हिन्दुस्तान के एक वफादार सिपाही की जगह पर खडे रहना चाहता हूँ और यदि वफादारी के इस मार्ग से मै एक कदम भी चूक जाऊँ, तो मै खुदा से प्रार्थना करूँगा कि मेरा जीवन उसी समय खत्म हो जाए । क्योकि इन्सान की असली कदर तो उसके जीवन के वाद होती है । मरने तक जो गल्ती नहीं करता, तभी उसका जीवन ठीक होता है । लेकिन ऐसे लोग कितने है, जिन्हे यकीन हो कि वे कभी गल्ती न करेंगे ? ऐसा दावा कौन कर

सकता है ? तो हमारी प्रार्थना होनी चाहिए कि जबतक खुदा हमें जिन्दगी दे, तब तक हम सही रास्ते पर चलें और कोई गल्ती न करें। बडी नम्रता से हमें हमेशा खुदा से यही प्रार्थना करनी चाहिए।

अपने जीवन में हम जो कुछ कर पाते हैं, वह कोई बडी बात नहीं है, जिसके लिए हम मगरूरी ले सकें। क्योकि जो कुछ हम करते हैं, उसमें हमारा क्या भाग है ? असल में कराने वाला तो खुदा है। इन्सान तो खाली एक हथियार बनता है। इन्सान यदि जागृत हो तो उसका यह धर्म हो जाता है कि हमेशा प्रार्थना करें और कोशिश करें कि उससे कोई गल्ती न हो। अभी आप नौजवानो ने खुदा से प्रार्थना की है। आप नौजवानो को और जिन विद्यार्थियों को उम्मीद है कि आगे चल कर उन्हें भी ऐसी पदवी मिले, उनसे मैं एक ही बात कहूँगा कि हमारे देश की इज्जत को कोई भी दाग लगे, ऐसा कोई काम आप से कभी न हो। आप के कारनामो से हमारी इज्जत हमेशा बढती रहे और दुनिया में लोग कहें कि हिन्दुस्तान के नौजवान भारत के स्वतन्त्र हो जाने के बाद दूसरे प्रकार के बन गए है। हमारे लोग भी समझें और दुनिया के लोग भी समझें कि भारत की जो पुरानी सस्कृति थी, ये नौजवान उसके वारिस है।

उस जमाने का नाम लेकर आजकल जो लोग युनिवर्सिटियो के नौजवानों को गलत रास्ते पर ले जा रहे है, वह मुल्क की भलाई की नहीं, बल्कि मुल्क को गिराने की कोशिश कर रहे हैं। वे आपस में लडते हैं और देश तथा नौजवानो का नुकसान ही करते हैं। वे लोग असली भारतीय सस्कृति को छोड कर पराई सस्कृति के मोह में पडे हैं और वे मुल्क को आगे ले जाने वाले नहीं है।

आपने अपनी यूनिवर्सिटी की तरफ से मुझे भी पदवी-दान दिया है। जैसे आपको प्रयत्न करना है, वैसे ही मुझे भी कोशिश करनी है कि इस पदवी के लिए खुदा मुझ को योग्यता दे। और मैं उसकी कोशिश करूँगा। खुदा आपका भला करे।

—

(१९)

मैसूर म्युनिसिपैलिटी के अभिनन्दनोत्सव में

२५ फरवरी, १९४९

मैसूर म्यूनिसिपैलिटी के अध्यक्ष और म्यूनिसिपैलिटी के सभ्यगण,

आप लोगो ने मुझे जो मानपत्र दिया, उसके लिए मैं आपका आभार मानता हूँ। मै इधर कोई दस-बारह साल के बाद आया हूँ। इस बीच में दुनिया बहुत उलट-पलट हो गई है। हिन्दुस्तान में भी उलट-पलट हुई है और आपके यहां भी काफी उलट-पुलट हुई है। देश में कुछ अच्छी और कुछ बुरी बातें हुई हैं, लेकिन ईश्वर की कृपा से आपके यहां कोई बुराई नहीं हुई, और ठीक शान्ति से मैसूर राज्य की प्रगति हो रही है।

दुनिया मे आज सभी जगह अशान्ति है। आज दुनिया में जो एक प्रकार की बाहर की शान्ति दिखाई पड़ती है, वह असल मे शान्ति नही है। हर मुल्क में बहुत सी तकलीफें हैं, बहुत बेचैनी है। यूरोप, एशिया जहां कहीं देखें, जिस प्रकार का अमन और शान्ति होनी चाहिए, वैसी नही है। हिन्दुस्तान मे हम लोगो की इच्छा थी कि हम हिन्दुस्तान को आज़ाद कर दें, वह इच्छा एक तरह से पूरी हुई। दूसरी तरह से जो उम्मीद रखी थी, वह पूरी नही हुई। एक तरफ तो हमने विदेशी राज को हिन्दुस्तान से हटाया। दूसरी तरफ हमने जिस प्रकार आपस में मार पीट की, गुण्डागर्दी की और दुनिया के सामने जो

प्रदर्शन किया, वह हमारी मस्कृति के खिलाफ और महात्मा गान्धी के शिक्षण के बिलकुल विरुद्ध था। उससे गाधी जी को बहुत कष्ट हुआ। उनकी तपस्या से हमको आज़ादी तो मिल गई, लेकिन हमने उनका खुद का प्राण लिया। यह वहुत ही बुरा हुआ। इससे दुनिया में हमारी वदनामी हुई, बेइज्जती हुई। लेकिन उनके मरने के बाद हमने कुछ शान्ति पैदा कर ली है। एक तरह से मुल्क में अब कोई खतरा नही है। छोटी-मोटी बातें होती हैं, कभी कभी हमें अपने नवजवानो को जेल में भेजना पडता है और दण्ड का उपयोग करना पडता है, पुलिस से काम लेना पडता है। इससे हमें कष्ट होता है। लेकिन एक तरह से यह जो छोटी-मोटी बातें हो रही हैं, इनसे मुल्क को कोई खतरा नही है। इसी प्रकार मुल्क पर बाहर से आक्रमण का भी कोई खतरा नही है। तो भी जो पिछला महान युद्ध हुआ, उसकी जो प्रसादी दुनिया भर को मिली, वह बहुत बुरी है। उसमें से हम बचे नही हैं, और यदि हम सावधान न रहे और जिस तरह काम करना चाहिए, उस तरह न करें, तो उससे हमें बहुत बडा खतरा है।

आप जानते हैं कि हमारे मुल्क में जब राज्य पलटा और हमने सत्ता अपने हाथ में ली, तब, जैसा आपने मानपत्र में वयान किया है, हिन्दुस्तान मे छोटी-छोटी करीव-करीब पांच -छ सौ रियासतें थी। उनका क्या किया जाए, यह एक बहुत बडा विकट प्रश्न था। लेकिन एक बडी बात यह हो गई कि सब राजा-महाराजाओ ने बहुत सोच-समझ कर मुल्क का साथ देने का निश्चय किया। मैं बार-बार इन लोगो को इस स्वदेशाभिमान के लिए मुबारकबाद देता आया हूँ। इस मौके पर आज भी मैं यह कहना चाहता हूँ कि राजाओ ने अगर समय को पहचान न लिया होता और देशभक्ति का प्रदर्शन न किया होता, तो उससे देश को बहुत तकलीफ होती। हमारे मुल्क के दो टुकडे तो हुए ही थे, उससे और भी अनेक टुकडे हो जाने का बहुत बडा खतरा था। और इस प्रकार के टुकडे करने की पूरी कोशिश भी जारी थी। आपने देखा होगा कि जब हमने राज्यो का मगठन करना शुरू किया, तो उससे पहले ही जूनागढ में गडबड शुरू हो गई थी। आप को मालूम ही है कि हिन्दुस्तान में जितनी रियासते थी, उसकी आधी रियासतें तो अकेले काठियावाड में पडी हुई थी। उन्ही में एक जूनागढ स्टेट भी थी। पाकिस्तान ने उसे अपने साथ लेने की कोशिश की और उसका दस्तखत भी ले लिया।

तब से हमको एक प्रकार का नोटिस मिल गया कि हमें सावधान रहने की कितनी ज़रूरत है। इसके बाद का इतिहास आप जानते ही है। आप के पड़ोस में ही जो एक बहुत बड़ी रियासत, देश की सबसे बड़ी रियासत है, उसने क्या किया, वह भी आप जानते है। उस सबका इतिहास बताने की मुझे कोई ज़रूरत नही है। लेकिन यदि उस समय पर हिन्दुस्तान की और रियासतो ने भी यही सोच लिया होता कि हमे भी हिन्दुस्तान से अलग अपना अड्डा बनाना है, तो उससे हमको बहुत नुकसान होता। हमारी उन्नति रुक जाती। बहुत दिनो से आप लोग अपना राजतन्त्र लेने की कोशिश कर रहे थे। हम और आप उसके लिए एक साथ लड़ाई कर रहे थे। और, जैसा कि आपने कहा, एक समय पर मैं आप लोगो के नेतागणों को मिलने के लिए बैंगलोर के जेल में आया भी था। उस समय में और आज के समय में बहुत फर्क आ गया है।

मैसूर के महाराजा ने समय की माँग को समझ कर अपनी सत्ता जनता के प्रतिनिधियो को दे दी, और हिन्दुस्तान में मिल जाने की स्वीकृति दे दी। यह बहुत अच्छा हुआ कि एक भी राज्य ऐसा न रहा, जो हमारे साथ मिल नही गया। सब आ गए, जो नही आए, उनका भी हिसाब पूरा हो गया। अब कोई चीज़ बाकी नही रही। हिन्दुस्तान मे एक प्रकार से शान्ति स्थापित हो गई है। लेकिन हिन्दुस्तान में आज भी जो तकलीफ है, उस तकलीफ का अगर हम ख्याल न रखें, तो हमको जो स्वराज मिला, वह स्वराज गान्धी जी की इच्छा का स्वराज नही होगा।

हिन्दुस्तान के बदन पर हड्डी और चमड़ी के सिवा कोई चीज़ बाकी नही रही। तो यदि भारत को मज़बूत बनाना हो और सच्चा स्वराज हमें पैदा करना हो, तो गान्धी जी ने जो रास्ता हमें बताया था, शुरू से वही रास्ता हमें पकड़ना होगा। हमने जब हिन्दुस्तान मे स्वतन्त्रता के लिए युद्ध शुरू किया, आन्दोलन शुरू किया, तब वह दो तरीको से किया। एक तो परदेशी सल्तनत को इधर से हटाना। उसे हटाने के लिए गान्धीजी के पास एक अद्भुत शस्त्र था, असहयोग और सत्याग्रह। उन्होने सत्य और अहिंसा द्वारा विदेशी सत्ता को इधर से हटाने के लिए तपस्या शुरू की। उसमे हम लोगो ने भी थोड़ा-बहुत उनका साथ दिया। लेकिन कोई सच्चा साथ दिया, ऐसा किसी को नही मानना चाहिए। यदि कोई समझे कि उसकी कुर्बानी ने आज़ादी मिल

गई है, तो वह बेवकूफी की बात होगी। एक महान व्यक्ति की तपस्या से ही परदेसी सल्तनत यहाँ से हट गई। लेकिन शुरू ही से उन्होने कहा था कि यदि हमें सच्चा स्वराज चाहिए, जिसको वह रामराज्य भी कहते थे, तो वह रामराज्य हमको तब मिलेगा, जब हम खुद ही इस प्रकार का राज बनाऐं। और वैसा राज्य बनाने के लिए उन्होने एक प्रोग्राम भी रखा था। एक तो यह कि मुल्क में अनेक प्रकार के मजहब के लोग हैं, हिन्दू, मुसलमान, पारसी, क्रिश्चियन, सिख आदि। जितने मजहब के लोग हिन्दुस्तान में रहते है, उतने और किसी जगह पर नही होगे। तो हम सब लोगो को मिलजुल कर रहना चाहिए, प्रेम से रहना चाहिए। हमें आपस में लडना नही चाहिए। मजहब को पालिटिक्स (राजनीति) से और राष्ट्रीय क्षेत्र से कोई मतलब नही है। अपना-अपना धर्म पालन करना प्रत्येक की व्यक्तिगत इच्छा की बात है। उसमें राज्य कोई दखल नही दे सकता, न और किसी को दखल देना चाहिए। लेकिन पराई हूकूमत ने इस देश में अपना राज्य सुभीते से चलाने के लिए धर्म को या मजहब को पालिटिक्स में डाल दिया। इससे कौम-कौम के बीच में अन्तर बढ गया और इसका नतीजा यह हुआ कि आखिर हमारे मुल्क के दो हिस्से करने पडे। लेकिन जब गान्धी जी ने आन्दोलन शुरू किया था, तभी से कहा था कि सच्चा स्वराज तो हमको तभी मिलेगा, जब हम दोनो कौमें, बल्कि देश की सब कौमें, आपस में मिल जाएँगी और दिल-से-दिल मिला लेंगी। उनकी यह इच्छा पूरी हुई नही। इससे जिस प्रकार का स्वराज हम चाहते थे और वह चाहते थे, उस प्रकार का स्वराज हमें नहीं मिला।

दूसरा गान्धी जी ने शुरू ही से कहा था कि यदि हिन्दुस्तान को सच्ची स्वतन्त्रता चाहिए, तो हमारे मुल्क में अस्पृश्यता जैसी चीज बाकी नहीं रहनी चाहिए। देश भर में कोई अछूत नही होना चाहिए। ऊँच-नीच का भेद भाव नही होना चाहिए। कौम-कौम के बीच जिस प्रकार के छोटे-मोटे वाडे बने हैं, वह नही रहना चाहिए। हमारे मुल्क में यह जो बहुत बडा ऐब है, इसको निकाल देना चाहिए। परन्तु आज भी वह चीज गई नही है। इसका मतलब यह हुआ कि गुलामी की जड हमारे इतना भीतर चली गई है कि उसके मूल उसमें से निकलते ही नही। तो यदि हमें सच्चा स्वराज चाहिए, तो हमें गान्धीजी की बताई हुई समाज-रचना करनी पडेगी। इसलिए मैं पुकार-पुकार कर सब जगह कह रहा हूँ कि आप गलत रास्ते पर चल रहे हैं। हम सबको मिलकर, जैसे

हम पहले स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए काम कर रहे थे, उसे भी ज्यादा काम करने की जरूरत है। नही तो हमारा काम नही चलेगा। देश में गान्धी जी के स्वप्न का रामराज्य स्थापित नही होगा।

अब मैसूर राज्य आज़ाद है, लेकिन यदि मध्यस्थ सरकार से आप लोगों को पूरा अनाज नही मिलेगा, तो आपको बड़ी मुसीबत का सामना करना होगा। क्योकि आपको जितना खाना चाहिए, उतना इधर पैदा नही होता। इसका नाम स्वराज नही है। वह तो हमे दूसरो पर अवलम्बित रहना पड रहा है। तो हमारे मैसूर स्टेट मे जितनी खुराक चाहिए, उतनी यही पैदा होना चाहिए, जितना कपड़ा हमारे लिए चाहिए, उतना यहा ही पैदा होना चाहिए। गाधी जी ने तो बार-बार यही बात कही और मरते दम तक वह अपना चरखा कातते रहे। उनके मरने से पहले, आखिरी समय पर, मै ही उनसे मिला था। उस वक्त भी वह चरखा चला रहे थे, और मुझ से बातचीत करते जाते थे। अब वह दृश्य मेरे सामने रोज़ खड़ा होता है। तो सारे हिन्दुस्तान मे घूम-घूम कर उन्होने कहा कि अपना कपडा खुद बनाओ। लेकिन हमने यह काम नही किया। आज तो दुनिया की ऐसी हालत हो गई है कि हम बनाना चाहे, तो भी मुश्किल पडेगा। क्योकि अब मिलवाले भी कहते है कि हमारे मुल्क में जितनी रुई चाहिए, उतनी यहाँ पैदा नही होती। बाहर से भी उतनी रुई नही आती। हर मुल्क को आज यही शिकायत है। अब हमारे मुल्क का टुकड़ा हुआ। पाकिस्तान से बहुत रुई आती थी, अब वह नही आती। और वह जिस से ज्यादा पैसा मिल जाएगा, उसी को बेच डालेगा। तो हमें अनाज भी चाहिए और कपडा भी चाहिए। दोनो के लिए हमारे मुल्क को स्वतन्त्र होना चाहिए। उसके लिए जितनी कोशिश हमे करनी चाहिए, उतनी हम न करें, तो इस आज़ादी से हमें क्या लाभ होगा? इस स्वतन्त्रता को हम क्या करेंगे? जिस प्रकार हम आज चल रहे है, इसी तरह से आगे भी चलते रहेगे, तो कुछ दिनो के बाद लोग कहने लगेंगे कि इस से तो अंग्रेज़ो का राज अच्छा था। तब कम-से-कम खाना तो मिलता था।

मै यह बात जो हर जगह पर बार-बार कह रहा हूँ, उसका मतलब यह है कि हमे बहुत सावधान रहना चाहिए। साथ ही हमे घबराने की भी जरूरत नही है। क्योकि हमारे मुल्क मे जगह की भी कमी नहीं है और हमारी धरती के भीतर मे धन भी बहुत गडा है। यदि आज हम समझ जाएँ, तो जितना चाहिए

उतना अनाज हम पैदा कर सकते हैं। उससे ज्यादा भी पैदा कर सकते हैं। लेकिन मैंने यह भी कहा कि हमारे मुल्क मे सात फी सदी शार्टेज (कमी) है। इसे पूरा करना क्या बडी बात है? यदि हमारे पास सात फी सदी अनाज कम है, तो हम आसानी से उसका बन्दोबस्त कर सकते हैं। बाहर से इतना अनाज मगवाने में जो तकलीफ उठानी पडती है, और जो रुपया देना पडता है, वह हम क्यो करें? उससे तो हमारी आर्थिक स्थिति ही बरबाद हो जाती है। आज हम एक सौ तीस (१३०) करोड रुपये का अनाज बाहर से मँगवाते है और साथ ही हमें एक सौ साठ करोड (१६०) रुपया अपनी फौज पर खर्च करना पडता है। इतना रुपया हम कहाँ से लाएँ? हमारे जो नौजवान मज़दूरो में काम करते है, वे उन्हें कहते है कि ज्यादा तनख्वाह मागो और न मिले, तो रेलवे में हडताल कर दो। वे कहते हैं कि आज कारखाने बन्द कराएँगे। एक तरफ खर्चा बढाओ और दूसरी तरफ कारखाने बन्द कर दो। हमारे सरकारी कर्मचारी भी माँगते है कि हमको ज्यादा तनख्वाह दो। कम में हमारा काम नही चलता। उधर बेचारा स्कूल मास्टर तो रोता ही रहता है। उसका तो कोई नाम भी नही लेता। वह कहता है कि झाडू निकालनेवाले भगी को भी हम से ज्यादा तनख्वाह मिलती है। इस तरह से सब जगह ज्यादा तनख्वाह मागते हैं। दूसरी तरफ हमारे पास फालतू पैसा है नही। तो कैसे काम चलेगा?

यह किस प्रकार का स्वराज हमको मिला है, यह आपको समझ लेना है। असली हालत को अगर हम अभी से नही समझ लेंगे, तो स्वराज में हमें कोई मज़ा नही आएगा। इसलिए अभी से हमें तैयारी करनी है। क्योकि अब शान्ति स्थापित हो गई है। अगर शान्ति न हो, तब तो कोई काम हो नही सकता। हमारे हिन्द मे शान्ति तो हुई, लेकिन साथ-साथ हमें जितना रचनात्मक काम करना चाहिए, उतना हम नही कर सके, तो भी हमारा काम नही चलेगा। इसलिए हम सब को मिलकर हर जगह पर समझ-सोच कर काम करना है।

अनाज के लिए हमें पहला यह काम करना है कि जिन लोगो को खाना मिलता है, उन लोगो को अनाज का एक दाना भी बिगाड नही करना चाहिए। जहा तक हो सके, जितना ज़रूरी है, इतना ही पकाना, इतना ही खाना चाहिए। बाकी का अनाज बचाना चाहिए। बहुत लोग अपनी बेपरवाही से अनाज को बरबाद करते हैं। वे अपनी ज़िम्मेवारी नही समझते कि इस मुल्क में अनाज की कमी है। दूसरा एक काम हमें यह भी करना चाहिए कि इस मुल्क के जिस

प्रान्त में, जिस जगह पर जो अनाज ज्यादा पकता है, उसे अपनी जिम्मेवारी और समझ से बचा कर दूसरे प्रान्त में, जहां वह अनाज कम है, देने के लिए गवर्नमेंट को दे देना चाहिए। तीसरा हमारे मुल्क में जिस किसी जगह पर, जहां हम पहुँच सके या कुछ भी खाद्य पैदा कर सकें, वहा उसे ज़रूर पैदा करना चाहिए। फल, साग, सब्ज़ी, तरकारी, यहा तक कि अनाज भी हम अपने कम्पाउण्ड (चारदीवारी) मे पैदा कर सकते हैं, अपने स्टेट में पैदा कर सकते हैं। जहां भी कोई खाली जगह पड़ी हो, वहाँ हमे ये चीजें ज़रूर पैदा करनी चाहिए। तभी हमारा काम चल सकता है।

हमारे मुल्क मे अनाज पैदा करने के लिए और इरिगेशन (सिंचाई) के लिए बहुत-सी बडी-बडी स्कीमें है। वह तो जब होगी, तब होगी। लेकिन पाँच-सात साल में वे पूरी न हुई तो इस पाच-सात साल के बीच यह जो गढा पट जाएगा, उसे हम किसी भी दिन भर नही सकेंगे। इसलिए हमें यह सब करना है। गान्धी जी ने जो कहा था कि इस रास्ते पर चलते-चलते हम आपस मे झगड़ा कम करे, तो उससे पुलिस का और आर्मी (फौज) का खर्च भी कम होगा। साथ ही अगर हम गरीबो और अछूतो से सहानुभूति बता कर उनका साथ दे, और उनके साथ कपडा बुनने का काम भी कर सकें, तो उससे देश का कल्याण ही होगा। इस प्रकार के रचनात्मक काम में न लगकर अगर हम सब लोग सिर्फ गवर्नमेंट से ही उम्मीद करेंगे और गवर्नमेंट की शिकायत करते रहेंगे कि उसने यह नही किया, वह नही किया, तो उससे काम नही चलेगा।

यह सब चीजें हमारे करने की है। इसलिए मानपत्र में आपने जो लिखा है कि पीछे हमने जो कुछ किया, वही बार बार करते रहेंगे, या आपने यह किया, वह किया, इस सब चीज़ को मैं नहीं मानता। क्योकि पीछे जो किया, वह उस समय पर ठीक था, लेकिन आज वह काम की चीज़ नही है। आगे तो करने का बहुत काम बाकी पडा है। और हमारी पिछली कार्रवाई से हमारा काम नहीं चलेगा। हमें आगे ज्यादा कमाई करनी चाहिए। इसलिए आपने जो पिछले कामो के बारे में जिक्र किया कि मैंने यह किया, वह किया, उसका अधिक महत्व नही है। मैं जानता हूँ कि तब मेरे साथ गान्धी जी का आशीर्वाद था और तब उनकी सलाह भी मुझे मिलती थी। उससे मैं जो काम करता था, वह सब काम ठीक हो जाता था। लेकिन उसके बाद जिस प्रकार का

काम वह चाहते थे, वैसा काम नही हुआ। इसका मुझ को दर्द है। इसी की मुझे तकलीफ है। इसलिए मै आप लोगों से बडी इज्जत से यह कहना चाहता हूँ कि आप लोगो को जो स्वराज मिला और रेस्पान्सिबल गवर्नमेंट (उत्तरदायी सरकार) मिली, वह तो बहुत अच्छा हुआ, वह बहुत ठीक हुआ। लेकिन उससे आप लोगो के ऊपर जो जिम्मेवारी आ पडी है अगर उसे आप नही समझेंगे, तो आपको बहुत तकलीफ होगी। और जब हमारे लोग तकलीफ में आ जाएगे, तब वे कहेगे कि वह जो पहला राज्य था, ठीक था। तब आपको बहुत मुश्किल पडेगी और हमको भी मुश्किल का सामना करना पडेगा।

अब हिन्दुस्तान में हम किसी जगह पर इस प्रकार का अलग राज्य नही रहने देना चाहते, जो सब के साथ न चले। अब तो सारे हिन्दुस्तान को एक साथ चलना है। कोई आगे और कोई पीछे नही रह सकता। हम सब को एक साथ चलना है। तो सब राज्यो में, सब रियासतो में, सब स्टेटों में, सब प्रान्तो में करीब-करीब एक ही प्रकार का राजतन्त्र बंध जाए और सबकी प्रगति एक साथ चले। एक-एक जगह पर खडा रहे और दूसरा किसी और जगह पर, तो काम नही चल सकता। तो इस काम में आप सब लोगो का साथ हमें चाहिए।

एक उदार राजतन्त्र की प्रथा मैसूर में चली आ रही है। मैसूर में काम करनेवाले लोग कुशल और अनुभवी है। उन लोगो को सावधान करने की मुझे कोई जरूरत नही। वह सब समझते हैं। लेकिन तो भी, सब समझते हुए भी, देश की जो पहली जरूरियात है, उन्हें अपने सामने रखना चाहिए। क्योकि आज दुनिया अजीब हालत मे पडी हुई है। अगर हम अपनी गदा न सम्भालें तो जिस जगह पर हमें दुनिया में रहना चाहिए, उस जगह पर हम नही पहुँच सकते। हमारे मुल्क के दो टुकडे हो गए, तो भी यह एक बहुत बडा मुल्क है। इसमें बहुत धन पडा है और यहाँ के लोग बहुत समझदार हैं। सब मिलकर और झगडे छोडकर अगर अपना काम करने लगें, तो हमे किसी चीज की कमी न रहे। यो मुझे कोई डर की बात मालूम नही होती। मैं जो लोगो को सावधान करता हूँ, तो उसका यह मतलब नही है कि मेरे दिल में कोई अविश्वास है, या शका है। लेकिन मै लोगो को हमेशा जागृत रखने का काम करता हूँ। क्योकि यदि हमें अपने मुल्क को आगे बढ़ाना है, तो हमें हमेशा जागृत रहना चाहिए। हमारा मुल्क बहुत बडा है और हम पर जो

जिम्मेवारी एकदम आकर पडी है, वह बहुत बडी है। आजतक जो बोझ हमने उठाया है, वह इतना भारी बोझ नही था। आज से पहले तक हम जो काम करते थे, वह दूसरी प्रकार का था। लेकिन आज जो काम हम पर आकर पड़ा है, वह इतना ज़बरदस्त काम है कि उसमें आप सब का साथ और सहयोग न हो तो हमारा काम चल ही नही सकता।

जब हमने इतने लोगों के प्रतिनिधित्व का दावा कर लिया, तब हमारा कर्तव्य हो जाता है, हमारा यह धर्म हो जाता है कि हमारे देश मे जो गरीब लोग है, उनको पहला लाभ मिले, उसके बाद उन लोगो को भाग मिलना चाहिए जो अपनी आवाज़ नही पहुँचा सकते है। जो मज़बूत लोग है, जो धनवान हैं, कुशल है, पढे-लिखे हैं, वह अपना काम किसी-न-किसी तरह निपटा सकते है, वे राजदरबार में पहुंच सकते हैं। लेकिन जो गरीब लोग हैं, मज़दूर लोग है, जो झोपड़ियो मे रहते है, उनकी आवाज़ कही पहुंच नही सकती। इसलिए डेमोक्रेसी (जनतन्त्र) में जो जनता के प्रतिनिधि या नेता लोग है, उनका यह धर्म हो जाता है कि उनका पहला ध्यान देश के गरीबो की तरफ जाए।

अब आपकी म्युनिसिपैलिटियों के बारे में भी राज्य की ओर से धन की काफी मदद होती होगी। लेकिन आपको हमेशा यह समझना चाहिए कि म्युनिसिपैलिटी का यह कर्त्तव्य होता है कि वह अपने को सेल्फ़ सफिशन्सी (आत्म निर्भरता) की ओर ले जाए। राज्य आज तो मदद दे, और कल न दे? अगर राज्य में ऐसी शक्ति पैदा हो जाए, जो कहे कि हमारा धन देहात में से आ जाता है, उसे शहर में क्यो खर्च किया जाए? गाँववाले कहें कि हमारा हिस्सा हम को मिलना चाहिए। यह चीज़ डेमोक्रेसी (जनतन्त्र) मे पैदा होनेवाली है, क्योकि देहात को जागृत करना ही पचायत राज्य का अर्थ है। तो शहरों में रहनेवाले बहुत से लोग अगर अपनी जिम्मेवारी न समझें और हमेशा यही शिकायत करते रहें कि हम पर कर का बोझ ज्यादा है, तो म्युनिसिपैलिटी का कारोबार कभी अच्छा नहीं चलेगा। उसकी तिजोरी हमेशा ठीक रहनी चाहिए और सब शहरियो को समझना चाहिए कि म्युनिसिपैलिटी हमारी है। तो स्वराज में हमेशा यह तैयारी रखनी चाहिए कि अपना बोझा हमें खुद उठाना है, क्योकि अब तो बोझा उठानेवाला, न केवल कोई महाराजा है और न केवल कोई आफ़िसर। हमारे यहां किसी एक व्यक्ति की

पूरी पावर (शक्ति) नही है कि वह जो चाहे, सो कर सके। तो हम सब को यह बोझ मिल कर उठाना है। इसके लिए सब को अपना-अपना जेब थोड़ा-थोड़ा काट कर रखना पडेगा। हाँ, यह सम्हालना हमारा काम है कि आपके पैसे का खर्च ठीक होता रहे। राज्य की एफिशन्सी (कार्यदक्षता) तभी कायम रहेगी, जब हमारे प्रतिनिधि जागृत रहे और हम उनको जागृत रक्खें। यह दोनो बातें साथ-साथ होगी, तभी काम चलेगा। यदि हम निगरानी छोड देंगे, तो उससे काम नही चलेगा। म्युनिसिपैलिटी की एफिशन्सी भी तभी कायम रहेगी।

मैंने जो चन्द बातें आपके सामने रखी है, वे अनुभव की बातें हैं। मैंने म्युनिसिपैलिटी में काफी काम किया है और मै आप से कहना चाहता हूँ कि म्युनिसिपैलिटी का काम करने में मन की और दिल की जितनी शान्ति रहती है, वह दूसरी जगह पर नही रहती। पौलिटिक्स (राजनीति) का क्षेत्र बडा मैला है। यह मैला काम है, गन्दा काम है। म्युनिसिपैलिटी को लोग कजर्वेन्सी (मलनिवारण) का काम कहते हैं। लेकिन म्युनिसिपैलिटी में जितनी गन्दगी है, उसे कही ज्यादा गन्दगी पालिटिक्स (राजनीति) में है। म्युनिसिपैलिटी में तो गटर्स (नालिया) ही साफ करने की है, लेकिन राष्ट्रीय क्षेत्र के भीतर जो गटर्स है, वे बहुत बडे डर की चीज है। उनको साफ करना बहुत ही कठिन काम है। जो अपना दिल साफ न रक्खे, वह राज्य का बोझ नही उठा सकता।

तो मैंने म्युनिसिपैलिटी में बहुत सालो तक काम किया। उन दिनो मुझे रात को बहुत अच्छी नीद आती थी। क्योकि मैं जब शहर की सफाई का या शहर के गरीब लोगो की सेवा का काम करता था, तो मुझे शाम को यह अनुभव होता था कि मैंने दिन भर में कुछ काम किया है। इस से बहुत अच्छी नीद आती थी। इसलिए मैं कहता हूँ कि म्युनिसिपैलिटी का काम बहुत ही अच्छा बल्कि सब से अच्छा काम है। इसलिए म्युनिसिपैलिटी के प्रमुख को भगी कहते हैं। वह भगी की प्रतिमा है। वह झाडू का काम करनेवाला है। इसका मतलब यह है कि शहर को साफ रखना और शहर को सुखी रखना, यह म्युनिसिपैलिटी के अधिकारियो का कर्तव्य है।

आप लोगों ने जो मानपत्र मुझे दिया, इसलिए मै आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। वाकी मुझे मानपत्र की क्या ज़रूरत है? आप लोगो का इतना प्रेम और इतना मान का भाव है, वही मेरे लिए मानपत्र है। तो भी जिस प्रेम से

आपने मेरा स्वागत किया, उसके लिए मैं आपका ऋणी हूँ। आप जो पूजा का पत्थर या (नीव) रखने का काम मुझ से करवाते है, वह बहुत बडा बोझ का काम है। और मैं इस बोझ से कांपता हूँ। यह काम कौन कर सकता है? आज आप इसकी स्थापना कर रहे है, तो हर रोज आपको इस स्थान को और इस मूर्ति को याद रखना पडेगा। और उसे ध्यान में रखते हुए अपना दिल साफ रखकर आपको अपना काम करना होगा। यदि आप यह न करे, या आपके किसी काम से उनके नाम को कोई लाज लगे, तो आज की इस प्रतिष्ठा से कोई फायदा नही होगा। मैं उम्मीद करता हूँ कि जब आपने यह काम उठाया है, तो आपने उसकी पूरी जिम्मेवारी को समझ लिया है। उनका आशीर्वाद आप लोगो को मिले, यही मेरी इच्छा है।

---

(२०)

पञ्जाब युनिवर्सिटी की ओर से डाक्टरेट मिलने पर

अम्बाला,

५ मार्च, १९४९

सज्जनो !

आप लोगो की तरफ से जब मुझे पदवीदान का निमन्त्रण मिला तो मैं सोचता रहा कि मुझे क्या करना चाहिए। क्योकि जिन लोगो को आज पदवी-दान देना है, उनमे बहुत से ऐसे हैं, जिन्होंने पदवी पाने के लिए बडी मेहनत की है, यह उनका हक है। मैं उन्हें मुबारकबाद देता हूं। लेकिन तीन आदमियों को आपने शोभा की पदवी देने के लिए चुना है। उनमें से दो ऐसे है, जिन्होने आपके प्रान्त की मुसीबत की हालत में बहुत सेवा की। इनमें से एक ने पहले भी सेवा की थी। दूसरे, जो आपके कुलपति (चासलर) हैं, उनका भी अधिकार है। उन्हे डिगरी क्यो न मिलें ? (तालियाँ)

लेकिन इस जगह पर यह पदवी प्राप्त करने की कोई योग्यता मुझ में नही है। इसलिए मै दुविधा में था कि मुझे क्या करना चाहिए। दूसरी ओर मुझे ख्याल आया कि मुझे घायल पजाब से निमन्त्रण मिला है और मेरा धर्म है कि मैं उसको स्वीकार करूं। (तालियाँ) इसलिए मैंने स्वीकार कर लिया। आपकी यूनिवर्सिटी का अभी प्रारम्भ ही हुआ है, प्रारम्भ ही में आपने मुझे

डिग्री दी। इसे मै वडी इज्जत समझता हूँ। इसके लिए मै आप सव को धन्यवाद देता हूँ।

हमारे प्रान्त पर जो मुसीवत पडी, उसे हम कैसे भूल सकते है। अभी यह जख्म ताजा है। लेकिन इस समय के वाद भी, जव यह जख्म ठीक हो जाएगा, तव भी हम कभी नही भूलेंगे कि हमारे सूवे की युनिवर्सिटी की शुरू-शुरू मे क्या हालत थी। इस वात को हम कभी भूल नही सकते। न भूलना चाहिए। क्योकि आजकल हम पर वोझ पडा है। हमे सोचना है कि भविष्य के लिए हमें अपने मुल्क, अपनी युनिवर्सिटी और अपने सूवे के लिए क्या करना है।

मैंने वहुत जगहो पर युनिवर्सिटी के विद्यार्थियो को डिग्रियां पाते देखा है। लेकिन जिस हालत में आप आज डिग्री पा रहे है, वैसी हालत मैंने आज तक भी अभी न देखी थी। मै आप के प्रति सिर्फ खाली सहानुभूति प्रदर्शन करने नही आया। मैं आपको यह वताने भी आया हूँ कि अव समय आया है कि हम अपना रास्ता देख लें। हमे क्या करना है और हम क्या कर सकते है, यह भी हमें देखना है। हमारे सामने भविष्य के सम्वन्ध मे कौन-सा चित्र होना चाहिए। पजाव हिन्दुस्तान का दिल है। उसे जख्म लगा है, और जव तक यह ठीक नही होगा, तव तक हिन्दुस्तान वेचैन रहेगा। तव तक वह कोई और काम नही कर सकेगा। इसलिए आपको जल्द ही अपना दिमाग ठीक करना है। अपने सूवे का दिमाग ठीक करना है।

हमको जो जख्म लगा है, वैसा जख्म इतिहास मे कितने ही मुल्को को लगा। लेकिन अव हमे इस चीज को ठीक जगह रख कर सोचना है। यदि हमे आगे चलना है, तो हमे गुस्सा छोड देना चाहिए और सावधान वनना चाहिए। चोट लगे, तो गुस्सा भी आता है। कितनी ही गलतियां हुई, वुराइयां हुई, जिन्हे हमने वरदाश्त किया। हमें अच्छी अच्छी चीजे छोडनी पडी। अपना सारा माल-मत्ता और जायदाद हमे छोडनी पडी। हमारे वहुत-से आदमियो ने दुख उठाया। सूवा छोडा। अपना सभी कुछ छोड़ा। इस पर भी हमे यह भूलना नही चाहिए कि रोने से कोई फायदा नही। अव हमे सोचना है कि हमारा क्या फर्ज है। जितना हिस्सा हमारे हक में आया है, उसे ठीक करना है। और यह आसान काम नही। यह वडा मुश्किल काम है।

लेकिन मै मानता हूँ कि पजावी वड़े वहादुर है। जो दुख आपके सिर पर पड़ा, वह और लोगो पर पडा होता, तो वे उसे उठा न सकते। लेकिन आप

में यह हिम्मत है। और अगर आप ठान कर लें, तो जैसा लाहौर था, पंजाब में कई दूसरे शहर थे, मिंटगुमरी का बागीचा था, और भी कितनी ही जगहें थी, वैसे शहर और वैसी जगहें आप यहाँ भी बना सकते हैं। क्योंकि आप में इतनी हिम्मत है, आप में ऐसी ताकत है। मैं मानता हूँ कि जैसी आफत आप पर पड़ी, दूसरे उसे बरदाश्त न कर सकते और पागल हो जाते। कोई और होता, तो हिन्दुस्तान को उठने ही न देता। जो बहादुरी आपने दिखाई है, उसके लिए मैं आपको सच्चे दिल से मुबारकबाद देता हूँ। आपने कितना दुख उठाया है। लेकिन आपने जिस तरह इतमीनान और हिम्मत से काम करके दिखाया है, हमें कम-से-कम परेशान किया है, उसके लिए भी मैं आपका शुक्रिया करता हूँ। हां, हम कुछ कर नही सके। जब पंजाब से भागे हुए रिफ्यूजी आए, तो मैं उन्हे रिफ्यूजी नही मानता। मैं अब भी उन्हें हिन्दुस्तान के सर पर बैठनेवाले कहता हूँ। लेकिन लोग भागे-भागे आए, जहाँ भी उन्हें जगह मिली चले गए। लेकिन जिस सूबे मे वे इज्जत से नही रह सकते थे, उसे उन्होंने खुद छोड दिया। यह बहादुरो का काम है और आपने यह काम किया। लेकिन हम ऐसी हालत में पड़े है कि जिस तरह आप की मदद करनी चाहिए थी, उतना हम नही कर सके। लेकिन आपने इसे भी बरदाश्त किया, इसलिए आपका धन्यवाद। आपको बहुत बडा जख्म लगा और उसमें से इतना खून बह गया कि अब इसमें हमें नया खून डालना है। हमारा धर्म है कि हम पंजाब को ठीक कर लें और जो कुछ गया है, उसको भूल जाएँ।

अब मैं आपके सामने कुछ और बातें रखना चाहता हूँ। हमारे साथी, हमारे अकाली दल के नेता मास्टर तारासिंह हैं। हमें अफसोस है कि हमें उन्हे जेल में रखना पड़ा। जो चीज़ हम बनाना चाहते हैं, वह उसे तोड़ते हैं। उनके दिमाग में यह बात बैठती नही। मै यहाँ बैठकर अकाली लोगों से प्रार्थना करना चाहता हूँ। मैंने सदा पंजाब का साथ दिया है और अब भी साथ देना चाहता हूँ। इससे क्या फायदा कि तुम्हारी तलवार हमारी गर्दन पर बनी रहे। जब तक हिन्दुस्तान के सिपाही मेरे पास हैं, मुझे हिन्दुस्तान की रक्षा करनी है। मैं पंजाब को ठीक हालत मे देखना चाहता हूँ। मैं अकाली भाइयो से हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूँ कि ठीक रास्ते पर चलो और हमारा साथ दो। मास्टर तारासिंह को भी समझाओ। इस तरह से काम नही चलेगा। जब तक हम

ठीक दिमाग से काम नही करेंगे, तब तक हमारा काम पूरा नही होगा। जितनी चोट मास्टर तारासिंह को अपनी कौम के बारे में लगी है, उतनी ही चोट मुझे भी लगी है। जब हम ने पजाब की तकसीम को कबूल किया था, उस वक्त मैंने देखा था कि पंजाब का हर आदमी बँटवारा चाहता था। बँटवारे में खतरा ज़रूर था। लेकिन हमने फिर भी उसे कबूल कर लिया। जो कष्ट बँटवारे से आया है, उसको हमने आपस में बाँटना है। लेकिन हम ही इस चीज़ को ठीक कर सकते है। जैसा हिन्दुस्तान है, उससे बेहतर हिन्दुस्तान हम बना सकते हैं।

जो रुकावट हमारे रास्ते मे थी, वह अब दूर हो गई है। विदेशी हुकूमत जब तक हमारे सर पर बैठी थी, हम कुछ नही कर सकते थे। यह बँटवारा विदेशी हुकूमत का नतीजा ही था। मैंने सब समझकर उसे मान लिया। हमने देख लिया कि आज की हालत मे यह मुसीबत हमे सर पर लेनी ही है। मेरे साथ एक-एक पजाबी भी शरीक है। अगर आज भी कोई कहे कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मिल जाएँ, तो मैं इससे इन्कार कर दूंगा। अभी सास लेने दो उन लोगो को। जब उनका दिमाग ठीक हो जाएगा, तो हम इस बात को भी मान लेंगे। अभी उन लोगो को वहाँ ही रहने दो। लेकिन मास्टर तारासिंह बार-बार कहते है कि हमे पाकिस्तान खत्म करना है। यह बात ठीक नही। पहले अपना घर तो ठीक कर लो। अगर पाकिस्तान ठीक हो जाए, तो इससे भी हमारा बोझ कम हो जाएगा। जहाँ हमारी इज्जत नही, वहाँ हम क्यो जाएँ। पाकिस्तान कोई इस तरह से जा सकता है? क्या आप समझते है कि पाकिस्तान को हम चाकू और छुरी से ले सकते है? हमने तो अपने मुल्क का हिस्सा करके उन्हे दे दिया, कि जाओ यह तुम्हारा हिस्सा है। अब अगर कुछ करना है, तो अक्ल से करो। क्रोध से यह काम नही करना चाहिए। यह क्रोध का रास्ता गलत है। इस चीज़ पर तो हम दोनो के दस्तखत है। कई लोग कहते है कि दिल्ली जत्था भेजो। आज़ाद हिन्दुस्तान अभी एक साल का बच्चा है। ऐसी क्रोधभरी बातें कर वे खुदकुशी करना चाहते है। क्या एक छोटे-से बच्चे को, जिसमे चलने की ताकत भी नही आई, हम दौडाएँ?

मैंने जो पदवी आपसे ली है, उसे मैंने इसलिए कबूल कर लिया कि आप लोगों को समझाने का मौका मुझे मिले। इस तरह मेरा काम हल्का हो सकता है। मैंने बहुत साल जेल काटी है, वहाँ जितना आराम था, इतना अब भी

मुझे नही है । मैं मास्टर तारासिह के साथ जेल में बैठकर खुश हूंगा, क्योकि वहा मुझे शान्ति मिलेगी । मैने अपने हाथ से मास्टर तारासिह को जेल भेजा है जिससे मुझे बहुत दुख हुआ । इतनी शर्म ज़िन्दगी में मुझे कभी नही आई थी । जो लोग कहते है कि हम जत्था भेजेंगे, वे सोचें कि इससे क्या होगा । मै तो इस बोझ से छुटकारा चाहता हूँ । लेकिन मेरी जगह पर जो कोई भी आएगा, वह भी यही करेगा । अगर वह ऐसा न करेगा, तो मुल्क तवाह हो जाएगा । मैने सघवालो को भी जेल में भर दिया । लोग कहते थे कि हिन्दुस्तान में एक ऐसा आदमी है जो हर शख्स का पक्ष लेता है । कुछ हद तक वे ठीक कहते थे । जैसा भाषण सरदार तारासिह देते है, वैसा मैं भी दे सकता हूँ । उस भाषण से कुछ लोग पागल ज़रूर हो जाएँगे । यह समय लडने का नही है । सिख अलग अलग क्यो बैठे है ? वे एक क्यो नही हो जाते ? मैं उन नौजवानो को, जिन्हें पदवी मिली, समझाना चाहता हूँ कि उनका क्या फर्ज़ है । हम सिख और हिन्दू आपस में क्यो लडें ? क्या इस वात पर कि हमको इतना टुकडा अलग चाहिए ? हमने जो इतनी मुसीबत उठाई, इतने लोग बेइज्जत हो गए, वह सब क्या इसीलिए कि हम आपस में एक दूसरे का गला काटें ? काग्रेस में आ जाओ और जो चाहो ले लो । अलग होकर हिन्दुस्तान को पहले ही नुकसान हुआ है । मैं कहता हूँ, हमारा समय तो पूरा हो गया । मै अव ७४ साल का बूढा हो गया हूँ । पेंशन लेकर मै शान्ति से बैठकर ईश्वर का नाम लेना चाहता हूँ । लेकिन वे मुझे छोडते नही । मै चाहता था कि गान्धी जी के साथ चला जाऊँ । मैंने कोशिश भी की थी । लेकिन लोग कहते हैं कि मुझे तो ज्यादा जीना है । वे कहते है कि जो काम बाकी रह गया है, उसे मुझे पूरा करना है । मेरे पास बहुत समय नही है । मै चाहता हूँ कि आपको मज़बूत हिन्दुस्तान मिल जाए । ऐसा हिन्दोस्तान, जिसमें किसी चीज़ की कमी न हो ।

आप पर जो मुसीवत पडी, जो धन से भरा हुआ देश छोड कर आप इधर आ गए, उसमें आप को वडी तकलीफ उठानी पडी । क्योकि अभी तो आप को ज़मीन पर ही वैठना पडता है । अभी रहने की झोपडी भी आपको नए सिरे से वनानी है । जमीन में अनाज भी पैदा करना है । अभी आप वह पैदा नही कर सकते । आपके कितने ही भाई दूसरे सूबों में बैठे है । अभी हमें करोडो रुपये का माल वाहर से लाना पडता है । आपकी असेम्वली में चार आदमी ज्यादा गए तो उस से क्या होगा । जितने आदमी असेम्वली में जाते है, इस ख्याल से

जाते है कि वे तुम्हारे लिए जाते है। और अगर वे तुम्हारे लिए काम नही करते, तो वे मुल्क के दुश्मन है।

और मै आज भी उन्हे कहता हूँ कि आप झगडा छोड कर अपना काम करे। अगर आप छोटी-सी कौम में इतना झगडा करते है, तो हिन्दुस्तान का बोझ आप उठाएँगे ? अगर आप नौकरी में रियायत चाहेगे, तो उससे काम कैसे बनेगा ?

हमारी फौज मे जितने आफिसर है, उसमें सब से ज्यादा आपकी कौम के है। हमने जानबूझ कर उन्हे रखा है। छोटी-सी कौम के हाथ मे हमने अपनी तलवार दे दी। क्यो ? क्योकि आपकी तलवार पर हमे पूरा भरोसा है। आज के ज़माने में कोई कौम यह दावा नही कर सकती कि वही मार्शल है। वे दिन चले गए, जब इस तरह की बाते सोची जाती थी। पिछली लडाई में मद्रास के लोगो ने, साउथ इण्डिया के लोगो ने, बडी बहादुरी दिखाई। आज हैदराबाद में फौज़ की बागडोर हमने एक बगाली सेनापति को सौंप दी है। हमने मिलिट्री गवर्नर भी बगाली रखा है। तो यह किसी कौम का दावा नही कि तलवार सिर्फ उसी के हाथ में है। आजकल ऐटम बम का ज़माना है। अक्ल का ज़माना है। अब अकेली जिस्मानी ताकत काम नही कर सकती। आज अक्ल वाले के हाथ में ही सब की बागडोर है।

मै यह प्रार्थना करना चाहता हूँ कि हम और सब ख्याल छोड दें, और सोचें कि पंजाब को किस तरह बुलन्द करना चाहिए। उसी से हिन्दुस्तान ठीक होगा। जितना आपको चाहिए, ले लीजिए। मै तो चाहूँगा कि हम सारा राज सिक्खो को दे दें। लेकिन आप ऐसा नही करने देते। आप आगे चलते नही और न हमे चलने देते है। हमारे मुल्क में एक मसल है—"उत्तम खेती और अधम चाकरी।" खेती सब से अच्छी है और नौकरी सब से बुरी। खेती में न कोई खुशामद करनी पडती है न पाप। किसान अपने लिए मेहनत करके धरती से अनाज पैदा करते है, खुद खाते है और दूसरो को खिलाते है। किसान को ही अन्नदाता कहते है, जो पाप नही करता। इसीलिए आप पजाब की ज़मीन में अनाज पैदा करने की तरफ अपना ध्यान दे। तो "उत्तम खेती, मध्यम व्यापार और अधम चाकरी।"

व्यापार के काम में थोड़ा-सा पाप तो करना पड़ता है। लेकिन सब से तुच्छ नौकरी है। उस नौकरी के लिए क्यो लडते हो ? अगर नौकरी चाहते हो तो तलवार क्यो रखते हो ?

नौकरी की इच्छा तो हम विदेशी राज में सीखे। सिक्खो में मैंने देखा है कि वे सारी दुनिया में हर किस्म का कारोबार करते हैं। बिज़िनेस में, जग में, खेती में, रोजगार मे हर जगह यह बहादुर कौम काम कर सकती है। इसको बेचारगी क्यो है ? मै पूछता हूँ सिक्ख क्या ऊपर से गिरे ? वे कहाँ से आ गए ? वे पहले कौन थे ? वे हमसे अलग क्यो होना चाहते है ? हमारी कमजोरी में भी आपने बहादुरी से काम किया। बहुत अच्छा किया। लेकिन अब तलवार का ज़माना नही। अब कही दुनिया में तलवार नही चलती। कही देख लीजिए। तो अपना दिमाग ठिकाने रखो। समझो कि हिन्दुस्तान की सरकार के वज़ीर आपके खिलाफ नही है। अगर हो, तो यह राज कैसे रहेगा ? कोई भी राजनीति के बगैर नही चलेगा।

हमारा पहला काम अपने इखलाक को मजबूत बनाना है। हिन्दुस्तान में जितने मज़हब है, अलग-अलग कौमें है, अलहदा-अलहदा रग है, अलग-अलग कपड़े है, यहा तक कि बाल बनाने के ढग भी अलहदा अलहदा है। इस मुल्क मे सब चीज़ें अलहदा-अलहदा है। उसके लिए राजनीति ज़रूरी है। हमें गान्धी जी के बताए हुए रास्ते पर चलना है। साथ-ही-साथ मुल्क की हिफाज़त के सामान पैदा करना भी आपका फर्ज़ है। दुनिया की हालत देखकर हमें सोच समझ कर काम करना चाहिए। खाली तलवार से या धमकी से काम नही चलेगा। इनसे तो काम बिगड़ेगा।

पजाब में जब पिछली बार मै आया था, उस वक्त हालत बहुत बुरी थी। मैंने सिक्ख लीडरो को जमा किया और उन्हे समझाया कि आप मुत्तहिद हो जाएँ। आजकल झगड़ा करने से काम खराब होगा। हमारे दस लाख आदमी पाकिस्तान से इधर न आ सकेंगे। उधर जो मुसलमान जा रहे है, उन्हे रास्ता न देने से असुविधा होगी। आप रास्ता नही देते। इधर बारिश हो रही है। खाने का ठिकाना नही है। दुनिया कहती है कि क्या हम पागल हो गए है। अंग्रेजो ने तो हमें आज़ाद कर दिया पर हम खुद निभा नही रहे। मुसलमानो को जाने का रास्ता दे दीजिये। नही तो हम बदनाम होगे। मैंने यह सब कहा तो उस वक्त सिक्ख लीडरो ने मान लिया और रास्ता दे दिया। हमारे लोग इधर चले आए और उनके उधर चले गए।

अब हालत यह है कि ज़ख्म से खून आना तो बन्द हो गया है, लेकिन ज़ख्म ठीक नहीं हुआ। तो पहला काम तो यह होना चाहिए कि नया खून न निकले।

फिर आहिस्ता-आहिस्ता ज़ख्म ठीक हो जाएगा। उसके लिए काम करना है। तो मास्टर तारासिंह इस ज़ख्म पर ठोकर लगा रहे हैं। यह गलत बात है। इससे तो ज़ख्म में से फिर से खून बहने लगेगा। ज़ख्म बन्द नही होगा। मैंने बहुत कोशिश की और कहा कि इस तरह न करो।

मैं सब सिक्ख भाइयो से अपील करता हूँ कि आपका भला इसी में है। आप मास्टर तारासिंह को समझाइए कि वह गलत रास्ते पर चलना छोड दें। अगर आप उनके साथ रहेंगे, जत्थे भेजेंगे, तो काम खराब होगा। अमृतसर से, पटियाला से जत्थे आएँगे। आप लोगो को भी तकलीफ होगी, हमें भी।

मास्टर तारासिंह जी को रिहा कराना आपका काम है। वह मेरे हाथ म नही। मैं पजाब हुकूमत से कहूँगा कि अपना घर ठीक करो। आज की हालत मे यदि हुकूमत रखनी है, तो सबको आपस मे झगडा नही करना चाहिए। यह लोकराज है। सब को एक साथ रहना है। हमे एक दिल होकर काम करना चाहिए। पजाब का काम भी हमे एक दिल होकर करना है। असेम्बली के मेंबरो से भी मैं कहूँगा कि उन्हे भूलना नही चाहिए कि हम पर कितना बोझ पड़ा है। तुम आपस मे झगड़कर हमारे मुल्क की तरक्की रोक रहे हो। तुम मे इत्तफाक होना चाहिए, एक दूसरे का मैल धो देना चाहिए, एक ही आवाज़ से काम करना चाहिए और जितनी जल्दी हो सके, पंजाब का नए सिरे से निर्माण करना चाहिए।

शायद आप समझते हैं कि मैं कड़ी बात कहता हूँ। लेकिन आपको समझना चाहिए कि मैं अपने दिल का दर्द आपको सुना रहा हूँ। मेरी बात आप को माननी चाहिए। उसका हौसला बँधाना चाहिए। आज हिन्दुस्तान पर मुसीबत है, यह आपको हर समय याद रखना चाहिए।

आप का भविष्य आप के भूत की तरह शानदार है। आप दुनिया में सब से बडी पदवी हासिल कर सकते है। हमारे मुल्क में गान्धी जी जैसी हस्ती पैदा हुई। दुनिया भर के लोग उनके रास्ते पर चल रहे हैं। और वही रास्ता सही है।

मैंने अगर कोई कडी बात कही है, तो आपकी भलाई के लिए कही है। मेरे इधर आने का खास मकसद ही यही था कि आप लोगों के सामने खास सवालो का नक्शा पेश करूँ। आप लोगो ने मुझे इतनी बडी इज्जत दी, मेरा

प्रेम से स्वागत किया, इसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ और फिर परमात्मा को भी नमस्कार करता हूँ। मैंने जो बातें आपसे कही हैं, उन्हे समझ कर पजाब को आगे बढाने के लिए आप परमात्मा से प्रार्थना करें तो आपको सफलता प्राप्त होगी।

जयहिन्द।

---

(२१)

संयुक्त राजस्थान का उद्घाटन करते हुए

जयपुर
३० मार्च, १९५४

जयपुर नरेश, अन्य माननीय नरेशो, सन्नारियो तथा सद्गृहस्थो !

आज एक महान् ऐतिहासिक प्रसग के समय आप सब यहाँ जमा हुए हैं। सयुक्त राजस्थान के उद्घाटन का मान मुझको दिया गया है, इसके लिए मैं ईश्वर का और आप सब का ऋणी हूँ। मैं जानता हूँ कि यह कितने बड़े महत्त्व का अवसर है और हमारे सिर पर इस समय कितनी बडी जवाबदारी आ पडी है।

कल मैंने आप लोगों को कुछ कष्ट दिया, क्योकि मैं समय पर नही आ सका और उस से आप लोगो को कुछ तकलीफ़ उठानी पडी; उसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।* लेकिन वह जो परिस्थिति पैदा हुई, वह मेरे लिए और आप सबके लिए ईश्वर के स्मरण का प्रश्न था। मेरी दृष्टि से वह इस बात का ईश्वरीय सकेत था कि हम यह जो बडे महत्त्व का कार्य कर रहे हैं, उसे हमे अवश्य पूरा करना है। तभी ईश्वर ने मेरी रक्षा की। ईश्वर को यह भी मजूर

---

*जयपुर जाते हुए सरदार पटेल के हवाई जहाज़ में कुछ खराबी आगई थी और पाइलेट ने बडी होशियारी से उसे नीचे उतार लिया था। सम्पूर्ण देश के कुछ घंटे तब बड़ी चिन्ता में कटे थे।

था कि हमें जिस शुभ अवसर पर यह कार्य करना है, उसमें कोई फर्क न पड़े। ईश्वर का आशीर्वाद हमारे ऊपर है। इसलिए हम अकस्मात बिल्कुल सुरक्षित निकल आए और हम एक तरह से मृत्यु के दर्शन कर वापस लौट आए। वाकई हमको चिन्ता बहुत हुई कि आप लोगो के दिलो में क्या कष्ट होगा और सारे हिन्दुस्तान में भी लोगो के दिलो में परेशानी होगी। क्योकि हम दो-तीन घटे के लिए दुनिया से कट गए थे। लेकिन ईश्वर ने हम पर इतनी कृपा की कि समय पर हमको इधर भेज दिया। तो आज के शुभ अवसर पर सब से पहले हमें ईश्वर को याद करना है कि इस महान् प्रसग पर हमें अपनी जवाबदारी समझने और उसको अदा करने के लिए ईश्वर हमें शक्ति दे।

इस प्रसग पर जयपुर महाराजा साहब को जो राजप्रमुख का मान दिया गया है, उसके लिए मै उनको मुबारकबाद देना चाहता हूँ। आज तक तो यह जयपुर के सेवक थे। क्योकि असल में हमारे हिन्दुस्तान की सस्कृति के अनुसार राजा राज्य का प्रधान तो ज़रूर है, लेकिन उससे भी ज्यादा वह प्रजा का सेवक है। तो आज तक यह जयपुर की प्रजा के सेवक थे, आज से यह सम्पूर्ण राजस्थान की प्रजा के सेवक बनते है। हमारे महाराज प्रमुख (महाराणा उदयपुर) आज हाज़िर नही है क्योकि उनकी शारीरिक दशा हम जानते है। पर उनको हम कभी भूल नही सकते। राणा प्रताप ने राजपूताना को एक बनाने के लिए ज़िन्दगी भर कोशिश की। राजपूताना का एकीकरण करने के लिए जितना कार्य और जितनी कोशिश राणा प्रताप ने की, उतनी और किसी ने नही की। उनका सकल्प परिपूर्ण करने का सौभाग्य आज हम लोगो को प्राप्त हुआ है, इसलिए आज हमारे अभिमान का दिवस है। इसके लिए हम महाराज-प्रमुख साहिब को भी मुबारकबाद देते है। हम उम्मीद करते है कि जो सकल्प महाराणा प्रताप के मुरब्बियो ने किया था, और जिस मतलब से वह किया गया था, उसे हम परिपूर्ण करेंगे और उसके लिए हम योग्यता प्राप्त करेंगे। इसके लिए हम अपने पूर्वजो का आशीर्वाद मांगते है और ईश्वर का भी आशीर्वाद मांगते है।

जिन सब महाराजाओ ने इस काम में साथ दिया और समय को पहचान कर जो त्याग किया, उसके लिए मैं उनको भी धन्यवाद देना चाहता हूँ। मैंने जो यह रियासतो के सम्बन्ध में कुछ कार्य किया है, उसके लिए मेरी तारीफ की जाती है। मगर असल में तो इसके लिए हिन्दुस्तान के राजा-महाराजाओ की
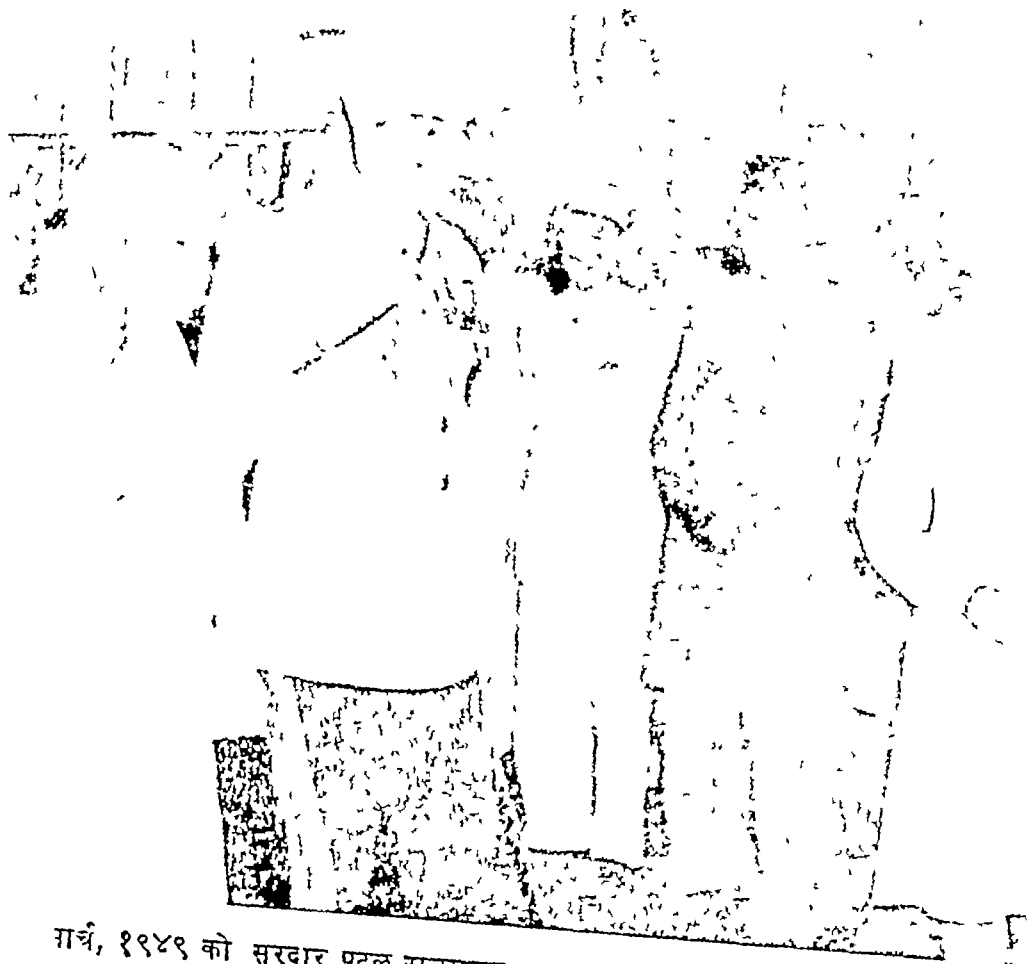
मार्च, १९४९ को सरदार पटेल राजस्थान का उद्घाटन करते हुए। सरदार पटेल के साथ राजस्थान के राजप्रमुख महाराजा जयपुर है और सब से दाहिनी ओर उपराजप्रमुख महाराजा कोटा।

तारीफ की जानी चाहिए। यदि सच्चे दिल से उन लोगो ने साथ न दिया होता, तो आज हिन्दुस्तान का इतिहास जिस तरह बदल रहा है, वह इस तरह बदल नही सका होता। बेसमझ लोग उसकी कदर न करें, तो इसमे किसी का कुछ आता-जाता नही। मै तो उसकी पूरी कदर करता हूँ और सारे हिन्दुस्तान में इस बात की कदर कराने की कोशिश करता हूँ। क्योकि ऐसा करना मैं अपना फर्ज समझता हूँ। दुनिया जिस रास्ते पर चल रही है, उस रास्ते पर हमें नजर रखनी है और सोचना है कि हमें कहा जाना है। दुनिया में हमारी जगह कहा रहनी चाहिए, हमारा पुराना इतिहास क्या है, पुरानी सस्कृति क्या है, भारत का भविष्य क्या होना चाहिए, इन सब चीज़ो के बारे में राजा महाराजाओ के साथ बैठकर मैंने एक दो दफे नही, बल्कि अनेक दफा विचार किया है। हमने समझ लिया कि हिन्दुस्तान के लिए आज जो सब से अच्छा रास्ता है, वही हमे पकडना है, और वही हमने पकडा भी। इसीलिए आज हिन्दुस्तान का गौरव और हिन्दुस्तान की प्रतिष्ठा दुनिया में बढ रही है। और जिस रास्ते पर, जिस तेज़ी से हम चल रहे हैं, उसी रास्ते पर, उसी तेज़ी से हम चलते जाएँगे, तो हमारा भविष्य उज्ज्वल है। उसमें जिन लोगो ने त्याग किया है, उनको उसका पूरा बदला मिल जाएगा। दुनिया में आखिर सब से बडी चीज़ क्या है? धन कोई बडी चीज़ नही है, न सत्ता ही कोई बडी चीज है। दुनिया में सब से बड़ी चीज़ इज्ज़त या कीर्ति है। आखिर महात्मा गान्धी के पास और क्या चीज़ थी? उनके पास न कोई राजगद्दी थी, न उनके पास शमशेर थी, न उनके पास धन था। लेकिन उनके त्याग और उनके चरित्र की जो प्रतिष्ठा थी, वह और किसी के पास नही है। वही हमारे हिन्दुस्तान की सस्कृति है। आज भी हिन्दोस्तान के राजा-महाराजाओ ने अपनी रियासत के लिए, अपने लोगो के लिए त्याग किया है। वे सदा से ऐसा करते आए है और करते रहेगे। तो इस मौके पर मै एक दफा फिर आप लोगो का शुक्रिया अदा करता हूँ और मै उम्मीद करता हूँ कि आप लोग आगे बननेवाले इतिहास की ओर भी तटस्थ नही रहेगे और न इस तरह से रहेंगे, जिससे आपके दिल साफ न हो। मै उम्मीद करता हूँ कि आप लोगो ने जिस तरह से यह त्याग किया है, इसी से आगे तरह इतिहास में भी आप देश का साथ देते रहेंगे।

अब मैं आप लोगों को इस बात का स्मरण कराना चाहता हूँ कि हमारे हिन्दुस्तान मे जो गुलामी आई, वह किस तरह से आई और वह इतनी

सदियो तक घर करके क्यो बैठ गई ? वह सब आज हमें याद करना है और निश्चय कर लेना है कि जिस कारण से गुलामी आई, उस कारण को हमें फिर आगे नही आने देना है । हम गुलाम इसलिए बने थे कि हम आपस में एक दूसरे के साथ लडे, खतरे के समय हम लोगो ने एक दूसरे का साथ नही दिया था । हम छोटे-छोटे टुकडे बनाकर बैठ गए और अपने-अपने सकुचित क्षेत्रो में, अपने स्वार्थों मे पड गए । अपने सकुचित क्षेत्र में भले ही हमने कुछ सेवा भी की हो, लेकिन उससे हमको नुकसान ही हुआ और जब समय आया तो हम एक साथ खडे न रह सके । आज यह पहला मौका है, जब हिन्दुस्तान एकत्र हुआ है । अब वह इतना बडा है, जितना इतिहास में पहले कभी नही था । तो जो एकता आज हुई है, उसको हम मजबूत बनाएँ, जिससे भविष्य में हमारी स्वतन्त्रता को कभी कोई हिला न सके । इस कार्य में आप सब लोग राजपूताना के सब नरेश गण और प्रजाजन साथ दें । आप के राजपूताना का एक-एक पत्थर वीरता के इतिहास से भरा हुआ है, बलिदान के सुनहले कारनामो से भरा हुआ है । आप के राजपुताना की पुरानी कीर्ति आज भी हमारे दिल को अभिमान, हर्ष और उत्साह से भर देती है । आज से उसी राजस्थान को नई दुनिया के योग्य नया इतिहास बनाने का अवसर प्राप्त होता है, यह कितने सौभाग्य की बात है ।

इस अवसर पर हमे समझ लेना चाहिए कि हमारा क्या कर्तव्य और क्या धर्म है ? पहले तो हमने कितनी ही बडी-बडी रियासतो को मिलाया है । जब हम मिलते है, तो हमारे दिल में कोई सकुचित ख्याल नही रहना चाहिए कि हम जयपुर के है, हम उदयपुर के है, हम जोधपुर के है, हम बीकानेर के है, या किसी और छोटी-मोटी जगह के है । ऐसा ख्याल हमारे दिल में बाकी नही रहना चाहिए । हम राजपूताना के है भी, तो सब से पहले हम हिन्दुस्तानी है, उसके बाद हम राजपूताना के है । इस प्रकार के ख्याल से हमें यह कार्य करना है । हाँ, यह ठीक है कि हर जयपुरवासी को जयपुर का गर्व होना चाहिए, उदयपुर के रहनेवाले को अपने दिल में उदयपुर का गर्व रहना चाहिए । वैसे ही सब रियासतो में होना चाहिए । जिस जगह पर हमारा जन्म हुआ, जिस जगह की मिट्टी में से हम पैदा हुए, जिस मिट्टी में से हम अपनी शक्ति बढाते रहे और बढा रहे है, जिस मिट्टी में आखिर हमको मिलना है, उसको हम कैसे भूल सकते है ? लेकिन एक छोटे से कुएँ में जो मेढक रहता है,

उसका दिमाग फैलता नही है, उसकी शक्ति भी वढती नही है। परन्तु महा-सागर में जो मगरमच्छ रहते है, वह जो खेल कर सकते है, वह कुएँ के मेढक नही कर सकते। तो असल मे हम सब हिन्दोस्तान के है और हमारा दिल हिन्दुस्तान से भरना चाहिए। हिन्दुस्तान के लिए हमारी वफादारी चाहिए। जिस वफादारी के लिए आज जयपुर महाराजा ने प्रतिज्ञा ली है, और महाराणा ने प्रतिज्ञा ली है, जिस मुल्क की वफादारी के लिए, जिस सारे राजपूताना की वफादारी के लिए आपने, राजपूताना की सभी प्रजा ने, मिल कर अपना प्रधानमन्त्री चुना है, और जिस प्रधानमन्त्री से भी हम ने प्रतिज्ञा दिलवाई है उसका महत्व हम सब को समझ लेना चाहिए। हिन्दुस्तान की वफ़ादारी का क्या मतलव है ? आज समय की क्या माँग है ? मुल्क की क्या माँग है ? ये सब चीज़ें इस प्रतिज्ञा से जुडी हुई है।

तो यह जो राजप्रमुख ने प्रतिज्ञा ली, हमारे प्रधानमन्त्री ने प्रतिज्ञा ली और हमारे उप-राजप्रमुख ने जो प्रतिज्ञा ली उस सबका महत्व हम सब को समझना चाहिए। क्योकि यह किसी व्यक्ति की प्रतिज्ञा नही है। वह सारे राज-पूताना की तरफ से प्रतिज्ञा है। मै जो इधर यह सयुक्त राजस्थान का उद्-घाटन करने के लिए आया हूँ, अपनी व्यक्तिगत हैसियत से नही आया हूँ, न मेरी यह ताकत है, न मेरी यह लियाकत है। मै आया हूँ हिन्दुस्तान की सरकार की ओर से और हिन्दुस्तान के एक वफादार सेवक की हैसियत से। मै किसी एक गिरोह का सेवक नही हूँ। मै राजा-महाराजाओ का वफादार सेवक हूँ, रियासत की प्रजा का मैं वफादार सेवक हूँ, हिन्दुस्तान की प्रजा का मैं वफ़ादार सेवक हूँ, और इसी हैसियत से यहाँ आया हूँ। इस हैसियत से मैंने इतनी वड़ी ज़िम्मेवारी ली कि महाराजा को प्रतिज्ञा दिलवाई, नही तो मेरी क्या हैसियत कि मै व्यक्तिगत रूप से ऐसी उद्धताई कर सकू ? मै अपनी मर्यादा को समझता हूँ। तो आप जितने भाई-वहन इधर आए है, उन से मै नम्रतापूर्वक प्रार्थना करना चाहता हूँ कि आप लोग इस समय का महत्व समझ ले और साथ ही अपनी जवावदारी भी समझ ले। आज से हम इस चीज़ को भूल जाएँ कि हमारे वीच में कोई पर्दा है, कोई अन्तर है और कोई भेद-भाव है। आज सारा राजपूताना एक है। हम उसे एक दृष्टि से देखेंगे, तभी हम आगे वढ़ सकेंगे।

आज हमने एक वड़ा राजस्थान वनाया है, उसका मतलव क्या है ? राजाओं ने अपनी राज-सत्ता छोड दी, उसका मतलव क्या है ? यह काम हम क्यो करते

हूं ? आपको समझना है कि आज दुनिया जिस तेज़ी से आगे चल रही है, उस तेज़ी से हम आगे न चलें, तो एक तो हम पहले ही पीछे थे, अगर आज भी मन्द गति से चले तो और भी अधिक पिछड जानेवाले हैं। सारे एशिया का हाल देखिए, आज कहाँ क्या चल रहा है ? दुनिया के और मुल्को में क्या कुछ चल रहा है ? हम अपनी छोटी-सी रियासत में या छोटे-से किले में बैठकर बाहर की ओर नज़र न करें, तो हमारी रक्षा नही हो सकती। आज तलवार का ज़माना नही है, ऐटम बम का ज़माना है। आज हमें यह समझ लेना है कि तलवार का अधिकार किसी एक गिरोह का अधिकार नही है। आज आप जानते हैं कि आज मद्रास के लोगो को भी काश्मीर के पहाडो में हिन्दोस्तान के लिए लडाई लडने का मौका मिलता है, और हमारे कमाडर-इन-चीफ साहब इसी रेजीमेंट की तारीफ भी करते है कि वे बडी बहादुरी से काम कर रहे हैं। तो मैं आप राजपूतो से, जिन्होंने हिन्दुस्तान का इतिहास बनाया है, सच्चे दिल से अपील करूँगा कि हमें आज का ज़माना पहचान लेना चाहिए। और ज़माने को पहचान कर उसी रास्ते पर हमें चलना चाहिए। आज के ज़माने में हमें ऊँच-नीच का भेद निकाल देना है, गरीब और अमीर का भेद निकालना है, राय और रक का भेद निकालना है। हम सब ईश्वर के बालक हैं, यह सचाई हमें महसूस करनी है। इस रास्ते पर चलने की सच्चे दिल से कोशिश करना हमारा कर्तव्य है। मैं जानता हूँ कि जब हम सदियों तक एक ही रास्ते पर चलते रहे हैं, तो दूसरे रास्ते पर चलने की बात दिल जल्दी कबूल नही करता है। यह कठिनाई हम सब महसूस करते हैं। लेकिन जो समय को नही पहचाना, उसको पछताना पडता है।

मैं अपने जागीरदार लोगो को भी मोहब्बत से और प्रेम से समझाने की कोशिश करता हूँ और मेरी उम्मीद है कि मैं उन लोगो को भी उसी तरह समझा सकूगा, जिस तरह मैंने राजा-महाराजाओ को समझाया। क्योकि मैं मानता हूँ कि उनका खुद का हित उसी चीज में है। सारा हिन्दुस्तान आज़ाद होने के बाद हमारे लिए पूरा मैदान खुला है और बहुत सी जगहे हमारे पास हैं, जहाँ हम मानपूर्वक अच्छी तरह से काम कर सकते हैं। यह सम्भव बना सकते हैं कि आज तक जो हमारा स्थान रहा है, उससे भी आगे हम जाएँ। लेकिन, अगर हम यही समझ ले कि हमारे पूर्वज, या पूर्वजो के बाप-दादा को जो जगह मिली थी, उसी जगह पर हम भी बैठे रहेगे और उतने ही

सकुचित क्षेत्र मे हम खेलते रहेगे, तो हम गिर जाएँगे। उसमे हमको लाभ नही होगा। उससे हमारी उन्नति नही होगी, हमारी प्रगति नही होगी। तो जो चीज़ आखिर हमको ज़वरदस्ती करनी पडे, लाचारी से करनी पडे, उसे स्वेच्छा से करना और समय देखकर समझपूर्वक करना, उसी मे हमारी इज्जत है, उसी मे हमारी सभ्यता है। तो भारत की सस्कृति और राजपूताना की सस्कृति की आज की यह माग है कि हम समय को पहचान ले और अपने चारो तरफ देखे। आप देखे कि चाइना में क्या हो रहा है? हमारा अपना मुल्क भी वहुत वड़ा है, चीन उस से भी वडा है। हमारी जितनी आवादी है, उससे उसकी आवादी ज्यादा है। वह गुलाम मुल्क भी नही है। हम तो गुलामी में वहुत साल सड़े है, हमारी आज़ादी तो अभी केवल एक-डेढ साल की ही है। स्वतन्त्र भारत तो अभी डेढ साल का वच्चा है। लेकिन उधर चाइना में जो लोग वडे-वड़े जागीरदार थे, और जिन लोगो के पास वहुत धन था, उन्होने समय को नही पहचाना। उसका जो परिणाम हुआ, वह सामने है। आजकल की दुनिया में क्या भला है, क्या बुरा है, उसका भी ख्याल हम न करे। लेकिन हमारा अपना भी तो पुराना इतिहास है, हमारी अपनी भी पुरानी सस्कृति है। हम धर्मपरायण, धर्मप्राण लोग परदेसी सस्कृति मे जवरदस्ती घसीटे जाएँ और मजवूरन् कोई रास्ता हमें लेना पडे, वह हमारे लिए ठीक नही।

राजस्थान के जितने जागीरदार लोग यहाँ आए है और जो वाहर पड़े है, उन सव से इस समय मैं सच्चे हृदय से प्रार्थना करना चाहता हूँ, और आप लोगो के सच्चे सेवक की हैसियत से मै कहना चाहता हूँ कि आप को समय की मांग को समझना चाहिए। आज हमारे मुल्क में जो पिछडे हुए लोग है, उनको हम नही उठाएँगे, तो वे हमारी चाँद पर वह वैठनेवाले है। ऐसा समय नही आने देना चाहिए। हमे उनका हाथ पकडकर उठाना है। जो गरीव लोग आज हमारे सामने झुक जाते है, उनको सिखाना है कि इन्सान को इन्सान के सामने नही झुकना, खुदा के सामने, सिर्फ ईश्वर के सामने झुकना है। हमे उनको अपना भाई, अपना सहोदर वनाना है। तो हमारे मुल्क मे जो ३३ कोटि देवता माने जाते है, वह सव असल मे हमारे देशवासी ही है, उनको हमे देवता वनाना है। है। इस काम के लिए उनमे जो मनुष्यत्व है, उस पर का मैल और उसपर की अज्ञानता को निकाल कर साफ़ कर देना है। यह हम कैसे कर सकते है? जव तक हमारी खुद की अज्ञानता न चली जाए, तव तक हम क्या कर सकते है?

तो मैं आप लोगो से प्रार्थना करना चाहता हूँ कि आप लोग अपनी जगह समझ लें और साथ ही आज के समय को भी पहचान लें।

यहाँ जो लोग काग्रेस में काम करनेवाले हैं, उनसे भी मैं चन्द बातें कहना चाहता हूँ। उसमें किसी को बुरा नही मानना चाहिए, क्योकि मैं खुद काग्रेस का सेवक हूँ और काग्रेस के सिपाही की हैसियत से बहुत साल तक मैंने काम किया है। मैं खुद मानता हूँ कि मैं अभी तक भी एक सिपाही हूँ। लेकिन लोग ज़बरदस्ती मुझ से कहते हैं कि मैं सिपाही नही, सरदार हूँ। लेकिन असल में मैं सेवक हूँ। इसलिए मेरी सरदारी अगर हो भी, तो वह कोई चीज़ नही है। मैं अपने काग्रेस के सिपाहियो से अदब के साथ कहना चाहता हूँ कि आप लोगो को समझना चाहिए कि हमारी इज्जत या हमारी प्रतिष्ठा किस किस चीज़ में है? हम लोग यह दावा करते हैं कि हमारी जगह आगे होनी चाहिए, हमको सत्ता मिलनी चाहिए। हमें सोचना चाहिए कि हमारा हक क्या है? क्योकि हम दावा करते है? तो दावा करने का हमारा अधिकार तो इसलिए बना कि हम महात्मा गान्धी जी के पीछे चलते थे? इसीलिए वह जगह हमें मिली। आज यदि हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हुआ है, तो हमारी कुर्बानी से हुआ है, ऐसा कोई गर्व न करे। हम में से बहुत से लोग ऐसे हैं, जो समझते हैं कि हमने वहुत कुर्बानी की। की होगी, ठीक है। लेकिन जो नई कुर्बानी करनी चाहिए, वह कुर्बानी न करो, तो पिछली की गई कुर्बानी भी व्यर्थ हो जाती है। जेल जाने से कुर्बानी नहीं होती। या हमारी कोई मिलिकियत छिन गई, उससे कुर्बानी नही होती। कुर्बानी होती है, कडुवा घूट पीने से। हम मान अपमान भी सहन कर जाएँ और सच्चे दिल से गरीबो की सेवा करते जाएँ, तो कुर्बानी उसी में है। उसी रास्ते पर चलने से हमारी असली इज्जत होगी। आज किसी-किसी जगह पर मैं देखता हूँ तो मुझे दर्द होता है कि हम में जो नम्रता होनी चाहिए, उसका अभाव है। जब मैं यह देखता हूँ, तब मुझे कष्ट होता है।

काग्रेसमैन का पहला कर्तव्य तो यह है कि वह नम्र बने। सेवक बनने का जिसका दावा है, वह अगर नम्रता छोड दे और उसमें अभिमान का अंश पैदा हो जाए, तो वह सेवा किस तरह करेगा? सत्ता लेने के लिए कोशिश करना हमारा काम नहीं है। सत्ता हम पर ठूसी जाए, तब वह और बात है। सत्ता खीचने के लिए हम अपनी शक्ति लगाएँ और कहे कि हमको मिनिस्टर बनना है, तो यह शर्म की बात है। हमारे लिए यह कहना भी ठीक नही कि

हमारी राजधानी इस जगह पर होनी चाहिए या उस जगह होनी चाहिए। इन छोटी-छोटी चीजो का आग्रह करनेवाले लोग कांग्रेस को नही पहचानते। ऐसी बातें वही कर सकते है, जिन्होने कांग्रेस मे सच्चा काम नही किया है। लेकिन सच्चे कांग्रेसमैन को तो लोग धक्का मार कर आगे बैठाएँगे। क्योंकि वह सच्चा सेवक होगा। तो मैं आप से कहना चाहता हूँ कि मैं कई सालो तक कभी कांग्रेस के प्लेटफार्म पर भी नही गया था। मैं कभी व्याख्यान नही देता था और आज भी मुझे जब कोई व्याख्यान देना पडता है, तो मुझे कँपकँपी छूटती है। क्योंकि मै नही चाहता कि मेरी ज़बान से कोई भी ऐसा शब्द निकल जाए, जिससे किसी को चोट लगे, जिससे किसी को दर्द हो, जिससे किसी को नुकसान पहुँचे। मुह से ऐसा व्यर्थ शब्द निकालना अच्छी बात नही है। यह सेवा का काम नही है। तो मैं यह कहता हूँ कि जो सिपाही है, वह धरती पर चलता है, इसलिए उसको गिरने का कोई डर नही है। मैंने कहा कि सिपाही सदा ज़मीन पर चलता है। लेकिन जो अधिकारी बन गया, अमलदार बन गया, वह ऊपर चढ गया, उसको तो कभी गिरना ही है। यदि वह अपनी मर्यादा न रखे और मर्यादा की जगह न संभाले तो वह गिर जाएगा, और उसको चोट लगेगी।

तो जो अधिकारी बनता है, उसको अधिकारी पद सभालने के लिए रात-दिन जाग्रत रहना चाहिए। यदि आप जाग्रत न रहेगे, तो आप को ज़रूर गिरना है। मैं कांग्रेस के कार्यवाहको से उम्मेद रखूगा कि हम अधिकार के पद की इच्छा न करें, मोह न करे, लालच न करें। जहाँ तक काम करने के लायक और लोग हमें मिल सकें, उन्हे हम आगे करे और उनसे काम ले। यदि खुद हमारे लिए इस जगह पर बैठना आवश्यक हो गया, तो हमारा हाथ साफ होना चाहिए, हमारा दिल साफ होना चाहिए, हमारी आँख साफ होनी चाहिए और हमारी ज़बान साफ होनी चाहिए। इस तरह से आप काम न करें तो आप अधिकार के योग्य नही है। तो आज तक जिनके पास सत्ता थी, उनकी हम टीका भी करते थे और सारा कसूर उन्ही पर डालते थे। आज वह सारा बोझ हम पर आ गया है। अब राजपूताना भर में कही कुछ भी बिगाड होगा, तो उसका सब बोझ हमारे ऊपर पडेगा। उसमे यदि कोई भलाई होगी, तो उसके श्रेय का पहला हिस्सा उन लोगों को मिलना चाहिए, जिन्होने सत्ता छोडी। आज से राजपूताना में यदि कोई बुराई होगी, तो कोई भी उसका दोष राजाओ

को नही दे सकेगा। जितनी बुराई होगी, उसका सारा दोष कांग्रेस पर आएगा। इसलिए मैं आपके हृदय से अपील कर आपको जाग्रत करना चाहता हूँ। यदि सच्चा त्याग करना हो, तो मान-अपमान का त्याग करने और निःस्वार्थ सेवा करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।

आज हीरालाल शास्त्री ने जो प्रतिज्ञा ली है, वह प्रतिज्ञा उनकी व्यक्तिगत प्रतिज्ञा नही है। वह सारी कांग्रेस की प्रतिज्ञा है। मैं उनको मुबारकबाद तो देता हूँ, क्योकि वह आज राजपूताना के प्रथम सेवक बनते है। लेकिन इस जगह पर बैठने से उन पर जो जवाबदारी पडती है, उस जवाबदारी को जब मै सोचता हूँ, तो उनके लिए मेरे दिल में कुछ दया का भाव प्रकट होता है। उन पर कितनी बडी जवाबदारी आगई है। हम सब ईश्वर से प्रार्थना करें कि इस जवाबदारी को पूर्ण करने के लिए ईश्वर इनके कधो में शक्ति दे।

मै आप लोगो से यह भी कहना चाहता हूँ कि हम लोग बहुत दिनो तक लडे। हमें परदेसियो के साथ लडना था, परदेसी ताकत के साथ लडना था। गुलामी काटने का वही एक रास्ता था। पर आज हमें किसी के साथ लड़ना नही है। आज हमें अपनी कमजोरियो के साथ ही लडना है। तभी हम राजपूताना को उठा सकते है, नही तो नही उठा सकते। आज तक जब हम लडते थे, तो हमारी लडाई का एक हिस्सा कानून भग करने का था। उससे हमारे में एक आदत पड गई है कि कानून का मान नही रखना। यह बहुत बुरी आदत है। हमे उसको निकालना है। गान्धी जी ने हमको यह सिखाया था कि जो स्वेच्छा से कानून का आदर करता है, वही कानून का अनादर कर सकता है। तो हमारी यह खासियत होनी चाहिए कि हम सत्ता के मान का और कानून का ख्याल रक्खें। आज कानून को भग करने का समय नही है। आज हमें अपने कानून की प्रतिष्ठा बढानी है। जिन व्यक्तियो ने आज अपने अधिकारो का त्याग किया है, उनकी प्रतिष्ठा किसी न-किसी तरह से बढे, वह कम न हो, वह देखना हमारा कर्तव्य है। तो राजा-महाराजाओ की प्रतिष्ठा हम अवश्य करेंगे। राजाओ के प्रति हमारा ऐसा वर्ताव होना चाहिए कि हमारे प्रति उनकी प्रेम की भावना बनी रहे। हम चाहते है कि राजस्थान की प्रजा पुलिस के डडे के डर से शान्ति न रखे, बल्कि राजधर्म और प्रजाधर्म को समझकर शान्ति रखे, तब हमारा काम चल सकेगा।

हमें राजपूताना की प्रजा को प्रजाधर्म सिखाना है। तो प्रजाधर्म तो यह

है कि प्रजा अपना दरवाज़ा खुला रखे और गरीब अपनी झोपडी को अपना किला समझ ले। उसको भी पुलिस की ज़रूरत नही पडे। इस प्रकार की हवा हम पैदा करें, तब हम राजपूताना को उठा सकते है और तब हम अपना कर्तव्य पूरा कर सकते है। काग्रेस मे काम करने वाले जो लोग ह, जिन्होने आज तक इतनी कुर्बानी की है और काफी कष्ट उठाया है, उनकी परीक्षा का समय अब आया है। उनको तो अब दूसरे रास्ते पर चलना है। जिस तरह हमारे राजाओ ने स्वीकार कर लिया है कि वे स्वेच्छा से दूसरे रास्ते पर चलेगे। उसी तरह जागीरदार लोगो को भी समझाने की कोशिश मै कर रहा हूँ। उन्हे भी अब दूसरे रास्ते पर चलना है। इसी तरह हम सब समझ-बूझकर सच्चे रास्ते चले, तब हमारा काम बन सकता है। आखिर हमने राजपूताना का एकीकरण किया और हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता प्राप्त की, इस सब का मतलब क्या है? आज हमारे मुल्क में हमे स्वेच्छा से काम करने का पहला अवसर मिला है, उसका हमे पूरा उपयोग करना है। ईश्वर की कृपा से गुलामी की इतनी सदियों मे भी इस धरती मे जो ऋद्धि-सिद्धि भरी पडी है, उसमे से कोई चोरी नही कर सका। तो उसको हमे निकालना है। जो धन हिन्दुस्तान के उदर में भरा है, उसको हमे निकालना है और यदि हम सच्चे दिल से काम करेंगे तो हमारे मुल्क मे गरीबी नहीं रहेगी। लेकिन उसके लिए हमे शान्ति चाहिए। उसके लिए हम एक दूसरे से प्रेम करें और अपनी-अपनी मर्यादा को समझें। खाली पुलिस के डडे से शान्ति नही चाहिए। इस तरह शान्ति रह ज़रूर सकती है, लेकिन वह काम की चीज़ नही है। असल चीज़ वह है, जब हमें कम से-कम पुलिस का उपयोग करना पडे।

राजपूताना मे आज नए साल का प्रारम्भ है। यहाँ आज के दिवस साल बदलता है। शक बदलता है। यह नया वर्ष है। तो आज के दिन हमें नए महा-राजस्थान के महत्त्व को पूर्ण रीति से समझ लेना चाहिए। आज अपना हृदय साफ कर ईश्वर से हमे प्रार्थना करनी चाहिए कि वह हमें राजस्थान के लिए योग्य राजस्थानी बनाएँ। राजस्थान को उठाने के लिए, राजपूतानी प्रजा की सेवा के लिए, ईश्वर हमको शक्ति और बुद्धि दे। आज इस शुभ दिन हमें ईश्वर का आशीर्वाद मांगना है। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप सब मेरे साथ राजस्थान की सेवा की इस प्रतिज्ञा मे, इस प्रार्थना में, शरीक होगे।

जयहिन्द !

(२२)

राष्ट्रीय मज़दूर-संघ का दूसरा अधिवेशन

इन्दौर
७ मई, १९४९

स्वागत समिति के प्रमुख साहब, सम्मेलन के सदर साहब, प्रतिनिधि भाइयो और बहनो !

हमारे राष्ट्रीय मजदूर सघ का यह दूसरा अधिवेशन है। पहला जल्सा बम्बई में हुआ था, जिसमें राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने सघ का उद्‌घाटन किया था और आज के जलसे के सदर साहब उस जलसे के भी सदर थे। इन्दौर मज़दूरों के सगठन के लिए एक मशहूर जगह है, क्योकि इन्दौर के मजदूरो ने अहमदाबाद के मज़दूर सगठन से अपना पार्ट ले लिया है।

मै आप लोगो को सक्षेप में यह बताना चाहता हूँ कि हमारे मुल्क में मज़दूरों का सगठन किस तरह से शुरू हुआ, जिससे मज़दूरो की आज तक की हालत का और मज़दूरो के आन्दोलन का आपको ख्याल हो जाएगा। हिन्दुस्तान में सब से पहले सन् १९२० में ट्रेड यूनियन काग्रेस की नीव डाली गई। उसके पहले ट्रेड यूनियन हिन्दुस्तान में नही थे। लेकिन उससे भी पहले अहमदाबाद में मज़दूर सगठन का जन्म हुआ था। वह मज़दूर सगठन महात्मा गाधी जी की सलाह से, उनके आशीर्वाद से और उनकी रहनुमाई से चलता था। उन्ही की गाइडेन्स से वह शुरू हुआ था। यह जान कर आपको आश्चर्य होगा कि उसकी

शुरुआत एक अमीर मिल मालिक के कुटुम्व की लडकी ने की थी। अहमदावाद का एक वडा जवरदस्त इण्डस्ट्रियलिस्ट, जिसका नाम सेठ अम्वालाल साराभाई है और जिसकी वडी-वडी मिलें अहमदावाद में है, उनकी वहन अनुसुइया वाई ने इस मजदूर-सघ को वनाया और महात्मा गान्धी जी ने उनको आशीर्वाद दिया। अनुसुइया वहन को अहमदावाद के मज़दूर देवी कहकर वुलाते थे। उसके साथ उनके साथी शकरलाल वैंकर थे और हम लोग भी उस सगठन में शरीक हुए और साथ देने लगे। हमारे लिए वह नई वात थी, क्योकि अहमदावाद के किसी कारखाने में मज़दूरो का कोई सगठन नही था। कारखानो के मालिक जैसे मिल-मालिक कहे जाते है, वैसे ही उन्हे मजदूरो के मालिक भी कहा जा सकता था, ऐसी हालत थी। उस समय इस सगठन का जन्म हुआ। ट्रेड यूनियन काग्रेस के जन्म से भी करीव तीन साल पहले इस मज़दूर सघ की नीव डाली गई।

उधर महात्मा जी ने चम्पारन मे सव से पिछडे हुए लोगो में काम करना शुरू किया। किसान लोग और जिनके पास जमीन नही है, ऐसे मज़दूर लोग तथा गली के कारखानो में काम करनेवाले मज़दूरो में गान्धी जी ने काम शुरू किया। इन गली के कारखानों में जिस प्रकार की मेहनत ली जाती थी, वह तो जिन लोगो ने उसका अनुभव किया हो, उन्हे ही मालूम हो सकता है। मिलों में काम करनेवाले मज़दूरो से भी ज्यादा कष्ट मे ये लोग थे। जव गान्धी जी ने वहाँ आन्दोलन शुरू किया तो अहमदावाद की मिलो में आन्दोलन शुरू हो गया। गुजरात के केरा जिले में किसानो से ज्यादा लगान लिया जाता था, उसके लिए वहां भी आन्दोलन शुरू हुआ। हमारे राष्ट्र का सच्चा जीवन वहाँ से शुरू हुआ। तो तीन चीज़े साथ-साथ चली। आज आप वहाँ विहार में जाएँ, तो आपको मालूम होगा कि गली का एक भी कारखाना वहाँ नही रहा। सव उठ गए। गान्धी जी के आन्दोलन का यह परिणाम निकला कि किसान, जो गुलाम थे, फँसे हुए थे और जिनसे जवरदस्ती काम लिया जाता था, काम छोडकर चले गए। मज़दूरो से वहुत थोडे वेतन पर और जवरदस्ती काम लिया जाता था, वह सव खत्म हो गया। इसी प्रकार आप देखे केरा जिले में भी आज जो किसान है, वह एक तरह से अपना राज चला रहे है, उनको लगान के लिए कोई आन्दोलन करने की ज़रूरत अव नही पडती। तीसरा अहमदावाद का यह मजदूर-सगठन है। अहमदावाद में जो मज़दूर सगठन है, वैसा सगठन दुनिया भर में और किसी जगह नही है, यह मेरा दावा है। मैंने उसमें वहुत काम किया है। ट्रेड

यूनियन में जितनी गलतिया है, उन गलतियो को गान्धीजी ने पूरी पूरी तरह समझ लिया था। तो जितना उसमें मैल है, वह निकाल कर हिन्दुस्तान की सस्कृति के अनुकूल उसी के ढग से, एक मजदूर आन्दोलन वहा शुरू किया।

सब से पहली बार मजदूरो ने अहमदाबाद में ही अपनी तनख्वाह बढाने के लिए हडताल शुरू की। तब तक हिन्दोस्तान मे किसी कारखाने में कभी हडताल नही हुई थी। यदि मजदूर हडताल करते, तो पुलिस डडा लेकर आती और मिल मालिक जो हुक्म देता, उसी के हुक्म के मुताबिक काम करती। जब यह आन्दोलन शुरू हुआ और मजदूरो ने जो हडताल शुरू की, तो मजदूरो में नई जागृति आ गई, क्योकि उनकी पीठ पर मिल मालिक की अपनी बहन थी जो स्वय एक करोडपति की लडकी थी। साथ में एक बडे राष्ट्रीय सेवक शकरलाल बैंकर थे, जो काग्रेस के एक लीडर थे। हम लोग भी उसमें थे और हम सब के साथ सबको सलाह देने वाले गान्धी जी थे। खैर, जब थोडे दिन हडताल चली और एक हफ्ता भी पूरा नही बीतने पाया था कि मजदूर लोग कुछ कमजोर पडने लगे। उन दिनो मिल-मालिक के हाथ में काफी सत्ता थी, और वे मजदूरो में परस्पर काफी फूट-फाट करा सकते थे। उधर मजदूरो का कोई पक्का सगठन तक नही था। सो वह डरने लगे और घबरा गए। जब गान्धी जी को मालूम पडा कि मजदूर लोग अपनी प्रतिज्ञा तोड कर कारखाने में जाने वाले है, तब गान्धी जी ने साबरमती नदी के मैदान में मजदूरो की एक सभा बुलाई और वहा उनसे कहा कि हिन्दुस्तान में यह मजदूरो का पहला सगठन है। यदि आप लोग अपनी प्रतिज्ञा से हट जाएँगे और गिर जाएँगे तो हिन्दुस्तान में मजदूरो के हितो को बहुत नुकसान पहुँचेगा। इसलिए आपको अपने मार्ग से हटना नही चाहिए। जो हडताल की प्रतिज्ञा आपने ली है, उसे आप पूर्ण करें। लेकिन इस पर भी मजदूर इसके लिए तैयार नही थे। वे बहुत कमजोर पडे। तब उसी समय गान्धी जी ने प्रतिज्ञा की कि जब तक आप लोगो के बीच में और मिल मालिको के बीच में मानपूर्वक समझौता न हो जाए, तब तक आपको काम पर वापस नही जाना चाहिए और आप में से कोई जाएँगे, तो मुझे अनशन करके, फाका करके, मरना पडेगा। हिन्दुस्तान में मजदूरो के हितो के लिए गान्धी जी की वह पहली प्रतिज्ञा थी। गान्धी जी ने वहाँ फाका करना शुरू किया। जब इस फाके को ५, ६ दिन बीत गए तो हम सब को बहुत चिन्ता हुई। रात दिन हम लोग परेशान रहने लगे। मजदूर भी

परेशान थे और कई मालिक भी परेशान थे। आखिर एक हफ्ते की मेहनत के वाद एक वड़ा सिद्धान्त का आविष्कार हुआ, जिससे मिल-मालिक और मज़दूरो के बीच में समझौता हो गया। यह समझौता इस तरह से हुआ कि मालिक और मज़दूरो के बीच मे कोई झगडा हो तो उस का फैसला हडताल से नही, मार पीट से नही, ज़बरदस्ती से नही, वल्कि पचायत से होना चाहिए। मज़दूर और मालिक मिलकर एक सरपच रख दें और उनका जो फैसला हो, वह मान लिया जाय। अव, हिन्दुस्तान की मज़दूर जनता में वह पहला फैसला था, जिसने सारे मज़दूरो में एक नई जान डाल दी। मिल मालिको ने आखिर यह चीज कवूल की।

उसके वाद १५, २० सालो तक गान्धी जी ही मज़दूरो की तरफ से पच रहे। मिल-मालिको और मज़दूरो के वीच जितने झगडे होते रहे, उनका फैसला मज़दूरो की तरफ से गान्धी जी और मिल-मालिको की तरफ से मिल-मालिक मण्डल का प्रमुख मिलकर करते रहे। उसके वाद किसी और निष्पक्ष पुरुष को रख दिया गया। लेकिन उसका नतीजा यह हुआ कि अहमदावाद में कम से कम हडतालें हुई और अहमदावाद का उद्योग सव से ज्यादा आगे वढने लगा। इसी वीच मे, शुरू ही से अहमदावाद के मिल मजदूरो का एक प्रकार का यह सौभाग्य था कि उनको गुलज़ारीलाल नन्दा मिल गया। नन्दा पजाव से एम० ए० की डिग्री लेकर सव काम छोड अहमदावाद आकर वैठ गया, और उसने अपना जीवन मज़दूरो के काम के लिए अर्पण कर दिया। उसके वाद खंडू भाई आया। कुछ और लोग भी वहा से मिले, और मज़दूरो का सगठन पक्का वन गया। लेकिन आज तक भी अहमदावाद मे कभी मज़दूरो पर गोली चलाई गई हो, ऐसी वात सुनने में नही आई। हमारी पुलिस को हमारे मज़दूर पर गोली चलानी पडे, उससे ज्यादा शरम की वात कोई नही हो सकती। तो इस प्रकार अहमदावाद मे जो एक मज़दूर सगठन वना, मैं चाहता हूँ वैसा सच्चा ट्रेड यूनियन हिन्दुस्तान भर में चले।

अहमदावाद के मज़दूर-सगठन की स्थापना के तीन साल के वाद एक ट्रेड यूनियन काग्रेस हुई। लाला लाजपतराय उसके प्रधान हुए। यह एक आल इण्डिया जल्सा था। अव एक स्थाई आल इण्डिया ट्रेड यूनियन काग्रेस वना दी गई। आगे चलकर पण्डित जवाहरलाल इस आल इण्डिया ट्रेड यूनियन काग्रेस के प्रधान वने। उसके वाद वावू सुभाष चन्द्र वोस प्रधान वने और

उसके बाद हमारे आज के सदर भी उसके प्रधान बने। लेकिन अहमदाबाद का ट्रेड यूनियन, जो एक सच्चा ट्रेड यूनियन था, जो मजदूरो का अपना सगठन था, वह उससे अलग ही रहा। क्यो अलग रहा ? क्योकि हम लोगो ने सोचा कि भारत में पाश्चात्य ढग पर जो ट्रेड यूनियन बन रहा है, उस पर तो परदेशी ढग के ट्रेड यूनियनो का ज्यादा असर रहेगा। हम यही समझे कि हमें उससे अलग रहना ही अच्छा है, क्योकि उनका मन्तव्य है कि अपना ध्येय प्राप्त करने के लिए वे चाहे कोई मीन्स (उपाय) उपयोग करें, चाहे कोई हथियार उपयोग में लाएँ , वह उपाय स्वच्छ हो, ऐसी उनको परवाह नही। उनका मानना यह भी है कि ज्यादातर तो अस्वच्छ हथियार से ही जल्दी काम होता है। नतीजा यह हुआ है कि हर रोज ट्रेड यूनियन और मिल मालिको में झगड़ा होता रहता है और हड़ताल करने की कोशिश जारी रहती है । आज की हालत तो ऐसी हो गई है कि पुलिस को गोली चलाने पर मजबूर किया जाता है। यह सब गान्धी जी ने पहले से देख लिया था। उन्होंने सलाह दी कि इस ट्रेड यूनियन में जाने का कोई फायदा नही। वहाँ तब जाना चाहिए जब हमारी मेजोरिटी (बहुमत) वहा हो, हमारे बहुमत से अच्छा काम चल सकता हो, और उन लोगो को हम कुछ कन्ट्रोल (नियन्त्रण) में रख सकें। वैसी हालत हो, तब हमें वहा जाना चाहिए, नही तो नही।

तो हम अहमदाबाद में, गुजरात में और जगहो पर भी अपनी रीति से काम कर रहे थे। हमने यह देखा कि हमारे मुल्क में मजदूरों में काम करने-वाले समझदार लोग बहुत कम है। तब हमने निश्चय किया कि अच्छे कार्यकर्ता (वर्कर्स) तैयार करने चाहिए। हमने देखा कि अहमदाबाद के सगठन के रूप से तब तक ढग से काम करने वाले मेहनती लोग हमें न मिलें, हमारा काम नही चलता। इसलिए, हमने एक हिन्दुस्तान मजदूर सघ तैयार किया। यह एक अलग सस्था थी, उसमें केवल कार्यकर्ताओं को शिक्षण दिया जाता था और बताया जाता था कि मजदूरी में किस तरह से काम हो सकता है, जिससे मजदूरो को फायदा हो, और मुल्क को भी फायदा हो। उस ढग से हमने काम शुरू किया। उसमें मैं खुद भी था, डा० राजेन्द्रप्रसाद थे, शकरराव देव थे, जय-रामदास थे, और काग्रेस के बाकी कितने ही मित्र भी थे। गुलजारीलाल नन्दा और खडूभाई भी थे। हम लोगो ने अहमदाबाद में कितने ही वर्कर्स को तैयार किया और उन्हे बाहर प्रान्तो मे भेजा जाने लगा। ये लोग अपने अपने ढग से

काम करने लगे। यदि इन्दौर में से भी कोई भाई आए होगे और वहां शिक्षा ली होगी, तो उन्हे भी उस का अनुभव होगा। इन्दौर में जो संगठन चलाता है, उसने अपनी शिक्षा वहा ही से पाई है। उसका तो जन्म ही से पूरा सम्बन्ध अहमदावाद के सगठन से है। अब सारे हिन्दुस्तान की सत्ता हमारे हाथ मे आई है। आप लोगो को मालूम ही है कि सन् १९४२ में हमने एक आखिरी लडाई ब्रिटिश सल्तनत के साथ हिन्दुस्तान की आज़ादी के लिए लडी। इस लडाई के सिलसिले में जब हम लोग जेल में गए, जब गान्धी जी को जेल मे डाले जाने पर अहमदावाद के मज़दूरो ने जो काम करके दिखाया, उतना काम हिन्दुस्तान भर मे कम लोगो ने दिखाया था। कोई अण्डर ग्राउण्ड चले गए, कोई हवा में चले गए, कोई और जगह पर चले गए, लेकिन अहमदावाद के इन मज़दूरो ने जो काम किया, वैसा काम और लोगो ने किया होता, तो हमारा काम तीन महीनो में खत्म हो जाता और इसमे तीन साल न लगाने पड़ते। आज कई लोग कहते है कि वह मज़दूर सगठन ही कैसा है, जो हड़ताल के खिलाफ है ? सचमुच आज हम लोग हड़ताल के खिलाफ है। लेकिन जब हड़ताले करने का मौका था, तब इन लोगो ने तीन महीने तक हडताल की थी। जब गवर्नमेण्ट के साथ लडना था, तब वे सब लोग भाग गए थे और हमने हडताल की थी। आज जब मुल्क में हड़ताल की ज़रूरत नही है, तब वे हड़ताल हडताल चिल्लाते है। इस तरह से हम लोग काम नही करते। तो मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि जैसा शिक्षण, राष्ट्रीय शिक्षण, और जैसा सही सगठन अहमदाबाद में मिलता है, और जगह नही मिलता।

आज हमारे पास देश की पूरी सत्ता आई है, कांग्रेस की गवर्नमेण्ट बन गई है और परदेशी सल्तनत देश से चली गई है, तो हालत ही बदल गई है। यह देश के राजा-महाराजा, जिनके पास सत्ता थी, उन्होने भी जनता से कह दिया कि अब तुम शासन चलाओ, तो इन कारखाने के मालिको के साथ लड़ने की बात ही क्या रह गई है। आज हमारे मज़दूरो के मिलमालिको से कोई शिकायत हो तो उन्हे हमारे पास आना चाहिए। जो कुछ उन्हे लेना है, वह हम से लेना है, कारखानो के मालिको से भला क्या लेना है। क्योकि सत्ता तो अब हमारे पास है। पुलिस हमारी है, सारी फौज हमारी है, सारा खज़ाना हमारा है। कौन सी चीज अब मिल मालिको के पास है कि जिसके लिए आप कहते है कि हम उनसे लड़ेगे और हडताल करेंगे। हा, अब भी जो हड़ताल कराते

हैं, उसके पीछे एक चीज है कि वे लोग काग्रेस को वोट में तो हरा नहीं सकते, इसलिए काग्रेस को हटाने का एक ही तरीका उन्हे समझ आता है कि मुल्क में गडबड कराओ, अशान्ति पैदा करो, और रेल की पटरी उखाड दो। इस प्रकार की हडताल कराओ कि राज-शासन चले ही नही। हय कम्यूनिस्टो का काम है। तव हमने सोच लिया कि इन कम्यूनिस्टो के साथ ट्रेड यूनियन में वैठना मुल्क के लिए वहुत वडी खतरनाक चीज है। इसलिए हमने अलग रहने का फैसला किया।

तव हमारे सोशलिस्ट भाई भी हमारे साथ थे। जव मै जेल से छूट कर आया, तव मैंने सोशलिस्ट भाइयो से भी कहा कि अव अँग्रेजो के साथ हमें लडना नही है, वह लोग चले ही जानेवाले हैं, और आप खाली भ्रम में पडे हैं। वे लोग मुझ से कहने लगे कि आप लोग उनकी यह वात कैसे मानते हैं ? यह वात हमारे मानने में तो आती नही कि वे जाने वाले है, आप लोग धोखे में पडे हैं। मैंने वहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन उनका दिल नही मानता था। आखिर मौका आने पर इन लोगो को कबूल करना पडा कि आप ठीक कहते थे। अँग्रेज़ लोग तो अव सचमुच चले। मैंने कहा कि यह तो चले, लेकिन हमारा मुल्क न चला जाए। वह सभालने की वात हैं, क्योकि यदि अव हम गिरेंगे तो अपनी कमजोरी से ही गिरेंगे, किसी और की ताकत से हम कभी गिरने वाले नही हैं। मैंने उनको समझाया था कि आप हमारे साथ मिल कर काम करो। चन्द दिनो के लिए वे हमारे साथ आए भी, रहे भी और हमारे सगठन मे शरीक भी हुए। तव हम सवने मिल कर दिल्ली मे एक फैसला किया कि ट्रेड यूनियन के अगले वार्षिक अधिवेशन में जाकर हमें उन लोगो को निकालना है जो हमारी राय के अनुसार ठीक काम नही कर रहे। हमारे पास मैजोरिटी है, वहुमत है। सो हम वहा गए। पर इसी जल्से में हमारे सोशलिस्ट भाई हम से अलग हो गए और कहने लगे कि हम न तो आपके साथ चलेंगे, न उन के साथ रहेंगे। नतीजा यह हुआ कि हमारा काम नही हुआ। इसलिए हम चले आए। हमने अपना एक अलग सगठन वना लिया, जिसका यह दूसरा जल्सा है। पहला जल्सा बम्बई में हुआ था। उस सगठन का नाम इण्डियन नैशनल ट्रेड यूनियन काग्रेस (आई० एन० टी० यू० सी०) है और यह जो सगठन हमने वनाया है, यह राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन काग्रेस है।

आज हिन्दोस्तान में जो ट्रेड यूनियन काग्रेस है, वह थोडा वोगस है,

दार पटेल, अपने दिल्ली के निवासस्थान के उद्यान में

थोडा खोखा है। उसमें जान नही। उसमे खाली तूफान करने की जान है, माग करने की जान है। आज तक तो ट्रेड यूनियन काग्रेस के ही प्रतिनिधि वाहर जाते थे, जो वहा हमारी वदनामी करते थे और कहते थे कि ये तो कैपिटलिस्टो के पिट्ठू है, पूजीवादी के पिट्ठू है। हम लोग सव सुनते रहते थे और वरदाश्त करते रहते थे। जिस जवान से वे वोलते है, उस जवान से हम नही वोलते। हम तो अपने काम से मतलव रखते थे। आज हमारा अपना सगठन है और उसमें १२ लाख आदमी है। आज ८०० से ऊपर हमारे ट्रेड यूनियन की शाखाएँ होगी, और इतनी सस्थाओ का सगठन वन जाने से हमारे १२ लाख मेम्वर हो गए है। उनके कुल मेम्वर ६, ७ लाख होगे। उसमें भी कितने वोगस है, वह मै नही जानता। क्योकि उनका मेम्वरशिप, वहुत कम सच्चा मेम्वरशिप है। हम मजदूरो से मैला नही कराना चाहते और न उन्हे गलत रास्ते पर ले जाना चाहते है। उससे मजदूर लोग गिर जाने वाले है। उसको साफ करना चाहिए और साफ वात कहनी चाहिए। मजदूर कभी झूठ न वोले। वे क्यो झूठ वोले ?

मेरी नजर से और गान्धी जी की नजर से भी अगर ताकत वाला कोई आदमी है तो वह मजदूर है, क्योकि वह अपने हाथ से काम करता है। उसमें इतनी शक्ति है कि वह सूखी रोटी भी हजम कर जाता है। दूसरे को दवा खानी पडती है, अच्छी चीजे खाकर भी खाना हजम नही होता। तो उनमें जो ताकत है, वह यदि सगठित की जाए, तो कोई ताकत उसके सामने नही ठहर सकती। लेकिन मजदूरो के पास यह सच्चा सगठन न हो तो मजदूर भी गिर जाएँ। और मजदूर के सगठन मे यदि सत्य न रहा और असत्य का प्रवेश हुआ या उन्हे अपने सगठन की ताकत का गर्व हो गया, तो इससे भी वे गिर जाएँगे। तो गान्धी ने पहले ही से वताया था कि ट्रेड यूनियन काग्रेस मे तव जाना, जव ट्रेड यूनियन काग्रेस साफ हो। और वह साफ न हो, तो अपनी अलग ट्रेड यूनियन काग्रेस वनाओ। आज वही अलग वनी है। परदेश मे अव उनका प्रतिनिधि नही जा सकता, हमारा प्रतिनिधि ही जाएगा।

अगर आज आपको इन्साफ चाहिए, तो उसके लिए न हडताल करने की जरूरत है और न भिक्षा मागने की। अपने हक से आपकी लेवर का एक प्रतिनिधि हिन्दुस्तान की सरकार मे वैठा है और उसके पास पूरी ताकत है। जो जो कुछ आपको चाहिए, अगर वह ठीक हुआ तो आपको जरूर मिल जाएगा।

लेकिन अगर आप की माग ठीक न होगी, तो आपका वह प्रतिनिधि आप लोगों से कहेगा कि यह गलत रास्ता है, इस पर चलने से काम नही होगा। हमें गलत माग कभी नहीं करनी चाहिए।

अब मैं आपसे एक बात और कहना चाहता हूँ। आप में से बहुत से देहात में से इन्दौर आए होगे। देहात में आपका घर होगा, आपके रिश्तेदार होगे। आपके आसपास के देहातो में क्या हालत है, उस पर नजर करो तो आपको मालूम पडेगा कि वहा जितनी गरीबी है, ईश्वर की कृपा से उतनी गरीबी इधर नहीं है। क्योकि हम काम करते है और रोज़ शाम तक काम करने से कुछ न-कुछ दाम हमको मिल ही जाता है। कभी कम मिलता है, कभी ठीक भी मिल जाता है। लेकिन वे लोग, जो बेकार बैठे है, उनका गुजारा कैसे चल सकता है। साल भर में केवल तीन चार महीना जब खेती का मौसम आता है, तभी उन्हें मजदूरी मिलती है। बाकी बेकार बैठे रहते है। न कोई रोज़गार है, न कोई काम है। वे कैसे अपना पेट भरें? तो हमसे बहुत गरीब हज़ारो, लाखों लोग हिन्दुस्तान में पडे है। हमें पेट भर खाना और अपने बच्चो को भी खिलाना है, लेकिन वह हमारे जो करोडों लोग भूखे पडे है, उनके ऊपर भी हमें नज़र रखनी है। नज़र रखने का माइना यह नहीं कि अपनी जेब से निकाल कर कुछ उनको दो। यह बात नही है। मैं किसी को भिक्षावृत्ति नही सिखाता। उस का तो एक ही उपाय है कि हमारे मुल्क में ज्यादा धन पैदा करो। तभी हम कुछ कर सकते है। हमारा मुल्क आज एक ऐसे बदन के समान है, जिसमें से सारा खून निकल गया हो, जैसा पाण्डु रोग का रोगी होता है या दिक का बीमार होता है। क्योंकि हमारे राष्ट्रीय बदन में से सारा खून निकल गया है। इतने साल की गुलामी, उसके बाद यह जो ६ साल की लडाई चली, विश्व युद्ध हुआ, उसमें जो चूस हुई, उससे सारा खून निकल गया। अब हमें राज तो मिला, लेकिन इसमें जान हमें नए सिरे से भरनी है। अब आहिस्ता आहिस्ता धन की बूंद-बूंद डाल कर हम इस में जान भर सकते हैं, दूसरी तरह से नही। कई लोग कहते है कि काग्रेस का राज आया तो क्या हुआ? हमको तो कुछ भी नही मिला। यदि किसी ने यह उम्मीद रक्खी होगी कि अग्रेज इधर छोड जाएगा, उसमें से हम बांट करेंगे तो उस जैसा कोई बेवकूफ नही है। वह तो जो कुछ ले जा सकता था, अपने साथ ले गया। हमारा मुल्क आज खाली पडा है। मुल्क मे हमें सभी कुछ नए सिरे से पैदा करना है। तो वह सब कैसे पैदा

करोगे ? हम लोग सब एक साथ मिलकर पैदा न करे, तो कैसे काम चलेगा ? तो हमारा फर्ज तो यह है कि आज हम अपने मुल्क की हालत देखे और यह समझें कि इस हालत में हमारा धर्म क्या है।

मजदूरो को न्याय चाहिए, तो उस न्याय के लिए लडने की उन्हे आज जरूरत नही रह गई। क्योकि आज मजदूरो का राज है। लेकिन कुछ लोग कहते है कि नही, यह तो पूजीवादी का राज है। मजदूरो मे जाकर वे इस तरह की वाते करते हैं। मै चाहता हूं कि वे हमारे सामने आकर बैठें और बताएँ कि हमने किस तरह पूंजीवाद का साथ दिया ? हमने कौन-सी बात ऐसी की, जिस से मुल्क को नुकसान हुआ ? हमारे मुल्क में इतने पूजीपति है ही नही। बहुत कम लोग यहां पूजीपति है। उन सब की पूजी अगर हम एक दफे बांट लें, तो देश भर के लोगो के हिस्से एक एक आना यानी चार चार पैसे ही आएगे। ये चार चार पैसे खाकर फिर क्या करोगे ? फिर किसके साथ लडेगे ? हमारे देश मे करोडों लोग भूखे पडे है। यहाँ चन्द पूजीवालो ने कुछ धन पैदा किया। कुछ बुराई से भी किया, यह कौन नही मानता। जिस तरह के काम उन्हें नही करने चाहिए, वैसे काम भी उन्होने किए। लेकिन देश को सम्पन्न बनाने के लिए हमे भी तो कुछ करना चाहिए। हम वह काम क्यो नही करते ? लेकिन यह समझना चाहिए कि आज हमारी ताकत नही है। हिन्दुस्तान की सरकार के पास इतना सामान होता और इतने साधन होते, कि सारे कारखाने हम चला सकते, तो हमको क्या दिक्कत थी। लेकिन हम जानते हैं कि हम बारह महीना भी कारखाना नही चला सकेंगे और उसमे हमें नुकसान होगा। इस तरह से हमें काम नही करना है। तो हमें अक्लमन्दी से काम करना चाहिए।

मै आप लोगो को यह राय दूगा कि आप को हड़ताल करने की बात छोड़ देनी चाहिए। जैसे हमारे इन्दौर के मजदूरो के प्रतिनिधि ने आपको सुनाया कि हम कभी हडताल नही करते, और न हडताल करने की हमें कभी जरूरत पडती है। मै आप लोगो को इस पर मुबारकबाद देना चाहता हूं। साथ ही मै आप से कहना चाहता हूं कि इसी रास्ते पर चलने से आपका कल्याण है, दूसरे रास्ते से नही। आज अगर बम्बई मे या कलकत्ता में, या कानपुर में या अन्य बडे-बड़े शहरो में हडतालें की जाएँगी, जलूस निकाले जाएगे और पुलिस पर जबरदस्ती बोझ डाल कर उसे गोली चलाने पर मजबूर किया जाएगा, तो क्या यह अच्छा होगा ? अब जमाना बदल गया। जब अंग्रेजो की पुलिस गोली

चलाया करती थी, तब तो आप कह सकते थे कि वह बुरा काम करती है। लेकिन आज जो राज करनेवाले लोग हैं, वे तो आपके अपने प्रतिनिधि है। यदि आपको वे नापसन्द हो, तो उन्हे बदल दो। लेकिन जनता आपके साथ नही है, फिर भी आप जनता की लोकप्रिय सरकार का विरोध कर रहे है। अगर वे काम छोड दें, तो आप तो दो दिन भी काम नही कर सकेंगे। फिर हिन्दुस्तान का क्या हाल होगा? यही वर्मा में हुआ, यही चीन में हुआ और यही मलाया में हो रहा है। इस प्रकार का हाल आपको अपने देश का करना है? क्या हमने स्वराज्य इसीलिए लिया है? क्या इसमें मजदूरो का कल्याण होगा? तो मज़दूरो को यह समझ लेना चाहिए कि हमेशा मिल-मालिको के पीछे पडने से उन का काम नही होगा। जिस हद तक पीछे पडने की ज़रूरत थी, हम उनके पीछे पड चुके है, जब और जरूरत होगी तो और भी हम करेंगे। लेकिन हमें अपना साँचा स्वच्छ रखना है और देश की मशीनो से जितना अधिक से अधिक काम निकल सके, निकालना है।

ईमानदारी के साथ अपना काम पूरा कर शाम के समय आप को अपने घर वापस जाना है, शराबखाने के रास्ते नही जाना है। जो कुछ आपने पैदा किया है, वह शराब की दुकान पर दे देना, इसी तरह है, जैसे आप ने कुछ भी न कमाया हो। तब आपको पैसा मिला न मिला, बराबर है। बल्कि वह तो उससे भी बुरा है, क्योंकि शराब पीकर जब वह घर जाएगा तो अपनी औरत और अपने बच्चो को बेहाल करेगा, तग करेगा, मार-पीट करेगा। उससे क्या फायदा? वह सब हमारी हिन्दुस्तान की सस्कृति से खिलाफ है। तो हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हमारे नेशनल ट्रेड यूनियन के जो मेम्बर है, वे और मजदूरो से अलग मालूम पडें, उनका रग ढग अलग हो, हमें इस प्रकार की सस्था बनानी है। और वहा मज़दूर बस्ती में अपने बच्चो के खेल कूद के लिए, मजदूर-परिवारो के दवा-दारू के लिए, बच्चो के शिक्षण के लिए, अच्छा, प्रबन्ध हो, वह सब करना हमारा काम है। मैं आपको मुबारकबाद देना चाहता हूँ कि आपके १७,००० मेम्बर है। इधर कुल ३० या ३२ हजार मजदूर है, उनमें से १७,००० आपके मेम्बर है, यह ठीक है, बहुत अच्छा है। दो दो रुपया देकर आप स्वागत समिति के मेम्बर बने और अपने हाथ की मेहनत से यह सारा इन्तज़ाम किया। यह स्वावलम्बन और स्वराज्य का एक शिक्षण है। जो काम करता है, हाथ-पैर चलाता है और कुछ नई बात मेहनत करके दिखाता है, वह स्वराज का

यह रथ आगे चलाता है। वह बाकी और सबको पीछे छोड जाता है। तो आप लोगो ने इस सगठन मे इतना करके दिखाया, इसलिए तो मै आपको मुबारकबाद देना चाहता हूँ। साथ ही मै यह भी कहना चाहता हूँ कि आपने १७,००० मेम्बर तो बना लिए, लेकिन इन्दौर भर मे एक भी मजदूर आपके सगठन से बाहर नही रहना चाहिए। कोई क्यो बाहर रहे ? आप १७ हजार मेम्बरों का यह कर्तव्य है कि और लोगो को भी आप अपने पास ले आएँ और उन पर जो बुरा असर पड रहा है, उसको हटाएँ। आपको यह समझाना चाहिए कि भोले भाले लोग, गलत बातो मे फँस जाते हैं। इन्दौर के मजदूरो के बारे मे तो मै नही जानता, लेकिन यहा के कई लोग गान्धी जी के खून से पहले, ऐसे आन्दोलन में फँस गए, जिससे इन्दौर और ग्वालियर कुछ बदनाम हुए। आर० एस० एस० वाले जो लोग कुछ इस तरह से गलत रास्ते पर पड गए कि जिससे मुल्क को बहुत नुकसान हुआ। मजदूरो को ऐसी चीजो में नही फँसना चाहिए और जब कभी उनको कोई भी राय लेनी हो, तो अपने सगठन के मुख्य आदमी के पास जाना चाहिए। कोई बडा मामला हो तो अपने राष्ट्रीय इण्डियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस से राय लेनी चाहिए।

यह आपका सद्भाग्य है कि आपको खडूभाई, गुलजारीलाल आदि लोगो की मदद मिली है। हमारे शास्त्री जी भी ट्रेड यूनियन का अनुभव करके आए हे। उन्होंने काफी अनुभव किया। हमारी असेम्बली के भी वह मेम्बर है। बाहर के मुल्को मे भी वह देखकर आए है कि बाहर की क्या हालत है। इस तरह मार-पीट करने से और फिसाद करने से, खून खराबी के अलावा और चीज नही निकलती। हमारे हिन्दुस्तान की नीति तो गान्धी जी के रास्ते पर चलने की है। हम सारी दुनिया मे शान्ति चाहते है। तो दुनिया की शान्ति, मजदूर की शान्ति से होती है और मजदूर वर्ग ही दुनिया मे शान्ति करा सकते है। मजदूरो को सही शिक्षण मिलना चाहिए।

कारखाने मे काम करने के बाद आप स्वतन्त्र है। तब आप ईश्वर का भजन करो और अपने बच्चो को तालीम दो। जितने लोग अभी तक अपने से बाहर है, उनको समझाओ और शान्ति का वातावरण पैदा करो। कारखाने मे जब काम करो, तो जितना ज्यादा पैदा हो सके, उतना ज्यादा पैदा करने की कोशिश करो। तब हमारा काम बनेगा। आपसे जो कुछ कहने को था, वह सब मैंने कह दिया। हमारे मुल्क मे करोडो बेकार आदमी पड़े है, जिसके पास

काम नहीं है, मजदूरी नही है, जमीन नही है। उनको भी हमें रास्ते पर लाना है। उनको भी कुछ-न-कुछ गृह-उद्योग सिखाना है। उसके लिए भी हमारे सगठन को कुछ ठोस काम करना है। लेकिन जब आपका सगठन पूरा हो जाए, और आपकी ताकत बढ जाए, तभी हम उस ओर जा सकते हैं। वे लोग आज बेकार पडे है और दुखी हैं। उनके दुख में भी हमें हिस्सा लेना चाहिए, जिससे हमारा मुल्क मजबूत बने और हम सबका कल्याण हो। मै उम्मीद करता हूँ कि मैंने जो बातें आप से कही उनपर आप विचार करेंगे और अमल करेंगे। (तालिया)

---

(२३)

अभिनन्दन समारोह में

दिल्ली,
३१ अक्तूबर, १९४९

प्यारे भाइयो और वहनो,

जिस प्रेम से आप लोगो ने मेरा स्वागत किया, उससे मेरा दिल भर आया है। मेरे साथियो ने जिन शब्दो में भाव प्रकट किए, उससे अव इस मौके पर मेरी ज़वान पर और भी वोझ पड गया है और क्या कहना, क्या न कहना, यह समझ मे नही आता। वैसे तो मेरे प्यारे भाई राजेन्द्र वावू ने आप लोगो से कहा कि मैं कम वोलनेवाला आदमी हूँ। क्यो? मैं क्यो कम वोलता हूँ? एक सूत्र है, जो मैंने सीख लिया है · "मौन मूर्खस्य भूपणम्"*। (हँसी) ज़्यादे वोलना अच्छा नही। वह विद्वानो का काम है। लेकिन जो हम वोले, उसी के ऊपर हम चल न सकें, तो हमारा वोलना नुकसानकारी है। इसलिए भी मैं कम वोलता हूँ। लेकिन जव मौका आता है, तो मेरी ज़वान खुलती है। जव समय नही है, तव मैं वोल नही सकता। अव आप लोगो ने जो प्रार्थना मेरे लिए की, जो आशीर्वाद मुझ दिया, उससे मुझे थोडा उत्साह होता है कि और भी आगे कुछ जीवन वढाना, कुछ सेवा करना ठीक है। वाकी यह साल मेरे लिए काफी कठिन वीता है। खाली शारीरिक कठिनाइयो की तो मैं परवाह नही करता,

---

* मौन मूर्ख का भूपण है।

क्योकि कौन नही जानता है कि शरीर तो मिट्टी का बना हुआ है, वह मिट्टी में ही चला जाएगा। जब उसका समय आएगा, तो उसका कोई उपाय करने वाला भी नही होगा। लेकिन मुल्क के लिए यह साल बहुत कठिन गुज़रा है। मुझे रात-दिन उसी का दर्द रहता है। सामने की ओर देखता हूँ तो अभी आगे जो साल आनेवाला है, वह उससे भी कठिन दिखाई देता है। यह तलवार की धार पर चलने के समान होगा। थोडा-सा भी आगे-पीछे चले, तो हम मुल्क को खड्ड में डाल देंगे। मेरे जैसे आदमी के लिए तो कुछ बाकी नही रहा है। दुनिया में और खास तौर से हिन्दुस्तान-जैसे मुल्क में ७४ वर्ष की आयु बहुत होती है। जैसी आप लोगो की आज मेरे लिए हृदय की भावना है, ऐसी भावना देखकर जाने से बेहतर तो कोई और जाना अच्छा नही हो सकता।

तो मैं ईश्वर से रात-दिन प्रार्थना करूँगा कि जो भाव आप के दिलो मे भरे है, प्रेम का और जो शुभाशीष आप मुझे दे रहे है, उसके लिए मै जबतक जिन्दा रहूँ, दिन-पर-दिन अधिक लायक होता रहूँ। लेकिन हमारा नेता, हिन्दुस्तान का नेता, तो आज परदेस में है*। मेरा काम तो मर्यादित है कि उनके हाथ-पैर मजबूत करना, जब तक मुझ से हो सके। अब वह अपनी शक्ति से बाहर हमारी इज्जत बढा रहा है। और दुनिया मे हमारी जो इज्जत बढी है, वह सब से ज्यादा तो गान्धी जी ने बढाई है। उनके जीवन से बढी, उनकी मृत्यु से और ज्यादा बढी। दूसरा हमारा आज का नेता जिस स्नेह से और जिस भाव से बाहर अपना काम कर रहा है, उससे भी हमारी इज्जत बढी है। लेकिन आखिर यदि हमें अपने मुल्क की सच्ची इज्जत बढानी है और उसकी रक्षा करनी है, तो हमें अपना घर सब से पहले सभालना पडेगा। जिसका घर ठीक नही है, उसकी बाहर कितनी भी इज्जत हो, वह ज्यादा दिन नही चलेगा। तो दुनिया को हमसे जो उम्मीद है, वह उम्मीद पूरी करना हमारा काम है। हमारे कितने ही साथी, जो काग्रेस से बाहर निकल गए, आज हमारी आलोचना करते है। कई तो यहां तक कहते है कि अग्रेज का राज्य भी आज के राज्य से अच्छा था। वे वहां तक पहुँच गए, यह बदकिस्मती की बात है। क्योकि जब दिल मे इस तरह का भाव आता है, तब यह सिद्ध होता है कि हम गुलामी

---

* प्रधान मन्त्री जवाहरलाल उन दिनो सयुक्त राष्ट्र अमेरिका में प्रेजीडेंट ट्रूमैन के निमन्त्रण पर गए हुए थे।

ज्यादा पसन्द करते है। लेकिन हमे याद रखना चाहिए कि सदियो की गुलामी, जो हमारे छाती पर बैठ गई थी, उसका बोझ इतना भारी था कि जब इस बोझ को किसी तरह से हमने उठाकर फेंक दिया, तो हम इतना थक गए कि अपने साँस पर काबू रखने की शक्ति भी हमारे पास नही रही। अभी भी वह पूरी तरह नही आई है। करीब-करीब मुर्दा मे जान डाली गई है। चलने लायक तो हम अभी तक हुए ही नही है। अभी हमे चलना सीखना है। उसके पहले ही हम दौडने की कोशिश करेगे, तो हमारे पैर टूट जाएँगे।

कोई यह समझे कि मुल्क मे जो भुखमरी का दुख है, वह हमे अज्ञात है, तो सारी जिन्दगी भर हमने काम क्या किया है? हम इतने अज्ञानी होते, तब तो हम ऐसे ही नालायक होते, जैसे चर्चिल साहब ने एक दफा कहा था कि "आपने 'मैन आफ स्ट्राज़' (तिनके के आदमियों) के हाथ मे भारत को सुपुर्द कर दिया है।" लेकिन अब वह खुद भी महसूस करता है कि यह "मैन आफ स्ट्राज़' नही है, इनमे कुछ तत्व है। लेकिन एक चीज़ आप को नही भूलनी चाहिए कि दुनिया मे हर जगह पर आज दुख है। और जो चीज़ हमे चाहिए, वह है आर्थिक स्वतन्त्रता। वह हमारे पास नही है। यह केवल हमारे हाथ की बात नही है। दुनिया के जो बन्धन हमारे सामने, हमारे बीच मे खडे हुए है, उसमे से निकलना तो बडा विकट काम है। एक डीवैल्युएशन (मुद्रा का अव-मूल्यन) हुआ, उससे कितनी-कितनी मुश्किलात पैदा हुई? बेचारा देहात मे काम करनेवाला किसान या फैक्टरी मे काम करनेवाला मजदूर और अन्य सामान्य लोगो को क्या मालूम पडता है कि ये कठिनाइयाँ क्या है? लेकिन जो लोग इन कठिनाइयो से घबराते है, वे कुछ काम नही कर सकते। कितनी भी कठिनाइयाँ सामने हो, लेकिन इन्सान मे ताकत दी गई है कि वह उन कठिनाइयो का मुकाबला करे। यह मर्दो का काम है, कायरो का काम नही है। तो हमें घबराना नही चाहिए। लेकिन आज कोई कहे कि हमने पार्लिया-मेंट तो बनाई और आज़ादी पा ली। लेकिन इस पार्लियामेट मे कोई गवर्नमेंट का सामना करनेवाले नही है। ठीक है, लेकिन यह पार्लियामेंट तो बच्चा है। हम पार्लियामेंट में केवल परदेशियो की नकल करना नही चाहते है। हमे हिन्दुस्तान के ढग के अनुसार पार्लियामेट बनानी है। गान्धी जी ने पार्लियामेंट के बारे मे बहुत कुछ लिखा है, मै उसका जिक्र यहाँ नही करना चाहता हूँ। लेकिन मै यह कहना चाहता हूँ कि कम-से-कम जब तक हिन्दुस्तान मज़बूत

न हो, उनके नसो में रुधिर बहने न लगे, तब तक हमें आपस में एक दूसरे के सामने मोर्चा बाँधने से कोई फायदा नही होता।

आप लोगो को यह समझना चाहिए कि यदि हमें आर्थिक स्वतन्त्रता चाहिए, तो उसके लिए हमें काफी कुर्बानी करनी पडेगी। जो कुर्बानी हमने आजादी पाने में की, उससे दूसरी प्रकार की यह कुरबानी होगी और उसमें काम भी दूसरे प्रकार से करना पडेगा। तो उससे आज खेत में काम करनेवाले किसान, फैक्टरी में काम करने वाले मज़दूर, सामान्य वर्ग, जिसको मध्यम वर्ग कहा जाता है, जिसके ऊपर आज सबसे अधिक बोझ पडा है, और धनिक लोग सबको कष्ट है। मान लीजिए, धनियो को अधिक कष्ट नही होगा। तब भी हमारे मुल्क में धनिक तो बहुत कम है। हमारा मुल्क गरीब है, और उसमें बहुत थोडे धनिक लोग है। रात दिन उन्ही के पीछे लगे रहने से हमको कोई फायदा नही होगा। फायदा हो तो, मैं भी आप के साथ शरीक हो जाऊँगा। लेकिन मै जानता हूँ कि हमारे मुल्क में अनुभववाले लोग बहुत कम है। और सब लोग कहते है कि हमें आर्थिक स्वतन्त्रता चाहिए। साथ ही सब तो नही, पर कई लोग कहते है कि सारा उद्योग सरकार को अपने हाथ में ले लेना चाहिए। सारी इण्डस्ट्री नेशनलाइज्ड (व्यवसायो की राष्ट्रीयकरण) करनी चाहिए। वह केवल सिद्धान्त की बात है। वह सब अनुभव की बात नही है। क्योकि हमने अभी तक कुछ काम तो किया नही है, और जो कहते है उन्होने तो कुछ भी नही किया। वह कब करेंगे, वह तो ईश्वर के हाथ की बात है। मै नही जानता। करें तो हमारे लिए बहुत अच्छा हो जाएगा। लेकिन अगर आज मै नेशनलाइज़ेशन (राष्ट्रीयकरण) के बोझ को उठा सकू तो एक मिनट की भी देरी नही करूँगा। लेकिन हमारे मुल्क मे जितनी शक्ति है, उस सबका हमें उपयोग करना है और मुल्क में आर्थिक स्वतन्त्रता पैदा करने में सबका साथ लेना है। उसमें सब को थोडी-थोडी कुर्बानी करनी पडेगी। हमें सब का साथ लेना पडेगा। उसमें आप लोग समझपूर्वक जितना ज्यादा साथ देंगे, उतना ही अच्छा है।

ये जो पजाब से या सिन्ध से भागे-भागे शरणार्थी आए हैं, उन लोगो का दुख क्या मजदूरो और किसानो के दुख से कम है? किन से कम है उनका दुख? उन्होने सब चीज गवाई है, लेकिन हिम्मत नही गँवाई। जब तक हिम्मत है, तब तक सब ठीक है। जब हिम्मत गुम जाती है, तब मनुष्य नीति से भ्रष्ट

हो जाता है और नीति गई तो आत्मा भी गया। सब खत्म हो गया। तो उनके दुख के सामने देखें, तो ऐसा दुख तो बहुत कम आदमियो को पड़ा है। हमको भी नही पडा है। सो हम उस दुख का अन्दाज़ नही लगा सकते है।

बहुत से लोग मेरे पास आते रहे। आज तो मैं ऐसी हालत मे हूँ कि बहुत लोगो को मिल नही सकता। कई लोग गुस्से भी होते है कि मै उनको मिल नही सकता। ठीक बात है, क्योकि मै तो चाहता हूँ कि मै सब को मिलू और एक समय था कि मै सुबह ५ बजे एक हज़ार आदमियो से मिलता था। बाग में घूमते-घूमते। लेकिन आज मै वैसा नही कर सकता। तो जो कुछ मर्यादित शक्ति है, उसका उपयोग करना हो तो वह आप लोगो की दया से ही हो सकता है। किसी को उसमे भला बुरा नही मान लेना चाहिए कि मै मिल नही सकता हूँ, क्योकि मै पर्दे में रहनेवाला आदमी नही हूँ। तो आप समझ लीजिए कि मुझमें जो मर्यादित शक्ति बाकी है, वह सब आपके ही उपयोग की है। तो इस बारे मे आप मुझे क्षमा कर दीजिए। लेकिन मै कभी कभी बोलता हूँ। जो थोड़ा सा मै कह रहा हूँ, उसको बराबर समझ लेना चाहिए। मै कहता हूं कि सब साथ मिलकर कुर्बानी करके, आगे नही चले, तो हमारा काम होनेवाला नही है।। थोड़े आदमियो की शक्ति से काम लेने की बात कहो, थोडे से आदमियो को सजा करने से काम होने वाला हो, तो हम लोग क्यो बैठे रहे? क्योकि हिन्दुस्तान में करोड़ो आदमी पड़े है। करोडो मर गए, पिछले दो तीन साल में। कुछ ही साल हुए, तीस लाख आदमी मर गए बगाल के फ़ैमीन (अकाल) में। तो चन्द आदमियो का फैसला करने में हमको कोई दिक्कत नही होगी, यदि उससे काम बन जाए तो। क्योकि ज्यादा से ज्यादा लोगो का भला करने के लिए ही तो हम बैठे है।

यह ठीक है कि हम अपनी बुद्धि से काम करते है। लोग कहे कि बुद्धि तो हम देते है और काम तुम करो तो काम बन नही सकेगा। हम भी काम को फेंक नही देते, उस पर सोचते भी है। जो काम हमने आज तक किया है, इतना न किया होता, तो दुनिया मे भारत की जो इज्जत बढ रही है, वह न बढी होती। जिस तरह से बडी-बडी कठिनाइयो में भी हमने मुल्क को इन दो सालो मे सभाला है, उससे हमारी कुछ इज्जत बढी है। लेकिन, यदि हमारे पेट मे भूख लगी हो, तो बाहर कितना भी अच्छा कपडा पहन के और बाल ठीक करके हम घूमें, तो उससे कोई काम नही होता। वह पेट का खड्डा

तो हमे भरना ही है। लेकिन भरने के लिए इन्तज़ाम करना हो, तो आज हमे अपना सब सामान पैदा करना है। बूद बूद एकत्र करने से सरोवर भर जाता है। समुद्र भी इसी तरह भरता है। तो हमे भी सबका साथ चाहिए। थोडी-थोडी कुर्बानी न करने से तो आज हमारा सब काम रुक गया है। मुल्क मे धन पैदा नही होता है। अग्रेज़ो के जमाने मे धन पैदा होता था। वह अपना हिस्सा ले जाता था, लेकिन ज्यादा धन पैदा होता था। आज धन पैदा होना बन्द हो गया है। कई कहते है कि धनिको ने हमारे साथ धोखा किया है, इसीसे ऐसा हुआ है। कुछ हद तक यह बात सही हो सकती है। लेकिन दो हाथ के बिना ताली नही बजती है और भले बुरे जैसे भी है, वह हमारे धनिक है। उनका साथ नही लेंगे, तो हमारे खुद में इतनी ताकत होनी चाहिए कि उनको छोड कर भी हम अपना काम कर सकें। उनको गाली देने से क्या फायदा है? मै मुल्क की किसी एक शक्ति की इस तरह से आलोचना करने वाला आदमी नही हूँ। मै यह बात चाहता भी नही हूँ। लेकिन जितनी शक्ति देश में है, उस सब को जमा करके हमें काम करना है। अपने आर्थिक सगठन करने के लिए हमें तो सब को समझाना है और हम यह सबको समझा किस तरह से सकते है? जिस तरह मैने राजा महाराजाओ को समझाया है, उसी तरह से। दूसरी तरह से नही। हा, किसी से दण्ड से भी काम लेना पडता है। लेकिन अधिक काम साम और दाम से ही होता है। हमारा काम है समझाना, प्यार से समझाना, क्योकि वे हमारे अपने ही है। मुहब्बत से इन्सान का दिल पिघल जाता है। हम जितना उन्हें दूर रखेंगे, उतना वह दूर भागते जाएँगे।

मै आपसे कहता हूँ कि आज मुल्क में ज्यादा धन पैदा करो तो उसी से आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त होगी। लेकिन आप बार बार एक ही बात करते रहेगे कि हमारे पास नो यह चीज नही है, वह चीज़ नही है। जैसा कुछ लोग कहते है कि हमारे पास चीनी नही है और आज अगर हमारा चुनाव हो, तो हम हार जाएँगे। क्योकि दीवाली के मौके पर हर घर में चीनी बिना ऐसा एक मौका पैदा होगा, कि सब घरवालिया हमे गाली देने लगेगी। लेकिन उनको मालूम नही है कि चन्द लोगो ने अगर शक्कर छिपाई हो, तो ठीक है। लेकिन अगर देश मे शक्कर सचमुच ही कम है, तो उसे कहा से लाना है। कई लोग हम को लिखते है कि बाहर से चीनी मगाओ। उनको मालूम नही हैं कि बाहर से भी आज चीनी नही मिल सकती। मिल सकती, तो हम तुरन्त

लाते। थोडे दिन शक्कर का फाका करना पडे, तो उससे हमारा कोई आदमी मरनेवाला नही है। गुस्सा करनेवाले और गाली देनेवाले तो जरूर है। हम अपनी गलती भी महसूस करते है कि कुछ गलती भी हमने की। लेकिन इस स्वराज्य के मानी भी यही है कि गलती करते करते हम लोग अपना काम खुद करना सीख जाएँ। यदि उससे ज्यादा कोई वेहतर काम चलानेवाले हो, तो मै उनको मुवारकवाद दूगा कि आइए, भाई, वैठिए। लेकिन अगर ऐसा न हो, तो देश की सव शक्तियो को मिलाकर हमें काम कराना है।

इसी तरह से हमारे मुल्क मे अनाज कम पैदा होता है। क्योकि जिस भाग में ज्यादा अनाज पैदा होता था, वह भाग अव अलग हो गया है। किसी-न किसी तरह से हम वहाँ से दौडकर आए है। अव वाहर के मुल्को से जो अनाज आता था, वह भी नही आता है। तो हमे अव अपने लिए पूरा अनाज पैदा करना है। कई लोगो ने दो-दो साल का अनाज भर लिया है। देहातो मे तीन तीन साल का भरा है। वे डरते है कि अगर आज हम निकाल देंगे, फिर अगले साल दुष्काल आएगा, तो क्या करेंगे और भाव वढ जाएगा, तो क्या करेंगे। लोग इस तरह से जमा करके रखते है, यह अच्छी वात नही है। हमे सारे मुल्क को समझाना पडेगा कि ज्यादा अनाज पैदा करो और कम से-कम खर्च करो। कम से कम वेस्ट (वरवाद) करो। जव तक हमारा पडोसी भूखा है, तव तक हमे ख्याल करना चाहिए कि हमारे पास अपनी जरूरत से जितना ज्यादा है, उतना तो हम उसे दे दें। यह भाव जव तक हिन्दुस्तान मे पैदा नही होगा, तव तक हमारी प्रजा शक्तिशाली नही होगी, प्रभावशाली नही वनेगी। और दुनिया हिन्दोस्तान मे इस चीज की उम्मीद करती है कि यह गान्धी जी का हिन्दुस्तान है। हमारी सस्कृति वहुत पुरानी है, हमारा मुल्क धर्म परस्त है। और हमारी सस्कृति भी यही कहती है। अपने मुल्क में हम पुरानी सस्कृति से काम नही लेंगे, तो लोग कहेंगे कि ट्रेड यूनियन वनाओ और सव के पास भागो कि वे माँगे कि पहले हमारा हिस्सा हमें दे दो। उसके वाद सरकारी कर्मचारी कहे कि हाँ, हम को भी हमारा हिस्सा दे दो। धनिक भी कहे कि हम अपना धन छिपा कर रखेंगे, क्योकि यदि हम वाहर निकालेंगे, तो इनकम टैक्स (आयकर) कमीशन वाला वैठा है। वह कहेगा कि वताओ यह कहाँ से लाए ? तुम चोर हो। हम सव इस तरह काम करेंगे तो हमारी आर्थिक स्वतन्त्रता नही होगी, वल्कि परावीनता होगी।

अव अगले साल हमें खूब काम करना है, क्योंकि मुल्क में हमने वह शान्ति पैदा कर ली है, जिस से हम दूसरा काम कर सकेंगे। अब भी हमारी जो सरहद है, उसपर तो हमें सावधान रहना ही है। अपना चौकीदार हमें ठीक रखना है। आप लोगो को मालूम होगा कि जब हमारा एकत्र हिन्दुस्तान था, तो हमारी फौज का खर्चा ११० करोड रुपया था। तव हमारी कुल फौज भी डेढ लाख ही थी। आज हमारी अकेले की फौज ४ लाख है और ढाई लाख फौज पाकिस्तान की है। अव आप उसका खर्चा लगाइए। आज हमारा जो बजट है, उसमें दो हिस्सा हम आर्मी के लिए रक्खें हैं। यह हमारी रक्षा का खर्च है। क्योकि मुल्क में यदि अस्थिरता हो, तो कोई चीज़ वाकी नही रहेगी। तो हमें शान्ति तो रखनी ही है, सरहद की रक्षा भी करनी है। भूखे रह कर भी हमें अपने देश की रक्षा तो करनी ही होगी। हम मुल्क में कोई फसाद भी नही होने देंगे।

तो आज़ादी तो हमको मिल गई, लेकिन हमें अपना दो हिस्सा वजट फौज पर खर्च करना पडता है। पाकिस्तान को भी यही करना पडता है, सबको यही करना पडता है। हम खर्च घटाएँगे, लेकिन उसमें से घटाने का चारा न हो तो हमें सावधान रहना चाहिए कि इस फौज़ के लिए हमें क्या क्या चाहिए। वह सब हमको रखनी है। तो उसके लिए हमें अपनी उद्योग इण्डस्ट्री को ठीक करना है। वह ऐसी वेकार पडी रहेगी, तो ज्यादा दिन हम ये फौज नही रख सकेंगे। हम यह फौज़ न रख सकें तो हमारी सलामती भी नही रह सकती। तो एक तो भूख पडी और दूसरी यह चोट पडी, तव तो हम मर जाएँगे। हमे दोनों चीज़ो को हटाना है। यह हमारा अगले साल का कर्त्तव्य है। हमारे सामने वहुत-सी कठिनाइयाँ है। युद्ध के यन्त्र आदि सव हमें वाहर से लाने पडते है। पहले अमेरिका से जो चीज़ सौ रुपया में मिलती थी, अव हमको उमी का एक सौ चवालीस रुपया देना पडता है। यह हालत हो गई है और यह सव हमारे हाथ की वात नही है।

ऐसी और भी वहुत सी कठिनाइया है, जिनका वयान करूँ, तो वहुत टाइम लगेगा। आज मेरी इतनी शक्ति नही है कि मैं खोलकर वात करूँ। यदि मुझ में ताकत आ जाए तो मै किसानो में जाकर और किसानो में घूम-घूम कर उनको समझाना चाहता हूँ कि यह क्या कर रहे हो? आप क्यो वम मारते हो कि दाम ज्यादा न मिले, तो हम अनाज नही देंगे। आपकी इन वातों

से मुल्क को घाटा पडता है। मुल्क में घाटा पड़गा, तो आपको जो मिलता है, वह भी नही मिलेगा। मैं मजदूर को भी समझाना चाहता हूँ कि थोड़े रोज कम मिले, तो कम दाम पर भी ज्यादा माल पैदा करो। पीछे आपको ज्यादा मिलेगा। इसी तरह से हमारे जो कर्मचारी है, सरकार में काम करने वाले है, उनको भी समझाना चाहता हूँ कि आज थोडी कमर कसो। और कुछ आपको देने को नही, तो वखशीश भले ही न दो, जो वचा सको, सरकार में जमा करो। वह तुम्हारे अपने लिए भविष्य में रहेगा। लेकिन हमारा उद्योग वढने दो। आज हमारे पास धन ज्यादा पैदा करने के लिए न पैसा है, न उद्योग वढाने के लिए पैसा है, लेकिन जैसा मैंने कहा कि एक एक वूंद से समुद्र भरा जाता है। इस तरह से करोड़ो आदमी थोड़ी थोड़ी वचत करके भी दे दें, तो यह पूजी उनको भविष्य में काम देनेवाली है। उसी में हिन्दुस्तान की आर्थिक आजादी समाई है। दूसरी तरह से यह आजादी नही मिलेगी।

धनिको को भी समझा-बुझाकर हम कुछ न-कुछ लेने की कोशिश करेंगे। उन्हें छोडेगे नही। लेकिन हम अपने रास्ते करेंगे। मैं तो अपने रास्ते पर ही काम कर सकता हूँ। लेकिन उसमें आप लोगो को यह विचार न होना चाहिए कि धनिको से पहले लेना चाहिए। हम पीछे देंगे। उससे तो हमे एक प्रकार का अहपूर्व (मैं पहले !) करना चाहिए। गरीव को भी दिल में लाना चाहिए कि हम गरीव तो है, लेकिन हमारा सारा मुल्क गरीव है। इस मौके पर हमें कुछ-न-कुछ कुर्वानी करनी है। सरकार की तरफ़ से यदि कोई माग आए, तो उस माग को जितना हो सके उतना पूरा करने की कोशिश हम करेंगे। हम इस तरह से नही चलेंगे, तो हमारा काम होनेवाला नहीं है। और यही काम इस साल हमे करना है। क्योकि मुझे अव भीतर का कोई डर नही है। वाहर का खतरा तो जव होगा, तो उसमें सारी दुनिया भस्मीभूत होनेवाली है। क्योकि आज जो वडी-वडी ताकतें है, जिनके पास खाना-पीना मजे में और वहुत है, लेकिन उन्हे खाना हज़म नही होता है, क्योकि उन्हें रात-दिन यही डर रहता है कि अव क्या होगा? यह मुल्क ज्यादा बढ़ जाएगा, वह मुल्क ज्यादा वढ जाएगा। हमे इस प्रकार का कोई डर नही है। क्योकि गान्धी जी ने हमको सिखाया है कि हमें किसी का डर नही रखना।

मैं चाहता हूँ कि जैसे सव ने आज प्रार्थना की, ऐसे सव मजहववाले लोग मुहव्वत से एक दूसरे के साथ मिलकर रहे। कोई झगडा फसाद न करें।

और आस पास की कोई बडी ताकत लडेगी, तब तो जो कुछ होगा, होगा। लेकिन कोई छोटी ताकत हमारे सामने ठहर नही सकेगी। वह हम से छेड-खानी करेगी तो मर जाएगी। उसमे हम को क्या है। तो आप लोगो को यही समझना है कि हमे किसी पर हमला नही करना है, किसी को दबाना नही है, किसी को लूटना नही है। किसी की चीज़ लेना हमें हराम है। लेकिन अपना मुल्क हमें मजबूत बनाना है, बलवान बनाना है। उसमे आप सब लोग साथ दें, इस काम में मुझको आप आशीर्वाद दें, तब तो मेरा ज़िन्दा रहना ज्यादे काम की बात है। इसी हालत मे मरना सब से ज्यादा उत्तम है कि जब लोग कहते है कि आदमी ठीक था। जब वह बोलता था तो कुछ कडी बात भी कहता था, लेकिन आदमी ठीक था। इसी इज्जत मे मरना बहुत अच्छा है। लेकिन अगर आप लोग मेरी बात मानें, तो ज्यादा जिन्दा रहने के बारे मे आपका आशीष ठीक है। मै मुल्क से भी यही उम्मीद करता हूं कि सारा मुल्क इसी के ऊपर चलेगा।

सरदार पटेल एक प्रेस कान्फरेन्स मे

(२४)

चौपाटी, बम्बई

४ जनवरी, १९५०

बहुत समय के बाद मैं आपके पास आया हूँ। मेरी ख्वाहिश थी कि कोई ऐसा समय आ जाए, जब बम्बई में मेरे समय का उपयोग भी हो जाए और मैं आपसे मुलाकात भी कर लूं। पिछली दफे मैं एक महीने तक इधर रहा था। लेकिन तब किसी को मिल न सका था। जिसका मुझे बहुत दुख था। जब भी मैं बम्बई आता हूँ, तब सबसे मिलने की मेरी ख्वाहिश होती है। पर आज मेरी प्रकृति ऐसी नही है कि मैं सब लोगो से अलग अलग मुलाकात कर सकूं। इसलिए मैंने आप सब लोगो से इस जलसे मे एक साथ मिलने की हिम्मत की है। बम्बई हमारे हिन्दुस्तान की राष्ट्रीय प्रवृत्ति का केन्द्र-स्थान है। आज हमारे राष्ट्र की जो प्रगति या दुर्गति है, उसका माप निकालने को एक स्थान बम्बई से ही देश भर का सब तरह का माप मिल जाता है। जब बम्बई बिगडता है तो सारा हिन्दुस्तान बिगडता है। यह समझा जाता है कि बम्बई नाराज़ हो, तो सारा हिन्दुस्तान नाराज और बम्बई सुखी हो तो सारा भारत सुखी होता है। उसका मतलब यह नही कि देहात में जो करोडो लोग पडे हैं, उनके सुख दुख का केन्द्र स्थान भी बम्बई है। ऐसा नही है। बम्बई की रोशनी और जलाली और बम्बई का आकर्षण भारत के देहातो में रहनेवाले करोडो लोगो के सुख-दुख का माप नही है।

तो भी इस बात का काफी अन्दाज बम्बई में मिल जाता है कि हिन्दुस्तान की नाड कैसी है। इसलिए बम्बई को हमें एक शानदार शहर के रूप में रखना चाहिए। लेकिन हिन्दुस्तान का हाल भी यहाँ हमें समझना चाहिए। मैं जानता हूँ कि बम्बई मे जो उमग और उत्साह हुआ करता था, उसमें आजकल कुछ ठडाई आई हुई है। यहाँ भी कुछ नाखुशी और कुछ नाराज़ी दिखाई देती है। उसकी वजह कुछ भी हो, लेकिन हिन्दुस्तान में आज जो परिस्थिति है, उसका असर बम्बई पर भी पडना लाज़मी है।

आजकल जो कुछ भी भला-बुरा होता है, उसका दोष कुछ लोग अक्सर सरकार पर डालते है। उसका उन्हे अधिकार है। उन्हे जो सुख दुख होता है, उसमें वे सरकार को ज़िम्मेवार मानते है। यह बात कहा तक सही है, वह दूसरी बात है। लेकिन आज मैंने देखा कि जो लोग कभी पुरानी सरकार का भला नही चाहते थे, जो आज़ादी के जग मे हमारा साथ देते थे, सरकार का साथ नही देते थे, वे सब भी अब इस सरकार की नुकताचीनी करने में शरीक हो गए हैं। लोगो को जैसे एक प्रकार का शौक हो गया है कि वे हर चीज में सरकार की टीका-टिप्पणी करें। एक हद तक यह बात ठीक भी है। उस से सरकार एक तरह से जागती रह सकती है। लेकिन जब हर रोज़ हम एक ही बात चिल्लाते रहे कि यह सरकार तो नालायक है, ढग की नही है, इसमें काफी घूसखोरी है, इसमें रिश्वत लेनेवाले है, और काला बाजार करने वाले चोर डाकुओ को भी यह सरकार कुछ सजा नही दे सकती तो इन बातो से मुल्क का भला नही होगा। जो लोग ऐसी बातें करते है, उन्हे समझना चाहिए कि आखिर यह सरकार है क्या चीज़? उन्हे बताना चाहिए अब तो सरकार जनता की प्रतिनिधि है और जनता उसे नही चाहती तो निकालने का उपाय क्या है। तब लोगो को मालूम होगा हम सब उस सरकार के ज़िम्मेवार है, और हम सब का इसमे हिस्सा है। तो जो सुख-दुख आज हम पर आ रहा है, उसको हमें हिस्सा बाँट लेना पडेगा। मैं यह नही कहता कि सरकार जो कुछ करती है, वह सब सही होता है। क्योकि जिन लोगो के हाथ में राजतन्त्र है, उन्होने पहले कभी राजतन्त्र नही चलाया था। सारी ज़िन्दगी तो उन्होने परदेशी सल्तनत को हटाने का काम किया। उसके लिए वे जेलो में गए, लडे और इस प्रकार की एक प्रवृत्ति चलाई कि जिससे सिद्ध हो कि सरकार के कामो में जनता की कोई ज़िम्मेवारी नही है। हिन्दुस्तान आज़ाद हुआ और अब

चन्द दिनो के बाद वह रिपब्लिक बन जाएगा। पिछले ढाई साल इस सरकार ने जो काम किया, उसमे कुछ अच्छा काम भी किया है या नही ? या सभी बुरा ही काम किया है ?

तो आपको यह समझना चाहिए क्या देश मे कोई दल है, जो सरकार को ठीक बना सके, ऐसी सरकार बना सके, जिससे आपको सुख हो ? अगर कोई वैसी सम्भावना होती तो हमारे जैसे लोग, जिनके कधे अब कमजोर हो गए है, इस बात से बहुत खुश होगे कि हम पर से बोझ उठ जाएगा। लेकिन उसके लिए उन लोगो को जवाबदारी लेने के लिए तैयार होना होगा। उसके लिए जवाबदारी की लियाकत होनी चाहिए। उस लियाकत का आपको सम्पादन करना पडेगा। जो आज रात-दिन दूसरो की नुक्ताचीनी करता रहता है, वह खुद कोई काम नही उठा सकता। आज हमें नुक्ताचीनी की आदत पड गई है। हम दूसरो के कसूर देखते हैं, लेकिन अपनी क्या कमज़ोरी है, वह सब हम नही देख सकते। यह समझ लेना कि भला, बुरा जो कुछ भी होता है, वह दूसरो ने किया है, हमने नही किया, तो भला इस तरह से कोई काम हो सकता है ? आपको समझना चाहिए कि आज दुनिया परेशान है। किसी मुल्क में शान्ति नही है। विश्व युद्ध के बाद जो क्रान्ति हो रही है, उसके असर से हम नही बच सकते।

एक बात आपको जाननी है। वह यह कि हमने इतनी कोशि करके हिन्दुस्तान को आज़ाद बनाया। उसके लिए हमने इतनी कुर्बानी की। तो क्या आज़ादी के साथ हमारा काम खतम हो गया ? ऐसी बात नही है। अब हमे हिन्दुस्तान को मज़बूत बनाना है और उसे सुखी बनाना है, तो उसके लिए हमारा फर्ज़ क्या है ? हमे सोचना चाहिए कि हमे दूसरो के लिए क्या करना चाहिए। अगर हम इस तरह न सोचें और यह जवाबदारी सरकार पर छोड दें, तो उससे हमारा काम न बनेगा।

अब देखिए मैं आपके सामने वह बात रखता हूँ, जिससे पिछले दिनो सरकार की काफी बदनामी हुई। एक बात तो यह हुई कि दिवाली के अवसर पर लोगो को काफी शक्कर नही मिली। इस बात पर बहुत शोर मचाया गया। शायद ठीक था। मै समझता हूँ कि शक्कर न मिलने से मुझे भी दुख है। लेकिन इसका कसूरवार कौन था ? उसके लिए जब तक पूरी जांच न हो, तब तक जिसने कसूर किया वह भी यही कहेगा, कसूर मेरा नही, दूसरो का कसूर है। व्यापारी लोग कहेगे कि कारखाने वालो का कसूर है। कारखानेवाले

कहेंगे कि सरकार का कसूर है, मजदूरो का कसूर है। कोई कहेगा किसानो का कसूर है, गन्ना पैदा करनेवाले का कसूर है। मतलब यह कि सभी दूसरो को दोष देंगे। सरकार कहेगी हम क्या करें, हमको तो कुछ मालूम न था। हम एक रास्ते से चलते थे कि बीच मे यह रुकावट आई। हमने पूरी कोशिश की। कसूर दूसरे का है। जो शक्कर खानेवाले थे, वे कहेंगे हम शक्कर बिना खाए मर गए। हालाकि शक्कर बिना कोई मरता नही है और न आग टूट पडता है। यह ऐसा नही है कि खाने-पीने की तकलीफ हो। जो कोई दुनिया में राज करते हैं, उनकी भी बहुत मुसीबत है। लेकिन वे बरदाश्त करते हैं और उसका उपाय सोचते हैं। तो उसमें से सरकार अपनी जिम्मेवारी से नही बच सकती है। लेकिन भविष्य में ऐसी चीज न हो, वैसा उपाय हम कर सकते है, और कसूर किसका है, यह बाद में मालूम पडेगा। लेकिन सरकार क्या करे? उसमें के चन्द आदमियो को पकडे तो उसमें भी शोर मचता है कि इसको पकडा, उसको पकडा, यह भी गलती है। तो चीनी का उपाय जो कुछ करना है, हम करेंगे। लेकिन यह छोटी बात थी, उसने बडी बात बना दी। लेकिन जिसकी आदत वैसी पड गई है, वह तो करेगा ही। उनसे बडी बातें बनाई, लेकिन उन बातो में सार नही था।

तो मेरी सलाह है कि छोटी बातो को इतनी बडी बनाकर शोर मचाना इससे हमारा काम नही होता है। यदि सरकार को हटाना हो तो छोटी बात को बडी बनाकर शोर मचाना ठीक नही। सरकार को बदलना आसान चीज है। उसके लिए आप की तैयारी होनी चाहिए, उसका बन्दोबस्त करना चाहिए, नही तो यह चीज सदा ऐसी बनती रहेगी, जिसमें हमेशा गलतिया होती रहेगी। सबको साथ मिलकर काम करना चाहिए। आज हमारे मुल्क मे दो चीजो की बडी कमी है, जिनकी कि जरूरत है। एक तो अनाज की। हर हिन्दुस्तानी को मालूम पड गया है कि हमे करोडो का अनाज बाहर से मँगाना पडता है लेकिन उसका उपाय क्या है? जब तक हमारे मुल्क में ज्यादा अनाज पैदा न करें, तब तक ऐसा होता रहेगा। कोई कहेगा उसके लिए भी सरकार जिम्मेवार है। पर अब इस तरह की बातो से हमारा काम नही चलेगा।

सच बात तो यह है कि हमारे देश मे अनाज की भी उतनी कमी नही, जितनी लोग मानते है। मैंने बराबर कहा कि यदि लोग सच्चे हो, तो थोडी

ही कमर कसने से हमारा काम हो जाएगा। लेकिन हमारे में दो प्रकार के आदमी है। सरकार ने निश्चय किया कि अनाज का भाव इतना होना चाहिए और किसानो को चाहिए कि वे ठीक भाव पर सरकार को अनाज दें। तो दूसरा दल कहता है कि सरकार को अनाज का भाव मुकर्रर करने का क्या अधिकार है। कोई कहता है कि सरकार को अनाज मत दो। तो इन सब बातो से क्या होगा? आज हमे किसानो को ज्यादा अनाज पैदा करने मे मदद देनी चाहिए और उन्हे समझाना चाहिए कि आज अगर मुल्क गिरेगा, तो तुम भी गिर जाओगे। और अगर सारा हिन्दुस्तान गिर गया, तो इसमें कोई नही बच सकता। इतनी कुरबानी के बाद हमारा मुल्क आज़ाद हुआ है तो हमें इस तरह की गैर ज़िम्मेवारी नही बरतनी चाहिए। देशभक्त ऐसा काम नही करते। अनाज की टोटी (कमी) को पूरा करने के लिए हमें करोडो रुपयो का अनाज बाहर से लाना पडता है। उसके लिए सरकार ने फैसला किया कि यह मुल्क अपने पैरो पर हो जाए, ऐसी कोशिश हमें करनी चाहिए। लेकिन अकेली सरकार यह काम कभी न कर सकेगी। जब तक लोगो का साथ न मिलेगा, तब तक यह काम पूरा न होगा।

अब हमे कपडा चाहिए। तो कपडे की उत्पत्ति में जितनी कमी है, उसे पूरा करने के लिए यह ज़रूरी है कि बार-बार हडतालें न हो। यह ज़रूरी है कि काम बराबर चलता रहे, जितना कपड़ा निकलना चाहिए उतना हम निकाल सके। अधिक कपडा बनाने के लिए हमें रुई चाहिए। हमारे मुल्क मे उतनी रुई पैदा नही होती इसलिए हमे बाहर से रुई मँगवाने का इन्तज़ाम करना चाहिए। साथ ही मजदूरो को मैं समझाना चाहता हूँ कि तुम्हारा जितना हक है, उसे लेने की पूरी कोशिश करो, हम भी उसके लिए कोशिश करेंगे। आज हमारा, हम सब का अपना राज है। हम आपस में क्यो झगडा करे? मिल-मालिको को भी समझाना चाहिए कि भई तुमने पहले बहुत दिन नफा उठाया, भविष्य में भी मौका मिलेगा। लेकिन जब मुल्क को तकलीफ है, तो मुनाफे की बात छोडकर हमें मुल्क को उठाने के कांम मे एक हो जाना चाहिए। मैं यह नही समझता कि सब लोग हमारी बात मानेंगे। लेकिन हमें एक ऐसा वायुमण्डल पैदा करना चाहिए, जिसमें अधिकतर लोग देश के हित को नज़र में रखकर काम करें। लेकिन अगर हम अपनी जवाबदारी छोड़कर दूसरो पर डालते रहे, और दूसरे के दोष ढूंढते रहे, तो काम नही चल सकता।

हमने निश्चय किया है कि ज्यादा-से-ज्यादा धन देश में पैदा करे। अनाज,

कपडा, चीनी, लोहा, जितनी भी जिन्दगी की ज़रूरियात है, वे ज्यादा-से ज्यादा हमारे देश में पैदा हो। उसके लिए कोशिश करना हमारा धर्म है, हमारा कर्तव्य है। आपस में झगडा करना हो तो जब मुल्क मजबूत हो जाएगा, तब खूब झगडा कर लेगें। कोई कहता है कि हमें तो सिर्फ ईक्वल डिस्ट्रीब्यूशन आफ वेल्थ (धन का बराबर बँटवारा) पर ही ध्यान देना चाहिए। जितना धन हमारे पास हो, वह सब को बराबर-बराबर सरीखे बाँट देना चाहिए। अभी तक तो ऐसा किसी मुल्क में नही हुआ है। फिर भी हाँ, हमारा ध्येय यह हो, तो ठीक है। लेकिन आज हमारे देश में धन ही कहाँ है ? जितना धन यहा है, वह सब बराबर बाँट भी दिया जाए, तो मुल्क भिखारियो का ही मुल्क होगा। उसमे कोई धनवान नही रहेगा। सब एक समान भले ही हो जाएँ, लेकिन जब तक हमारे देश में समृद्धि नही बढेगी, तब तक हमारी जनता का कुछ न बनेगा। तो क्या हमारी आज़ादी का मकसद यही है ? हमें बीच का रास्ता निकालना चाहिए।

कई लोग कहते है कि हमारा सारा उद्योग सरकार को अपने हाथ में लेना चाहिए। दूसरी तरफ आप कहते है कि सरकार ने चीनी के मामले में क्या किया ? और जितने उद्योग है, उन्हे हाथ मे लेकर सरकार को इसी तरह करना है। सरकार का क्या मतलब है ? सरकार के पास इतने साधन नही है कि वह अपनी व्यवस्था ठीक तौर से चला सके। तब भी उसके ऊपर इतना बोझा डालना, कि जो कुछ हमारा है, वह भी बिगड जाए तो इससे क्या फायदा ? आज मुल्क में जितने उद्योग है, और जिस तरह चल रहे है, यदि सरकार के हाथ में आकर भी, कम-से-कम आज की तरह चलते रह सकें, तो मैं इस बात पर अपना पहला दस्तखत करूँगा कि हाँ, ले लो, इस सब का राष्ट्रीयकरण कर दो। लेकिन अगर आज ऐमी स्थिति है कि जो है वह भी बिगड जाए, तो उसमें कोई भी हैरानी की बात नही है। दुनिया के बहुत से देशो मे यही स्थिति है। लेकिन इस बात के पीछे उसमे कोई सपना रखता हो कि मुल्क को नष्टभ्रष्ट करके उसके पीछे उसमें मे कुछ नई बात निकालेंगे, जैसा कि हमारे साम्यवादी भाई कहते है। आप कलकत्ता मे देख चुके, जहाँ रोज-रोज कोई ट्राम पर बम्ब फेकते है, तो कोई मोटर पर, मकान पर या किसी फैक्टरी में। जैसे चन्द लोगो ने यह पेशा ही कर लिया हो, जिससे उन्हे कुछ पैसा मिले, कुछ ब्लैक मिले। जब बाहर के लोग अपने अखबारो में हमारे अहवाल का बयान पढेंगे, तो वे कहेंगे कि यह

कैसा मुल्क है ? कलकत्ता हिन्दुस्तान का एक बडा शहर है, जो कितने ही उद्योगो का केन्द्र स्थान है। उस केन्द्र स्थान मे आप रात दिन यही धन्धा करें, तो उससे मुल्क को कितना नुकसान होगा, जैसे यह बात कोई नही सोचता।

ऐसा फसाद करने का जिन लोगो का धन्धा ही है, उनको तो मै कुछ भी नही कह सकता। उनको कहने से फायदा भी क्या होगा ? क्योकि उन लोगो ने तो मान लिया है कि इसी तरह से काम चलेगा। लेकिन आप लोगो को समझना चाहिए कि अगर मुल्क इस रास्ते पर जाएगा, तो वह अपनी आज़ादी का भी कोई फायदा नही उठा सकेगा। कुछ लोग कहते है कि असेम्बलियो और पार्लियामेंट में इस सरकार के सामने कोई विरोध करनेवाला नही है। मगर विरोध करने का यह ढग नही है। ठीक ढग से विरोध करने से तो लोकशाही मुल्को मे सरकार को भी इज्जत और मदद मिलती है। लेकिन हर रोज़ एक जुलूस निकाल कर सेक्रेटेरियट पर हल्ला करने से या किसी कारखाने के सामने जलसा करने से पार्लियामेटरी विरोध नही होता। वह तो परदेशी सरकार को तग करने का तरीका था और तब, उन हालतो में ठीक था। लेकिन आज उससे क्या लाभ होगा ? तो हिन्दुस्तान मे जितने लोग है, उन्हे आज अपनी जवाबदारी समझनी चाहिए। आज तो हमको रिपब्लिक का एक नया कान्स्टीटयूशन जारी करना है, जिस मे सब बालिग लोगो को मत देने का अधिकार मिलता है। मतलब यह कि आज हर एक भारतवासी को अपनी जवाबदारी का ख्याल रखना चाहिए।

जब तक सब लोग अपना-अपना बोझ उठाने मे लग नही हो जाएँगे, तब तक मुसीबत बनी रहेगी। आज सरकार की ज्यादा से ज्यादा मुसीबत है। कुछ लोग कहते है कि कण्ट्रोल मिटाओ। हमने एक दफे कण्ट्रोल निकाल कर देख भी लिया। उसमे हमारी बहुत बदनामी हुई। बहुत लोगो को मुश्किले आई, क्योकि तभी से, कुछ लोग पहले से भी अधिक फायदा उठाने लगे। आज कण्ट्रोल हटाने को सरकार क्यो राज़ी हो जाएँगी ? कण्ट्रोल हटाने से न तो शान्ति होगी और न देश का कारोबार ही ठीक ठीक से चलेगा। क्योकि सरकार का काम व्यापार करने का नही है। जो सरकार व्यापार करेगी, वह भीख मागेगी। यह काम सरकार से नही होगा। आज की दुनिया इस तरह की है कि हमें स्वतन्त्रता मिलने पर और अधिक मुसीबते और कठिनाइया आई है। उनको बांटने की कोशिश आपको करनी चाहिए। यह कण्ट्रोल हमने आज़ादी के बाद

नही रक्खा। यह तो पहले भी था। आज़ादी के साथ जो कठिनाइया आई है उन्हे भी हमें हटाना है। इसके हटाने में आपको साथ देना होगा। विना मिहनत किसी का पैसा ले लेना आम तौर से आदमी को ठीक लगता है, लेकिन यदि मुल्क का हित उससे विगडता है, तो इन्सान को वह काम नही करना चाहिए। पहले हम अब की वनिस्वत अधिक धन पैदा करें, उसके वाद वह सव हो सकता है।

आज हमारे हिन्द का जो वजट है, उसका यदि अध्ययन करें, तो मालूम पडगा कि हमारे मुल्क का असली हाल क्या है। हमें धनिको के ऊपर जितना कर का बोझ डालना चाहिए, उससे भी ज्यादा हमने डाला है। लेकिन उस सब से जो पैसा आता है, उसमें से दो हिस्सा हमे हिन्दुस्तान के बचाव के लिए लश्कर रखने पर खर्च कर देना पडता है। कोई कहता है कि लश्कर का खर्च कम करो। लेकिन हमारी एक मर्यादा है, और उस मर्यादा से आगे हम नही जा सकते। क्योकि मुल्क के दो टुकडे होने से जो जख्म मुल्क को लगा है, वह अभी भरा नही है। अपने पडोसी के साथ अभी हमारी मुहब्बत नही है। हमें उम्मीद थी कि दो टुकडा हो जाने के वाद इधर पूरी शान्ति हो जाएगी और दो टुकडा करने का काम भी पूरी मुहब्बत से होगा। उसके वाद वह अपना घर चलाएँगे, और हम अपना। मगर वह अभी तक हुआ नही। जव तक अपने पडोसी के साथ हमारा सम्वन्ध ठीक नही हुआ, तव तक हमें अपना घर सभालने में ऐसी चौकसी करनी चाहिए कि कोई खतरा न हो। अगर हम ऐसा न कर सकें तो हमें सरकार से हट जाना चाहिए। इस प्रकार की हमारी तैयारी न हो, तो वह गुनाह होगा। यह सारी मुसीवत हमारी ही नही है। यह उनकी भी मुसीवत है, और वह इसे जानता भी है।

उधर अभी तक कुछ लोग वात करते है कि लाल किले पर हम झण्डा लगाएँगे। इधर कलकत्ता में एक जलसा हुआ, जिसमे लोगो ने प्रस्ताव किया कि हिन्दुस्तान का जो दो टुकडा हुआ है, उसे हम एक कर देंगे। दो साल के वाद आज जरा हिम्मत की है, तो वह हमारे काम में रुकावट डालने के लिए की है। इससे दोनो देश एक नही हो सकते। जव हमने दो टुकडा मजूर किया, तव किसी ने नही कहा कि यह टुकडा न करो। सव ने कहा कि दो टुकडा होना अच्छा है। तो जिन लोगो ने आज यह वात उभारी है, वह उसी मनोवृत्ति का उदाहरण है, जिस मनोवृत्ति का नतीजा एक यह हुआ कि गान्धीजी का खून

हुआ। उसमे कई आदमी ऐसे निकले, जिन्होने हत्या मे हिस्सा लिया। अगर फिर भी अभी तक हम उसी रास्ते पर चल रहे है, तो उधर जाने मे तो देश का नुकसान है ही।

तो मैं इन लोगो को चेतावनी देना चाहता हूँ कि उस रास्ते पर जाना मूर्ख लोगो का काम है। इसका परिणाम भयकर होगा। खामखाह दुश्मन को यह कहने का मौका क्यों देते हो कि देखो, इनकी नियत वुरी है। हमारी नियत विल्कुल वुरी नही है। हम चाहते है कि पाकिस्तान फूले और फले। वह मज़वूत वनें। लेकिन हमको लूटकर मज़वूत वनने का मौका हम उसे नही देंगे।

आप जानते है कि सारी जूट की खेती उनके वहा पाकिस्तान मे पडी है। जव कि सारे जूट के कारखाने कलकत्ता में है। अव हमने टुकडा तो किया, लेकिन सारे कारखाने इधर है और जूट उधर है। वह किसान जो जूट के सिवा दूसरा कुछ पैदा नही कर सकता, अव अपनी जूट को इस तरफ भेज न सके, और इधर के कारखाने जूट प्राप्त न कर सके, तो दोनो की आर्थिक व्यवस्था टूट जाती है। इस से उसको भी नुकसान है और हमको भी नुक-सान होगा। अव यह जो डिवैल्यूएशन (मुद्रा का अवमूल्यन) हुआ, उसका भी यह नतीजा हुआ कि पाकिस्तान ने मान लिया इनके १०० रुपये की कीमत हिन्दोस्तान के १४५ रुपये के वरावर होगी। अर्थात् हिन्दुस्तान से ४५ रुपये ज्यादा। तो ठीक है। और यह फैसला उन्होने इस प्रकार किया कि वे सव मुल्को से अलग रहे। तो १०० रुपये के जूट का दाम हम १४५ रुपये देंगे, उन्हे ऐसी उम्मीद थी। तो हम ऐसे वेवकूफ नही है। हमने तय किया हम वेजा रकम नही देंगे। यदि ज़रूरत पड़ेगी तो कारखाने वन्द रक्खेंगे। लेकिन गलत वात नही मानेंगे। साथ ही हमें मालूम था कि कारखाने वन्द करने का समय नही आएगा। हमारे मुल्क मे जूट इतना पैदा हो सकता है कि हमें वाहर से मगाने की ज़रूरत न पडे। तव देखो कि हमारी हालत क्या होती है। हम लडना नही चाहते, मुहव्वत से काम करना चाहते है। लेकिन इस प्रकार सीनाजोरी से काम करना हो तो उसमें सव का नुकसान होगा। सव ने कहा कि वह चीज़ हमारे मुल्क मे पैदा करनी चाहिए। तो वहा से जो उनके फायनेंस मिनिस्टर है, उन्होने कहा कि देखो वे कहते है कि हम अपने मुल्क में जूट पैदा करेंगे। देखो, उनकी नियत।

तो क्या हमारी नियत ऐसी होनी चाहिए कि हम उनके पैरो पर ही पड़ते

रहे ? यह तो बुरी बात है। अगर वे ऐसी उम्मीद रखे, तो यह कितना गलत है। हाँ, मुहब्बत और मित्राचारी से यह काम हो सकता है। इसके लिए हमने बहुत कोशिश की। लेकिन जितना किया, वह सब निष्फल जाता है। तब हमने निश्चय किया कि जितने जूट का हमने आर्डर दिया है, उसका डिवैल्यूएशन से पहले जितना दाम था, वह हम दे दें। वह दाम दे दिया, तब भी जूट उन्होने रोक ली, तब हमने निश्चय किया कि इस तरह तो काम नही हो सकता। इस तरह एक झगडे से दूसरा झगडा निकलता गया, तो वह अच्छा नही है। आज हमारे प्राइम मिनिस्टर पुकार-पुकार कर कहते है कि भाई, जो भी झगडा हो, उसका आपस में फैसला करो। आपस में फैसला न हो, तो पचो के सुपुर्द करो। हम इस बात के लिए तैयार है। करोडो रुपयो का माल सिंधियो के पास से ठोक-ठोक के निकाल लिया और वह दवा कर बैठे है। उसका फैसला भी वे नही करना चाहते। जब तक ऐसी नियत रहेगी, तब तक कोई दोस्ती नही हो सकती। तो उधर हमारी मिलकियत और इधर उनकी मिलकियत के बारे मे झगडा है, इसका फैसला भी आरविट्रेशन (पचायत) से होना चाहिए। ऐसा करना हो, तो हम तैयार है। इस प्रकार जितने हमारे प्रश्न है, वह इस तरह के है कि जिनका फैसला आपस में बैठ कर हो, तो वह हो सकता है। लेकिन हम वहाँ तक आने का खर्चा अपना नही करेंगे। वहाँ तक आपको भी थोडी सी मुसीबत आए तो उठानी पडेगी। वह उठाने के लिए आपको तैयार रहना चाहिए। हम किसी के साथ लडाई तो करना नही चाहते। दुनिया मे किसी भी मुल्क को दबाने की कोशिश हिन्दोस्तान ने आज तक कभी नही की। कभी भविष्य में भी वह वैसा करने इरादा नही रखता। लेकिन अपने देश को अपने पैरो पर खडा रखने की हम कोशिश करें और आप उसमे रुकावट दे, तो वह नही चलेगा।

तो मैंने कहा कि हमारे मुल्क में आज जितनी मुसीबतें है, उसका बडा हिस्सा इस कारण है कि हम दोनो में मुहब्बत नही है। खाली मुहब्बत का अभाव ही नही है, साथ ही इतने और कारण भी जमा हुए है कि जिनकी वजह से आपस मे घर्षण रहता है। इस घर्षण से यदि कभी झगडा हो तो उस दशा में अपनी रक्षा करने की पूरी तैयारी हमारे पास होनी चाहिए। उसके लिए हमें सब चीजो की तैयारी करनी पडेगी। कई लोग कहते है भई, गान्धी के प्रोग्राम पर चलो। गवर्नमेंट अपनी रक्षा के लिए जो सामग्री रखती है,

जो लश्कर रखती है, उस सवके लिए जो कुछ हमे चाहिए, वह सव हमें अपने यहाँ वनाना चाहिए । हिन्दुस्तान में उसके लिए हमे कारखाने चाहिएँ। हमारे जो पुराने कारखाने है, आज उनको भी हमें वढाना है। अव नये कारखाने भी हमे चालू करने है।

कुछ लोग कहते है कि हमारे मुल्क को उद्योग मे मत डालो। हमारा मुल्क तो कृषि पधान है। यहाँ के अधिकाश लोग तो देहात मे पडे हैं। यह सव सही है। हम गान्वी जी के साथ सारी उमर रहे। हम कोई ऐसे पागल तो नही हो गए कि उनको भूल जाएँ । लेकिन गान्धी जी की वात का यह मतलव नही कि हम कारखाने खतम कर दे, या जो है सिर्फ उनको रखे और नये न वनाएँ। उसका यह भी मतल्व नही कि हम सिर्फ देहात का ही काम करते रहे, या सिर्फ देहात में जो पैदा हो वही खाएँ। गान्वी जी चाहते थे कि हर गाँव स्वावलम्वी हो, हर गाँव अपने गाँव मे सव झगडो का फैसला करे, हर चीज़ वे अपने यहाँ पैदा करें। हम भी वही चाहते है। लेकिन हम देखते है गाँवो मे से भाग-भाग कितने ही लोग वम्वई, कलकत्ता और दिल्ली मे आते है। देहात को ठीक करने में तो कुछ समय ज़रूर लगेगा ही। लेकिन इस तरह कारखानो को वन्द करने से क्या लाभ होगा? अगर हमे नये कारखाने नही चलाने तो यह फौज़ कहाँ से पाली जाएगी? उसका काम चलाने के लिए देहात में से तो रास्ता नही वनेगा। इसके लिए पेट्रोल चाहिए, वह देहात मे कहाँ मिलेगा? इसके लिए सामान चाहिए, यूनीफार्म चाहिए, कपडा चाहिए, मोटर चाहिए, लारी चाहिए, और भी कितनी ही चीजे चाहिएँ। अपनी वडी फौजों का इन्तज़ाम हम देहात मे नही कर सकते। इसके लिए कारखाने चाहिएँ, उसके लिए लोहा चाहिए। लोहे का एक कारखाना जमशेदपुर मे है, उससे हमारा काम नही चलता। वाहर से लोहा मँगाना पडता है। उसके लिए वहुत दाम देना पडता है। तो हमे सोचना है कि उस का क्या इन्तज़ाम करे। और कोई इन्तज़ाम हमारे पास है नही। तो इन सव कामो के लिए हमें कारखाने भी चाहिएँ। उधर हम चाहते है कि गाँव भी सुखी हो और वे समृद्ध वनें। तो हमें दोनो का मिश्रण करना पड़ेगा। हमे कारखाने तो चाहिएँ, पर उन्हे कौन चलाएगा? यदि गवर्नमेंट चला सके तव तो ठीक। लेकिन अगर सरकार न चला सके, तो जिनको उद्योग का अनुभव है, और उनको जो चला सकते है, उन लोगो की मार्फत हमे यह काम करना पड़ेगा।

उनका भी साथ हमें चाहिए। रात-दिन उनके साथ हम लडते ही रहे, तो उससे हमारा काम नही चलेगा। इन उद्योगो में मज़दूरो और कारखाने के मालिको का मिश्रण होना चाहिए। यह हो सकेगा, तभी हमारे देश के कारखाने सफलता पूर्वक चल सकेंगे।

कुछ लोग कहते हैं कि बाहर से धन लाओ। बाहरवाले कहते हैं कि अगर हम आपके मुल्क में धन लाएँगे तो उससे पहले यह देखेंगे कि उससे फायदा कितना है, वे अपनी-अपनी शर्तें भी लगाना चाहेगे। यह भी एक बडी मुसीबत है। इस मुसीबत में जो काम करना है, उसमे छोटी-छोटी मुसीबतों से नही घबराना चाहिए। मैं यह कबूल करता हूँ कि बम्बई मे जितने काग्रेस के साथ देनेवाले लोग थे, करीब-करीब उनका रोजगार भी चला गया। जो मध्यवर्ग के लोग थे, उनका व्यापार भी टूट गया। क्योकि हरेक प्रकार का कण्ट्रोल आया तो नए नए लोग खडे हो गए। उसमें जो बाकी रोज़गार करनेवाले लोग थे, वे भी कुछ बदनाम हो गए। उनके नौकर चाकर, गुमाश्ते सब बेकार बैठे हैं। कई लोग हमें गाली भी देने लगे। मगर वह बेवकूफी की बात है। इससे किसी का कोई काम नही चलेगा।

कुछ लोग कहते है कि हमें जल्दी से जल्दी कण्ट्रोल खत्म कर देने चाहिए, जिससे हमारा काम चले। उनका कहना है कि कण्ट्रोल खत्म होगा, तभी हमारे काम में प्रगति होगी। परन्तु व्यवहार में हमने थोडा कण्ट्रोल हटाया ही था कि नफा करने को कुछ लोग जल्दी-जल्दी वहाँ पहुँच गए। तो आज यहाँ जो कुछ हो रहा है, हमारे मुल्क मे आज जितनी बेचैनी, बदनामी और झगडा है, वह सब क्रान्ति का एक नतीजा है। एक गुलाम मुल्क को आज़ादी तो मिली है, मगर गुलामी का असर अभी तक उस पर से नही गया। जब चरित्र बिगडा है, तो कण्ट्रोल कहाँ चल सकता है? बहुत-से लोग कहते हैं कि कण्ट्रोल में बडी घूसखोरी होती है। उसका उपाय क्यो नही करते? ठीक है। मगर जब घूस देनेवाले और घूसखोर मिल जाते है, तो उन्हे पकडना आसान नही होता। उसका उपाय क्या है? इसका उपाय तो यही है कि घूसखोर जब कायदा-कानून से पकडा जाए, तो उसको सज़ा हो। लेकिन उसके लिए भी तो आपका साथ चाहिए, जनता के सशक्त सहयोग के बिना यह दुराचार किस तरह रुक सकता है?

आज बहुत-से लोग कहते है कि यह पुलिस अपना काम क्यो नही करती?

पुलिस बेचारी क्या करे ? आखिर यह पुलिस किसकी है ? क्या यह बाहर से आई है ? वह किसी परदेसी का हुक्म तो नही उठाती है । आज पुलिस हमारी है । इसकी इज्जत हम नही बढाएँगे तो कौन बढाएगा ? अगर हम उसको उत्साह देनेवाले काम न करे, यदि हम उसकी इज्जत न करे और सदा यही कहते रहे कि हमारी पुलिस खराब है तो इसका मतलब यही होगा कि हमारी सारी नेशन खराब है। तब दुनिया में हमारी आबरू इज्जत क्या होगी ? हमे अपने मुल्क मे से यह चीज हटानी है। इस ओर हमने कुछ काम भी किया है । हिन्दुस्तान के बाहर के लोग तो यही कहेगे कि इन लोगो ने दो साल मे बहुत काम किया है । हम यह नही उम्मीद रखते थे कि हिन्दुस्तान इस तरह से काम कर सकेगा । हमारा तो ख्याल था कि वह टूट जाएगा । लेकिन इन लोगो ने इतना सगठन कर लिया और शान्ति पैदा कर ली, जिसकी उम्मीद न थी । हम तो जानते थे कि यह चलनेवाली चीज नही है । लेकिन यह चली और इस तरह चली कि बाहर के देशो मे हिन्दुस्तान की इज्जत बहुत बढ गई ।

मै जानता हूँ कि इज्जत से पेट नही भरता । लेकिन इज्जत भी तो कोई चीज है । बाहर दुनिया मे हमारी कदर हुई, यह ठीक है । लेकिन हमारी कदर हमारे घर में नही है, और इसका उपाय करना चाहिए । तो इसके लिए हमे सारे देश की जनता को साथ लेना होगा । तो मै बम्बई मे आप लोगो से बडे प्रेम और अदब से यह अर्ज करने के लिए आया हूँ कि एक दूसरे की निन्दा करने से हमारी बाहरी इज्जत भी चली जाएगी । उससे हमारा कोई काम नही बनेगा । मैं चाहता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम करो और गलत रास्ता छोड दो । लडाई के ज़माने मे आपको जितना फायदा उठाना था, उठा लिया । उन दिनो मे कुछ लोगो ने धन पैदा करने का रास्ता लिया था । आज यह समय आया है, जब कि हर किसी को अपना पसीना बहाना है, कडी मेहनत करनी है । पूरी मिहनत करके एक दफा अगर हम हिन्दुस्तान को ठीक कर दे, तो बहुत अच्छा होगा । हमारे देश का भविष्य बहुत ही अच्छा है, इस मे मुझे कोई शक नही । लेकिन हमे दो-चार साल मेहनत कर के सभालना है । यदि दो-चार साल इस बच्चे की हम ठीक हिफाज़त कर ले, तो बाद मे यह दौडता चलेगा ।

जैसा कि मैंने अभी कहा था, हमारी इज्जत बाहर तो बढी ही है । हम

यह नही कहना चाहते कि हम लोगो ने कुछ किया है। बहुत-से लोग इस बात को जानते है कि ऐसी बात नही है कि हमने कुछ भी नही किया। जो काम हमने किया है, कुछ उससे फायदा भी हुआ है और हमारी इज्जत भी बढी है। अगले काम के लिए भी हमने भूमि तैयार की है। हिन्दुस्तान का टुकडा हो जाने पर भी आज जितना हिन्दुस्तान एक हुआ है, उतना वह पहले कभी नही था। हिन्दुस्तान के सारे इतिहास में वह कभी इतनी बडी इकाई नही था, जितना आज हुआ है। आज मुल्क में शान्ति भी है। आज हमारे यहाँ न आपस के झगडे है और न कौमो के। अब मुल्क को ठीक करना है। उसके लिए हर आदमी को अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहिए। और समझना चाहिए हमारा कर्त्तव्य क्या है? यह न समझे तो हमारा काम नही चलेगा।

मैं तो आज बम्बई में बैठा हूँ, लेकिन पहले मैंने जितना किसानो का काम किया है, उतना किसी ने नही किया। मैंने उनकी काफी सेवा की है। मै फिर से उनमें जाना चाहता था, मगर अब मेरी सेहत अच्छी नही है। अगर मेरी उमर ठीक होती, तो मै हिन्दुस्तान भर को हिलाता और खुद फिर से किसानो में जाता। लेकिन आज तो मै यहाँ ही से देश भर के हर एक किसान से अपील करना चाहता हूँ कि आप को यह नही कहना चाहिए कि आपको इतना पैसा मिले, तभी आप अनाज देंगे, तभी आप अनाज पैदा करेंगे। यह समय आया है, जब आपको देश का हित सब से बढकर देखना है। अभी तो वह समय है कि जो कुछ मिले, आप मजूर करें। हमारे करोडो भाई-बहन पडे है, जिसको आज खाने को अनाज नही मिलता। जिनके खाने के लिए हमें बाहर से अनाज मँगवाना पडता है। इसका बहुत भारी बोझ है और यह बोझ हमारे खुद के ऊपर पडनेवाला है। हिन्दुस्तान गिरा तो सब गिरेंगे। लेकिन हम उसे गिरने नही देना चाहते। तो हम सबका धर्म है, कि ज्यादा अनाज पैदा करें और उसे अपने पर कम-से-कम खर्च करें। किसी भी तरीके से अनाज का नुक-सान हो, वह बरबाद हो, इस तरह की कोई चीज़ हमे नही करनी चाहिए। आज आप ज्यादा-से-ज्यादा अनाज पैदा कीजिए, देश को जितनी रूई और जूट की जरूरत है, उतनी रुई और जूट पैदा कीजिए। अपने मुल्क को अपने पैरो पर खडा करने में आप जितनी भी हो सके, मदद दें।

मजदूर भाइयो से भी मै बडी अदब से कहता हूँ कि वे चाहे जितने दल-

बल बनाएँ । एक दल, दूसरा दल, साम्यवाद, समाजवाद, मिथ्यावाद, बक-वाद, चाहे जो बनाएँ, सब ठीक है । लेकिन यह तब तक, जब तक यहा एक छत्र छाया है । जब मुल्क मे आप कुछ पैदा करेंगे, तभी तो बढेंगे । लेकिन कुछ पैदा ही न किया तो ? तब तो जैसे एक हड्डी के टुकडे पर कुत्ते पड़ते है और एक दूसरे को काटते है, वही हाल होगा । उससे कोई फायदा नही । उससे तो मुल्क की इज्जत भी गिर जाएगी । तो ज्यादा से-ज्यादा उत्पादन करो । अपने हक को मागो, खुशी से माँगो । लेकिन हमारा जो आर्थिक ढाँचा है, उसे ठीक ढग से सँभालो—और उसे मत बिगाडो । देश की जरूरत के लिए ज्यादा धन पैदा करो ।

मै पूजीपतियो से भी कहता हूँ कि आज आप नफा पैदा करने की नजरें छोड दो । आज तुम्हारी निगाह अपनी इज्जत पैदा करने की ओर होनी चाहिए । तुम बहुत बदनाम हुए हो । तुम्हारे बारे मे काला बाज़ार, सफेद बाज़ार, बहुत तरह की बाते लोग कहते है । वे सब बाते अब भूल जाओ और हर तरह से निश्चय करो कि साल, दो साल, या तीन साल, नफा खाने की बातें छोड़ दो । अभी भी नुकसान उठाने को तुम्हे कोई नही कहता, मगर अब नफे का लालच छोड, पहले मुल्क को मजबूत बनाने का काम करो, उसके बाद नफे की बात सोचना ।

कहा जाता है कि पिछले मध्यम वर्ग को बहुत दुख उठाना पड़ा । सही बात है । लेकिन जब हम मध्यम वर्ग की व्याख्या करते है, तो उसमें किसको डालना और किसको नही डालना, यह मुश्किल हो जाता है । उसमे सब घुस जाते है । तो दुख उनको भी है । आज हिन्दुस्तान मे सब वर्गो को दुख है । लोग मानते है कि धनी वर्ग को सुख है और बाकी सब दुखी है । मै यह नही मानता कि जिसमे खाने को ज्यादा हो और इज्जत न हो वह सुखी जीवन है । क्योकि खाली पेट भरने से तो कोई काम नही होता है । यह तो जानवर भी करता है ।

आजकल धनिक वर्ग को गाली देना जैसे हमारा कर्त्तव्य हो गया है । किसी को लीडर बनना हो तो वही शुरू करे, नही तो काम नही चलता । मगर उससे न धनिक को फायदा है, न गाली देनेवाले को ही । तो हमारा काम तो सब को समझाना है । सब को साथ लेना है । आप कहते है कि दुनिया में दो बड़े दल है और दो वाद है । एक साम्यवाद दुनिया के बहुत बड़े हिस्से मे फैल

रहा है। दूसरे कैपिटलिस्ट लोग है। ठीक है। लेकिन हम कहाँ आते है ? न हम साम्यवाद में है, न पूजीवाद में। पूजीवाद भला हो या बुरा, लेकिन आज दुनिया में सबसे धनवान, सुखी, मजबूत और प्रतिष्ठावान मुल्क अमेरिका है। तो जो पूजीवाद वहाँ है, उतना दुनिया में और कही नही। फिर भी लोग वहाँ सुखी है। वहा के मजदूर को जो वेतन मिलता है, वह कही और के मजदूर को नही मिलता। हमारे जो धनवान लोग है, व उनके धनवानो के मुकाबले में तो कुछ भी नही। तो इस झगडे में हमें नही पडना है। हमारा काम तो यह है कि देश के सब लोगो को साथ मिलाकर एक ऐसा रास्ता निकाले, जिससे चार-पाच साल में देश में पूरी ताकत आ जाए। इस काम में हमें सब का सहयोग लेना है।

उसके लिए हम अगर काम नही करेंगे, तो आज तो हम जैसा-तैसा काम चलाते रहे है, लेकिन भविष्य में धोखा खाएँगे। इसलिए मेरी आप लोगों से एक ही प्रार्थना है कि जो थोडा दुख आया है, उसे आप सहन करें। आपके दुख को हम जानते है। हम इसकी कदर करते है कि आप लोगो ने दुख सहन किया है। लेकिन आज भी आप कायर न बनो। कायरता आदमी को बेजान बना देती है। हम लोग तो सैकडो सालो की गुलामी को बरदाश्त किए रहे। अब आजाद हुए है, तो थोडे समय के लिए इतना थोडा सा कष्ट और बरदाश्त कर ले तो सब ठीक हो जाएगा। लेकिन इस कार्य में हमें आपका साथ चाहिए। अगर आप सब साथ देंगे, तो मेरा विश्वास है कि हम इस मुल्क को ऐसी जगह पर पहुँचा सकते है, जब कि दुनिया में हर जगह उसकी फिर से कदर हो। तभी वह दुनिया मे शान्ति फैलाने के काम में योग्य हिस्सा ले सकेगा और गान्धी जी ने हम से जो उम्मीद रखी थी, उसी रास्ते पर जा सकेगा। लेकिन अगर पहले हम अपना घर ठीक नही करेंगे, तो हम न तो गान्धी जी के रास्ते पर चल सकेंगे और न किसी और रास्ते पर। तब हमारा मुल्क बेजान बन जाएगा। जब तक बाहर से हम पर कोई आक्रमण नही करता, तब तक तो ठीक है। लेकिन यदि कोई आक्रमण करनेवाला आया, तो फिर से हमे गुलाम नही बनना है। इसलिए आज की जो प्रजा है, उसके ऊपर बहुत बडी जिम्मेवारी है। आज की प्रजा का कर्तव्य है कि भविष्य की प्रजा के हित के लिए आज दुखो को भी बरदाश्त करे। आज हमे भविष्य की प्रजा के सुखो की नीव डालनी है। उसके लिए हमें तैयार रहना चाहिए।

२६ जनवरी, १९५० के ऐतिहासिक दिन राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद सरदार पटेल से भारत
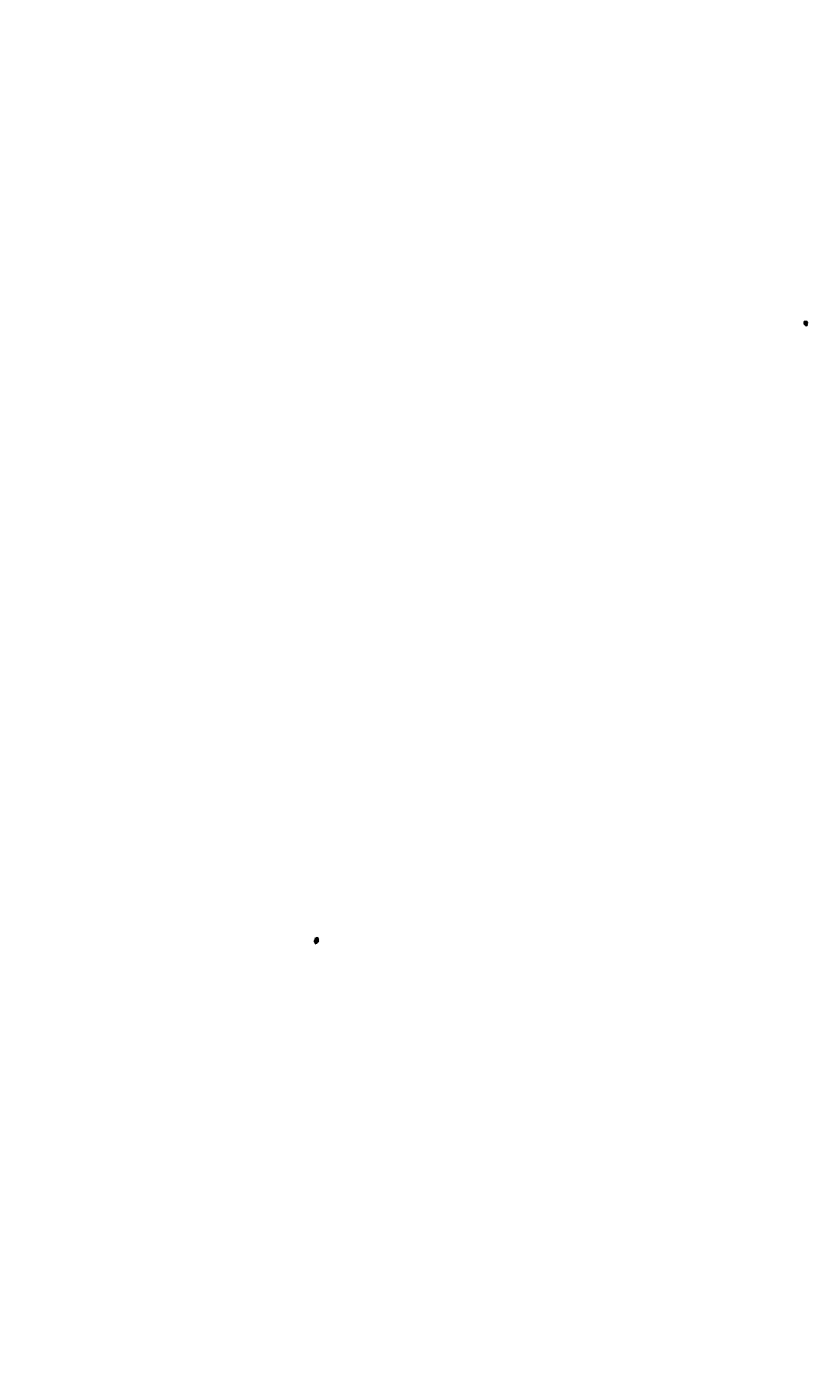
अब जितनी बातें मैंने आपके सामने कही है, उन पर आप विचार करे। अगर वे समझ में आ जाएँ, दिल मे उतर जाएँ, तो उन पर पूरा अमल करे। मैंने तो जितना हो सका, अपनी ज़िन्दगी मे कर लिया। मगर आज भी बहुत काम करने को बाकी है। मेरे जीवन के जो थोडे दिन रह गए है, उनमें भी जहाँ तक मुझ से बन पडेगा मैं काम करूँगा। लेकिन अब ज्यादातर तो बोझ आप लोगो के ऊपर ही पडेगा। तो मुझे उम्मीद है कि मैंने जो बाते कही है, उन्हे दिल मे रक्खेगे और उन पर सोचेंगे और अमल करेगे।

---

(२५)

मुझे बंगाल का दर्द है

कलकत्ता,

२७ जनवरी, १९५०

वहुत दिनो के बाद आप लोगो का दर्शन करने का मौका मिला। बहुत दिल चाहता था मिलने के लिए। वार बार मैंने कोशिश की, लेकिन अपनी शारीरिक कमजोरी की वजह से मैं हिम्मत नहीं करता था। लेकिन आखिर ईश्वर की कृपा से मुझे आप लोगो से मिलने का जो अवसर मिला है, इस अवसर पर मैं आप से दो शब्द कहना चाहता हूँ। मै बगाल के दर्द को पूरी तरह से जानता हूँ। मुझे रात-दिन इसका ख्याल रहता है। बगाल के लिए मेरे दिल में काफी दर्द और हमदर्दी रहती है। लेकिन कितना भी दर्द और कितनी भी आपत्ति आए, बगाल की जनता पर हमारी पूरी श्रद्धा है। यह कोई पहला मौका नही है। सारे हिन्दुस्तान की आजादी की नीव जब से डाली गई, तव से आज तक जव-जव मुसीवतें आई, तव-तब वगाल ने बहादुरी दिखाई। पहले तो वगाल पर, हिन्दुस्तान पर, जव परदेसी हुकूमत थी, तब परदेसी हुकूमत को हटाने के लिए जो कोशिश हुई, उसमें वगाल के नेताओ का और बगाल के नौजवानो का जो हिस्सा था, उसके कारण बगाल पर काफी जुल्म किया गया। उसका आपने वडी हिम्मत से और वडी वहादुरी से मुका-बला किया। उसके लिए सारा हिन्दुस्तान वगाल का ऋणी है और उस

वगाल को हिन्दुस्तान कभी भूल नही सकता। इसके वाद विदेशी हुकूमत हट गई, या हटने को तैयार हुई। तव आधी हुकूमत तो परदेशी थी, लेकिन जव आधी अपनी हुई, तव मुस्लिम लीग का एक प्रकार से आधा राज्य हो गया। आधी हुकूमत उनकी हुई, और आधी अग्रेज की हुई। बीच मे कोई हमारा हिस्सा था, तो नाम का था। लेकिन उस समय आप पर काफी मुसीवत पड़ी, और उसका सामना आपने किया। वगाल पर आए "डाइरेक्ट एक्शन डे" को हिन्दोस्तान कभी भूल नही सकता। उस दिन और उसके वाद कलकत्ता का जो हाल हुआ, उसे कौन भूल सकता है? कैसे भूले? लेकिन उसमे से भी आप निकल आए। उसके वाद नोआखाली मे क्या हुआ? उसे भी हिन्दुस्तान कैसे भूल सकता है? तो उसमें से भी आप लोग निकल आए।

उसके वाद समय आया और यह कहना भी मुश्किल हो गया कि अव वगाल का क्या होगा। पर जव ऐसा समय आया, तव गान्धी जी इधर ही थे। वे नोआखाली मे गए। उन्होने गाँव-गाँव पैदल चलकर लोगो के दुख मे हिस्सा लिया, लोगो को कुछ सहारा दिया। उसके वाद वे कलकत्ते में भी कुछ रोज ठहरे। गुस्से मे आकर, या अपने दुख के कारण गुस्से मे भरे हुए हमारे विहारी भाइयों ने भी उसी समय पर रोष प्रगट किया, और उसकी आग हिन्दुस्तान भर मे फैली। यह आग उत्तर हिन्दुस्तान मे ज्यादा फैली। उसका किस्सा आप सव को मालूम है। लेकिन वाद मे ऐसा समय आया कि जव हमने सोचा और सारे हिन्दुस्तान की एक राय हुई। तव आप की भी उसमे यही राय थी कि यह समय ऐसा है कि हमे किसी न किसी तरह से परदेशी हुकूमत को इधर से हटाना है, और उसके लिए जो कुर्वानी करनी पडे, सो करे। क्योकि जव तक अग्रेज हटे नही, तव तक मुल्क मे शान्ति होना असम्भव था, और दोनो कौमो के बीच झगडा मिटना भी मुश्किल था।

उस समय हमने यह निश्चय किया कि अगर हिन्दुस्तान का टुकड़ा करना ही पडे, तो एक शर्त पर हम उसे मजूर कर सकते है कि पजाव के भी दो हिस्से होने चाहिए और वगाल के भी दो हिस्से होने चाहिए।

यह ईश्वर की लीला है कि कभी अग्रेज ही वगाल को तोड़ना चाहते थे, उसके दो हिस्से करना चाहते थे। तव आप लोगो ने उसको रोका था। रोकने के लिए काफी कुर्वानी भी आपने की थी। सारे हिन्दुस्तान ने तव आपका साथ दिया था। अव उसी वगाल के दो हिस्से करने के लिए हमे खुद कहना

पडा और हम सब ने मान लिया कि उसके सिवाय कोई चारा नही है। तब हिन्दुस्तान में कोई ऐसा नही था, जो अपनी आवाज जोर से उसके विरोध में निकाले। क्योकि सब समझ गए थे कि उसके सिवाय कोई और रास्ता दिखाई नही देता। और साथ ही हमने सोच लिया कि कलकत्ता हमारे पास न रहे, तो हम किसी भी हालत में टुकडे की बात मजूर नही कर सकते। मुसलिम लीग के नेता इसको नही मानते थे। वे जिसे पाकिस्तान मानते थे, उसको तो हम मजूर नही कर सकते थे। उनका कहना था कि उन्हे सारा ही लेना है। सारा बगाल और सारा पजाब। उसका झगडा चलता रहा। आखिर उन्होने भी मान लिया और हमने भी मान लिया। लेकिन इसे मानने के बाद भी उसका जो नतीजा आया, और जो खून-खराबी हुई, उससे हिन्दुस्तान को चोट लगी। वह चोट अभी तक ठीक नही हुई, और उसको ठीक होने में कुछ समय लगेगा। उसमें बगाल को काफी घाव लगे। उसका घाव गहरा है, उसके भरने में भी समय लगेगा। उसके लिए धीरज चाहिए, हिम्मत चाहिए।

आपके पास पहले भी काफी ऐसे मौके आए, जिनमें आपने धीरज और हिम्मत दिखाई। आज भी वैसा ही मौका है कि सब्र से काम लिया जाए। हिम्मत रखो। अच्छा दिन जरूर आएगा, लेकिन अपने हाथ से हमें परिस्थिति को बिगाडना नही चाहिए। अपने काम को हमें हिम्मत, धीरज और समझ पूर्वक करना पडेगा। गुस्से से कोई काम नही होगा। जल्दबाजी करने से भी काम बिगडेगा। हमारे जो भाई हमसे अलग हुए है, उनमें हिन्दू और मुसलमान दोनो है। मै पजाब की बात छोड देता हूँ। मैं खाली बगाल की बात करता हूँ। वहाँ भी दोनो हिन्दू और मुसलमान सुखी हो, इधर भी दोनो सुखी हो। हमारा घाव जल्दी भर जाए, हमें ऐसा प्रयत्न करना चाहिए। दोनो तरफ से हिम्मत, धीरज और बुद्धि से काम लेना पडेगा। पुरानी बातें हम में से कई लोग न इधर भूल सकते है और न वहाँ भूल सकते है, और इनी मे बार-बार झगडा होता है। तो बगाल का दर्द किसको मालूम नही है ? हमारे जो लोग वहा पडे है, वे आज परदेशी हो गए। जो कल तक हमारे भाई थे और हमारे साथ हमारी आजादी की लडाई में शामिल थे, वे सब आज परदेशी हो गए। हम और वे ऐसे अलग हो गए कि एक दूसरे के दुख मे सहानुभूति तक नही दिखा सकते है।

अभी अफ्रीका मे भी हमारे लोग पडे हुए है । दक्षिण अफ्रीका वाले भाइयो से हम सहानुभूति दिखा रहे है, और उनका जो नैतिक साथ देना चाहिए, वह भी हम देने की कोशिश कर रहे है । वे आज माने हुए अफ्रीकन नागरिक है, तब भी हम पर उनका हक है। यह एक पुराना हक है। बगाल के यह जो दो हिस्से हुए, इस तरह से वे पुराने भाई-बन्धु कोई अलग थोडे ही हो सकते है ? हमारी रिश्तेदारी, हमारा सामाजिक सम्बन्ध, हमारे आर्थिक सम्बन्ध, वे सब टूट कैसे सकते है ? तो यह तो हम भूल नही सकते । लेकिन इसमे जो मुश्किले और रुकावटे पडती है, उनको रफा करना हो, तो पहले हमे अपना घर ठीक करना चाहिए ।

हमारा घर अगर ठीक न हो, तो हम बाहर किसी की मदद नही कर सकते। तो दुख तो हमारे सामने है ही। लाखो आदमी इधर आकर पडे है, कलकत्ता मे पडे है, बगाल के दूसरे हिस्सो मे पडे है। ये सब भागे भागे यहाँ आए है । अपनी माल मिल्कियत वही छोड कर आए है, सगे सम्बन्धियो को छोडकर आए है । कई लोग उनको बहकाते भी है, कि यह गवर्नमेट कुछ नही करती, सेट्रल गवर्नमेट कुछ नही करती, प्रान्त की गवर्नमेट कुछ नही करती । लेकिन इससे उनको कुछ फायदा नही मिलता है, उनका दुख मिटना नही है । मै आपके सामने सोचने के लिए जो बात रखता हूँ, वह यह है कि हमे इन लोगो का दुख मिटाना हो, तो हमे पहले अपना घर ठीक कर लेना चाहिए । और उनका दुख मिटाना हमारा कर्तव्य है ।

आज हम बगाल मे, खासकर कलकत्ता मे, जिस एक चीज को देखते है, उसे सारा हिन्दुस्तान देख रहा है। जिस से हिन्दोस्तान को दुख होता है वह यह है कि हर रोज कुछ-न-कुछ ऐसी बाते अखबारो मे आती है कि कलकत्ता के किसी भाग मे, किसी हिस्से मे या अमुक गली मे बम पडा है, या अमुक जगह बम फटा है । इधर कोई फेकर फेका, उधर कोई ट्राम जलाई, इधर एक मोटर जला दी, उधर पुलिस को चोट लगी, इधर पुलिस का आदमी मर गया, उधर नौजवानो को पकडा, इधर किसी को जेल मे रखा, उधर किसी ने जेल मे फाका किया । ऐसी बाते हम रात-दिन अखबारो मे पढते है। तब ऐसी हालत मे दुखी भाइयो का काम किस तरह हो सकता है ? जिन लोगो पर दुख पडा है, उनके दुख की तरफ ध्यान देना मुश्किल हो जाता है । जब हम इस मुसीबत मे फँसे, तो उनको कैसे ठीक करे ? बाहर के

लोगो को तो यही मालूम होता है कि सारे कलकत्ते में इतनी अराजकता फैल गई है कि वहाँ कुछ काम करना ही मुश्किल है, और रहना भी मुश्किल है।

पर जब लोग इधर आते है, तो उन्हें मालूम पडता है कि ऐसी कोई बात नही है। चन्द लोग बिगडे है, और वे मुट्ठी भर लोग सारे कलकत्ता को तग करना चाहते हैं। वे बगाल की सरकार को भी तग करना चाहते हैं, और लोगो को भी तग करना चाहते है और एक प्रकार का जुल्म करके सबको डराना चाहते है। उनकी क्या मशा है, यह मै नही समझता। क्योकि हमारी समझ में नही आता कि इनका मतलब क्या है और वे क्या कराना चाहते हैं? मै कम्यूनिस्ट आइडियोलोजी (साम्यवादी आदर्शो) को समझ सकता हूँ। लेकिन मै यह नही समझ सकता कि इस तरह से नुकसान करने से या बम डालने से या धीगामस्ती करने से कौन सी चीज़ मिलनेवाली है। लेकिन इसके साथ ही मुझे दुख भी होता है कि कलकत्ता में रहने वाले लाखो नागरिक इस चीज़ को क्या समझते है और इसकी तरफ उनका ध्यान क्यो नही जाता? क्या उनका फर्ज़ नही कि वे उसका ख्याल करें? पुलिस का काम इन कामो को रोकने का ज़रूर है। लेकिन लोगो का यह सोचना कि यह सरकार का काम है, हमारा काम नही है, बडा गलत ख्याल है। क्योकि आज देश मे जो हुकूमत है, वह परदेशी नही है। परदेशी हुकूमत के जमाने में जिस ढग से हम काम किया करते थे, उस ढग से अब हमारा काम नही चल सकता। हम से वैसा नही हो सकता, और न होना ही चाहिए। हाँ, जब आपका ख्याल होगा कि हमें यह हुकूमत नही चाहिए, उस समय आप खुद इसे हटा सकते है।

हमारे प्रधान मन्त्री इधर आए, हमारे और नेता इधर आए और उन्होने देखा और कहा कि अच्छा, यदि आप नए चुनाव करना चाहते है, अपनी गवर्नमेंट बदलना चाहते हैं, तो हम नया चुनाव कर लेगे। अब आप वैसा चाहते हो या न चाहते हो, लेकिन उन्होने तो यह कहा है। और दूसरा रास्ता हो भी क्या सकता है? क्योकि आज अगर हमें अपनी गवर्नमेंट बदलनी हो, तो उसके लिए चुनाव के अलावा दूसरी कार्यवाही नही हो सकती। नए चुनाव में कोई और भले ही जीते, मगर जो भी होगा, हमारे घर का ही होगा, कोई बाहर से तो नही आएगा। लेकिन हमने देखा कि चुनाव करना हो, तो वह

तुरन्त तो हो नही सकता। क्योंकि हमारे पास न अभी मतदाताओ के रजिस्टर है, न चुनाव की कोई तैयारी है। लाखो लोग बगाल में नये-नये आएँ है, उनको भी तो मताधिकार मिलना चाहिए। पहले की तरह कौम-कौम के अलग मत हो, तो वह भी अब काम की चीज़ नही है। अब तो एकत्र मतदान मण्डल बनना चाहिए। और उसके लिए हमें अपना कानून बदलना पडेगा। सो बहुत सी रुकावटे हैं, और उन्हे रफा करने मे टाइम लगेगा, और इतना टाइम लगेगा कि नये आम चुनावो का वक्त आजाएगा। अब तो सारे हिन्दुस्तान का चुनाव होनेवाला है, जिसमे हर बालिग को मताधिकार मिल गया है। इस तरह दो चुनावो के बीच में अन्तर बहुत थोडा रह जाएगा। बीच मे चुनाव करने से खर्च भी बहुत पड़ेगा।

जब हमने यह हालत देखी, तब बगाल की राय लेने की कोशिश की। बगाल की काग्रेस कमेटी के नेता, यहा की गवर्नमेंट और यहाँ के सब लीडरो से पूछ लिया, तो मालूम पडा कि कोई भी नही चाहता है कि अभी चुनाव हो। तब हमने कहा, तो ठीक है। अभी चुनाव मत करो, क्योंकि नया आम चुनाव तो हमें करना ही है। तब बहुत से अखबारो ने कहा, कि यह जो फैसला किया गया, वह शान्ति का फैसला है। अच्छा है, ठीक हुआ। लेकिन जो नया आम चुनाव होनेवाला है, उसके लिए ज्यादा विलम्ब नही होना चाहिए। जितना जल्दी हो, उतना जल्दी उसका प्रबन्ध करना चाहिए, और मुझे उम्मीद है कि हम जल्दी ही नया चुनाव करेगे। हम नही चाहते है कि उसमे विलम्ब हो। जितनी जल्दी हो, उतना जल्दी हमे यह काम करना चाहिए। लेकिन आप जानते ही है कि यह पहला मौका है, जब कि हिन्दुस्तान मे करोडो आदमियो को मताधिकार मिला है। यहां इतने मतदाता हो गए है कि हर प्रान्त में उनकी सूची (लिस्ट) छपाने में भी लाखो रुपये खर्च होगे। उसकी तो परवाह नही। लेकिन इसके लिए इतने प्रेस चाहिए, इतने आदमी चाहिए, सब का इन्तज़ाम करना बड़ी मुसीबत का काम है। इसमे टाइम तो लगेगा ही, पर जितना जल्द हो सके, उतना जल्द हम यह काम करेगे। उसके लिए आप भी अपनी तैयारी करे, और प्रान्त की हुकूमत भी तैयारी करेगी। लेकिन उसके लिए ठीक हवा अभी से पैदा करनी चाहिए। वह हो, तभी काम चलेगा। अब इस बारे में जो फैसला हुआ है, उसमे मैने किसी का विरोध नही देखा। यही बात ठीक भी है। फजूल एक झंझट करना, खर्च करना, टाइम

वरबाद करना, उस सब से कोई फायदा नही। अब हमें आगे अपना काम चलाना है।

जो लोग आज दिन-रात गवर्नमेंट के पीछे पड़े है, उनसे मैं अदब से कहना चाहता हूँ कि गवर्नमेंट वदलने का एक तरीका होता है। बैलट बॉक्स ही वह तरीका है। आप को मताधिकार मिल गया है, उसी से सरकार वदली जाती है या रेवोल्यूशन (क्रान्ति) से। यह जो इधर उधर पुलिस पर बम फेंकने का काम है, यह कोई रेवोल्यूशन नही है। यह तो एक प्रकार का मैडनेस (पागलपन) है। यह ल्यूनिटिको (पागलो) का काम है। हा, मैं यह तो समझ सकता हूँ कि कोई कहे कि भाई ये भी क्या करें? नौजवान है, इनको फ्रस्ट्रेशन (निराशा) हुआ है, उनके पास कोई और रास्ता नही। तो वह चीज़ भी समझने लायक है। लेकिन उसके लिए यह उपाय नही है। वे जो करना चाहते है, वह इस तरह नही होगा। उससे तो अपना मतलब पूरा नही पडेगा। वल्कि वह तो दूर हो जाएगा। मैंने कहा कि आप लोगो ने बहुत मुसीबतें उठाई, और इतनी मुसीबतें उठाई, उसका वर्णन करना भी मुश्किल है। जब इधर परदेशी हुकूमत थी, और लडाई चलती थी, उस समय वगाल में भी लडाई का क्षेत्र था। हिन्दुस्तान में और इधर वह लडाई जीतने के लिए परदेशी हुकूमत ने जो कुछ किया, उसका नतीजा क्या है? कम-से-कम ३० लाख आदमी वगाल में भूख से मर गए। उन्हे खाना नही मिला। उस समय पर कोई चिल्लानेवाला भी नही था। लेकिन आज हमारी पुलिस से आप क्यो नाराज़ हो? आप देखें कि पुलिस में कौन है? उसमें बगाल के नौजवान ही तो है। हमारे बगाल में पुलिस आफिसरो से पूछ लीजिए कि पुलिस में वगाल के लोग कितने है। मैंने पूछा तो उन्होने कहा कि करीब सेवन्टी परसेंट (सत्तर प्रतिशत) है। और नई भरती में तो सौ फी सदी हमने बगाल के लोग लिए है। अब आप उसको क्या करोगे? उस पर गोला मार कर क्या करोगे? उस पर क्रेकर फेंकने से, उसको पीटने से आपको क्या फायदा होगा? कभी आपने ख्याल किया कि ये गोला फेंकने वाले भी हमारे ही नौजवान है और रोकने वाले भी हमारे ही लोग है? वह जो रोकता है, वह किस लिए रोकता है? आप ही के लिए तो।

जब लोग कहते हैं कि इधर सिविल लिवर्टी (नागरिक स्वतन्त्रता) नही है, तब मैं हैरान हो जाता हूँ कि कहा भाग गई सिवलि लिवर्टी? क्या विलायत

में ? जो लोग रात दिन तग करते थे, दबाते थे, और मारने में भी झिझकते नही थे, उन्होने क्या सिविल लिबर्टी दी थी आप को ? आज तो हम जो चाहे, सो कर सकते हैं । क्या यह सिविल लिबर्टी नही है ? आज जिसके दिल में जो आता है, सो लिखता है, जिसके दिल में जो आता है, सो कहता है । तो आप की सिविल लिबर्टी, किसने छीन ली ? इन चन्द लोगो ने ही उसे छीना, जिन्होंने यह टेररिस्ट (आतकवाद) काम चलाया है । आप को उन्हे रोकना है । खाली पुलिस पर यह काम डाल देने से देश का काम नही चलेगा । कोई लोकशाही राज्य पुलिस के डडे से नही चलता । हाँ, हमारी तो यह आदत ही पड गई है कि मव बातो मे पुलिस को दोप दे । पुलिस का नाम ही बदनाम है । हमे यह आदत अब छोड़ देनी चाहिए । हमे अपना रास्ता बदलना चाहिए । हम रात-दिन जिस पुलिस के पीछे लगे हुए थे, वह पुलिस दूसरी थी । आज हमारी जो पुलिस है, वह दूसरी है । आज की पुलिस के लोग एक तरह से हमारे वालटियर है, स्वयसेवक है । इनको जो तनख्वाह मिलती है, वह हम पर इतना बोझ नही है कि जितना पडना चाहिए । जितना इन्हे देना चाहिए उतना हम उन्हे दे नहीं सकते, क्योकि हमारा मुल्क गरीब है । अभी बहुत लोग बेकार है । उनको पूरी तनख्वाह तो हम दे नही सकते है, लेकिन आज ये लोग जो काम कर रहे है, उसके लिए आपके दिल मे सहानुभूति न होगी, तो आप को पछताना पडेगा ।

क्योकि दो तरह से ही काम चलता है । या तो आप लोग काग्रेस के स्वयसेवको से अपना काम चलाइए या पुलिस से । कलकत्ता के एक अखबार मे मैंने पढा कि इस जलूस के लिये २० हजार रुपया खर्च किया गया । यह खर्च क्यो करना पडा ? क्योकि हम पहले काग्रेस मे जिस तरह सभा कर सकते थे, उस प्रकार आज नही कर सकते । क्योकि हमारा सारा ढग बदल गया है । ढग क्यो बदल गया ? क्योकि हमने पुरानी आदतें छोडी नही है । हमारी काग्रेस का ढाँचा, जैसा पहले ताकतवर था, वैसा अब नही रहा । अब वह टूट गया है । तो हमे इसको ठीक करना चाहिए । हमे काग्रेस के सगठन को ठीक करना चाहिए । जितने काग्रेस में काम करनेवाले भाई है, उनसे भी मैंने मिलने की कोशिश की । मै उनसे मिला, उनके साथ बातचीत की, पुलिस आफिसरो के साथ बात की, और मिनिस्टरो के साथ भी बात की । मै सबसे मिला, सब की बात मैंने समझने की कोशिश की ।

जो बंगाल का दर्द है, उसे मिटाने के लिये हमें काम करना चाहिए। मगर उस कार्रवाई को छोड़कर हम मिथ्या कार्रवाई में फंसे हैं। उससे हमारा असली काम रुक जाता है। मैं जानता हूँ कि बंगाल के नौजवान बहकावे में फँसे हुए हैं। एक-एक कालेज में दस-दस हज़ार, पाँच-पाँच हज़ार, सात-सात हज़ार लड़के पढ़ते हैं। वे पढ़ते हैं कि नहीं पढ़ते हैं, वह भी मैं पूरी तरह नहीं जानता हूँ। क्योंकि वहां तो बैठने की भी जगह नहीं है। किसी-किसी कालेज में तो तीन-तीन शिफ्ट (बारी) लगते हैं। हमने फैक्टरी में तो शिफ्ट सुने थे, लेकिन कालेजों में शिफ्ट की बात कभी नहीं सुनी थी। इधर आकर देखा कि यहाँ तो कालेजों में भी तीन शिफ्टों से काम चलता है। वहाँ स्टूडेंट बेचारे क्या पढ़ते हैं और प्रोफेसर भी उन्हें क्या पढ़ाते हैं, यह तो मैं नहीं जानता। यह जो पचास-साठ हज़ार ग्रेजुएट हर साल कालेजों से पढ़-पढ़कर निकलते हैं, उन्होंने खाली उपाधि या तूफान करना सीखा? या वे खाली कुछ ऐसा लिटरेचर पढ़ते हैं, जिसके 'वाल पोस्टर्स' (दीवारों पर नोटिस) आप देखते हैं। वे ऐसे पोस्टर होते हैं, जिनको पढ़ने से बदहज़मी होती है, मेदे की भी बीमारी होती है, दिल की भी बीमारी हो सकती है, लेकिन कोई और फायदा नहीं हो सकता। इसका उपाय हमें करना चाहिए।

यह भी मैं जानता हूँ कि कलकत्ता हिन्दुस्तान का एक केन्द्र है। हिन्दोस्तान के उद्योग का यह सबसे बड़ा केन्द्र है। पहले तो हिन्दुस्तान की राजधानी ही इधर थी। लेकिन आज भी उद्योग की राजधानी यही है। इधर से ही धन पैदा होता है। देहातों से जो धन पैदा होता है, या किसानों से जो धन पैदा होता है, वह एक प्रकार का है। कारखानों से जो धन पैदा होता है, वह दूसरे प्रकार का है। आजकल हमें दोनों की जरूरत है। इनमें से एक को भी हम छोड़ नहीं सकते। एक के भरोसे रहकर हम दूसरे को नहीं बढ़ा सकते। दोनों को हमें साथ-साथ चलाना होगा। यह उद्योग का क्षेत्र है, और इस उद्योग में बंगालियों का हिस्सा कम से-कम है। बंगाल के नौजवान उसमें सब से कम हैं। यहाँ बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ हैं, मगर उनमें बंगाली नहीं हैं। वे क्यों नहीं हैं? इसकी क्या वजह है? ऐसा क्यों हो गया है? तो मैं दोनों को समझाना चाहता हूँ। कारखानों और कम्पनियों के मालिकों से मैं कहना चाहता हूँ कि उन्हें बंगाली नौजवानों के प्रति अपना फर्ज़ अदा करना पड़ेगा। उन्हें उनका दिल समझना पड़ेगा। उनके अलग रहने से किसी को

फायदा नही होगा। इसी प्रकार जो बंगाली नौजवान बेकार निकलते है, उनको भी समझाना पडेगा कि अब हर प्रान्त मे अपनी हुकूमत है और उनका फर्ज है कि वे उसका साथ दे।

पहले बगाली नौजवान अमलदारी करने के लिए दूसरे प्रान्तो मे जाते थे। अब भी अगर वे उम्मीद रखे, कि अध्यापकी, प्रोफेसरी के लिए, डाक्टर बन कर, वकील बन कर, या कोई धन्धा करने के लिए वे आसाम में, विहार में या किसी और प्रान्त में जाएँगे, तो आज वहा के नौजवान भी समझते है कि उनको भी मौका मिलना चाहिए। इस तरह दरवाजा वन्द हो जाता है और हमारे बीच मे थोड़ा-थोडा अन्तर पड जाता है। हमारे हिन्दुस्तान में यह एक प्रकार की बीमारी है कि प्रान्तीय भावना पैदा हो गई है। हमारी दृष्टि संकुचित हो जाती है, और जो विशाल भावना हमारे हिन्दुस्तान की है कि हम सब भारतवासी है, उसे भूलकर हम प्रान्त-प्रान्त के सकुचित क्षेत्रो मे फँसते जा रहे है। उसको हमें रोकना है। आज-कल लोग माँगते है कि हमारा प्रान्त अलग किया जाए। बगाल के लोग भी मागते है कि हम को यह हिस्सा दिया जाए, वह हिस्सा दिया जाए। वे कहते है कि हमारा टुकडा पड गया, हमारा प्रान्त छोटा बन गया। उसे भी मै समझता हूँ और मेरी कोशिश भी यही है कि बगाल को जितनी मदद की जा सके, उतनी मै जरूर करूँ। बहुत दिनो से बगालवाले कहते थे कि हमे विहार के कुछ जिले दिए जाएँ, तो मैने कोशिश की। यह कोई आसान बात नहीं है। क्योकि लोगो को समझाना पडता है, दूसरे प्रान्तवालो को समझाना पडता है, वहाँ की रैयत को समझाना पड़ता है। हमें देखना पडता है कि कोई फिसाद न हो। तो आपने देखा कि जो पाच-छ सौ अलग-अलग राज्य थे, उन सबको हमने एक कर दिया, लेकिन कोई फिसाद नही होने दिया। और जिसने फिसाद किया, उसका सिर फूट गया। इसी तरह से बगाल का मसला भी हल करना हो, तो उसमे आप को मेरा साथ देना चाहिए। मेरे काम मे आपको मुसी-बत नही डालनी चाहिए।

लेकिन एक तो मै शारीरिक कमजोरी में फँसा हुआ हूँ। दूसरा हमारे मुल्क मे आज जो बडी-बडी समस्याएँ है, उनको मै हल न कर सकूँ तो उसका असर भी आपके ऊपर पडेगा, और आप और ज्यादा मुसीबतो में फँस जाएँगे। उनको भी हमें हल करना है, और साथ-साथ आपका काम भी करना

है। अगर आप मेरा साथ दें, तो यह काम बन सकता है। तो मैं आपका साथ इस तरह से चाहता हूँ कि इतनी पुलिस हमें मीटिंग के लिए न रखनी पड़े। क्या जरूरत है इसकी? लेकिन आज मैं घर से बाहर निकलूं, तो मेरे पीछे पुलिस लगेगी। अपनी जिन्दगी भर मैंने अपने पीछे पुलिस को नहीं देखा था। हाँ, छिपी-छिपी पुलीस मेरे पीछे जरूर रहती थी। यह देखने के लिए कि यह क्या करता है। लेकिन अब तो यह सावधानी रखने के लिए मेरे पीछे पुलिस है कि कौन मुझको मारनेवाला है। आखिर मुझको कौन मारनेवाला है? लेकिन आज हालत कुछ ऐसी हो गई है कि हमारे कई नौजवान कुछ-न-कुछ अपने दिमाग से हट गए हैं। सभी जगह पर ऐसा नहीं हुआ। बहुत-से तो अभी तक अपना मनुष्यत्व ठीक रखते हैं। लेकिन जो बिगड़े हैं, वे गुस्से में भी हैं। उनको ठीक करना हमारा काम है। मैं कितनी भी कोशिश करूँ कि यह पुलिस हट जाए, यह नहीं मानती। आज मीटिंग में भी इतने लाखों लोगों को जमा करना था, तो पुलिस भी आई। असल में हमें देश की आबोहवा बदलनी चाहिए।

तो इस मीटिंग की बात छोड़कर मैं दूसरी बात पर आता हूँ। हमारे देश का धन हमारे उद्योग (इण्डस्ट्री) से ही पैदा होता है। उसको ठीक चलाना हो तो हमारे मजदूर वर्ग को अच्छी तरह से समझाना चाहिए कि उनका जितना हक है, उतना उनको दिलाना हमारा काम है। जो मालिक लोग हैं, जो एम्प्लायर्स हैं, वे इस समय अपनी बुरी नीयत छोड़ दें, काला-बाजार न करें, प्रोफिटियरिंग (नफाखोरी) न करें और मुल्क का ध्यान कर ज्यादा नफा लेने की आदत छोड़ दें। उन्हें चाहिए कि वे मुल्क का साथ दें। मैं उन्हें समझाना चाहता हूँ। नौजवान कहता है कि नहीं, इस तरह से नहीं हो सकेगा। जो चीन में हुआ, उसी प्रकार यहाँ भी करो। चायना में क्या हुआ, इसे तो मैं नहीं जानता। लेकिन मैं आपसे यह कहना चाहता हूँ कि रूस में भी जब क्रान्ति हुई थी, तो आज के रूस की रचना करने में, आज जैसा उन्नत रूस बनाने में, उसको ठीक करने में, उन्हें बहुत काफी कुर-बानी करनी पड़ी थी, बहुत काफी मेहनत करनी पड़ी थी। आज दुनिया में सब से अधिक धनवान मुल्क अमेरिका है। लेकिन अमेरिका जब आजाद हुआ तो उसका पहला कान्स्टीटयूशन बनाने में सात साल लगे थे। हमारा मुल्क भी तो बहुत बड़ा है। लेकिन हमने तीन साल में ही, इतनी मुसीबतें होते हुए भी,

अपना कांस्टीटयूशन बना दिया। आपको समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान के दो टुकडे होते हुए भी आज जितना हिन्दोस्तान एकत्र हुआ है, उतना बडा हिन्दुस्तान पहले कभी नही था। आप हमारे पिछले इतिहासो को देख लीजिए। सदियो में जो कभी नही हुआ था, वह एक ही रग मे आज हिन्दुस्तान पर हो गया है। यही बहुत बडी कृति है।

अमेरिका धनवान हुआ, तो उसके लिए कितने सालो तक उसको मेहनत करनी पडी। यह इतिहास आपको देखना चाहिए। इसमे बहुत साल लगे, बहुत मेहनत करनी पडी और तब जाकर वह हृष्टपुष्ट हुआ। हमारी आज़ादी तो अभी दो साल की ही है। अभी से हम उसमें से हिस्से बाँटना चाहते है कि नही, जितना है उसमे से हमारा शेयर एकदम हमको दो। इस बँटवारे से सब गरीब हो जाएँगे, कोई भी धनवान नही हो सकता। अब देश मे धन-वान थोडे हैं। मै कबूल करता हूँ कि हिन्दुस्तान में थोडो के पास ज्यादा धन है। लेकिन जो कुछ है, वह भी कुछ नही है। आप अमेरिका मे जाएँ और देखे। और देशो मे भी देखे, तो आपको पता चलेगा कि हमारे धनवान कुछ भी नही है। लेकिन उनके धन का उपयोग ठीक करना हो, तो इस ढग से काम करने मे उन्हे भी लाभ होगा और हमे भी लाभ होगा। आज हिन्दुस्तान को उठाना हो, तो वह इसी तरह हो सकता है कि धनवान अपना लोभ छोड दे और मजदूर अपना काम वफादारी से करे। आज जिस प्रकार मजदूरो मे इस बात का प्रचार किया जाता है कि बार-बार स्ट्राइक करो, तूफान करो, तो इस नीति से हमको और सभी को भारी नुकसान होने वाला है। उसकी भी अगर कभी ज़रूरत होगी, तो उसका समय आएगा। लेकिन मै नही मानता कि हमको अब कभी भी इसकी ज़रूरत पडेगी। हिन्दुस्तान मे हमारी सस्कृति ऐसी है कि हम आपस मे बैठकर सब चीज़ो का फैसला कर सकते है।

कई लोग कहते है कि पूजीपति ब्लैक मार्केट करते है। जब लडाई चलती थी, तो ब्लैक मार्केट का धन बहुतो ने लिया था। उस समय पर जिसने ज्यादा पैसा बनाया, वे सब आज धनी है। पर उस समय परदेशी हुकूमत थी। उस समय पर हमने कुछ नही किया, कोई बोला भी नही। लोग हम से कहते भी थे, और वे लोग मानते भी थे कि इस परदेशी हुकूमत को जितना कम पैसा देना पडे, ठीक है। इन्कम-टैक्स (आयकर) न दे, तो भी ठीक है। पर अब

उन बातो से न उनका फायदा होता है, न हमारा फायदा होता है। हमें तो अब अपना सारा ढग बदलना है। कई लोग कहते है कि हमारे सारे उद्योग को नैशनलाइज (राष्ट्रीयकरण) करो। सरकार चाहे तो किसी भी उद्योग को अपने हाथ में ले सकती है, उसमें आज कोई रुकावट नही है। लेकिन आज हम में यह ताकत नही है। क्योकि हमारे पास इतने साधन नही है, इतने अनुभवी आदमी भी नही है। इस काम के लिए हमें जितने प्रवीण और स्वच्छ आदमी चाहिएँ, आज हमारे पास नही है।

आज हमने बिजिनेसमैन (व्यापारी) के पास से बिजनेस ले लिया, क्योकि बिजनेस (व्यापार) वाले गडबड करते थे। कुछ काला बाजार करते थे, कुछ पैसे ज्यादा लेते थे। तभी हमने कण्ट्रोल किया। हमारी सरकार यह समझती थी कि हम कण्ट्रोल चलाएँ। लोग भी कहते है कि कण्ट्रोल करो। हम कण्ट्रोल तो करते है, लेकिन बिजनेसमैनो की जगह पर जिन्हें रखते है, वे अच्छा काम करते है, ऐसा कोई नही कहता। उनके बारे में भी लोग छीटे डालते है कि ये लोग घूसखोरी करते है, पैसा खाते है, और इन बातो से सरकार बदनाम होती है। तो उससे क्या फायदा? उसमे तो हम सब बदनाम होते जाते है। तो गाधी जी ने कहा कि कण्ट्रोल हटा दो। तो हमने उसका भी एक एक्सपेरिमेंट (परीक्षण) कर लिया। अब उसमें हम ऐसी मुसीबत में फँस गए कि लोग बोले कि फिर से कण्ट्रोल बैठाओ। तो हमने फिर से कण्ट्रोल बैठाया। अब कई लोग कहते है कि भाई कि इस गवर्नमेंट को तो अपने माइन्ड (दिल) की भी खबर नही। यह कहना तो शायद ठीक है। लेकिन हमारा इतना बडा मुल्क है। जिसके सारे ढाचे को चलाने वाले परदेशी लोग, इसे अपनी धाक से चलाते थे। सारा काम अग्रेजो के रोब से, परदेशी की धाक से चलता था। तब पचपन-साठ की फीसदी अँग्रेज ऊँची सर्विस में थे। उन सब को हमने निकाल दिया। आप देखें अब पुलिस में किसी अँग्रेज का चेहरा आपको दिखाई पडता है? हमारे जो पुराने लाट साहब इधर थे, उसके स्टेच्यू (मूर्त्ति) आज भी खडे है। ज़माना तो आज बदल गया। रेवोल्यूशन किसको कहते है? रेवोल्यूशन तो हो गया। लेकिन अब तो हमें रचनात्मक-कार्य करना है।

मैं आप से कहना चाहता हूँ कि आज हमको, आपको, मजदूरो को, मिल कर सब को काम करना है। सब पुरुषो और सब स्त्रियो को साथ मिलकर काम

करना है। झगडा छोडकर मुहब्बत और प्रेम से हमें अपना काम करना होगा। यदि हम कोई जहर पैदा करेंगे, प्रान्त प्रान्त मे ईर्ष्या की आग पैदा करेंगे, फिसाद में पडेंगे तो उसका परिणाम यही होगा कि कलकत्ता का उद्योग कलकत्ता से चला जाएगा। जहाँ शान्ति होगी, वहाँ चला जाएगा। उससे किसी को कोई फायदा नही होगा, नुकसान-ही-नुकसान होगा। वगाल के नौजवानो के प्रति मेरी पूरी सहानुभूति है। लेकिन मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि यह जो फार्मेटिव पीरियड (रचना काल) है, जो अपना चरित्र वनाने का समय है, इस समय पर उन्हे अपने हाथो का प्रयोग समझदारी से करना चाहिए। अगर हम फिसादो में पड जाएँगे, तो उससे कोई फायदा नही होगा, वल्कि नुकसान ही होगा। लेकिन मेरी शिकायत जो आज आप लोगो के सामने है और वह यही है कि आपको इस तरह से विना सोचे-समझे काम नही करना। यदि किसी जगह पर तूफान हो, तो हमारा फर्ज़ है कि हम हट जाएँ। वहाँ एक ट्राम में या एक वस में पचास मुसाफिर वैठे है, दो नौजवान आएँ और कह दिया कि सब उतर जाओ, तो सव भेड के माफ़िक या वकरे के माफिक उतर जाएँगे। यह क्या वात है? यह आजाद हिन्दुस्तान के नागरिको का धर्म नही है। उनका भी तो कुछ फर्ज़ है? नागरिको का भी तो कुछ हक है? उन दो नौजवानो का कान उन्हे पकड़ना चाहिए।

जव इस तरह से काम होगा, तव काम चलेगा। मैंने कल अखवारवालो से भी कहा कि अखवारवाले दो प्रकार के वाजे वजाते है। दो आवाज़ें वे एक साथ निकालते हैं। एक तो कहते है कि कुछ भी ठीक नही है, कुछ भी अच्छा नही है। दूसरे कहते है वे करे क्या? लोग कुछ करते नही, गवर्नमेंट कुछ करती नही, पुलिस भी वुरी है आदि।

लोग जेल में फाका क्यो करते है, यह मेरी समझ मे नही आता। हिन्दुस्तान मे अनाज की कमी है, इस वजह से वे क्या सहानुभूति से फाका करत है? या कोई और वात है? मुझे वताओ तो सही। ये जो तूफान करनेवाले लोग है, उन्हे पकडने के साथ ही, उनके जेल जाने के पहले ही अढाई सौ रुपया तो हम उन्हे उनका कपडा-लत्ता (आउटफिट) के लिए देते है। यानी ढाई सौ रुपया तो उनको वखशीश देते है, और उसके वाद वह जेल मे गया तो रोज ढाई रुपया उसको खाने के लिए देते है। रोज़ के ढाई रुपये! वताइए मुझे यह क्या हुआ? अव यह रिफ्यूजीज़ की वात लीजिए। वगाल मे ऐसे कितने

लोग है, जिनको ढाई रुपया रोज़ खाने के लिए ही मिलता है ? वे कैसे माँगते है ? और लोगो को ढाई रुपये मिलते है, तो उनके बच्चे है, फैमिली (परिवार) है, उनकी स्त्री है, माता है। ऐसा होता है, तो फिर लोग भला बाहर क्यो रहे ? वे जेल में ही क्यो न जा बैठें ? इतना मिलने पर भी फिर वे फाका क्यो करते है ? क्योकि वे लोग तो चार दफा खाते है और बाहर प्रोपेगेंडा चलता है कि फाका कर रहे हैं।

इस समय भी, जब ये लोग फाका करते है, वे क्या चाहते है ? भला बताइए तो इस प्रकार के लोग जब पुलिस की शिकायत करते है, तब मुझे दुख होता है। क्या आप लोगो का यह धर्म नही है कि हमारी पुलिस के लिए कुछ सहानुभूति बता कर उनकी मदद करें ? स्वतन्त्र मुल्क में पुलिस की जितनी इज्जत है, वैसी इज्जत हम आज उन्हे नही देगे, तो हमारी स्वतन्त्रता बेमाइना होगी। आज हमारा आज़ाद मुल्क है, तो हमारा फर्ज़ हो गया है कि जो हमारे रक्षक हो, उनका हम साथ दे। उनको कम-से कम काम करना पडे, ऐसा काम करना हमारा फर्ज़ है। यह सब तो उनका काम नही है। आज मै देखता हूँ और आप भी अखबारो में पढते होगे कि हर रोज़ किसी न किसी जगह पर पुलिस ने मारा, लेकिन कोई मरा नही। पहले कई रोज़ पुलिस ने गोली चलाई, तो आप लोग एकदम गुस्से हो गए। कहने लगे, उसका ट्रायल करो। उस समय तो सब ने शोर मचाया। अब जब पुलिस मार खाती है, तो आप बोलते क्यो नही ? क्यो आप खामोश बैठे रहते है ? आपको राज चलाना है या नही ? चलाना हो तो हम सबको समझ लेना चाहिए कि हर एक व्यक्ति का धर्म है, हर एक हिन्दुस्तानी का फर्ज़ है कि अपनी ड्यूटी का, अपने धर्म का पालन करे। मैं तो आपसे कहना चाहता हूँ कि तूफान करनेवाले थोडे ही लाग है। ये थोडे से आदमी लोगो को तग करते हैं, देश की हवा बिगाडते है। उनको समझाओ। स्वयसेवक दल बनाओ और उनको पकडो। ये कहते है कि ये लोग अण्डर ग्राउण्ड (छिपे) रहते हैं, भीतर में, भूतल में रहते है। भूतल कहाँ है ? यही, हमारा ही तो भूतल है। अगर ऐसा आदमी हमारा भाई हो, हमारा लडका हो, हमारा रिश्तेदार हो, तो उसको समझाना चाहिए कि वह गलत रास्ते पर है। उसे कहना चाहिए कि तुम ऐसा गन्दा काम छोड दो, नही तो मै तुमको पुलिस में देता हूँ। इस तरह से जब तक हम सक्रिय सहायता नही देंगे, तब तक हमारा काम नही चलेगा, और देश का खर्च भी बढता

जाएगा। इनके लिए पुलिस रखो, इनके लिए जेलखाना रखो, इनको खाने-पीने को दो। यह सब बाहर से तो नही आएगा, हमको ही तो देना पडेगा। तो हमारे जो बेचारे भाई बेकार पडे है, जो बाहर से आए है, जो रिफ्यूजीज है, उन्ही को ज्यादातर वे वहकाते है। हालाकि इस से रिफ्यूजी बेचारो को तो कोई मदद नही मिलती। वल्कि उल्टा काम होता है।

आप लोगो को मेरी सलाह है कि इस रास्ते को छोड दो। जब शान्ति हो, तभी हम रचना कर सकते है। इधर जो लोग पडे है, उनको भी सुख हो, और बाहर जो दुखी हो रहे है, उनका भी कुछ इन्तजाम हो। हम बार-बार सुनते है कि पूर्वी पाकिस्तान मे हमारे जो भाई पडे है, वे आजकल बहुत तग किए जा रहे है और उनका वहाँ रहना मुश्किल हो गया है। यदि यह चीज आगे वढी तो वहाँ से और भी लोग इधर आएँगे। हमारे यहाँ तो इतनी जगह भी नही है। और वे आएँ, तो फिर क्या होगा? उसका रास्ता हमें बनाना पडेगा। ऐसे तो चलेगा नही। कोई-न-कोई रास्ता तो सोचना ही पडेगा।

लेकिन उसके लिए पहले आप अपना घर ठीक कर लो और मेहरबानी करके कोई झगडा न करो। बाहर से किसी को यह मालूम नही पडना चाहिए कि हमारे घर मे कोई रोग है, कोई खटपट है या कोई झगडा है। तब इन लोगो को भी शान्ति होगी। ये लोग, जो वहा पडे है, उनके दिल पर क्या बीतती होगी कि हम इधर इतने दुख मे पडे है, और उधर कलकत्तावाले क्या कर रहे है? हा, इस रास्ते पर चलने से अगर उनका दुख रफा हो, तो मै भी उनका साथ दू। लेकिन यह नही होगा। इससे तो उन का दुख वढता जाएगा। तो हमें इस प्रकार का काम करना है कि जिस से देश के धन की वृद्धि हो। एक तो हमें किसानो को समझाना है कि जितना बने, उतना ज्यादा अन्न पैदा करो। जितना धान आज पैदा करते हो, जितना अनाज पैदा करते हो, अपने खाने के लिए जरूरी भाग रखो, बाकी गवर्नमेंट को दे दो। सरकार ने जो दाम मुकर्रर किया है, उसी दाम पर उसे दो। हमारे कई लोग वहाँ लोगो को समझाते है कि सरकार को दाम मुकर्रर करने का क्या अधिकार है, यह तो तुम्ही करो। तुम न दो तो सरकार को ज्यादा देना पडेगा। वह झख मार कर देगी। पर सोचो तो कि सरकार कहाँ से लाएगी? देगी तो ठीक। लेकिन कहाँ से देगी? किस के हिस्से में से निकाल कर देगी? ये जो इस तरह

की सलाह देते है, उनके खीसे में से नही, हमे अपने आप के खीसे से ही उसे देना पडेगा। आप को याद है कि ३० लाख आदमी इधर भूख से मर गए। अब इधर आज़ादी के बाद हमने कुछ भी बिगाड किया हो, कण्ट्रोल किया हो या रिश्वतखोरी देखी हो, कितनी भी बुराई की हो, लेकिन इन तीन सालो में हमने हिन्दुस्तान में किसी को भूख से नही मरने दिया। आपको समझना चाहिए कि हम कहाँ से अनाज लाएँ? करोडो मन अनाज बाहर से लाते हैं। उसका कितना खर्च पडता है, यह आपको मालूम नही। करोडो रुपये उस पर खर्च करने पडते है।

तो हम अपने किसानो को समझाएँ कि हमारे मुल्क में जो अनाज पैदा होता है, उसका हम ठीक तरह से उपयोग करें। जो हमारे दुखी लोग है, जिसके पास अनाज नही है, जैसा कलकत्ता शहर है, वहाँ अनाज भेजें। कलकत्ता शहर में तो बाहर से ही अनाज आएगा। इधर कौन अनाज पैदा करेगा। लेकिन कलकत्ता के आसपास जो किसान लोग है, वे अनाज पैदा करते है। उनको समझाना चाहिए कि कलकत्ता के लाखो आदमियो को अनाज देना उन्ही का काम है। अगर वे लालच करें, उसके लिए ज्यादा कीमत माँगे, वह कलकत्ता को देनी ही पडेगी। मगर आज कलकत्ता की हालत ऐसी नही है। बहुत थोडे लोग ही ऊँची कीमत दे सकते है। बाकी ज्यादातर तो मध्य वर्ग के लोग हैं, जो बहुत ही दुखी है। बेकारी तो है ही, महँगाई तो है ही। तो आज सब हिन्दुस्तानियो का फर्ज़ है कि वे देशभर का थोडा-थोडा दुख आपस मे बाँट ले। दो साल तक अगर हम बँटवारा करके दुख उठा लें, तो पीछे हम सब सुख के हिस्सेदार होगे।

यदि आज कलकत्ता गिरा, तो बगाल गिर जाएगा। फिर कौन जिन्दा रहेगा? लेकिन बगाल को अपनी असली जगह पर आ जाना चाहिए। हिन्दुस्तान की जो नेतागिरी उसी के पास रही, वह उसे लेनी चाहिए। इस प्रकार हमारा काम चले, तो सारा हिन्दुस्तान ठीक हो जाएगा। आज झगडे का समय नही है। मैंने काग्रेस में काम करनेवालो से भी कहा कि मेरी आप लोगो से यह आखिरी अपील है। अब आप सब आपस मे समझ जाइए। यह झगडे का समय नही है। अभी हमको मिनिस्ट्री मिली तो क्या, न मिली तो क्या? सारी उम्र हमारा घधा तो दुख उठाने का था। लोगो के लिए जेलखाने जाने का और दुख उठाने का। जब लडाई चलती थी, तो आप ही ने कितना दुख

उठाया ? तब कितने लोग भूख से मरते थे। उस समय पर जो यहाँ बाढ आई, तो आप ही ने वह बाढ बरदाश्त की थी। दुष्काल आया तो उसको बरदाश्त किया, उसका भी सामना किया। उससे भी नही डरे। तो अब आप यह क्या कर रहे है ? इस चीज़ को हमे खत्म करना चाहिए और सब को साथ मिलकर काम करना चाहिए। मिनिस्ट्री के लिए हमे आपस मे झगडना नही चाहिए। यह दुनिया का राज चलाने का ढग नही है। इस तरह से कुछ भी काम नही चल सकता है। किसी ने बुरा काम किया तो उसको पकडना चाहिए। उसको ठीक रास्ते पर लाना चाहिए। जो हो सके, जो बात सिद्ध हो सके, उसको सामने लाना चाहिए।

यदि कलकत्ता के नागरिक अपनी गवर्नमेंट की बुराई करे, तो उसमें उनकी अपनी ही बुराई होगी। क्योकि जैसे लोग है, वैसा ही राजा होता है। जैसे लोग होते है, उनके लायक ही राज मिल जाता है। मै यह मानता हूँ कि आज हम सब को मिलकर, एक दूसरे को साथ लेकर, काम करना चाहिए। तभी हमारी बेहतरी हो सकती है। अब मैने आपसे जो कुछ कहा, उसपर आप सोचे और उसपर ख्याल करे। मेरे लिए बार-बार तो इधर आना भी मुश्किल है। लेकिन मेरे दिल मे आग भरी है, और मेरे दिल मे कलकत्ता के लिए गहरी सहानुभूति है। वह मुझको इधर बुलाती है, इसीलिए मै यहाँ आया।

मै आप से बहुत नम्रता से प्रार्थना करता हूँ कि एक तो आप अपने शहर में कोई प्रान्तीय भावना न रखे, कोई ऐसा झगडा न रखे। साथ मिलकर काम करें, क्योकि इस मुल्क की आज की स्थिति मे, इस शहर मे कितने ही और और प्रान्तो के लोग है, और उन सब के पास आपका उद्योग पडा है। उनके साथ मिलकर हमे काम करना है। वह आप की मदद मे ही हो सकता है। वह झगडे से नही हो सकता। दूसरा जो फिसाद यहाँ हो रहा है, उसको भी बन्द करना है, और अपना रोज़गार बढाना है। वह किस तरह से बढे, उसके लिए हमे इधर की आबोहवा बदलनी है कि हमारा धन बढे। जब धन की वृद्धि होती है, तभी उसके बाँटने का समय आता है। हाँ, बाँटने के समय पर आप अपना हक ले सकते है। लेकिन जब पैदा न हो, तब तो किसी को कुछ भी नही मिलेगा। तो उनके लिए तैयारी करो।

अगर हमारी पुलिस मे कोई त्रुटि हो, तो हमारी सरकार के पास हमे कहना है। पुरानी बाते हमे भूल जानी है कि हमारी पुलिस रिश्वत खाती

है, जुल्म करती है। वे सब बाते अब गई। आज तो हमारी पुलिस अपना तन तोड कर मेहनत से काम करती है। उनका साथ देना, उन्हे सहानुभूति देना हमारा आपका कर्तव्य है। तभी हमारा काम चलेगा। नई पुलिस में हम बगालियो को ही रखेगे ओर किसे रखेगे ? वे भी तो हमारे अपने नौजवान है। उन्हे बुरा कहते रहना हमारे लिए लज्जास्पद है। अगर सब बुरे है, तो अच्छा कौन है ? अब कोई बाहर का इधर नही है। सभी हमारे है। तो हमे सारी चीज बदलनी चाहिए।

यह तो मैने बता ही दिया कि अखबारवालो को क्या करना है। लेकिन जिनके पास अखबार नही है, जो प्रोफेशन के लोग है, जो समझदार लोग है, उनके लिए खाली अखबार पढकर बैठ जाने से हमारा काम नही चलने का। जो बात अखबार मे लिखी गई है, अगर वह सही नही है, तो उनको ठीक करना भी हमारा ही काम है। हमे अपनी आवाज उठानी चाहिए कि यह चीज बहुत खराब है। इस चीज को चलने नही देना चाहिए। इस तरह हमे अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। तब तो काम चल सकता है। हर मामले में जहा गडबड हो, हमे स्वयसेवक दल बनाकर उस गडबड को खत्म करना है। जिस से बगाल की इज्जत और कलकत्ते की इज्जत बढ जाए, और कलकत्ता फिर से एक दफा सारे हिन्दुस्तान की आबोहवा बदले ओर सारा ससार समझ जाए कि कलकत्ता के नागरिक समझदार है और स्याने है। वैसे ही काम हमें करने चाहिए। मै इतना ही कह कर प्रार्थना करना चाहता हूँ कि परमात्मा हमे इसमे सफल होने की शक्ति दे।

जयहिन्द !

---

(२६)

दिल्ली प्रदर्शनी का उद्घाटन

२९ जनवरी, १९५०

प्रमुख साहब, भाइयो और वहनो,

इस प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करने का काम मैंने कबूल कर लिया, इसका कुछ रहस्य मैं आप को समझाना चाहता हूँ। जब २६ ता० को पूर्ण स्वराज्य को घोषणा हुई, तो उसी मौके पर यह प्रदर्शनी खोलने का विचार था। लेकिन उस दिन यह नही हुआ। परन्तु इससे कोई फर्क इसके महत्व मे नही पडता। क्योंकि संकल्प तो यही था कि इस प्रदर्शनी को उसी दिन खोला जाए। लेकिन उस दिन इतना काम था कि उसमे समय निकालना भी बहुत मुश्किल था और आम जनता को दो जगह जाना भी मुश्किल था। उस समय पर कुछ हवा भी ऐसी थी और बादल भी घिरा हुआ था। तो उस समय इस काम को मुलतवी रखा। पर उससे कुछ नुकसान नही हुआ। देहात के लोग उस रोज ज्यादा आए थे, परन्तु उनके लिए भी दो जगहो पर जाना मुश्किल होता। लेकिन यह तो कोई एक दिन का काम नही है। उस रोज जो विधि हुई, वह तो एक ही रोज़ की थी, लेकिन प्रदर्शनी तो कई दिनो तक खुली रहेगी। देहातवालो को भी मालूम हो जाएगा कि प्रदर्शनी खुल गई है, और वे लोग आ जाएंगे, और देखेंगे। तो उससे आपको नाउम्मीद होने की कोई जरूरत नही है। क्योंकि

प्रदर्शनी का असल काम तो उसे शान्ति से देखने का है। उसमे क्या चीज है और क्या-क्या चीज हमारे मुल्क मे बनती है और क्या-क्या चीज देहात में बनती है, क्या-क्या चीज शहरो मे बनती है, क्या-क्या चीज ग्रामोद्योग से, हाथ से बनती है, क्या-क्या चीजे मशीनो से बनती हैं, यह सब हमे शान्ति से देखना चाहिए। फिर हमे सोचना है कि इनसे कोन सी चीजो को हमे आगे बढाने की कोशिश करनी चाहिए, और कौन-सी चीजो को हमे खुद इस्तेमाल करने की कोशिश करनी चाहिए, जिससे मुल्क को फायदा हो।

मैंने जो यह प्रदर्शनी खोलने का बोझ उठाया है, वह इसी मतलब से कि आज से ठीक २० साल पहले २६ जनवरी १९३० को हमने एक प्रतिज्ञा ली थी। वह यह कि हमे अपने देश की सम्पूर्ण आजादी चाहिए। परदेशी हुकूमत का कोई साया भी हमारे ऊपर बाकी नही होना चाहिए। हमारी वह प्रतिज्ञा भगवान् की कृपा से पूरी हुई। वह तो ठीक हुआ। लेकिन जिस तरह से हमें स्वराज्य मिला है, उसमे उतना कष्ट नही मिला, जितना उसकी प्राप्ति में उठाना चाहिए। उसके अनेक कारण है, लेकिन उन कारणो मे जाने की जरूरत नही। जो काम आसानी से होता है, जिसमे ज्यादा कष्ट नही उठाना पडता है, उसकी पूरी कीमत प्राय मालूम नही पडती। तो स्वराज्य हमको बहुत आसानी से मिल गया। अगर स्वराज्य के लिए किसी ने कष्ट उठाया तो गान्धी जी ने उठाया और उनकी कृपा से और उनके आशीर्वाद से हमारे मुल्क का इतना बडा यह काम पूरा हुआ। वह तो ठीक है। उनके पीछे हम चन्द लोग चले। कई लोग जेलखाने मे गए, कई लोगो ने अपनी मिलकियत की बरबादी की, कई लोग शहीद भी हो गए।

लेकिन हिन्दोस्तान की समस्या आसान नही थी। यह बहुत बडा काम था। यह इतना बडा मुल्क है और इस मे अनेक प्रकार के मजहब और अनेक प्रकार की पृथक् पृथक् भाषाएँ है। इतने बडे मुल्क को एक बनाना, इसकी इतनी रियासतो को एक बनाकर, एक सगठन मे डालकर, सारे मुल्क को आजादी दिलाना कोई आसान काम नही था। लेकिन इतने बडे काम के मुकाबले मे हमको बहुत कम कष्ट उठाना पडा, इसलिए हमे उसकी कदर कम है। तो भी इस २६ तारीख (१९५०) को सारे मुल्क को मालूम पड गया कि हमारा मुल्क आज किसी भी तरह से किसी परदेशी हुकूमत की साया में या किसी और मुल्क के काबू मे नही है। तब सारे मुल्क मे एक प्रकार की खुशहाली का

प्रदर्शन हुआ। यह अच्छा हुआ। लोगो को मालूम पड गया और लोग समझ गए कि यह काम तो अच्छा हुआ है। लेकिन इतने ही से हमारा काम पूरा नही होता। यह काम तो वैसा ही है, जैसे एक किसान अपनी खेती के लिए ज़मीन तैयार करता है। यदि हमे सच्चा स्वराज्य चाहिए, जैसा स्वराज्य गान्धी जी चाहते थे, तो उस प्रकार के स्वराज्य की रचना के लिए अभी हमे वहुत काम करना है। हिन्दुस्तान में हमारी उन्नति के काम मे जो लोग रुकावट डालनेवाले थे, वे लोग तो चले गए। लेकिन हमारे मुल्क में करोडो लोग आज भी दुखी है, और हमें उनका दुख हटाना है। सब को पेट भर रोटी खाने को मिले, पहनने के लिए कपडा मिले और रहने के लिए अच्छी जगह मिले, कम-से-कम इन तीनों चीज़ो की स्वराज्य में किसी प्रकार की कमी नही रहनी चाहिए।

लोग हम से अपेक्षा करते है कि हमको स्वराज्य तो मिला है, लेकिन उससे हमें फायदा क्या हुआ ? यह सवाल तो ठीक है। रोटी, कपडा और मकान की समस्या हल करने के लिए पहला काम यह था कि हम हुकूमत अपनी वना लें, सो हुकूमत तो हमारी वन गई। अव हमारे काम मे कोई रुकावट नही डालेगा। लेकिन हमे पेट भर खाना चाहिए, तो वह खाना कहाँ से आएगा ? हमारे मुल्क मे तो इतना खाना नही है। जितना अनाज हमें अपने लिए चाहिए, उतना यहाँ पैदा नही होता है। आस-पास के जिन मुल्को से हमारे लोग जो अनाज ले आते थे, उसमे भी कमी आगई। जैसे ब्रह्मदेश में से काफी चावल इधर आता था, जिसके ऊपर मद्रास और वगाल का निर्वाह होता था। इसी तरह और मुल्को से भी अनाज आता था। इधर हमारे मुल्क का एक हिस्सा, जिसमें वहुत अनाज पैदा होता था, हम से अलग हो गया। इस सव से अनाज की वहुत कमी हो गई है। सव जगह पर अनाज पहुँचाने के लिए और हिन्दुस्तान मे कोई आदमी भूख से नही मरे, इसके लिए हमें वाहर से अनाज मँगाना पडता है। उसके लिए यह वन्दोवस्त करना पडता है कि सव जगहो पर कम-से-कम जिन्दा रहने के लिए जितने अनाज की जरूरत है, उतना तो अवश्य पहुँचाया जाए। तो उसके लिए अनेक प्रकार के कट्रोल रक्खे गए। उसमे भी वहुत-सी खरावियां होती है। इतने वडे मुल्क में यह राशनिंग और कट्रोल का काम चलाना आसान नही है और उसमे सरकार की वदनामी भी वहुत होती है। कई लोग घूसखोरी करते है, कई लोग उसका दुरुपयोग करते हैं, यह सव होता है। लेकिन ये सव चीज़े हमी लोग करते

है, ऐसी बातें करनेवाला कोई बाहर से तो नही आता। लोग सरकार को उसका दोष देते है। किसी हद तक यह भी सही होगा। लेकिन ऐसी बातो से सारी दुनिया में हमारी बदनामी होती है कि ये लोग ऐसे है कि ऐसे मौके पर भी एक दूसरे को मदद करना और एक दूसरे का साथ देना तो एक ओर रहा, अपने स्वार्थ में पडकर एक दूसरे का गला काटते है। यह हमारे लिए अच्छी बात नही है। यह गान्धी जी का रास्ता नही है और अगर हमें सच्चा स्वराज्य चाहिए, तो हमें उन्ही के बताए रास्ते पर चलना होगा।

इस प्रदर्शनी में जो चीज़ें आपको दिखाई जाएँगी, उनमें एक चीज़ तो यह है कि हमारे मुल्क में ज्यादा अनाज पैदा करने के लिए क्या-क्या करना चाहिए, कहाँ किस प्रकार काम हो रहा है, कहाँ कहाँ किस किस तरह का अनाज पैदा होता है। यदि हमें बाहर से कम अनाज लाना है और अपने ही मुल्क में सब अनाज पैदा करना है, और इस तरह सच्चे स्वराज्य की नीव डालनी है, तो पहले से हमें यह समझ लेना चाहिए कि हमारा मुल्क इन सब चीज़ो के लिए दूसरे मुल्को पर निर्भर न हो। अपने मुल्क में जितनी चीज़ें हमें चाहिए, उतनी पैदा कर लेना, यह एक कठिन काम है। हमारा मुल्क इतने सालो तक गुलामी में पडा हुआ था और परदेशी लोगो के फायदा उठाने का मैदान बना हुआ था। हम इतने साल से दबे हुए और पिछडे हुए थे कि हमारा मुल्क एकदम कगाल बन गया था। अब स्वराज्य मिलते ही वह अमीर और खुशहाल बन जाएगा और सब चीज़े उसे मिल जाएँगी, वह तो हो नही सकता। लेकिन अगर हम सब लोग साथ मिलकर काम करें, तब वह चीज़ चल सकती है। तो गान्धी जी ने हमे बताया था कि हमारा स्वराज्य तो सूत्र के तांते से जुडा हुआ है। हमें चरखा चलाना चाहिए, यह उन्होने कहा था। वह तो हमने कुछ नही किया। अब यह स्वराज्य जो आया है, वह असली नही, नकली है। असल स्वराज्य तो तभी हो सकता है जब हम सब साथ मिलकर, जितनी चीज़े हमे अपने मुल्क के लिए चाहिए, वे सब अपने मुल्क में पैदा कर लें। इसके लिए हमे अपनी आदतें बदलनी होगी। जो चीज़ हमे चाहिए, वह चीज़ अगर हमारे मुल्क में बनती हो, तो उसी को इस्तेमाल करना हमारा कर्तव्य है। सच्चे स्वराज्य की प्राप्ति के लिए हमें आज प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि २६ तारीख से, या तो इसी महीने से, कि हम परदेशी वस्तुओ का इस्तेमाल नही करगे। हा, कोई ऐसी चीज हो, जो हमारे मुल्क मे नही बनती, और उसे

इधर लाने से हमारे मुल्क को फायदा हो, लोगो को फायदा होता हो, ज्यादा धन पैदा करने में सहायता मिलती हो, तो इस प्रकार की चीज़ो का, जैसे मशीन आदि का उपयोग अभी हमें करना पड़ेगा। लेकिन जहाँ तक हो सके' हमारी कोई चीज़ ऐसी नही होनी चाहिए, जो परदेश में बनी है और जो हमारे गरीब देहाती भाइयो ने नही बनाई है, या जो शहरो मे रहनेवाले शरणार्थी भाइयो ने नही बनाई है। इन चीज़ो के उत्पादन को हम उत्तेजना देनी है।

जो चीज़ हमारी जिन्दगी की जरूरियात के लिए जरूरी है, और जिसको हम खरीदते है, वह सब चीजे, हमे पहले देखना चाहिए कि कहाँ बनी है। सभी स्वतन्त्र मुल्क ऐसा ही करते हैं और उन्हें बचपन से यही शिक्षा दी जाती है। एक अग्रेज छोटा बच्चा भी यही कोशिश करेगा कि जो चीज़ इंग्लिस्तान मे बनी है, उसी को ले। इसी तरह वह अपना माल बाहर दूसरे मुल्को में भेजने की कोशिश करेगा। तो हमें कोई इस प्रकार की कोशिश तो नहीं करनी चाहिए, कि अपना माल दूसरे देशो पर थोपे, लेकिन इतनी कोशिश हमें ज़रूर करनी चाहिए कि हमे जितनी चीज अपने लिए चाहिएँ, वे हमारे अपने मुल्क में ही बने।

तो प्रदर्शनी का माइना यह होता है कि हम देख ले कि हमारे मुल्क में क्या-क्या चीजें बनती है। उसमे से हमे यह पता चलेगा कि इतनी चीज हमारे मुल्क में बनती है और इस चीज़ का हमे ज्ञान नही था कि यहाँ बनती है, सो वह हम देख लें। उसके साथ ही प्रदर्शनी मे और भी चीजें होती हैं, जिनमे से हमें शिक्षा मिलेगी कि हमारा स्वास्थ्य किस तरह से अच्छा रहे और हमारा हेल्थ डिपार्टमेट आरोग्य के लिए क्या कुछ कर रहा है। वह सब भी हमे देखना है। आज तो एक प्रकार से सारी दुनिया एक हो गई है। दुनिया के और देशो से जो चीज हमारे स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए यहाँ आती है, जिनका हमें कोई दाम नही देना पड़ता है, वे भी इधर रखी गई है, क्योकि उन से मुल्क को फायदा होता है। तो वह सब चीज़ भी हमें देखनी चाहिए। हमारे मुल्क मे क्या-क्या मशीन है और वे क्या-क्या काम करती है, कहा कैसा कपड़ा बनता है, ये सब चीजें हमे यहाँ देखनी है और यह भी देखना है कि हमारे यहाँ कौन-कौन सी चीज़ नही बनती है। उसका हिसाब लगाना आम जनता का काम नही है। लेकिन जो उद्योगपति और अन्य समझदार लोग है, वे उसके लिए कोशिश करें कि हमारे मुल्क मे जितनी मशीनें वगैरह बाहर

से आती है, वे हमें अपने हाथो से बनानी है। यदि हमें अपना स्वराज्य पक्का बनाना है, तो हमें किसी परदेश पर अवलम्बित नही रहना चाहिए, निर्भर नही रहना चाहिए। यह बहुत जरूरी है।

अगर बदकिस्मती से हमारा झगडा अपने पडोसी से चलता है, तो उस से हमें नुकसान होता है। हमारे यहाँ कलकत्ता में, जितने कारखाने है, पाकिस्तान के सारे जूट का उपयोग उन्ही में होता है। इन कारखानो के लिए पूर्वी पाकिस्तान के किसान अपने यहाँ जूट पैदा करते है। तो हमारे झगडे का असर यह हो रहा है कि वहाँ के किसान भूखो मर रहे है, क्योकि उनके जूट का उपयोग इधर होता था। तो उसमें किस का कितना कसूर है, इस गहरे पानी में यहाँ उतरना अच्छा नही है। लेकिन इस समय पर मै इतना ही कहना चाहता हूँ, कि हिन्दुस्तान की सरकार ने जितनी कोशिश हो सकी, उतनी की कि हमारे दोनो देशो के बीच हमारा पुराना रोजगार अच्छी तरह से जारी रहना चाहिए, उसमें कोई रुकावट नही आनी चाहिए। इसी से दोनो का फायदा है। लेकिन उनके साथ हमने जितने जितने कौल-करार किए, जितने एग्रीमेंट किए, उनपर जब अमल करने का समय आता है, तब हम पाते है कि उन पर सिर्फ हमारी तरफ से अमल होता है। आखिर हम थक गए और हमने कहा कि अगर तुम इसी तरह से करते रहोगे, तो कोई कौल-करार करना बेकार होगा। इस हालत मे तो तुम अपना करो, हम अपना करेंगे। जिस जूट का पैसा हम पहले ही दे चुके है, उतना जूट भी हमको नही देते हो। तो यह अच्छी बात नही है। तुम इस तरह से करते हो कि हमारा कपडा लेते थे, वह भी अब नही लेते हो। और परदेशो से लाखो-करोडो रुपये का कपडा मगवाते हो। हमारा कपडा परदेश में जाता है और वहाँ से वही कपडा, उनके वहाँ भेजा जाता है। वह इस प्रकार का उलटा धधा करते है।

एक समय ऐसा था कि हम लकाशायर और मैन्चेस्टर के कपडे का बाइकाट करते थे। आज हमारी मिलो का बना कपडा लकाशायर जाता है। कितना उल्टा तरीका हो गया है। वहाँ से ठीक-ठाक कर उसे पाकिस्तान में भेजा जाता है। तो इस तरह से दोनो मुल्को को नुकसान होता है। हमने उन्हे समझाने की कोशिश की कि इस तरह से तुम्हे क्या फायदा होता है? इस से तो दोनो को नुकसान होता है। लेकिन हमारे नुकसान को बचाने का एक ही तरीका हो सकता है कि हम जितने करार करें, उनपर ठीक तरह से अमल होगा,

इस वात की कोई गारटी हमें की जाए। ऐसा न हो, तो उससे अच्छा यह है कि हमारा मुल्क उन पर निर्भर ही न रहे। हमारे मुल्क मे जितना जूट चाहिए, उतना हम स्वय पैदा कर ले। जितनी रूई हमें चाहिए, उतनी रूई हम यही पैदा करे। जितना अनाज हमे चाहिए, उतना हम अपने यहा पैदा करे। वह काम वहुत कठिन है। आज हम वहुत-सा अनाज वाहर से मगवाते है और उनके वहाँ काफी अनाज पडा है, इतना अनाज पडा है, कि वह पडे-पडे सड भी सकता है। क्योंकि जितनी अच्छी अच्छी ज़मीन थी, जिसमें पानी का इन्तजाम था, इर्रीगेशन (सिचाई) का इन्तजाम था, वह सव हमारे जिन लोगो के पास थी, वे सव तो वहा से निकाल दिए गए और अव इधर आकर पडे है। वे सव इधर मारे मारे फिर रहे है। उनका वन्दोवस्त करना, उनका गुस्सा भी सहन करना और उनका दुख भी देखना, यह अव हमारा काम है। उनकी वहाँ जो जगह पडी है, वह सच्चा सोना है, क्योकि उसमे अनाज वहुत पकता था, रूई वहुत पकती थी, वह सव वे दवा कर वैठ गए है। हम वार-वार चिल्ला-चिल्ला कर कहते है कि उसका फैसला करो तो वे फैसला नही करते है और जिद्द करते है। इस तरह से हमारा उनका झगडा चलता है और इससे दोनो मुल्को का नुकसान होता है। तो उसका फैसला एक ही तरह से हो सकता है कि खुले और साफ दिल से, जिस तरह से दो भाई वैठ के वातें करते है, उस तरह से हमे आपस में वैठकर समझौता कर लेना चाहिए।

हमारा मुल्क वाहर के किसी मुल्क पर निर्भर रहेगा, तो वह गिर जाएगा। उसे गिरने नही देना चाहिए। मै एक खाली पाकिस्तान की ही वात नही कहता हूँ, हमें किसी भी मुल्क के ऊपर निर्भर नही रहना चाहिए। हमारे मुल्क को अपने लिए जितनी चीज़े चाहिएँ, वे हम अपने मुल्क मे पैदा करे, यह हमारा पहला काम है। उसमें इस प्रदर्शनी से काफी लाभ होगा। इसमे देखने की वहुत सी चीज़े हमे मिलेंगी। उसमे सीखने को वहुत कुछ मिलेगा। हमारे काम मे कौन-कौन सी त्रुटियाँ है, वह भी देखने को मिलेगी। इस सव चीज़ो को देखना और जानना हमारा कर्तव्य है। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम भी सुखी हो और हमारा पडोसी भी सुखी हो। हमारी नीयत यह न होनी चाहिए कि हमारे पडोसी को दुख हो। लेकिन जव तक हमारे पडोसी का वर्ताव हमारे साथ इस प्रकार का न हो कि वह भी हमारे सुख में सुखी है या हमारे दुख मे दुखी है, तो हमें दूर से उसे नमस्कार कर अपना इन्तज़ाम पूरा कर लेना चाहिए।

यह हमारा काम है। इसीलिए जब प्रदर्शनी खोलने की वात मेरे सामने आई, तो मैंने उसे कबूल कर लिया।

हमने प्रतिज्ञा की है कि हमें स्वराज को ठीक करना है, उसे मज़बूत वनाना है। तो इसके लिए हमारा पहला काम यह है कि बडे वडे शहरो में और देहातो मे हर जगह हम ऐसे प्रदर्शनी करे। जो चीज़ें हमारे मुल्क में वनती है, उनकी जव हमें जरूरत हो, तो हम उन्ही को पसन्द करें, चाहे कुछ ज्यादा दाम ही क्यो न देने पडें। कुछ सस्ते दाम होने पर भी वाहर से आए माल को हम पसन्द न करें। कहे कि भई, हमें इसकी ज़रूरत नही है। क्योकि एक साल, दो साल, तीन साल या चार-पाँच साल की तकलीफ हम उठा ले, तो उससे आगे चल कर हमारा मुल्क मज़बूत बन जाएगा ओर तव हमे किसी तरह का डर नही रहेगा। तव हमारा काम अच्छी तरह से चलेगा।

आज हमारे मुल्क में एक प्रकार की शान्ति हो गई है और इतना वडा मुल्क एक हो गया है, जितना पहले कभी नही था। तो यह वहुत वडी वात हो गई है। हिन्दुस्तान के इतिहास मे हिन्दुस्तान इतना वडा, एकत्र और एक केन्द्रीय सरकार की हुकूमत के नीचे कभी नही था, जितना वह अव वन गया है। इसको सँभालना हमारा काम है। इसको मज़वूत वनाने के लिए जितनी कोशिश करने की ज़रूरत है, वह तो सव को करनी ही चाहिए। और यह चीज हम ओर आप मिलकर ही कर सकते हैं। खाली हम सरकार के ऊपर वैठकर वैसा नही कर सकते। सरकार के पास इतने साधन नही है, इतनी सामग्री नही है। हमारे मुल्क को जख्म लगा है, उसको उठाना हर आदमी का कर्तव्य है। अव दो-च चार साल तक हमे यही कोशिश करनी चाहिए कि इसे अधिक-से-अधिक मजवूत वनाएँ, और हम सव लोग इस काम में अपनी हुकूमत का साथ दे। हमे झगडो में नही पडना चाहिए और न वाद-विवाद में फँसना चाहिए। इस प्रकार के जो रचनात्मक कार्य है, जैसे यह प्रदर्शनी है, इनसे जो-जो सीख हमें मिले, जिस-जिस रास्ते पर जाने का सुझाव मिले, वह सव चीज़ हम सीख ले, यह मेरी प्रार्थना है। मुझे उम्मीद है कि हम फिर यही निश्चय करेंगे हम सव तरीको से अपने मुल्क को मजवूत वनाएँगे। क्योकि हमारा मुल्क आज नाजुक समय पर आ गया है। क्योकि हमारा मुल्क अकेला ही ऐसा नही है। दुनिया मे चारो तरफ आग फैल रही है। हमारे मुल्क के आसपास, जहां से आज तक हम अनाज लाते थे, व्यापार करते थे, वे सव मुल्क आज दुख में

फँसे हुए हैं। वहाँ वहुत झगडा है, वहुत मारपीट और वहुत खून-खरावी चल रही है। इन सब से हमें अपने मुल्क को वचा लेना चाहिए।

जव चारो तरफ आग फैल रही है, तो उस से वचना आसान काम नही है। यह वडा विकट काम है। लेकिन काम करने में तो मजा ही तव आता है, जव उसमे मुसीवत होती है। मुसीवत मे काम करना ही वहादुरो का काम है, मर्दो का काम है। कायर ही मुसीवतो से डरते है। लेकिन हम कायर नही है, हमें मुसीवतो से डरना नहीं चाहिए। हमारे आसपास जो कुछ हो रहा है, उससे वचने के लिए हमे एक ही कोशिश करनी चाहिए और वह यह कि हमारा हिन्दुस्तान गान्धी जी के वताए मार्ग पर चले। आज की परिस्थिति मे हमें अपनी गवर्नमेंट का साथ देना चाहिए। इस प्रदर्शनी मे जो चीजें है, उन्हे देख कर हमे दृढ निश्चय करना चाहिए कि हम अपने मुल्क मे वनी चीज़ो का ही उपयोग करेंगे और जहाँ तक हो सकेगा, परदेशी चीजो को छोड देंगे। आपसे प्रार्थना है कि आप सव लोग इसी पर चलने की कोशिश करे।

---

(२७)

हैदराबाद का स्वागत समारोह

७ अक्टूबर, १९५०

भाइयो और बहनो,

जब से मैंने हैदराबाद स्टेट में प्रवेश किया, तब से मैं आप लोगो के प्रेम का अनुभव कर रहा हूँ। जिस प्रेम से और जिस भाव से आपने मेरा स्वागत किया है, उसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। हैदराबाद सिकन्दराबाद की म्युनिसिपैलिटी और हिन्दी प्रचार सभा की तरफ से मुझे जो मानपत्र दिया गया, उसके लिए मैं इन दोनो संस्थाओ का भी आभार मानता हूँ। मुझे मानपत्र देने की कोई आवश्यकता नही है और न इसका अभी कोई समय ही आया है। अब आदमी दुनिया छोडकर चला जाता है, असली मानपत्र तो उसके बाद मिलता है। क्योकि कोई आदमी आखिर दिन तक कोई गलती न करे, तब उसकी इज्जत रहती है। लेकिन यदि आखिरी उम्र मे दिमाग पलट जाए, तो सारी करी-कराई ही खत्म हो जाती है। इसलिए हमें ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि आखिर दम तक हम शुद्ध और निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करते रहे, ऐसी ताकत हमको मिले।

मानपत्र मे मेरे बारे में जो बातें लिखी है, उसके बारे में मैं आपका समय नही लूगा। लेकिन चन्द बाते है, जिनका जवाब मैं आपको देना चाहता

हूँ। उसमें मुख्य बात तो यह है कि आज तक आपके शहरो में जितनी म्युनिसिपैलिटियाँ है, उनमें सिर्फ स्टेट के नियुक्त सदस्य नोमिनेटेड (नियुक्त) मेम्बर्स है। तो यह बात आज के जमाने के अनुकूल नही है। सब से पहले तो वही चीज बननी चाहिए। उसमें ऐसे नये लोग आएँगे, जिन्होने अनुभव नही पाया है। इससे लोक शासन चलाने में बहुत दिक्कत पडेगी, यह मै मानता हूँ। साथ ही उसका मतलब यह भी नही है कि नोमिनेटेड और सरकार द्वारा नियुक्त लोगो ने जो काम किया है, उसकी मै कदर नही करता हूँ। लेकिन यह लोक शासन के अनुकूल चीज़ नही है। इसलिए आपकी तरफ से, हैदराबाद के मन्त्रिमण्डल की तरफ से, स्टेट की तरफ से, एक कानून बनाया गया है और वह कानून मजूरी के लिए केन्द्रीय सरकार के पास पहुँच भी गया है। बल्कि केन्द्रीय सरकार के लीगल डिपार्टमेंट ने उसमें देख-भाल करके उसे प्रेसीडेट साहेब के दस्तखत के लिए भेज दिया है और चन्द दिनो में वह आपके यहाँ लागू हो जाएगा और उसके बाद आपकी म्यूनिसिपैलिटियो का चुनाव करने का काम आपका रहेगा। चुनाव "अडल्ट फ्रेंचाइज़" (बालिग मताधिकार) के सिद्धान्त पर होनेवाला है। यह समय की माँग है, यद्यपि उसमे मुश्किलें बहुत है। जहाँ अधिक लोग अनपढ है, जिन्हे चुनाव का अनुभव नही है, उनके लिए बालिग मताधिकार का उपयोग बडा मुश्किल है। लेकिन आज वह समय की माँग है, इसलिए हम दूसरी चीज़ नही कर सकते। तो एक तो हमारा खुद का अनुभव कम है और दूसरे ये मुश्किले हमारे सामने आ पडी है। हमने सब बालिगो को वोट देने का अधिकार दिया है। उनमे बहुत-से मतदाता ऐसे होगे, जिनके बारे मे यह कहना कठिन है कि मत देने की कितनी योग्यता उनमे है। हमने उन्हे कितना तैयार किया है, ये सब सोचने की बाते है। परन्तु सब मुश्किले सामने रखते हुए भी हमे सही काम करना है।

जहाँ-जहाँ एक ही हाथ मे सत्ता होती है, वहाँ आसानी से काम चलता है, जो कुछ काम करना हो जल्दी-जल्दी कर लिया जा सकता है। लेकिन लोक-शासन का काम बडा मुश्किल है, वह जल्दी-जल्दी चल नही सकता। उसमें सब की राय लेनी पडती है, सब तरफ से लोगो का दबाव पडता है, सब तरफ से खीचा-तानी होती है। जो काम चलानेवाले कार्यकर्ता है, सर्विसवाले लोग है, उनको भी बहुत मुश्किल पडती है, क्योकि उनको प्रतिनिधि लोगो की राय के माफिक होने की कोशिश करनी पडती है। उन दोनो की राय आपस मे खिलाफ़

हो, उनमें अन्तर हो, तो बहुत मुश्किल हो जाती है। इस हालत मे जब आप के यहा लोक शासन का पूरा कारोबार चलेगा, तब आपको बहुत-सी दिक्कतें आनेवाली है। एक बात यह भी है कि आपके यहाँ हिन्दुस्तान की तरह पुराना अनुभव जरा भी नही है। हिन्दोस्तान के सूबो मे कुछ पुराना अनुभव तो था, कुछ लोक-सस्थाएँ, लोकल बोर्ड, म्यूनिसिपैलिटियाँ वहाँ बहुत सालो से बन गई थी। ये चीज़ें इधर नही है। उसके साथ ही आपके यहाँ कुछ दिनो तक कौम कौम का जो प्रभाव पडता रहा, उसको भी हटाना है। अब आप सबको मिल-जुल कर काम करना है।

मैं आज आपके पास तीसरी दफे आया हूँ। पहले पुलिस ऐक्शन के बाद आया था। लेकिन आज मैं बहुत दिनो के बाद आया हूँ। इस बीच मे हमने कुछ तबदीली भी की है। एक तो हैदराबाद स्टेट हिन्दोस्तान मे मिल गई है। राजप्रमुख ने उसके लिए अपना दस्तखत दे दिया है। उसके साथ-साथ आपके १६, १७ प्रतिनिधि हिन्दोस्तान की पार्लियामेंट में शरीक हो गए है। हमारे स्टेट डिपार्टमेंट ने हैदराबाद स्टेट रिकमडेशन (सिफारिश) से उन्हे चुना है। इस तरह से हिन्दुस्तान की बडी पार्लियामेंट में आपका प्रतिनिधित्व पूर्ण हो गया और हैदराबाद स्टेट हिन्दोस्तान में मिल गई। क्योकि यह तो खुली बात थी। इसमे कोई फर्क पडनेवाला नही और दुनिया की सब ताकतें भी मिल जायें तो भी उसमें कोई फर्क नही पड सकता है। जो चीज खुली हो, उसको ढांकने से कोई फायदा नही है। सो इतना काम तो हो गया। उसके कुछ समय बाद कांग्रेस के प्रतिनिधियो को इधर के शासन में, राज्य के कार बार मे शरीक किया गया। यह एक शुरुआत ही हुआ, क्योकि हमारी यह ख्वाहिश नही है कि हम सब बोझ उठाते रहे और आप हमारे पीछे ही चलते रहे। जैसा हिन्दुस्तान चलता है, उसके साथ साथ आपको भी चलना है। हमारी यह ख्वाहिश है और जितना जल्दी आप तैयार हो जाए, उतना ही अच्छा है। जब आपकी तरफ से इस तरह की कोई माँग आती है कि हमारा शासन पूरे तौर से हमारे खुद का होना चाहिए, तो उसके लिए हमें कहने की जरूरत नही है। क्योकि उसी के लिए तो हमने यह सब कुछ किया है। हम कोई परदेशी लोग थोडे ही है। हम कोई सत्ता के लोभी भी नही कि हमे यहाँ की सत्ता चाहिए। यह तो हमारे ऊपर एक बोझ है। जितनी जल्दी आप अपना बोझ उठा लें उतना ही अच्छा है।

दार पटेल कुछ विदेशी पत्रकारो के साथ, साथ मे डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना आजाद, पडित पन्त और आचार्य कृपलानी भी है

लेकिन इसमे हमारी जो जिम्मेवारी है, जो जवाबदारी है, उसका ख्याल भी हमे रखना पडता है। यदि हिन्दुस्तान की सरकार इस प्रकार अपनी जिम्मेवारी का ख्याल न रखे, तो वह हुकूमत चलाने के लायक न बनेगी। तो सब से पहले तो हमें यह देखना है कि आपका सगठन किस प्रकार का है, वह कितना पक्का है, आप लोगो में आपस का कौमी भेद भाव कितना हट गया है और बाकी कठिनाइयों पर कहाँ तक काबू पाया जा सका है। मै आपकी कोई शिकायत नही करने आया हूँ। लेकिन एक बात मै आपसे जरूर कहूँगा। जैसा कि बहुत दफे पहले भी कह चुका हूँ कि एक ही सस्था है, जो यह क्लेम (दावा) कर सकती है कि शासन उसके हाथ में आना चाहिए। यह सस्था काग्रेस है। दूसरा तो कोई दावा भी नही कर सकता। काग्रेस ही ने दावा किया है, और उसका अधिकार है! तो उसमे सब से बडी बात यह है कि काग्रेस मे जितने दल थे, उन्हें आपस मे मिल जाना है। कोई ऐसा मान ले कि सत्ता मिलने के बाद सब ठीक हो जाएगा, तो वह बडी भारी गलती होगी। सत्ता मिलने के बाद तो झगडा और भी अधिक होनेवाला है, और तब बहुत-से नये दल भी बन सकते है, सत्ता कोई आसान चीज़ नही है। वह भली चीज़ नही है, बुरी चीज़ है। उसमे बहुत बडी चमक है और उससे दिमाग पलट जाता है। जब यह राज्य का सारा कार्य-भार किसी भी सस्था के पास आएगा, तो उनके प्रतिनिधियो को नीद लेने का भी समय नही मिलेगा।

तो सब से पहले हमें काग्रेस के सगठन मे से पक्षापक्ष मिटाने की कोशिश करनी है। इस काम मे यहाँ कुछ सफलता भी प्राप्त हुई है। जब हमने देखा कि ये लोग आपस में मिले है, यह न जानते हुए भी कि ये दिल से मिले है कि ऊपर से मिले है, हमने यहा के मिलिट्री गवर्नर को हटा लिया और एक सिविल एडमिनिस्ट्रेटर, जो आज आपका प्रधान मन्त्री है, भेजा। यह आदमी हमारी स्टेट मिनिस्ट्री का सेक्रेटरी था, जो सारे देशी राज्यो व रियासतो की देखभाल करता था। हमारी सर्विस मे जो सब से अधिक अनुभवी लोग थे, उसमें से भी चुना हुआ एक आदमी हमने आपके पास भेजा है, जो आपकी गाडी को ठीक रास्ते पर चला सकेगा और यह बता सकेगा कि आप अपना काम किस तरह करे। तो हमने शुरूआत की। अब काग्रेस का सगठन अगर सच्चे दिल से एक हुआ है, तो उससे मै बहुत खुश हूँ। लेकिन मैंने सारी जिन्दगी भर सारे हिन्दुस्तान का सगठन चलाया और किसी आदमी के चेहरे पर से मै पह-

चान सकता हूँ कि वह कैसा है। वह कितना भी ऊपर से बात करे, लेकिन मैं जान जाता हूँ कि उसके भीतर क्या है। तो जब मुझे इतना मालूम हो जाएगा कि अब यहाँ हैदराबाद स्टेट की गाडी को इन लोगो के हाथ में देने में कोई खतरा नही है, तब मै एक मिनट की भी देर नही करूँगा। क्योकि मेरी ख्वाहिश यही है कि आप अपना बोझ अपने कन्धो पर उठा ले। तो इस बारे में जितनी जिम्मेवारी मेरे पर है, उससे ज्यादा जिम्मेवारी आपके ऊपर है।

अब दूसरा रुख भी देख लीजिए। हिन्दुस्तान में नया चुनाव होनेवाला है। सारे हिन्दुस्तान के हर यूनिट में नया चुनाव होगा। उस समय आपके यहाँ भी नया चुनाव होगा और उसमें कोई ज्यादा समय लगने वाला नही है। इस बीच में आपकी म्युनिसिपैलिटी का भी चुनाव हो जाएगा। तो पहले म्युनिसिपैलिटी का चुनाव कर लीजिए और देख लीजिए क्या होता है। चुनाव का भी कुछ अनुभव आपको हो जाएगा और जब चुने हुए प्रतिनिधियो के पास म्युनिसिपैलिटी का कारोबार आएगा, तब उससे मालूम हो जाएगा कि आगे क्या हाल होनेवाला है।

अब अगला सवाल यह है कि यहाँ कौमो के आपसी सम्बन्ध कैसे है? मैं खुश हूँ कि आज हैदराबाद में हिन्दू-मुसलमानो के बीच में किसी प्रकार का बखेडा नही होता। यह भी मै कहूँगा कि हिन्दू और मुसलमान के बीच जब दिल का असली मेल हो जाएगा, तब वह भी मुझको मालूम पड जाएगा। कई लोग कहते है कि आप आए है, तो इन लोगो को छोड दो, उन लोगो को छोड दो, जनरल एमनिस्टी (आम रिहाई) दे दो। वह भी कोई खाली मेरे हाथ की बात नही है। उसमें भी तो आपका अपना हाथ ज्यादा है। जो कुछ बातें हुई है, उनके बारे में किसकी कितनी जिम्मेवारी है, इस बारे में आपको बताने की कोई ज़रूरत नही है। हम सब कुछ जानते है कि कौन कितना ज़िम्मेवार है। लेकिन हम पिछली बाते याद नही करते है। हम तो भविष्य का ख्याल करते है कि भविष्य में हैदराबाद की गाडी कैसे चलेगी। उसमें गडबड न हो और फिर कोई ऐसा धक्का न लगे, जिससे आपको नुकसान हो। हमें किसी से द्वेष नही रखना चाहिए और पिछली बातो को माफ करने के लिए भी तैयार हो जाना चाहिए। परन्तु यदि कोई मॉर्टर (शहीद) बनना चाहे, और खुदा के दफ्तर में इस प्रकार का नाम लिखाना चाहे कि वही कौम का खैरख्वाह है,

तो उसके लिए हमारे दिल मे कोई रहम-रियायत हो नही सकती। कई लोगों ने किसी के हुक्म से काम किया तो हम देखेंगे कि हुक्म देनेवाला कौन था। हुकुम का अमल वफादारी से करना कितना धर्म है, वह भी हमें देखना पडेगा। इन सब चीज़ो मे कानून से काम हो सकता है, क्योकि हमारे यहाँ आज जो लोक शासन बना है, उसमें एक व्यक्ति के हाथ में कोई पावर (शक्ति) नही है। और हो तो भी, उसके ऊपर बहुत बोझ पडता है और वह सब काम अपने हाथ से नही कर सकता।

जैसा मै काग्रेस से आशा करता हूँ, वैसा ही मै यहा की सब कौमो से भी आशा करता हूँ। और आप सब से कहता हूँ कि यहा पूरा अमन कायम कीजिए। आप समझ लीजिए कि मै किसी को खुश करने के लिए कोई बात करने वाला आदमी नही हूँ। मै साफ-साफ बात करनेवाला आदमी हूँ। मै आपसे यह कहना चाहता हूँ कि आज आपका जो मेल दिखाई दे रहा है, वह अच्छा है। उससे मुझे खुशी है। आज हैदराबाद मे से इस तरह की खबरे नही आ रहीं कि किसी जगह पर कोई बखेडा हुआ, कोई तूफान हुआ, कोई वैर की बात हुई। इसी में हैदराबाद का भला है। लेकिन अभी तक मेरे दिल मे यह विश्वास नही है कि आप लोगो के अन्तर का मैल चला गया है। मै आपसे साफ़ कहना चाहता हूँ, कि उसका आपको सबूत देना चाहिए।

जब लायकअली हैदराबाद से भाग गया, तो क्या आप मुझ से यह कहना चाहते है कि आप लोगो में से किसी को कोई पता ही नही था और सारी ज़िम्मेवारी हमारी ही थी ? मै यह पूछना चाहता हूँ कि कितने मुसलमानो को यह दर्द हुआ कि यह आदमी हिन्दुस्तान से क्यो भाग गया ? यदि मुसलमान हैदराबाद के हैदराबादी होते, हिन्दुस्तानी होते, तो उनके दिल में दर्द उठती और वे आवाज़ उठाते कि "तुम हमको छोड कर भाग क्यो गए ? तुमने यह नही सोचा कि तुम्हारे इस प्रकार भाग जाने से कौम के ऊपर क्या बोझ आएगा ? आपने कौम की अजादी को जोखम में डालकर तुम अपनी खुद की आजादी के लिए दौड गए। इस प्रकार तुमने जो कुछ किया, उससे मुसलमान कहाँ तक खुश हो सकते है ?" हिन्दोस्तानी मुसलमान इस बात पर रोता कि इस आदमी ने क्या किया। मै आपसे यह कहना चाहता हूँ कि जब मैने सुना कि चन्द मुसलमान यहाँ नाचने लगे, कूदने लगे तो मुझे बहुत अफसोस हुआ। उसको मै क्या कहूँ। वैसे मैं आपका कसूर नही निकालता। जब गान्धी जी का खून हुआ तो

हिन्दुस्तान में ऐसे हिन्दू भी थे, जिन्होंने खुशी मनाई थी। जब तक वह शैतानियत हम से नही निकल जाती, तब तक कौम-कौम का एका भी नही हो सकता।

तो मै वडी अदब से कहूँगा और मुसलमानो से उनके खुद के इन्ट्रेस्ट के लिए, उनके खुद के हित के लिए, कहूँगा कि वे अपने को पूरी तरह हिन्दोस्तानी समझें। क्योकि हमारा तात्पर्य यह है कि हिन्दू और मुसलमानो को हर तरह से एक ही प्रकार के हक और एक प्रकार की जिम्मेवारी होनी चाहिए। बराबर हक और बराबर अवसर उन्हें मिलना चाहिए और उसमें कोई फर्क नही होना चाहिए। लेकिन इसके लिए हिन्दू और मुसलमान दोनों को हिन्दुस्तानी बनना पडेगा। उसके लिए जितना जल्दी तैयार हो, उतना अच्छा है। हो सकता है कि कई आदमियो के दिल में यह हो कि पाकिस्तान उनके लिए ठीक स्थान है। उनसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि हमारी तरफ से कोई रुकावट नही होगी। जितनी जल्दी चले जाओ, उतना ही अच्छा है। इधर के मुसलमानो के लिए भी यही अच्छा है। हम नही चाहते थे कि हिन्दोस्तान का टुकडा हो। लेकिन मजबूर होकर हमें टुकडा करना पडा। उस समय हमने नही सोचा था कि वहाँ से सब हिन्दुओ को भगा दिया जायगा। जब पाकिस्तान बना, तब भी हमारा यह ख्याल था कि हम आपस में बैठ कर समझौता कर लें। पाकिस्तान आज़ादी से अपनी खुशहाली बनाए और जैसा अपना शासन होता है वैसा बनाएँ, चाहे अपनी जैसी प्रकृति और गति बनाए। हम भी चाहते थे कि एक दूसरे के साथ मोहब्बत और प्रेम बना रहे। हिन्दुस्तान के मुसलमान और पाकिस्तान के मुसलमान आपस में मिल-जुलकर रहे, उनमे विवाह-शादी हो। और यह तो अब भी होगा। अभी इतना टुकडा होते हुए भी यह चीज टूटनेवाली नही है। तोडनेवाले कितनी भी कोशिश करें, खुद टूट जाएँगे, लेकिन यह चीज़ नही टूटनेवाली। क्योकि हिन्दुस्तान की आबोहवा ही ऐसी है। फिर भी अगर उनको अलग होना हो, तो हो सकते है। लेकिन इधर के कोई मुसलमान अगर यह ख्वाहिश रखते है कि बाहर के लोग उनका रक्षण करेंगे, तो यह गलत तरीका है। यह होनेवाला नही है। मैं आज कहता हूँ कि हमें हिन्दू और मुसलमान दोनो को आपस में मेल कराना चाहिए। पिछली चीजें हमे याद नही करनी चाहिएँ, उन्हे भूल जाना चाहिए। क्योकि लाखो भाई तो देहात में पडे है। उन्होंने क्या कसूर किया ? उनको तो ख्याल भी नही था कि पाकिस्तान क्या चीज़ है, किस तरह से बनेगा, क्या होगा।

देहात का रहनेवाला तो अपने पडोसी के साथ मोहब्बत से रहता था, उनके साथ घूमता-फिरता था ।

अब जो कुछ हो गया, सो हो गया। अब फिर से मोहब्बत की कोशिश करने का वक्त आया है । ऊपर से अब शान्ति है । लेकिन मेरा बोझ हटा नही है । आज भी हिन्दुस्तान में हिन्दू-मुसलमान का बखेडा उठ खडा होता है। यह जहर इतना घुस पडा है कि इसके निकालने मे थोडा समय लगेगा। आपको शान्ति रखनी चाहिए । दोनो कौम के बीच मे जो समझदार आदमी है, उनको शान्त रह कर लोगो को समझाना चाहिए कि भई अगर उधर कोई गडबड हुई है, तो इधर बदला लेने की कोशिश करना एक बहुत बुरी बात है । हमारा तो यह पूरा धर्म है कि हमारा जो शासन है, जिसको सिक्यूलर स्टेट (धर्म निरपेक्ष राज्य) कहते हैं, उसमे सबके लिए समान स्थान है। हमें सोच-समझ कर चलना है । लेकिन हम शीघ्रता से चल सकें और हमारे काम में कोई रुकावट न हो, उसके लिए हमे आपका साथ चाहिए । हैदराबाद में रहनेवाले सब हिन्दू और मुसलमानो को समझ लेना चाहिए कि वे हैदराबादी है और हिन्दुस्तानी है। वे जब यह समझ जाएँगे, तभी हम आगे बढ सकते हैं।

मै आपसे यह भी कहना चाहता हूँ कि हमने जब हैदराबाद स्टेट को अपने हाथ मे लिया, तब देखा कि यहाँ करोडो रुपये का घाटा पडा है। राज्य के पास पहले जो रिज़र्व फण्ड था, वह सब-का-सब उड गया है और एक बडा खड्डा पड गया है । क्योकि हैदराबाद को स्वतन्त्र बनाने के लिए इसी प्रकार का कारोबार और इसी प्रकार का खर्चा यहा किया गया था। लोगो को पैसा दिया गया था। यह सब काहे को किया गया ? कुछ अपने कामो के लिए या हैदराबाद की उन्नति के लिए तो किया नही गया । जो कुछ किया गया, उस से आज हैदराबाद मे आर्थिक स्थिति बहुत बिगडी हुई है । वह अच्छी नही है और उसको ठीक करना है। हम उसको ठीक करे, तभी काम आगे चल सकता है । हमने तिलक आप लोगो के सुपुर्द कर दिया है। अब आपको स्वय चलना पडेगा। आप देहात मे जाइए, वहाँ न कोई अस्पताल है, न कोई दवा-दारू का सामान है, न कोई पढाई का सामान है । वहाँ खाने पीने की भी तकलीफ है । तो लोगो को, जनता को, आज भी मालूम नही पडा होगा कि राज्य मे क्या फर्क आ गया है। सब चीजे नए सिरे से बनाने का बोझ तो आपके ऊपर पडेगा। हिन्दुस्तान की सरकार की हालत भी ऐसी ही है। क्योकि जब

तक हमको पाकिस्तान का भरोसा न हो, तब तक हमें हिन्दुस्तान को सभालने के लिए लश्कर रखना ही पडेगा। उसके लिए करोडो रुपया खर्च करना ही पडेगा। हम वैसा न करे, तो हम भी गुनहगार बन जाएगे, क्योकि यह सारे हिन्दुस्तान की सलामती की जिम्मेवारी का सवाल है।

तो हमे देखना पडता है कि हमारा पडोसी क्या करता है। पाकिस्तान कहता है कि दुनिया में हमारा एक ही दुश्मन है और वह है हिन्दुस्तान। जब वे ही खुल्लमखुल्ला ऐसा कहते है, तो हम उतना तो न करें, पर यह तो मान लें कि वे हमें अपना दुश्मन समझते है। ऐसी बात है, तो हमें भी सावधान रहना चाहिए। यदि मोहब्बत करनी हो, तो आज भी हमारे प्राइम मिनिस्टर साहब पाकिस्तान से कहते है कि हम दोनो को आपस में ऐसा करार कर लेना चाहिए कि किसी सूरत में हम आपस में लडाई नही करेंगे। जब हमको मालूम पडेगा कि दिल और ज़बान के बीच में कोई अन्तर नही है, तभी वह बात होगी। जब तक ऐसा नही होगा, तब तक वहा से फौज को निकालना पाप है। मै पूछता हूँ कि बताइए आपने सिन्धियो को क्यो निकाला? पजाब के बारे में तो मै मान लेता हूँ कि आप कहेगे कि पजाबी हिन्दू मुसलमान एक दूसरे की अदला बदली और मार-पीट करते हुए भागने लगे। लेकिन सिन्धियो को आपने क्यो निकाला? इसका जवाब मुझको दीजिए। है कोई जवाब आपके पास? अब हम किससे कहे कि हमें आपस में ऐसा करार करना है कि कभी लडाई न करनी पडे। एक तरफ तो आपका कहना है कि हिन्दोस्तान में रहने-वाले तीन करोड मुसलमानो की जवाबदारी हमारे सिर पर है। दूसरी तरफ कहना है कि हमारा एक ही दुश्मन है। तो हम कहते है कि हम तुम्हारी बात मानते है। ठीक है। तुम्हारी बात मानकर हमें सावधान रहना चाहिए। लेकिन इस पर भी हम यह कभी नही कहेगे कि तुम हमारे दुश्मन हो। क्योकि हम समझते है कि तुम दुश्मन रहना चाहो तो भी नही रह सकोगे, दुनिया की ऐसी हालत हो गई है। इधर रहनेवाले करोडो मुसलमान एक-न-एक दिन इस बात को समझ जाएँगे कि यह गलती हुई है। भले ही टुकडा हो और अपनी-अपनी ताकत से चाहे जैसा कार्य चलाएँ। लेकिन अपना घर-बार छोड कर अपना वतन, अपनी मज़िल छोड कर भागना-भगाना किसको पसन्द आएगा? इस समय पर मैं ज्यादा खोलकर नही कहना चाहता। क्योकि मैं नही चाहता कि कौमो का ज़हर और आगे बढे। मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमारे और

पाकिस्तान के बीच में कभी लडाई न हो। लडाई की ख्वाहिश रखनेवाले लोग तो पागल होते हैं। हम इस तरह की कोई ख्वाहिश नही रखते। हम दिल से चाहते हैं कि लडाई न हो। यह तो सौदागरी कर लीजिए कि सिन्धी अपने घर लौट जाएँ और जो मुसलमान इधर से वहाँ गए हैं, अगर वे लौट कर आना चाहे, तो उसकी आज्ञा हम दे देगे। इसी प्रकार का प्रवन्ध हमने वगाल मे भी किया। इस वारे में काफी कोशिश की। इसे आगे वढाना हो, तो रास्ता यह है कि हिन्दू और मुसलमान मोहव्वत से रह सके। उसके लिए हमें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे सामान पैदा करना पडेगा। यदि आप यह कहते रहेगे कि दुनिया मे हमारा एक ही दुश्मन है, और वह हिन्दुस्तान है, तव तो आप ही दुश्मनी का ऐलान करते हैं। मैं यह वात हैदरावाद के सव हिन्दू-मुसलमानो को समझाना चाहता हूँ।

हिन्दुओ से भी मैं कहना चाहता हूँ कि पीछे जो कुछ हुआ, उसे भूल जाना चाहिए। जव एक दफा हम से ज्यादती हो गई तो मर्दों का काम है कि उस चीज पर पर्दा डाल दें। अपने दिल मे कभी वैर नही रखना चाहिए। वैर रखना नामर्दों का काम है। एक आदमी वुरा है, इसलिए उसके ऊपर थप्पड लगाना वेवकूफो का काम है। उसका हाथ पकड कर उसे मुहव्वत से उठाना चाहिए। क्योंकि वह हमारा भाई है। और मुसलमान कहा के हुए? इतने मुसलमान कहाँ से आए? वे परदेश से आए थे क्या? वे हमारी वेवकूफी ही तो से मुसलमान हुए थे। तो इस वारे मे हमारा दोप तो है ही। वे मुसलमान इसलिए हुए कि हमने उनसे इस प्रकार का वर्ताव किया। आज भी क्या हम इस वात को समझे हैं? आज भी क्या हमारे मे से अस्पृश्यता गई है?

गान्धी जी पुकार-पुकारकर कहते थे कि यदि सच्चा स्वराज्य आप लोगो को चाहिए, तो अस्पृश्यता को मिटा दीजिए। पहले हिन्दू और मुसलमानो को एक कर दो। अपनी आर्थिक स्थिति ठीक करनी हो, तो हम अपना कपडा आप वनाएँ। पहनने का जो कपडा हमारे गाँव मे वने वही हम पहने। गाव मे क्या वनाएँ वेचारे? गाँव में तो मिल का भी कपडा नही मिलता, घर का क्या वनाएँ? और कहते हैं कि हमारे मुल्क मे एक भापा होनी चाहिए। अँग्रेजी-वग्रेजी छोड देनी चाहिए। राष्ट्रभापा एक होनी चाहिए। इन चार इमारतो पर हिन्दुस्तान का स्वराज्य वनाने की गान्धी जी ने कोशिश की और वह कोशिश

उन्होने मरते दम तक नही छोडी थी। मै उनका साक्षी हूँ। मरने से सिर्फ पाँच मिनट पहले एक घटे तक मेरी उनसे वात-चीत हुई और मै जव चला गया तो तुरन्त एक आदमी आया और उसने बताया कि एक पागल आदमी ने फाईरिंग किया और वापू तो मर गए। यह वहुत बरी बात हुई। लेकिन मेरी तव जो एक घटे तक वातचीत हुई थी, वह तो मेरे दिल में भरी है कि वह क्या चाहते थे। हिन्दुस्तान का टुकडा होना उन्हे पसन्द नही था। लेकिन इस तरह से वह टुकडा नही कराना चाहते थे और अव कराची जाना चाहते थे। वहा जाकर वह मुसलमानो को दिल से समझाना चाहते थे कि हिन्दुओ को ठीक रक्खो। इधर यही बात वह हिन्दुओ को समझाते थे, विहार में जाकर और जगह पर जाकर, दिल्ली में जाकर, रात-दिन कोशिश करके भी वह सफल नही हुए। लेकिन आखिर जव तक यह चीज़ नही होगी, तव तक हिन्दुस्तान में शान्ति होना असम्भव है, यह आप मान लीजिए। आप कहते है कि फैसला कर लीजिए। हमारी करोडो रुपये की रकम वे दवा कर बैठे है। उसका फैसला कर लीजिए। अव यह काश्मीर का मामला है, उसका फैसला कर लीजिए। आप कहते है कि हम काश्मीर को नही छोडेंगे, हिन्दुस्तान कहता है कि हम नही छोडेगे। तो इसका फैसला कौन करेगा?

हिन्दुस्तान के मुसलमानो से मै पूछता हूँ कि आप की क्या राय है? जव तक आप अपना दिल नही बदलोगे, तब तक मोहव्वत कैसे होगी? तो आप लोगो को भी पाकिस्तानियो से कहना चाहिए कि इस तरह से लडने से फायदा क्या? दो-ढाई साल तो हो गए। शेख अब्दुल्ला को समझाओ, काश्मीर के मुसलमानो को समझाओ। यदि वे पाकिस्तान में जाना चाहते है तो हम जवरदस्ती थोडे ही रखनेवाले है। लेकिन वे चाहते है कि हमें इधर ही रहना है, क्योकि हमारा तो सेक्यूलर (धर्म निरपेक्ष) स्टेट है। और हमने काश्मीर के चन्द मुसलमानो के लिए ही इसे सेक्यूलर स्टेट थोडे ही वनाया है। तीन करोड मुसलमान पहले से ही हमारे यहाँ पडे है। जितने आप के यहा मुसलमान है, करीव उतने ही हमारे यहा भी है। उनका बोझ हम किस तरह से उठाएँगे, अगर रात-दिन लडते रहेगे। तो इधर के मुसलमानो को समझना चाहिए कि उनका सभी कुछ यहा ही है, यही घर है, यही रिश्तेदारी है, यही मुहव्वत है। उनको कहना चाहिए कि भई झगडा छोडो, उससे कोई फायदा नही होने वाला है। हम पहले समझने थे कि वहुत फायदा होगा। लेकिन अव हमने समझ

लिया है कि जो कुछ हुआ, सो हुआ। तुम अपना काम चलाओ, हम अपना चलाएँ। एक दूसरे का साथ दो। एक दूसरे का पैर खीचने की आदत छोड़ दो। तब तो हमारी आपस की मुहब्बत हो सकती है।

यो झगडा एक नही है, अनेक झगडे है। हमारी सब नदियाँ पडी है। पाकिस्तान मे उन का पानी जाता है। नदियो का मूल हमारे यहाँ है। वे कहते है कि इसका फैसला करो। ठीक है, फैसला करो। सिन्ध मे और पजाब मे नदियो की कमी नही है। दोनो मुल्को के लिए काफी पानी है। बैठ कर फैसला करो। लेकिन फैसले की मशा किए बिना सिर्फ यही मशा करना कि किसी-न किसी तरह हमें जी भर कर पानी मिल जाय, यह कैसे हो सकता है? जिन आदमियो को हमने निकाल दिया, जिनके पास पजाब की सिंचाई थी, उनको मुल्क मे से निकाल दिया, सिक्खो को निकाल दिया, हिन्दुओ को निकाल दिया। अब यह कहना कि पानी भी हमारा ही है, ज़मीन भी हमारी ही है और जो लोग गए, उनका सब बोझ तुम्ही उठाओ। यह चीज़ होनेवाली नही है। वह इन्साफ से होगा। अगर ये सब चीज़े करनी हो, तो हमारी तरफ से कोई रुकावट नही होगी। लेकिन जब हमको विश्वास होगा कि ये बाते सही है और वे सचमुच चाहते है। ऐसा हुआ, तो हम ज़रूर करेगे।

हमने अभी दिल्ली का ऐग्रीमेंट किया। दिल्ली मे बैठकर प्राइम मिनिस्टर से साफ साफ बात करके बगाल के बारे में एग्रीमेंट किया। अब यह किस तरह से वह चलता है? कितने हिन्दू कहाँ रहते है, कितने वहाँ से भागते है? कितने मुसलमान इधर से जाते है कितने वहाँ से भागते है? यह सब कछ देखने की बाते है। क्योकि हमारा खयाल है कि ऐग्रीमेट का केस तो एक ही है। यह जो करार किया गया है, वह सही तरह से अमल मे आता है कि नही। उसका उद्देश्य एक ही है कि जो हिन्दू वहा से इधर आ गए है, वे वापस चले जाएँ। जो मुसलमान भाग कर उधर गए है, वे लौट आएँ। यह बाते दोनो बगालो मे हो जाएँ, तो समझ लीजिए कि हमारा एग्रीमेट सच्चा है। ऐसा न हुआ तो हम जबान से कितनी भी बाते करते रहे, कहते रहे कि ठीक हो रहा है, ठीक हो रहा है, उससे कुछ भी काम नही होगा। हमारी ख्वाहिश है कि ठीक काम होना चाहिए। बहुत लोग कहते थे कि हम लोग वहाँ नासिक काग्रेस मे बखेडा करेगे, वहाँ झगडा होगा, हिन्दू-मुसलमान के सवाल पर झगडा होगा। आपने देखा कि हमारी काग्रेस के प्रधान ने कलकत्ता मे जाकर स्पीच दी कि पाकिस्तान

में कुछ भी हो, लेकिन हमारा धर्म है कि हम मुसलमानो को उनका पूरा हक दें और उनका पूरा राशन दें।

यह बखेडा अगर एक जगह पर होता है, तो उसका असर कितनी ही जगहो पर होता है। इस तरह जो एक्शन और रिऐक्शन (क्रिया और प्रतिक्रिया) होता है, उसके रोकने की कोशिश में ही हमको बहुत मुसीबत बढ गई है। उन पर भी यही मुसीबत होगी। मैं नहीं कहता हूँ कि उनपर नही होगी। लेकिन उन्होंने अपना काम इस तरह से कर लिया कि उत्तर पाकिस्तान में दूसरी कम्यूनिटी ही नही रही। लेकिन इस तरह से तो मुहब्बत की बात नही हो सकती। मेरी राय तो यह है, और मै मानता हूँ कि आखिर में सब की यही राय होनेवाली है कि जो हिन्दू अपनी-अपनी जगह पर फिर से लौट आना चाहे, उन्हे लौट आने दें। उनकी मिलकीयत उनको वापस कर दी जाए। ईसी प्रकार जो मुसलमान इधर से गए, वे अपनी जगह पर लौट आएँ। चाहे लायकअली भी लौट आना चाहे, तो मै उसको हज्म करूँगा, वह आ जाए। क्योकि इधर तो हमारी किसी के साथ मित्रता या दुश्मनी नही है। पहले वह समझा होगा कि उसी प्रकार हैदराबाद का कल्याण है। अब इसका अनुभव उसने कर लिया है कि हैदराबाद के मुसलमानो को उससे कितना फायदा मिला और उनका क्या हाल हुआ। जिन लोगो को पाकिस्तान मे रहना है वे खुशी से वहीं रहे। लेकिन जो जाना चाहे, उसके आने-जाने के लिए दोनो ओर से रास्ता खुला रखना चाहिए और इस बात की व्यवस्था दोनो तरफ से होनी चाहिए। तब तो यह काम हो सकता है। नही तो फिर अलग-अलग दो मुल्क तो है ही। चाहे मुहब्बत करने के लिए तैयार न हो, तो भी यह बात तो नही करनी चाहिए कि वह हमारा पडोसी हमारा दुश्मन है।

मै हैदराबाद के मुसलमानो से यह कहना चाहता हूँ कि हमे हैदराबाद की सल्तनत का सैन्सस (जन गणना) लेना होगा। उससे आपको मालूम हो जायगा कि हैदराबाद में मुसलमानो की आबादी पिछले सैन्सस की अपेक्षा कितनी है। हमने कितने मुसलमानो को इधर से निकाला? ऐसी सिच्यूएशन (स्थिति) पैदा हुई, जिसमें कितनो को भागना पडा? इधर कोई ऐसी परिस्थिनि पैदा करने की हमारी ख्वाहिश नही है कि इधर से लोगो को भागना पडे। और न यह हमारा धर्म है। हमारा धर्म ऊँचा है। जो मुसलमान इधर हैं, उनका हमें पूरा विश्वास करना चाहिए। यहाँ के मुसलमानो को भी समझना चाहिए कि हम हिन्दुस्तान के सिटि-

जन (नागरिक) है। यहाँ शहरियो का जो हक है, उतना ही हमारा हक रहेगा। अगर हम ऐसे हालात न बना सकें, तो हम राज्य करने के लायक नही है।

हैदराबाद मे जो लोग राज्य अपने हाथ में लेने की ख्वाहिश करते है, उनको मै सावधान करना चाहता हूँ कि उन्हे ये सब बातें करने के लिए तैयार रहना पडेगा। हैदराबाद में से हमें अस्पृश्यता को निकालना है हैदराबाद मे हमे हिन्दू मुसलमान की एकता बनानी है और हैदराबाद मे हमे देहातियो की तरफ नजर करनी है और उनको उठाना है। हैदराबाद मे हमें राष्ट्रभाषा का प्रचार करना है। साथ ही यहा हमें सारे हैदराबाद को एक इकाई बनाना है। चाहे कोई हो, चाहे आन्ध्र हो, चाहे करनाटक का हो और चाहे कोई और हो, हमें सब का एक ही ग्रूप बनाना है। जिन लोगो की ख्वाहिश जल्दी-से-जल्दी राज्य अपने हाथ मे लेने की है, उन्हे इन कठिन सवालो की ओर तो ध्यान देना ही पडेगा। तो जैसा कि मैने कहा, इन्ही चार बातो पर हमारे राज्य की इमारत बननेवाली है। अगर इन्हे हम ठीक कर लें, तब तो गान्धी जी की ख्वाहिश का राज्य हमको मिल सकता है।

मै इधर इसलिए आया हूँ कि इधर के हालत देख लू, और कुछ आपको बताऊँ कि हमारी क्या ख्वाहिश है। आपके दिल में कुछ अविश्वास हो, तो वह भी मै निकालना चाहता हूँ। कौम-कौम मे अभी तक कुछ अन्देशा हो, तो उसे भी मै दूर करना चाहता हूँ। कुछ लोगो के दिल मे यह वहम है कि जिन्होने पहले कुछ गलतियाँ की है, उनके ऊपर हम कुछ वैर भाव रखते है। वह चीज़ आपके दिल से मै हटाना चाहता हूँ। हमें किसी भी हैदराबादी के ऊपर वैर भाव नही रखना है। दयाभाव पूरा रह सकता है, क्योकि धर्म का मूल तो दया है। परन्तु जो लोग ऐसे है कि उनके दिल मे गुमान है कि उन्हे शहीद बनना है, उनको हम कैसे रोकेंगे ? जो खुदा के दरबार मे शहीद बनकर जाना चाहते है, उनके काम मे हम रुकावट डाले, ऐसे पापी हम क्यो बने ? जाने दो उसको, जाए वह, यही हमारी ख्वाहिश है। आप यह समझ लीजिए कि कोई काम कानून से चलता हो, तो उसे कानून से चलने दो। कानून के मुआफिक काम करने मे थोडा खर्चा तो होगा, लेकिन वह लाचारी है।

कई मुख्य-मुख्य जवाबदार यहाँ से भाग गए है, परन्तु कम रुतबेवाले लोग तो यहाँ ही है। इस बारे मे क्या करना है, यह तो गवर्नमेंट आफ इण्डिया के सोचने की बात है। मैं कुछ जवाबदारियाँ ले सकता हूँ। सोचेंगे हम। लेकिन

उस सब के लिए हमे आप लोगो की मदद चाहिए। यदि आप लोग ऐसी आबोहवा इधर पैदा करेंगे तो मेरा काम सरल हो जायगा। तब आप देखेंगे कि मै इस तरह से चलनेवाला आदमी नही हूँ कि किसी के ऊपर द्वेष-भाव से कोई काम करूँ। यह होता तो मैं जिस जगह पर बैठा हूँ, उस जगह पर बैठने के लायक नही होता। यह बात तो आप समझ गए होगे।

एक और बात मैं आपको कहना चाहता हूँ। वह यह कि हमारे देश में बहुत सालो से गुलामी आई और जिस तरह से हुकूमत चलाई गई, (मै अकेले हैदराबाद की हुकूमत की बात नही कह रहा हूँ। क्योकि हैदराबाद की हुकूमत भी तो हिन्दोस्तान की बडी सलतनत की छाया मे चलती थी) उसने हिन्दुस्तान को बेकार बना दिया, हिन्दुस्तान के लोग आलसी बन गए, लोग बेकार हो गए, क्योकि कोई काम करने को रहा ही नही। तो करोडो लोग बेकार हो गए। परन्तु अब हमारा अपना राज हो गया है। आज हमारे करोडो बेकार लोग कुछ-न-कुछ धन पैदा करने में लग जाएँ और वे ज्यादा धन पैदा करन लगें, तो उसी से हिन्दुस्तान का कल्याण है। इसके बिना हमारा काम नही चलेगा। हमें यह बाँध लेना चाहिए कि बरसो की गुलामी से हमारा देश कगाल हो गया है और जब तक हम सब मिलकर काम नही करेंगे, इस कगाली से हमारा छुटकारा होनेवाला नही है। मुल्क में जो थोडा-सा धन है, वह बराबर बराबर बाँट देने से भी काम नही चलनेवाला। यह बात हम बाँध ले, क्योकि यहाँ करोडो बेकार है और भूखे मरते है।

हमे यहाँ एक और बात की भी फिक्र है, जिस बात ने हैदराबाद को सारी दुनिया में मशहूर कर दिया है। वह यहा का नवगज एरिया है, जिसमें कम्यूनिस्ट लोग कोई-कोई काम करते हैं। वहा जो लोग सब फिसाद कर रहे है, वह सब तो कम्यूनिस्ट नही है, गुडे भी है, क्योकि उनको लूटपाट का मौका मिल गया है। लेकिन उनको जोडनेवाले है कम्युनिस्ट लोग। यदि उनके दिल में यह हो कि हिन्दुस्तान में चीन की तरह साम्यवादी पथ बने, तो वे लोग पागल लोग है। मै कहना चाहता हूँ जिस प्रकार ये लोग कर रहे है, उस प्रकार तो चाईना वालो ने भी नही किया। मै नही समझता हूँ कि दुनिया में कोई भी कम्युनिस्ट वैसा पागलपन करेगा, जैसा कि हिन्दुस्तान मे किया जा रहा है। हमारे जो बेचारे गरीब देहात में है, उनको गोली से मारना, कुल्हाडी से मारना, टुकडा करना, औरतो को भी नही छोडना, उनको भी मारना, यह सब क्या

है ? अपने ही आदमियो को मारनेवालो को कम्यूनिस्ट कहा जाय ? वे कम्युनिस्टो का नाम वदनाम करते है ।

मैंने पिछली दफा भी कहा था, और इधर आज फिर भी कहता हूँ कि जो कम्युनिस्ट लोग खरामस्ती कर रहे है, गरीवो को मारते है और झूठा दावा करते हैं कि हम गरीवो को कुछ दिलाते है, मै उन लोगो की जड को निकालने वाला हूँ। इसके लिए जितनी मेरी कोशिश होगी, करूँगा। दुनिया मे ऐसा पाप मैंने किसी जगह पर नही देखा है, न सोवियत यूनियन मे देखा, न इधर किसी जगह। इधर लोग जो काम कर रहे है, यह वहुत ही वुरा है। लेकिन मुझे अफसोस होता है कि इन लोगो को इतने आर्मस ऐम्युनीशन (हथियार) कहाँ से मिलते है। और वह उनके जोडने वाले जो लोग है, उनका व्रेन (दिमाग) कहाँ रहता है। आप मालूम कीजिए कि वे कहाँ रहते है ? क्या वे हैदरावाद से वाहर रहते है ? क्या नलगडा मे रहते है ? नही, वे वहा के रहनेवाले नही है। नही तो वे सव पुलिस की, मिलिट्री की झपट में आ जाते। तो वे इधर हैदरावाद मे पडे है या सिकन्दरावाद मे पडे है या किसी और सही सलामत जगह पर पडे है। वे किस के घर मे खाते है, कहाँ रहते है, उनको दवा-दारू कहाँ से मिलती है ? जव आपके हाथ मे यह राजसत्ता आएगी, तव क्या हाल होगा, यह सोचिए। मैंने आज दूसरा एक आदमी हैदरावाद का प्रधान मत्री का काम करने के लिए दिया। इसी प्रकार नालगडा एरिए के लिए हम अपनी सर्विस का एक खास आदमी पसन्द करते है। वहुत मुश्किल से हम ऐसे आदमियो को भेज सकते है, क्योकि हमारे पास पूरे आदमी नही है। आप सही सलामत अपनी गाडी खुद चला सके, इस प्रकार हमे आपको तैयार करना है।

आप लोग मुल्की-नामुल्की की वात करते है और कहते है मुल्की लोग सर्विस मे रहने चाहिए। तो मै कवूल करता हूँ, होने चाहिए और साथ-ही-साथ मै यह भी कहना चाहता हूँ यदि आप हिन्दुस्तानी वनना चाहे, तो आपको सारे हिन्दोस्तान को अपना मुल्क समझना होगा और तव हिन्दोस्तान भर के आदमी मुल्की होगे, गैरमुल्की नही। तो वाहर से लाने की जरूरत होती है तो उन्हे लाया जाता है। ज्यादा आदमी तो हम लाएगे ही नही, लेकिन हमे हिन्दोस्तान भर को एक वनाना है। जिस हिन्दोस्तानी की जहाँ जरूरत हो, उसे वहाँ जाना चाहिए। सारे मुल्क मे वह मुल्की है। हैदरावादियो की भी जहा ताकत होगी, जहाँ उनकी योग्यता होगी, हिन्दोस्तान भर मे किसी भी जगह

चले जा सकेंगे। क्योकि सारा हिन्दुस्तान खुला पडा है। हिन्दोस्तान के हर प्रान्त मे और हर मैदान मे आप जा सकते हैं। पहले आप अपना काम सँभालना चाहे तो और बात है।

एक बात यह भी ख्याल करने की है कि आपकी आमदनी का पाँच से छ करोड रुपया पुलिस के ऊपर खर्च होता है। यह खर्चा बहुत है। हमारे पास तुगभद्रा के प्रोजेक्ट है, गोदावरी के प्रोजेक्ट है, और प्रोजेक्ट भी है। अगर जल्दी से उन पर अमल हो सके, तो अनाज का कोई टोटा नही रहे। तब आप हिन्दुस्तान भर को रूई दे सकते है, अनाज दे सकते हैं। तो अब हमें इतना खर्चा क्यो करना पडता है ? यदि हमारी काग्रेस ताकतवर हो, या हैदराबादी लोग समझदार हो, तो ये गुनाह यहा क्यो होते ? अगर आप यह समझते हो कि हमारी जवाबदारी नही है, सिर्फ पुलिस की है, तो आप गलती पर है। एक तरफ तो अब पुलिस की जितनी ज़िम्मेवारी है, यहा की पुलिस उसे निभा नही सकेगी। तो बाहर से मैं पुलिस लाऊँगा। मद्रास से, मैसूर से, यू० पी० से या सी० पी० से लाऊँ ? इतनी पुलिस मुझे बाहर से लानी पडी है। बाहर से जो लोग आए, उनमें सब लोग देवता नही है, यह तो मै भी जानता हूँ। फिर भी बाहर वाले अफसर आप को तग करने या बेइज्जत करने नही आए है। आप अपने काम के लिए जल्दी तैयार हो जाइए। लेकिन यह सारा ढाचा ही बिगड जाए, ऐसा काम नही करना चाहिए।

वहा रायपुर में गोली चलानी पडी। बाहर अखबारो में छपा कि वहा फूड राएट (रोटी का दगा) हुआ। यह फूड राएट नही था, भूखमरो का राएट नही था। रायपुर के गोदामो में तो दो महीने की खुराक पडी है। लेकिन लोगो की यह गलती हमें मससूस करनी पडेगी, कबूल करनी पडेगी। हम जो दूकान से माल लाने के लिए राशन कार्ड देते है, वह एक आदमी को एक ही कार्ड दिया जाता है। रायपुर में लोगो ने बहुत गडबडी की। जिसके घर में चार आदमी थे, और वह झूठमूठ चौदह आदमी का कार्ड ले गया। तो और लोग भूखे मरेंगे और इधर अधिक खर्च से उतना करजा हमारे ऊपर हो जाएगा। औरो के हिस्से का अनाज हमें वहा देना पडेगा। तो रायपुर में यह हुआ कि अनाज के कोटे के बहुत से गलत कार्ड बनवा लिए गए। उनको ठीक करने में कोई गलती भी शायद हुई हो। लेकिन गलती हुई तो आप लोगो को अपनी सरकार के मेम्बरो के पास जाना चाहिए था। लेकिन वहा दुकानें बन्द करना, हल्ला करना,

दुकानो को लूटन की कोशिश या गवर्नमेंट का गल्ला लूटने की कोशिश करना और पुलिस के ऊपर पत्थर चलाना, यह कोई स्वराज्य चलाने का तरीका नही है। इससे तो हैदराबाद बदनाम होगा। अब आप की जो बदनामी आएगी, वह हमारे ऊपर पडेगी। आप कह सकते हैं कि हिन्दुस्तान की गवर्नमेंट की तरफ़ से यहा राशन चलता है, उसमे चाहे बिगाड पडे, हमारा क्या है? लेकिन थोडे दिन के बाद आपको अपना काम अपने हाथ मे लेना है, फिर आप का क्या होगा? उधर मध्यभारत मे ज़रा सी ज्यादती से इतना बिगाड और इतना हल्ला हुआ। सरकार के विरुद्ध जितने ग्रुप थे, वे सब आपस मे मिल गए और सब ने मिलकर ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी कि गोली चलानी पड़ी और कितने ही विद्यार्थी घायल हुए तथा पाच सात मर गए। इससे वहा मुल्की मिनिस्ट्री की हालत ऐसी हो गई कि आज वहा मुल्की गवर्नमेंट ही नही है। इस तरह के हालत आपके यहा भी हुए, तो आप को बहुत मुशकिल पडेगी। मै आप लोगो को सावधान करने के लिए आया हूँ कि आप को राजसत्ता तो मिलने वाली ही है, वह आपका ही हक है, आपका ही अधिकार है और आपके लिए ही हमने यह सब किया है। लेकिन इसके लिए आपको तैयार होना है। मै आपको सावधान करने के लिए आया हूँ कि उसके लिए आप अपना सगठन ठीक कर लो, अपना दिल खुला रखो, अपना दरवाज़ा खुला रखो। काग्रेस से भी मै कहता हूँ कि काग्रेस का दरवाजा बन्द नही करना चाहिए। उसमे अच्छे आदमियो के लिए जगह होनी चाहिए। और जो आदमी अच्छे है, समझदार है, उनको भी समझना चाहिए कि हमे राजतन्त्र मे हिस्सा लेना है। उसके लिए यह जो सगठन है, उसके बन्धन नियम है, उसमें हमें पड जाना चाहिए। यही सब चीज़ें आप को समझाने के लिए मै आया हूँ।

आप जानते है, मेरी शारीरिक ताकत बहुत कम हो गई है। मै सब को मिल नही सका। मुझको बहुत-से लोग मिलना चाहते थे। किसी-किसी को नाराज़ भी करना पडा। लेकिन मै लाचार हूँ और आप लोगो से क्षमा चाहता हूँ कि मै सबको नही मिल सका। इसको माफ कीजिए। लेकिन मुझे जो कुछ कहना था, वह सब मैने इधर बैठकर कह दिया है। उसके ऊपर आप सोचिए। मै तो देहात मे भी जाना चाहता था और मैं नलगुडा भी जाना चाहता था। लेकिन मुझमे इतनी ताकत नही है। इसलिए मै लाचार हूँ। लेकिन इधर बैठे बैठे मैने जितनी बातें की है, उनके ऊपर आपको सोचना है। जितना

जल्दी सोचकर आप उनके ऊपर अमल करेंगे और यह समझेंगे कि यह आदमी जो कुछ कहता है, हमारे फायदे के लिए कहता है। वही हैदराबाद के फायदे की बात है और उसी में हैदराबाद का कल्याण है, उसीसे आपका और हिन्दुस्तान का भी कल्याण होनेवाला है। यह बात आप समझेंगे तो उससे आपकी भी इज्जत बढ़ेगी, हिन्दुस्तान की भी इज्जत बढ़ेगी। ईश्वर आप सब का कल्याण करे, यही मेरी ख्वाहिश है।